राजभाषा भारती

राजभाषा विभाग

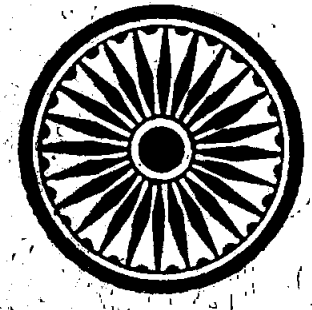

भारत सरकार गृह मंत्रालय

नई दिल्ली

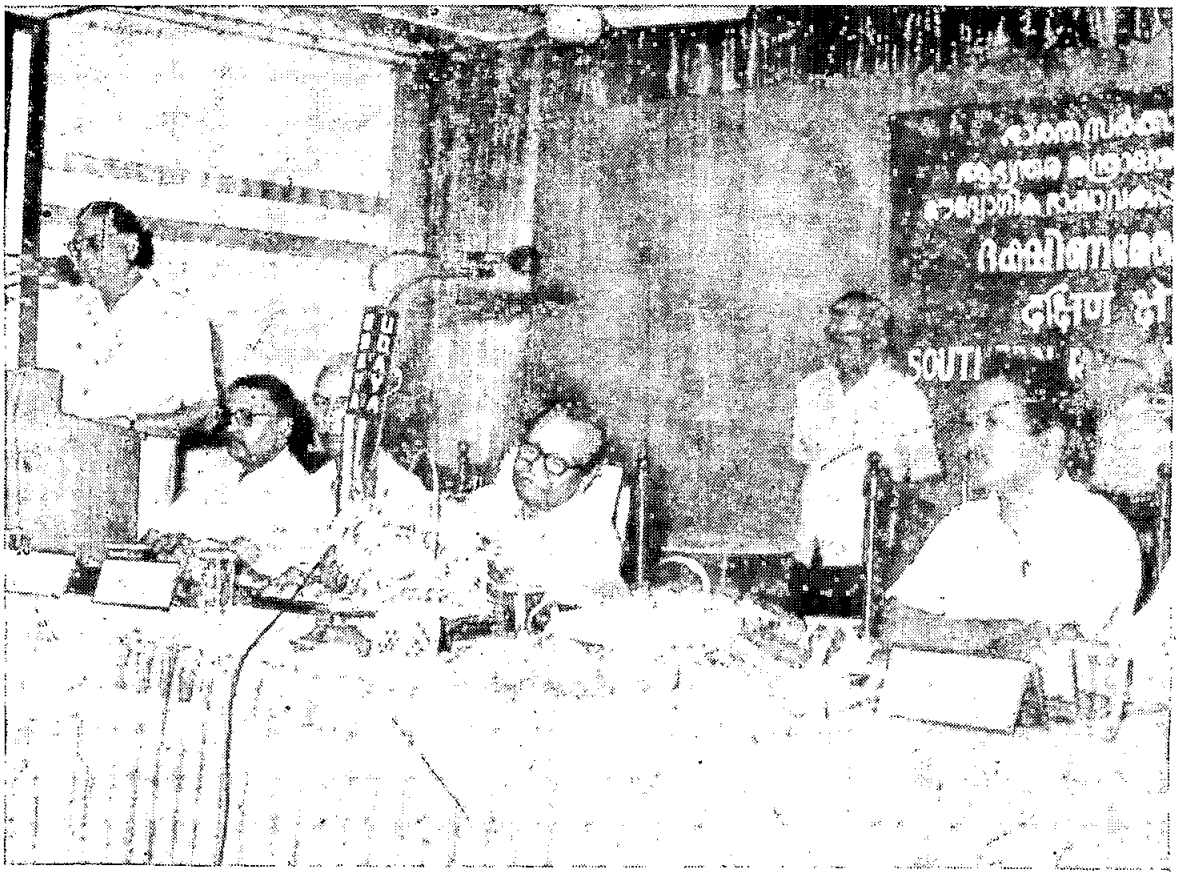

सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए सचिव, राजभाषा श्री राधाकान्त शर्मा । मंचासीन डॉ. महेशचन्द्र गुप्त, निदेशक (अनु.)
नराकास अध्यक्ष एवं मुख्य आयकर आयुक्त श्री एम०के० केशवानी,
मुख्य अतिथि पद्मश्री के.एम. जार्ज तथा सांसद श्री के.वी. थामस

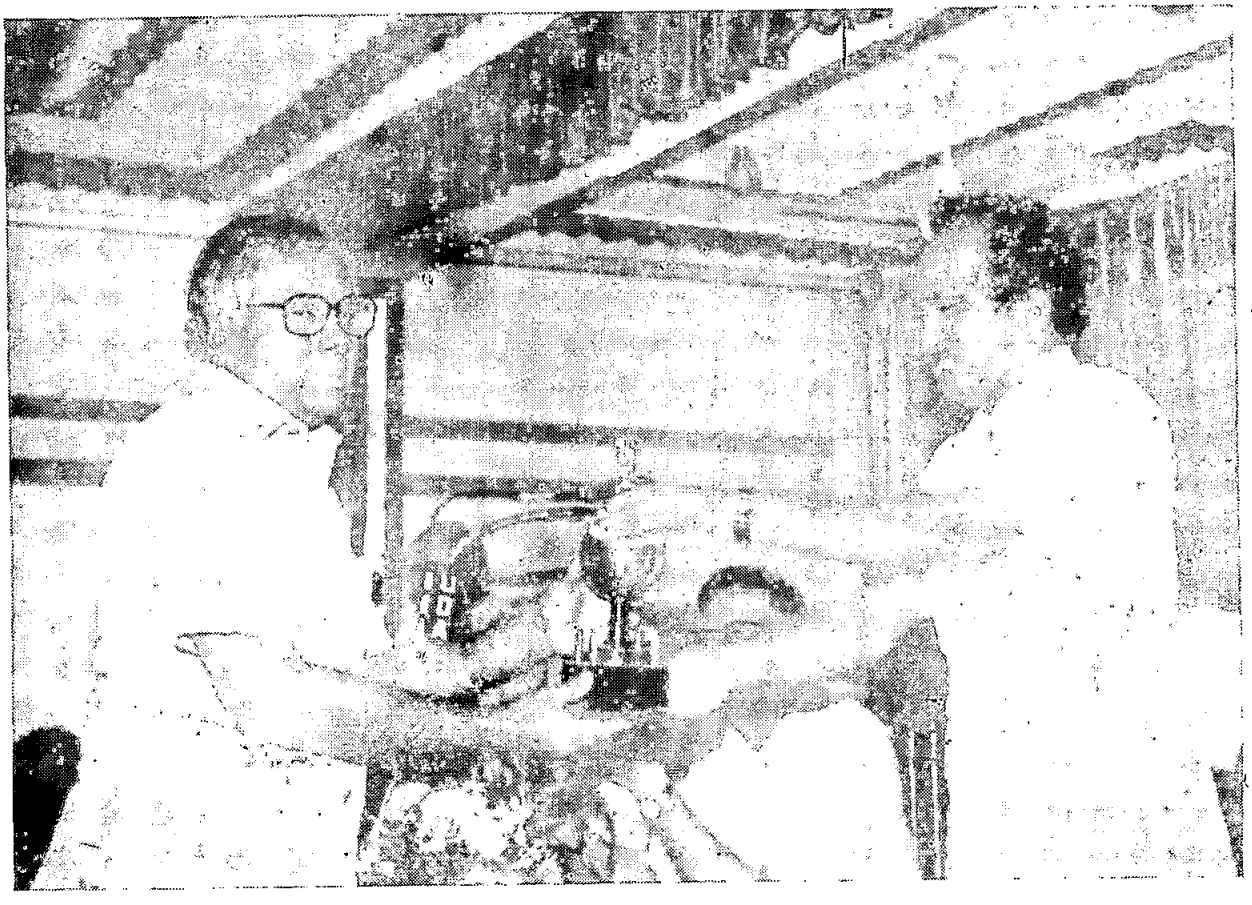

मुख्य अतिथि से ट्राफी ग्रहण करते हुए मदुरई मंडल रेल प्रबन्धक डॉ. एम. मणि

राजभाषा विभाग की त्रैमासिकी

राजभाषा भारती

वर्ष : 12
अंक : 47

आश्विन—अग्रहायण 1911 शक
अक्तूबर—दिसम्बर 1989

संपादक
डॉ. महेशचन्द्र गुप्त
डी लिट
निदेशक (अनुसंधान)
फोन : 617807

☐

उप-संपादक
डॉ. गुरुदयाल बजाज
फोन : 698054

☐

पत्रिका में प्रकाशित लेखों/सामग्री में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सरकार अथवा राजभाषा विभाग का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

☐

निःशुल्क वितरण के लिए

☐

पत्र व्यवहार का पता :

संपादक, राजभाषा भारती,
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय,
लोकनायक भवन (11वां तल)
खानमार्केट, नई दिल्ली-110003

० सम्पादकीय — पृष्ठ

० पाठकों के पत्र

☐ चिन्तन

1. राजभाषा हिन्दी : समस्याएं और समाधान — विश्वभंरप्रसाद गुप्त 'बन्धु' — 3
2. अनुवाद में मौलिकता — संजय कुमार मखीजा — 8
3. अनुवाद की समस्याएं — डॉ० आर. के. मान — 10
4. शाब्दिक समाज का विकास — श्याम सुन्दर राव — 16
5. निर्माण कार्यों में संसाधन प्रबंधन — पी जी धरवाड़कर — 19

० साहित्यिकी

6. उड़िया : साहित्य, भाषा और राजभाषा — प्रदीप कुमार बख्शी — 23
7. कटुता (कविता) — प्रेमजी 'प्रेम' — 25

० पुरानी यादें—नए परिप्रेक्ष्य में

8. अमरशहीद गणेशशंकर विद्यार्थी और राष्ट्रभाषा हिन्दी — 26

☐ समिति समाचार :

(क) हिन्दी सलाहकार समितियों की बैठकें :— — 29
 (1) कार्मिक लोक शिकायत तथा पेंशन विभाग
 (2) शहरी विकास मंत्रालय
 (3) मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा-विभाग)
 (4) योजना मंत्रालय
 (5) कल्याण मंत्रालय
 (6) इलेक्ट्रोनिकी, परमाणु ऊर्जा तथा अन्तरिक्ष विभाग

(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें :— — 37
 (1) मणिपुर (2) बेंगलूर (3) देवास (4) औरंगाबाद
 (5) मंगलूर (6) उदयपुर (7) मेरठ (8) झाँसी
 (9) बडोदरा (10) बडौदा (बैंक) (11) भोपाल

(ग) संपदा निदेशालय में कार्यान्वयन समिति की बैठक — 47

☐ **राजभाषा सम्मेलन/संगोष्ठियां**

1. हिन्दी प्रसार : नई चुनौतियां–कम्प्यूटरीकरण के संदर्भ में 49
2. विशाखापत्तनम इस्पात परियोजना में राजभाषा संगोष्ठी 50
3. हिमाचल प्रदेश में हिन्दी संगोष्ठी 51
4. हरिद्वार में विज्ञान जन-चेतना कार्यक्रम 52
5. क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन, कोच्चिन 53

☐ **हिन्दी के बढ़ते चरण**

1. बैंकों में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने हेतु सार्थक प्रयास (बातचीत) 55
2. बैंकों में हिन्दी माध्यम से प्रशिक्षण एक अच्छी शुरूआत (भेंटवार्ता) 59
3. भारत कोकिंग कोल लि. में हिन्दी का प्रयोग 62

☐ **हिन्दी दिवस/सप्ताह समारोह** 64

☐ **हिंदी कार्यशालाएं** 122

☐ **विविधा**

1. हिन्दी के प्रचार-प्रसार में स्वयंसेवी संस्थाओं की भूमिका 130
2. अहिन्दी भाषी अधिकारियों के लिए विशेष हिन्दी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम 130

० प्रेरणा–पुंज 131

० प्रोत्साहन/पुरस्कार योजना 132

० पुस्तक–समीक्षा 133

☐ **आदेश-अनुदेश** 137

भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन में हिन्दी की भूमिका और महत्त्व को स्वीकार करते हुए पाश्चात्य विद्वान अशर डिलीयान ने बहुत पहले लिखा था कि "विश्व में सबसे अधिक प्रयोग की जाने वाली भाषाओं में हिन्दी का स्थान तीसरा है। भारत में राष्ट्रीय भाषा की दृष्टि से हिन्दी का स्थान सर्वोपरि है। दस से अधिक देशों में विद्यमान विभिन्न समुदाय भी हिन्दी को उपयोग में लाते हैं। इसका साहित्य, दर्शन, कविता, कला एवं विज्ञान का बहुत बड़ा भंडार है। निश्चित ही भविष्य में हिन्दी भारत में व्यापक जनभाषा बन सकेगी। विश्व भाषा के रूप में भी ज्ञान एवं संस्कृति के आदान-प्रदान की दृष्टि से इसका विकास हो सकेगा।"

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद राष्ट्रीय संविधान सभा ने 14 सितम्बर 1949 को देश की राजभाषा के रूप में हिन्दी को ही स्वीकार किया। संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 में केन्द्र सरकार की राजभाषा हिन्दी तथा राज्यों में क्षेत्रीय भाषाओं को राजभाषा बनाने का प्रावधान किया गया। केन्द्रीय सरकार के मंत्रालयों/विभागों/उपक्रमों आदि में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग बढ़ रहा है।

भारत और भारत की संस्कृति को समझने के लिए हिन्दी भाषा और साहित्य के अध्ययन हेतु विश्व के शताधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी का पठन-पाठन हो रहा है। केन्द्रीय हिन्दी समिति की दिनांक 12 अक्तूबर 1989 को आयोजित बैठक के अध्यक्ष श्री पी. वी. नरसिंहराव को सदस्यों ने संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा में हिन्दी में भाषण देने के लिए बधाई दी। भारत की ओर से पूर्व में दो बार महासभा की बैठक में हिन्दी में भाषण दिए गए। राष्ट्र की भाषा का विश्व मंच पर प्रयोग उल्लेखनीय कदम है। सभी भारतीय नागरिकों का यह नैतिक दायित्व है कि राजभाषा हिन्दी को व्यवहार में लाएं।

विश्वास है कि माननीय प्रधानमंत्री श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह के नेतृत्व तथा माननीय गृहमंत्री श्री मुफ्ती मुहम्मद सईद के निर्देशन में संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन का कार्य द्रुतगति से आगे बढ़ेगा। राजभाषा विभाग के संयुक्त सचिव श्री शम्भुदयाल के मुख्य श्रम आयुक्त के रूप में स्थानान्तरण के बाद संसदीय राजभाषा समिति से श्री निशिकान्त महाजन ने राजभाषा विभाग में संयुक्त सचिव (रा. भा.) का पद ग्रहण किया है। श्री महाजन के पूर्व अर्जित अनुभव का लाभ निश्चय ही राजभाषा विभाग को मिलेगा। नए नेतृत्व में राजभाषा विभाग हिन्दी के प्रचार-प्रसार और कार्यान्वयन में आगे बढ़ेगा।

पूरे देश में हिन्दी दिवस के अवसर पर 14 सितम्बर अथवा इस दिन से प्रारम्भ होने वाले हिन्दी दिवस/सप्ताह/पखवाड़ा/मास आदि पूरे उत्साह से आयोजित किए गए। इन आयोजनों में भाषण, श्रुत-लेख, कविता पाठ, गीत, कहानी लेखन, सामान्य ज्ञान, अन्त्याक्षरी, टंकण, टिप्पण, प्रारूप आलेखन, निबन्ध, आशुलिपि, वाक् और हिन्दी व्यवहार प्रतियोगिताएं आदि मुख्य हैं। हिन्दी सेवी संस्थाओं, विद्वानों आदि का इन कार्यक्रमों में सहयोग उल्लेखनीय है। इस अवसर पर अनेक संस्थाओं ने राजभाषा हिन्दी के तकनीकी एवं गैर-तकनीकी विषयों पर संगोष्ठियां/परिचर्चाएं आयोजित की हैं। राजभाषा भारती में प्रकाशन के लिए इन आयोजनों के आलेख अत्यधिक संख्या में प्राप्त हुए हैं। इन सभी को प्रस्तुत अंक में दे पाना संभव नहीं हो सका है। शेष सामग्री को राजभाषा भारती के आगामी अंक में देने का प्रयास रहेगा।

राजभाषा भारती के स्थाई स्तम्भों के अन्तर्गत चिन्तनपरक लेख, 'साहित्यिकी' के अंतर्गत श्री प्रदीप कुमार बख्शी का लेख 'उड़िया: साहित्य, भाषा और राजभाषा' सम्मिलित है। 'पुरानी यादें-नए परिप्रेक्ष्य में' स्तम्भ में हिन्दी के लब्ध-प्रतिष्ठ पत्रकार और स्वतंत्रता सेनानी श्री गणश शंकर विद्यार्थी के हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन पर दिए गए भाषण को उद्धृत किया गया है। विश्वास है कि यह आलेख हिन्दी प्रयोग के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरणादायक सिद्ध होगा।

राजभाषा भारती के अन्य स्थायी स्तम्भ – 'समिति समाचार', 'राजभाषा सम्मेलन/संगोष्ठियां', 'हिन्दी कार्यशालाएं', 'विविधा' आदि में पूर्ववत सामग्री दी गई है। हिन्दी के बढ़ते चरण' स्तम्भ के अंतर्गत 'बैंक आफ बड़ौदा (दिल्ली अंचल)' तथा 'पंजाब नेशनल बैंक (कार्मिक विभाग)' के दो शीर्षस्थ अधिकारियों से राजभाषा हिन्दी के प्रयोग के बारे में 'राजभाषा भारती' से हुई बातचीत दी गई है। ये आलेख इस दृष्टि से दिए गए है ताकि अन्य बैंक/उपक्रम/कार्यालय इन संस्थाओं के अनुभव से लाभान्वित हो सकेंगें।

'राजभाषा भारती' के बारे में 'पाठकों के पत्र' राजभाषा भारती के रूप को निखारने और संवारने में सहायक होते हैं। सुधी पाठकों से अनुरोध है कि "राजभाषा भारती" के बारे में अपनी राय अवश्य लिखें।

श्री आर०एस० पै, महाप्रबंधक, केनरा बैंक (प्रधान कार्यालय), 112-जे.सी. रोड, बेंगलूर,

राजभाषा भारती पत्रिका हिन्दी भाषा भाषियों के लिए एक मील का पत्थर है। इसमें संकलित समस्त लेख संग्रहणीय हैं। पत्रिका की रूप सज्जा आकर्षक है ।

□

सलिल चक्रवर्ती, उपक्षेत्रीय प्रबन्धक (प्रशासन), यूनाइटेड बैंक आंफ इंडिया त्रिपुरा क्षेत्रीय कार्यालय, अगरतल्ला- 799001

विभिन्न सरकारी दफ्तरों, विभागों एवं प्रतिष्ठानों में राजभाषा हिन्दी की प्रगति किस हद तक हो रही है, यह जानकारी राजभाषा भारती के माध्यम से हमें विस्तृत रूप में मिलती है ।

□

डां. बलवंत लक्ष्मण कोतमिरे, बी-6, जे०एन० मेडिकल कांलेज, स्टाफ क्वार्टर्स, नेहरू नगर, बेलगांव-590010 (कर्णाटक)

राजभाषा भारती के एक-दो अंक देखे हैं। राजभाषा का प्रचार अन्य संस्थाओं में किस प्रकार हो रहा है, इसका पता लगा। कुछ लेख तो बहुत अच्छे लगे, जिन्हें पढ़कर प्रेरणा मिलती है।

□

बी.पी. दत्त शर्मा, प्राचार्य, क्षे. दूर सं. प्र—केन्द्र, कल्यापी 741235

राजभाषा के कार्यान्वयन तथा उन्नयन में तत्पर इस संस्थान को आपकी त्रैमासिक पत्रिका "राजभाषा भारती" क योगदान की आवश्यकता है ।

□

डां. पीताम्बर सरोदे, प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, गजमल तुलशीराम पाटील महाविद्यालय, नंदुरपार-425412

राजभाषा भारती का अंक महाराष्ट्र राष्ट्रसभा पुणे के ग्रंथालय में पढ़ने को मिला। अंक आद्योपान्त सर्वांग सुन्दर निकला है। अंक की सारी सामग्री बहुत ही ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी है।

□

ति.कृ. राजामणि ऐयर, 14–7 दक्षिण बस्ती (जुबन) डाकघर–कांसबहाल, जिला सुन्दरगढ़ (उत्कल) 770034

राजभाषा भारती (अंक-45) सुन्दर है । सचित्र प्रेरणापुंज सचमुच प्रेरणादायक स्तम्भ है और आशा है कि आप इसके लिए कम-से-कम दो पृष्ठ रख कर स्थाई रूप से देंगे। इसके अतिरिक्त कई प्रेरणादायक लेख हैं।

□

श्री अवधेश मोहन गुप्त, सहायक प्रबंधक (राजभाषा), भारतीय नौवहन निगम लिमिटेड, "शिपिंग हाऊस" 13, स्ट्रैंड, कलकत्ता-700001

राजभाषा भारती का जुलाई—सितम्बर 1989 अंक मिला। हमारी यह प्रिय पत्रिका नित नया निखार पा रही है. दिनोंदिन सभी लेख उत्तम लगे। डा० सन्तोष कुमार शर्मा लिखित "हिन्दी में वैज्ञानिक पत्रकारिता का उद्भव एवं विकास"; एम० के० वेलायुधन का "हिंदी संस्थाओं की भूमिका" तथा प्रदीप कुमार बख्शी लिखित "कन्नड़ : साहित्य भाषा और राजभाषा" आदि लेख भी सूचनापद एवं प्रेरणास्पद लगे। दूसरी ओर डा० कृष्ण कुमार गोस्वामी लिखित "सामासिक संस्कृति की प्रतीक : हिन्दी" में पिष्टपेषण ही अधिक दिखाई दिया। इस तरह के दसियों लेख राजभाषा भारती में ही पहले प्रकाशित हो चुके हैं।

इस अंक में दो बातें सर्वाधिक पसंद आई। वे हैं—"हिंदी अष्टावधानी" तथा "पुरानी यादें : नए परिप्रेक्ष्य" नाम का स्तम्भ। इस अंक में इन स्तम्भों के अंतर्गत दिए गए डा० चेबोलु शेषगिरि राव का परिचय एवं महात्मा हंसराज के विचार हृदय-स्पर्शी एवं अत्यंत प्रेरणादायक हैं।

दो और स्तम्भ विशेष लाभकारी लगते हैं वे हैं--"प्रेरणा पुंज" तथा "पुस्तक समीक्षा"। "हिंदीतर भाषियों का राजभाषा प्रेम" वाली कड़ी राजभाषा के प्रसार-व्यवहार में विशेष सहायक सिद्ध होगी।

□

रजनीश कपूर, हिन्दी अधिकारी, भारतीय स्टेट बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, सम्बलपुर-768001

राजभाषा भारती के माध्यम से राजभाषा हिन्दी को एक सम्मानजनक स्थान दिलवाने के आपके सार्थक प्रयासों की जितनी प्रशंसा की जाए कम है। ज्ञानबर्धक सामग्री एवं विभिन्न कार्यालयों के इस दिशा में किए जा रहे प्रयासों के समाचार प्राप्त हुए।

□

अजीज जौहरी, दुर्ग अभियन्ता (पूर्व) सैनिक इंजीनियरिंग सेवा, इलाहाबाद

राजभाषा भारती का अंक 45 देखा। पत्रिका हिन्दी के प्रचार और प्रसार हेतु वास्तव में बहुत उपयोगी है। खासतौर से केन्द्र सरकार एवं अधीनस्थ कार्यालयों के तमाम लोगों को हिन्दी की ओर आकर्षित करने का मार्गदर्शन अच्छे ढंग से कर रही है। इसका संपादकीय, लेख और अन्य सामग्री काबिले तारीफ है। प्रस्तुत है राजभाषा हिन्दी के प्रति मेरी मनोभावना--

हिन्दी की तान छेड़ी, तुलसी कबीर ने,
गांधी, सुभाष, टंडन, नेहरू और अमीर ने।
देखो! तुम सब, अपनी हिम्मत न हारना
आँधी हो, तूफान चाहे-इसको संवारना॥

□

जे.के. गौड़, स.प्र. (हिन्दी) वर्ल्ड ट्रेड सेंटर, बाबर रोड़, नई दिल्ली-1

राजभाषा भारती पत्रिका में दिए गए विवरण बहुत ही उपयोगी है एवं ज्ञानवर्धक होते हैं। इससे समय-समय पर हमें कार्यालयों एवं राजभाषा विभाग के निर्देश आदि की जानकारी मिलती रहती है।

□

के.एल. पाहूजा, राजभाषा अधिकारी, सेन्ट्रल बैंक आंफ इण्डिया, क्षेत्रीय कार्यालय, रोहतक।

पत्रिका एवं मासिक पत्र में प्रकाशित समस्त सामग्री उच्च स्तरीय एवं ज्ञानबर्धक हैं एवं यह देश में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी गतिविधियों की सम्पूर्ण जानकारी उपलब्ध कराती है। निःसंदेह राजभाषा विभाग की यह त्रैमासिकी पूरे देश की एक सूत्र में पिरोती है।

□

श्री आनन्द शर्मा, वरिष्ठ प्रशासनिक एवं राजभाषा अधिकारी पेट्रोफिल्म को-ओपरेटिव लिमिटेड, वडोदरा, गुजरात

"स्वतंत्रता का आधार" लेख चिन्तन के साथ-साथ हमारी हिन्दी राजभाषा के लिए चिंतातुर भी है। साहित्यकी में "हिन्दी मत करो चिंदी" (व्यंग) निश्चित रूप से अपना प्रभाव छोड़ते हैं। पत्रिका में ऐतिहासिक गरिमा बनाए रखने में भी आपने न्याय किया है। प्रस्तुत पत्रिका में प्रकाशित सामग्री सरल, रोचक और भावप्रद है जो राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अहम भूमिका निभाते हैं।

□

श्री गंगा प्रसाद, राजभाषा अधिकारी, इण्डियन ओवरसीज बैंक स्टाफ प्रशिक्षण केन्द्र, जनकपुरी, नई दिल्ली।

राजभाषा भारती--अंक 44 में "बैंकों में हिन्दी : प्रयोग सिद्ध दृष्टिकोण", लेख में बैंकों में हिन्दी के प्रयोग संबंधी समस्याओं का बहुत ही सटीक विवेचन किया गया है।

□

कलानाथ शास्त्री, निदेशक, भाषा विभाग, राजस्थान, सी-8, पृथ्वीराज रोड़, जयपुर

राजभाषा भारती पत्रिका में सामग्री तथा राजभाषा क्षेत्र में हो रहे कार्यों की जानकारी तो शामिल रहती ही है, बहुमूल्य आलेख भी पढ़ने को मिल जाते हैं। भारत सरकार की राजभाषा नीति के दर्पण के रूप में यह पत्रिका इस क्षेत्र में कार्यरत व्यक्तियों के लिए एक मूल्यवान सन्दर्भ ग्रंथ ही बन गई है।

□

श्री जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी, पत्रकार, डी-2/55, काका नगर नई दिल्ली-110003

राजभाषा भारती (अंक-45) में डा. कैलाशचन्द्र भाटिया का 'हिन्दी भाषा और पंडित नेहरू' श्री हरिबाबू कंसल का 'प्रशिक्षण और हिन्दी माध्यम' तथा आचार्य गोविन्द थोंगांम के लेख पसन्द आए। यह आपने अच्छा किया कि महावीर प्रसाद द्विवेदी का 'सर विलियम जोन्स ने संस्कृत कैसे सीखी' इसे प्रकाशित कर दिया। फ्रांस, अमरीका और नीदरलैण्ड में हिन्दी सम्बन्धी समाचार भी उपयोगी है। साथ ही साथ विभिन्न विभागों में और विभिन्न स्थानों पर हिन्दी की प्रगति सम्बन्धी समाचारों को काफी विस्तार से देने के लिए हार्दिक शुभ कामनाएं और धन्यवाद स्वीकार करें।

□

श्री वीरेन्द्र प्रताप सिंह, राजभाषा अधिकारी, इंडियन बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना।

राजभाषा-भारती व पुष्पमाला में राजभाषा के सम्बन्ध में अद्यतन जानकारी व राजभाषा पर खोजपूर्ण लेख होते हैं, जिससे राजभाषा के कार्यान्वयन में मार्गदर्शन व सहायता मिलती है।

□

चिंतन

हिन्दी साहित्य, सम्मेलन प्रयाग, के कानपुर अधिवेशन (17–18 जून 1989) में प्रस्तुत निबंध

राजभाषा हिन्दी : समस्याएं और समाधान

☐विश्वंभर प्रसाद गुप्त बन्धु*

साहित्य की समस्याएं और समाधान बहुत व्यापक विषय है। इसलिए पहले तो साहित्य की और फिर हिंदी साहित्य की कुछ सीमाएं बांधकर ही हम विचार करेंगे; फिर और भी सीमाओं के अंदर यथासंभव अल्पकाल में मुख्य-मुख्य बातों पर प्रकाश डाला जाएगा। समस्याएं बताने से पहले हिंदी की विशिष्टता और साहित्य की अपेक्षाओं की कुछ चर्चा करनी आवश्यक है ताकि उनके परिप्रेक्ष्य में ही समस्याओं का आकलन हो और समाधान सुझाए जाएं।

हिन्दी की विशिष्टता

हिंदी सदियों से सारे भारत की प्रमुख सम्पर्क भाषा रही है और इसी नाते यह बहुत पहले से ही राष्ट्र-भाषा कहलाती रही है। इसका अखिल भारतीय स्वरूप उभारने में देश भर के मनीषी और सभी धर्मों-मतों के पोषक अपना योग देते रहे हैं। कश्मीर से कन्याकुमारी तक और सिंधु से असम तक बहुत से हिंदी-भाषी और हिंदी से भिन्न भाषा-भाषी विद्वान् देश-भक्तों ने हिंदी का प्रचार-प्रसार और साहित्य-सृजन किया। हिंदी की इस अखिल-भारतीयता के कारण ही सारे देश के मनीषियों ने सर्वसम्मति से इसे राष्ट्र-भाषा घोषित किया।

संसार में सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषाओं में तीसरा (और कुछ विद्वानों के अनुसार दूसरा) स्थान रखने वाली हमारी राष्ट्र-भाषा हिंदी सूक्ष्म से सूक्ष्म भावों और गहनतम विचारों की अभिव्यक्ति के लिए पूर्णतया सक्षम हैं; और अब तो सब प्रकार से समृद्ध भी हो गई है। हिंदी राष्ट्र-गगन की वह दिव्य ज्योति है जिसके बिना सारा राष्ट्र अंधतम गहराइयों में डूब जाए और विश्व के मानचित्र में भारत कहीं भी दिखाई न दे।

*बी-154, लोक विहार, पीतमपुरा, दिल्ली-34.

साहित्य की व्यापकता

साहित्य शब्द 'स' और 'हित' से व्युत्पन्न है और इसका अर्थ (बृहत हिंदी कोष में दिए अनेक अर्थों में से एक) है हितयुक्त होने का भाव'। इसलिए यह तो अनिवार्य है कि साहित्य सबका हितसाधक हो; किंतु यह आवश्यक नहीं कि वह शब्दों में ही व्यक्त हो। रेखाओं और रंगों से बनी हुई रचना भी इसके क्षेत्र में आ सकती है। इसी प्रकार यह भी आवश्यक नहीं कि रचना भोजपत्र, चर्मपत्र या आधुनिक कागज पर ही अंकित हो, बल्कि ईंट, पत्थर, मिट्टी, चूना आदि की रचनाएं भी इसके अंतर्गत आनी चाहिएं, शर्त केवल एक है कि वे हितकारी हों। डा. हरदेव बाहरी का मत है (प्राचीन भारतीय संस्कृति कोश पृ. 419) कि "सार्थक शब्द मात्र का नाम" साहित्य है। साहित्य मानव के भावों और विचारों की समष्टि है। विद्वान कोशकार के उपर्युक्त मत का उत्तरार्द्ध तो कुछ-कुछ ठीक अर्थ देता है; किंतु पूर्वार्द्ध साहित्य को बहुत संकुचित कर देता है। हमें यह मानने में संकोच न होना चाहिए कि अंग्रेजी पर हमारी अत्यधिक निर्भरता और गुलामी के कारण अनेक क्षेत्रों की भाँति यहां भी संकीर्णता आ गई है। साहित्य का अंग्रेजी पर्याय 'लिटरेचर' कहा जाता है, किंतु यह शब्द 'लेटर' से व्युत्पन्न है और अक्षरों से जो कुछ भी लिखा जाए, लिटरेचर हो जाएगा चाहे हित से उसका दूर का भी वास्ता न हो। साहित्य शब्द इससे कहीं अधिक व्यापक अर्थ रखता है।

यह कोई उपहास नहीं है; और साहित्य का यह व्यापक अर्थ उपेक्षणीय तो बिल्कुल ही नहीं है। आखिर विद्वानों ने आगरा के ताजमहल को संगमरमर पर अंकित विश्व का श्रेष्ठतम प्रेम-काव्य कहा है तो कोई गलती नहीं की। मोहनजोदड़ो की खुदाई में एक टाइल मिली है जिस पर

एक वृक्ष पर बैठे दो पक्षी अंकित है। एक पक्षी रुचि से उस वृक्ष का फल खा रहा है, और दूसरा निर्विकार भाव से बैठा उसे देख रहा है। इस प्रकार मुंडकोपनिषद के सुप्रसिद्ध मन्त्र :

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्य : पिप्पलंस्वादु अति, अनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति ॥[1]

का उस टाइल पर सफल और सजीव चित्रण देखकर कौन सहृदय व्यक्ति अभिभूत न हो जाएगा ? इसलिए हितकर भावों और विचारों की अभिव्यक्ति अगर रेखाओं और रंगों से किसी सतह पर हुई हो या छेनी-हथौड़ी आदि की सहायता से पत्थर आदि पर अंकित हुई हो तो वह रचना भी उत्तम साहित्य ही होगी। उत्तम इसलिए कि उसमें यथार्थता और अधिक श्रम निहित है – विचार तो व्यक्त हुए ही हैं, कर्म भी उसके साथ और उतनी ही प्रमुखता से जुड़ा है। मुंडकोपनिषद में ही स्पष्ट कहा गया है कि "क्रियावानेष ब्रह्मविदां वरिष्ठः", यानी ब्रह्मज्ञानियों में यह कर्म करने वाला श्रेष्ठ है। इसलिए ऐसी उत्कृष्ट कृतियों के रचयिता को साहित्यकार होने की मान्यता मिलनी ही चाहिए।

समस्याएं और समाधान

इस संक्षिप्त निबंध में हम अपने विचार केवल लिपिबद्ध साहित्य तक ही सीमित रखेंगे। दूसरी सीमा यह होगी कि यद्यपि हिंदी साहित्य से तात्पर्य हिंद का, यानी सभी भारतीय भाषाओं का साहित्य होता है, तथापि विस्तार-भय से हम केवल हिंदी भाषा के साहित्य पर विचार करेंगे जो नागरी में लिपिबद्ध हो या होना अपेक्षित हो। कुछ समस्याएं यहां दी जाती हैं।

1. अंग्रेजी पर निर्भरता

हमारी सबसे पहली समस्या तो यही है, जिसका संकेत ऊपर किया जा चुका है : यानी हम लोग अपनी बुद्धि का भली भाँति उपयोग करने से कतराते हैं। अंग्रेजी या अंग्रेजी अनुवाद पर, सो भी पश्चिमी विद्वानों द्वारा किए हुए पूर्वग्रहयुक्त घटिया अनुवाद पर अपने कार्य का आधार रखते है थोड़े शब्दों में कहें तो, हम अपने साहित्य को अंग्रेजी का (या शायद और भी किसी पश्चिमी भाषा का) दास बनाकर गौरवान्वित होत है, इसके अनेक उदाहरण अनेक प्रतिष्ठित लेखकों के साहित्य से दिए जा सकते हैं।[2] यहां केवल इतना ही निवेदन करना है कि हम अंग्रेजी पढ़ें, किंतु उसे मार्ग-दर्शक या आधार न बनाएं; और उसपर निर्भर तो रहें ही नहीं। हम अपनी बुद्धि का अधिक उपयोग पूर्वाग्रह त्याग कर करें और अपने लिखे पर पाश्चात्य मान्यता की मुहर लगवाने का लोभ संवरण करें।

2. विज्ञान की उपेक्षा

हिंदी के वयोवृद्ध विद्वान हमारे पूज्य भैया पद्म-भूषण पं. श्रीनारायण चतुर्वेदी दो-टूक बात कहने के लिए प्रसिद्ध हैं। वे कहते हैं :

"साहित्य-देवता को हाथ-पैर और जीवनी शक्ति देने के लिए सर्जनात्मक साहित्य के अतिरिक्त ज्ञान-विज्ञान, नाना प्रकार के संदर्भ ग्रंथों की भी आवश्यकता होती है। इन सबका बीज-वपन आदि काल में हो गया था। किंतु दुर्भाग्य से हमारे साहित्य का एकांगी विकास हुआ। .....हिंदी में ज्ञान-विज्ञान की अच्छी पुस्तकों के अभाव के अनेक कारण हैं, किंतु उनमें एक बड़ा कारण यह है कि हमारे साहित्य-जगत में उनके लेखकों का समुचित आदर नहीं है।"

—आधुनिक हिंदी का आदिकाल : 1857–1908, पृष्ठ 243

हिंदी साहित्य सम्मेलन साहित्य-रत्न और आयुर्वेद-रत्न की परीक्षाएं तो आयोजित करता है, किंतु विज्ञान-रत्न की परीक्षा की व्यवस्था अभी तक नहीं हो सकी। तीस-चालीस साल पहले इस परीक्षा की चर्चा सम्मेलन की विवरणिका में हुआ करती थी, किंतु यह टिप्पणी भी साथ दी रहती थी कि कुछ अनिवार्य कारणों से यह परीक्षा स्थगित है : कुछ कठिनाइयां हो सकती हैं; किंतु साहित्य को केवल कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, समीक्षा और ललित निबंध तथा शोध-

---

1. दो पक्षी जो सदा एक-साथ रहते हैं, और मित्र हैं, एक ही वृक्ष पर बैठे हैं; एक पक्षी (जीव) उस वृक्ष के मीठे फल (पिप्पस) स्वादपूर्वक खाता है और दूसरा (आत्मा) फल न खाता हुआ केवल साक्षी रूप में बैठा है।

2. (क) डा० सम्पूर्णानन्द की पुस्तक 'गणेश' में वेद-मंत्रों के अर्थ में 'ग्रीपिथ' की छाया है।

(ख) लोकमान्य तिलक ने अनुवाद के आधार पर लिखा है कि भारत में बसे अधिकतर लोग वे हैं जिन्होंने बाहर से आकर बलात इस देश पर अधिकार कर रखा है।

(ग) कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी ने डा० कीथ आदि का अनुकरण करते हुए लिखा है कि आर्य लोग रूपवती स्त्रियों को आकर्षित करने के लिए मंत्रों की रचना करते थे, जुआ खेलते थे, गोमांस खाते थे, शराब पीते थे, आदि-आदि।

विस्तार के लिए देखिए स्वामी विद्यानंद सरस्वती का तृतीय वेद-संगोष्ठी (अप्रैल 1888) का अध्यक्षीय भाषण जो वेद-संस्थान राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-27 ने प्रकाशित किया है।

प्रबंध तक ही सीमित समझने की प्रवृत्ति तो समाप्त होनी ही चाहिए। इतिहास, भूगोल, समाज-शास्त्र, विज्ञान की विभिन्न शाखाओं के और नाना प्रकार के संदर्भ ग्रंथ लिखने-लिखाने और तैयार करने की ओर ध्यान देना चाहिए। इन विषयों को भी साहित्य में मान्यता मिलनी चाहिए। यह संतोष का विषय है कि यह सम्मेलन अब विज्ञान-सम्मेलन भी आयोजित करने लगा है। आशा है, साहित्य-जगत में अब विज्ञान-लेखकों का भी यथोचित सम्मान करने की परिपाटी यह सम्मेलन डालेगा।

3. विज्ञान-लेखन की कठिनाइयां

एक ओर तो हम विज्ञान-लेखन को साहित्य में उचित स्थान नहीं देते, बल्कि इसे साहित्य की मान्यता देते हुए भी कतराते हैं दूसरी ओर हम यह भी जानते हैं कि 21वीं शती में जाने के लिए उत्सुक भारत को विज्ञान के ज्ञान से वंचित रख कर हम उसे 19वीं शती नहीं बल्कि 16वीं शती में ढकेलने पर उतारू हैं। आज हिंदी को अपना समय, धन और शक्ति विज्ञान-लेखन की दिशा में अधिक लगानी चाहिए, इसमें दो राय नहीं हो सकतीं, क्योंकि देश की प्रगति विज्ञान के प्रचार-प्रसार पर निर्भर है।

साहित्य के अंतर्गत मान्यता न मिलने के अतिरिक्त एक और भी बड़ा कारण है विज्ञान-लेखन की ओर कम ध्यान जाने का। विज्ञान-लेखन सामान्य कथा-कहानी लिखने जैसा नहीं होता। इसमें तो लेखक की पूरी अग्नि-परीक्षा हो जाती है। सामान्य कहानी या उपन्यास में व्यक्ति, काल, स्थान, घटनाएं आदि काल्पनिक हुआ करती हैं। कभी-कभी तो सत्य कथाओं में भी कानूनी पेचीदगियों से बचने के लिए जान-बूझकर या मात्र सुविधा के लिए पात्रों और स्थानों के नाम बदल दिए जाते हैं। अधिकतर कहानियां या उपन्यास मात्र मनोरंजन की दृष्टि से लिखे जाते हैं, तथ्य-उद्घाटन की दृष्टि से नहीं। इसलिए पात्रों आदि के सही नाम हों या काल्पनिक, कोई फर्क नहीं पड़ता। किंतु विज्ञान-लेखक तो सत्य का अनन्य पुजारी होता है। उसे तो तथ्यों की तलवार की धार पर ही चलना होता है? हेर-फेर की रंच मात्र भी गुंजाइश नहीं होती। यदि कोई लेखक भूल से, अज्ञान से या जल्दबाजी में ही, गति-संबंधी सिद्धांतों के प्रणेता का नाम न्यूटन के बजाय मिल्टन (या कुछ और ही) लिख दें, तो उसकी सारी रचना तो रद्दी की टोकरी में जाने योग्य होगी ही, वह स्वयं भी अपराधी की कोटि में आ सकता है। इसलिए जिसको विज्ञान के छोटे-बड़े सभी संबंधित तथ्यों की पूरी-पूरी और सही जानकारी होगी, वही विज्ञान-लेखन के लिए कलम उठाने का साहस कर सकता है। अधकचरे ज्ञान से यहां काम नहीं चलता।

इसलिए आवश्यकता यह है कि अधिकारी विद्वानों को विज्ञान-लेखन की ओर आकर्षित करने के लिए भांति-भांति की सहायता दी जाए और उनकी रचनाओं के प्रकाशन की उचित व्यवस्था हो। वर्तमान समय में तो उच्च कोटि की पुरस्कृत रचनाओं के लिए भी प्रकाशक आगे नहीं आते। सचमुच, जनता में अभी तक विज्ञान-साहित्य की मांग पैदा नहीं की जा सकी।

4. हिन्दी-चेतना या हिन्द-प्रेम का अभाव

दिन-रात आठों पहर दो रोटी की चिन्ता में व्यस्त जनता आज-कल साहित्य के बारे में सोचने का समय ही नहीं निकाल पाती। निरक्षर तो निरक्षर ही हैं, साक्षर लोग भी जैसे-तैसे काम निकालने की सोचते हैं। उदाहरण के लिए मान लीजिए किसी को विवाह के निमंत्रण-पत्र छपवाने हैं, तो वह किसी प्रेस वाले को यह काम सौंपकर निश्चिंत हो जाएगा; और प्रेस वाला, जैसा उसने अंग्रेजी राज में सीखा था, अंग्रेजी में 'कार्ड' छापकर दे देगा जो छपाने-वाला स्वीकार भी कर लेगा। हिंदी मातृभाषी तो विशेष रूप से अंग्रेजी में बात करने, अंग्रेजी में पत्र लिखने और हिंदी से दूर रहने में अपनी प्रतिष्ठा समझते हैं। इस संबंध में अगले शीर्षक के अंतर्गत अधिक प्रकाश डाला जाएगा।

हमारी सबसे बड़ी विफलता यह है कि हम विशाल हिंदी जनता में हिंदी-चेतना (हिंदी कांशसनेस) या स्वभाषा-प्रेम उत्पन्न नहीं कर सके। इस विषय पर बहुत कुछ कहा जा सकता है, किंतु संक्षेप में हम केवल इतना ही कहकर संतोष कर लेंगे कि प्रत्येक हिंदी संस्था और अपने को हिंदी-प्रेमी कहने वाले व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह अपने ही उदाहरण प्रस्तुत करके जनता में हिंदी की चेतना उत्पन्न करे और हिंदी को वास्तव में जन-भाषा बनाने के लिए कटिबद्ध हो। हिंदी के अनेक साहित्यकार हैं, किंतु वे भी क्या हिंदीभाषी जनता के हृदय में अपना स्थान बना सके हैं। एक साधारण सा उदाहरण लीजिए। श्री सुमित्रानंदन पंत और केरल के मलयाली भाषा के कवि श्री कुरूप, दोनों ही अपनी-अपनी भाषा के महाकवि थे। दोनों को ही ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला था और दोनों ही राज-सम्मानित थे। संयोग से दो-चार दिन के अंतर से दोनों का देहांत हुआ था। पंत जी का देहांत प्रयाग में रात में हुआ और सवेरे आठ-नौ बजे उनके पंद्रह-बीस मित्रों और रिश्तेदारों ने गंगाजी ले जाकर उनका दाह-संस्कार कर दिया। उन की तेरहवीं में भी मित्रों, रिश्तेदारों और विश्वविद्यालय के कुछ प्राध्यापकों आदि सहित कुल सवा-सौ, डेढ़-सौ से अधिक लोग न थे। उधर कुरूप के निधन पर केरल सरकार ने छुट्टी कर दी थी, अनेक स्कूल आदि बंद हो गए थे, और श्मशान में लगभग एक लाख लोगों की भीड़ थी।

यह मैं समाचार-पत्रों की सूचना के आधार पर कह रहा हूं, मैं स्वयं तो वहां पर न था। किंतु यह सोचने की बात है कि ऐसा अंतर क्यों है। वास्तव में एक कारण तो

यह है कि केरल के अंग्रेजी के विद्वान् भी मलयालम पढ़ने और लिखने को प्राथमिकता देते हैं, क्योंकि उन्हें अपनी भाषा से वास्तविक प्रेम है। दूसरा कारण यह है कि वहां के लोगों में अपनी भाषा के प्रति प्रेम ही नहीं, निष्ठा और मोह भी है। वहां के लेखक और कवि जटिल विषयों को भी ऐसी भाषा और शैली में लिखते हैं कि सामान्य व्यक्ति भी, जो साहित्यिक नहीं है, उसे समझ लेता है। हिंदी के साहित्यकार अभी जनता से दूर हैं। उनकी रचनाओं से विशाल जन-समुदाय कोई रस नहीं निकाल पाता।

मैं विद्वान् साहित्यकारों और मूर्द्धन्य कवियों से यह निवेदन करना चाहता हूं कि मेरा उद्देश्य यह कदापि नहीं है कि साहित्य बाजारू भाषा में लिखा जाएं; किंतु मैं यह अवश्य चाहूंगा कि हमारा साहित्य उस कसौटी पर खरा उतरे जो 'साहित्य' शब्द से ध्वनित होती है, जो तुलसी के शब्दों में कहें, तो 'कीरति भनिति भूति भलि सोई; सुरसरि सम सब कहं हित होई।' आखिर क्या कारण है कि तुलसी की चौपाइयां, मीरां के पद और कबीर की साखियां अनपढ़ ग्रामीण भी उसी अनुराग से अलापते हैं, जिस अनुराग से विद्वान् उन पर शोध के लिए परिश्रम करते हैं!

5. हिन्दी का विकास

भारत के संविधान में तो हिंदी राजभाषा घोषित हो गई, किंतु कुछ अंग्रेजी-भक्तों की जिद के कारण हिंदी का प्रयोग आरंभ करने के पहले उसका विकास करने के लिए पहले पंद्रह वर्ष का, और फिर अनंत काल का समय दे दिया गया, मानो यह भाषा अविकसित ही रही थी। कुछ वैज्ञानिक विषयों का साहित्य प्रारंभ में अवश्य इसमें कम था; अन्यथा हिंदी गंभीर से गंभीर और सूक्ष्म से सूक्ष्म विचारों और भावों की अभिव्यक्ति में पूर्णतया सक्षम थी। फिर भी इसके विकास की जिम्मेदारी सरकार पर डाली गई, और सरकार ने अनेक हिंदी भाषी राज्यों में हिंदी-अकादमियां स्थापित करके अपने कर्तव्य की इतिश्री मान ली।

तृतीय विश्व हिंदी सम्मेलन में नई दिल्ली में हिंदी की प्रसिद्ध विदुषी डा. महादेवी वर्मा ने कहा था:

> "हिंदी की घोड़ा-गाड़ी में गाड़ी चलाने के लिए लगाया गया विकास रूपी घोड़ा आगे के बजाय पीछे की ओर जोड़ दिया गया है, जो हिंदी को विकास की मंजिल पर आगे ले जाने के बजाय पीछे की ओर खींच रहा है और दोष दिया जा रहा है कि हिंदी विकसित नहीं है। जब विकसित हो जाएगी तब इससे काम करने की सोचेंगे। अरे भइया, अब दोष देना छोड़ो, और हिंदी की घोड़ा-गाड़ी में विकास रूपी घोड़ा पीछे के बजाय आगे जोड़ो। तब आप देखेंगे कि हिंदी तो चलती नहीं बल्कि दौड़ती है। बड़े दुःख के साथ कहना पड़ता है कि आजादी के बाद भी हिंदी के अविकसित होने का ही ढोल अधिक पीटा गया, और हिंदीभाषी राज्यों के भी मूर्द्धन्य सरकारी विद्वान् इसी बहाने हिंदी का प्रयोग टालते रहे।

सरकार ने हिंदी के प्रयोग की स्थिति का जायजा लेने के लिए संसदीय राजभाषा समितियां बनाई हैं जो देश-विदेश का दौरा करके सरकारी कार्यालयों का निरीक्षण करती हैं। ऐसी एक समिति के एक प्रसिद्ध सदस्य सांसद बालकवि बैरागी (धर्मयुग 30 अप्रैल, 1989 के पृष्ठ 30 पर) कहते हैं:

> "इस कार्य-काल में सबसे ज्यादा गलीज और घिनौनी मानसिकता का दर्शन मुझे कहीं हुआ है तो वे लोग और क्षेत्र दुर्भाग्य से हिंदी वाले ही थे। हिंदी पर जितना अत्याचार और कुत्सित बोझ हिंदीभाषियों ने डाला है उसकी कल्पना नहीं की जा सकती। ऐसे लोगों का प्रतिशत इस वर्ग में 90 तक बैठ जाता है। उनके बहाने और उनकी निर्लज्ज टिप्पणियां भारत-माता का सिर नीचा कर देती हैं। हिंदी में हस्ताक्षर तक करने में उनको अपने पूर्व-पुरुष मेकाले साहब से आज्ञा लेनी पड़ती है शायद। वे लोग कल भी गुलाम थे, आज भी गुलाम हैं। इस मातृ-चीर-हरण में हिंदी के बड़े बड़े स्थापित लेखकों तक के नाम गिनाए जा सकते हैं।"

यह स्थिति तुरंत बदलनी चाहिए। हिंदी पूर्णतया विकसित है, और अगर कोई कमी है, तो वह प्रयोग करते-करते पूरी हो जाएगी। आखिर बिना पानी में उतरे ही क्या तैरने में दक्षता प्राप्त की जा सकती है।

6. नीयत में संदेह

चालीस साल में दो पीढ़ियां बीत जातीं हैं। तीस साल सरकारी सेवा करते कर्मचारी/अधिकारी अवकाश प्राप्त कर लेते हैं। सरकारी काम करने के लिए सरकार हिंदी के कार्यसाधक ज्ञान की ही अपेक्षा रखती है। किंतु जो कर्मचारी/अधिकारी अपने देश के लिए अपनी भाषा के लिए, अपने आत्म-सम्मान के लिए, हिंदी का इतना ज्ञान प्राप्त करने में भी, चालीस साल तक असमर्थ रहे हैं, और अंग्रेजी को ही छाती से इस प्रकार चिपकाए रहे हैं जैसे बंदरिया अपने मरे बच्चे को चिपकाए रहती है, उनके लिए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपनी 'साहित्य की महत्ता' में जो कुछ कहा है, उससे अधिक क्या कहा जा सकता है? आचार्यश्री कहते हैं: "जो व्यक्ति अपनी मां को बीमार और असहाय छोड़कर दूसरे की मां की सेवा करता है, उस कृतघ्न व्यक्ति को मनु और याज्ञवल्क्य जैसे महर्षि भी यदि चाहें तो क्षमा नहीं कर सकते।"

तो फिर क्या कोई षड्यंत्र हिंदी के विरोध में चल रहा है ? यदि सरकारी कार्यालयों में भर्ती के समय ही अंग्रेज़ी के बजाय हिंदी का ज्ञान अनिवार्य कर दिया जाए तो सरकार का करोड़ों रुपया जो कर्मचारियों/अधिकारियों को हिंदी सिखाने में और हिंदी का कार्य-साधक ज्ञान देने में दशाब्दियों से खर्च हो रहा है, वह सब बच जाए, देश आत्म-गौरव सम्पन्न हो जाए और संसार में एक स्वतंत्र राष्ट्र की प्रतिष्ठा भी प्राप्त कर ले। किंतु व्यक्तिगत स्वार्थ के आगे राष्ट्र-सम्मान और देश के गौरव की खिल्ली उड़ाने वाले लोग ऐसा नहीं होने देंगे। भर्ती परीक्षाओं में भारतीय भाषाओं को माध्यम बनाने का प्रस्ताव संसद के दोनों सदनों द्वारा 1967 में पास और जनवरी 1968 में राजपत्रित हो चुका था। किंतु रोना तो यह है कि हम पश्चिमी जादू की छड़ी के प्रभाव में सो रहे हैं, मेकाले की पिलाई हुई अफ़ीम की घूंटी के नशे का उतार दिखाई भी नहीं दे रहा, और कुछ लोग भारतीय भाषाओं को परस्पर भिड़ाकर भाषायी सौहार्द बिगाड़ते हुए राष्ट्रीय एकता को क्षति पहुंचा रहे हैं।

उपसंहार

अलमति विस्तरेण। कानपुर से पं. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की ओजस्वी वाणी 'कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ' और 'आज खड्ग की धार कुंठिता 'देश भर में गूंजी' थी, तो हमें भी वह क्रांतिकारी 'नवीन-चेतना देश भर में फैलानी है जिससे सन् 1942 के 'अंग्रेजो, भारत छोड़ो' के समान सभी जगह 'अंग्रेजी-भक्तों, अंग्रेजी छोड़ो' का शंख-नाद गूंज उठे। आइए, हम यह संकल्प करके उठें कि :

1. हिंदी में वैज्ञानिक साहित्य का सृजन हो, विज्ञान-लेखकों का सम्मान हो और विज्ञान-संबंधी रचनाओं को साहित्य की मान्यता मिले।

2. हमारा साहित्य जनता से जुड़े, हम जनता की आकांक्षाओं-अपेक्षाओं से निरपेक्ष न रहें।

3. हिंदी का व्यापक प्रचार-प्रसार जन-साधारण में सब क्षेत्रों में करें। देश भर में भाषायी सद्भाव फैलाएं क्योंकि यही राष्ट्र की एकता और अस्मिता की कुंजी है।

4. अपना सारा काम, लेखन, चिंतन, पत्र-व्यवहार और संभाषण, बात-चीत आदि हिंदी और भारतीय भाषाओं में ही करें।

5. सरकारों को हिंदीभाषी क्षेत्रों में सारा काम हिंदी में ही करने पर जोर दें और स्वयं भी जो फार्म आदि भरें, हिंदी में ही भरें चाहे फार्म अंग्रेजी में ही क्यों न छपे हों। हिंदी की टेलीफोन निर्देशिकाएं मंगाएं और उन्हीं का प्रयोग करें।

6. संघ लोक सेवा आयोग और राज्य लोक सेवा आयोगों पर दबाव डालें कि भर्ती-परीक्षाओं का माध्यम भारतीय भाषाएं हों और जिन-जिन परीक्षाओं में हिंदी माध्यम के प्रयोग की अनुमति मिल चुकी है उनमें हिंदी माध्यम अपनाने के लिए प्रत्याशियों को प्रेरित करें। उनकी सुविधा के लिए उपयुक्त साहित्य अपने पुस्तकालयों में रखें तथा विशेष कक्षाओं की व्यवस्था भी करें और अंतिम किंतु अति महत्वपूर्ण।

7. अंग्रेजी-माध्यम के स्कूलों का बहिष्कार करें, अपने बच्चों में भारतीयता और स्वभाषा-प्रेम की भावना जागृत करें ताकि वे परंपराओं की डोर से कट न जाएं। □

हिंदी एक सरल भाषा है। उसका साहित्य भी समृद्ध है। यही नहीं उसे बोलने वालों की संख्या भी बहुत बड़ी है। अतः मेरी दृष्टि में हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की एक भाषा के रूप में स्वीकार कर लिया जाना चाहिए।

—गोदार्द हेंद्रिक स्खोव्वर (हालैण्ड)

अनुवाद में मौलिकता

☐ संजय कुमार खुर्सीजा*

साहित्य के क्षेत्र में मौलिकता की चर्चा प्रायः होती है और यह माना जाता है कि किसी भी एक रचना में लेखक पांच-सात प्रतिशत से अधिक मौलिक तो हो ही नहीं सकता। यह मौलिकता भी शब्द-चयन, संरचना, शैली, रूप और विचार आदि में बंटी होती है। यदि साहित्यकार पांच-सात प्रतिशत से अधिक मौलिक होने का प्रयास करता है तो रचना साहित्य के क्षेत्र के निकलकर दर्शन के क्षेत्र में प्रविष्ट हो जाती है और उसका पाठक-वर्ग सीमित हो जाता है।

यहां "मौलिकता" शब्द का व्यवहार रचनाकार/पुनर्रचनाकार के अपने योगदान के लिए किया जा रहा है। अनुवाद के संबंध में भी इधर पिछले कुछ समय से मौलिकता की अधिक चर्चा होने लगी है। आज अनुवादक को हेय दृष्टि से देखने का एक प्रमुख कारण यह मान्यता है कि अनुवादक अनुकर्ता है और अनुकर्ण्य (अनुकरण योग्य) अनुकृत से उत्तम होता है। किंतु इस विश्व में कुछ भी परम सत्य (एब्साल्यूट रियल्टी) नहीं है तो फिर यह मान्यता ही इस नियम का अपवाद क्योंकर हो सकती है ?

यहां जुलियाना हाउस का अनुवाद वर्गीकरण मुझे प्रासंगिक लग रहा है। सुश्री हाउस के अनुसार अनुवाद दो प्रकार का होता है--प्रत्यक्ष अनुवाद और परोक्ष अनुवाद। प्रत्यक्ष अनुवाद में अनुवादक का अपना व्यक्तित्व मुखर रहता है और परोक्ष अनुवाद में अनुवादक का अपना व्यक्तित्व गौण हो जाता है। प्रत्यक्ष अनुवाद अनुवाद ही लगता है और परोक्ष अनुवाद मूल का-सा आनंद देता है। यहां दोनों ही अनुवाद समतुल्य हैं और किसी एक को दूसरे से हेय नहीं माना गया है। अनुवादक अपने लिए प्रत्यक्ष भूमिका चुने या फिर परोक्ष भूमिका--यह इस बात पर निर्भर करेगा कि संग्राहक भाषा (Receptor Language), स्रोत भाषा (Source Language) के पाठ (Text) को अपनी परंपरा में रचा-पचा सकती है या नहीं। यदि रचा-पचा सकती है तो अनुवादक की भूमिका प्रत्यक्ष रहे तो कोई हर्ज नहीं क्योंकि उसका पाठक ऐसे अनुवाद को भी सहजता से समझ लेगा जो अनुवाद ही लग रहा है। किंतु यदि संग्राहक भाषा स्रोत भाषा के पाठ को अपनी परंपरा में रचा-पचा पाने में समर्थ है तो अनुवादक को अपने अहं, अपने व्यक्तित्व को मारना होगा। यहां सिर्फ अनुवाद से काम नहीं चलेगा। उसे व्याख्यानुवाद आदि करके अनूदित पाठ में उद्रिक्तता (Redundancy) को जोड़ना होगा ताकि अनूदित पाठ सुग्राह्य हो सके। यहां अनिवार्य होगा कि अनुवाद अनुवाद न लगकर मूल ही लगे।

दोनों अनुवाद-प्रकारों में से कौन-सा अनुवाद सरल है ? यह कह पाना कठिन है। एक ओर, प्रत्यक्ष अनुवाद स्पष्टतः मूलनिष्ठ होगा--न सिर्फ विचारों अपितु शब्द-चयन, वाक्य संयोजन, प्रस्तुतीकरण-शैली आदि में भी। यहां अनुवादक को छोड़ने-जोड़ने की छूट न मिल सकेगी। दूसरी ओर, अप्रत्यक्ष/परोक्ष अनुवाद सुंदर, सुग्राह्य और सहज होगा तथा मूल-सा आनंद देगा। यहां अनुवादक को अपनी सीमा का अतिक्रमण करके मूल लेखक की-सी भूमिका अपनानी होगी। यहां अनुवादक कुछ छोड़ भी सकेगा और कुछ जोड़ भी सकेगा।

दोनों अनुवाद-प्रकारों में से कौन-सा अनुवाद श्रेष्ठ है ? यह कह पाना भी कठिन है। स्वयं जुलियाना हाउस के अनुसार आज प्रत्यक्ष अनुवाद को भी अच्छा अनुवाद माना जा सकता है और अब यह धारणा छोड़ दी जानी चाहिए कि श्रेष्ठ अनुवाद वही है जो अनुवाद न लगे (अर्थात् परोक्ष अनुवाद हो)।

अनुवाद स्रोत भाषा की पाठ-सामग्री की संग्राहक भाषा में पुनरसृष्टि है। प्रश्न उठता है कि जब अनुवादक को स्रोत भाषा के पाठ से जुड़े रहना है तो उसकी मौलिकता के लिए अनुवाद में अवकाश ही कहां है ? यह ठीक है कि अनुवाद में विचार, शैली के संबंध में मौलिकता प्रदर्शन का अवकाश नहीं है और मेरी मान्यता तो यह है कि इसी संयम प्रदर्शन में ही अनुवाद की मौलिकता और अनुवादकर्म की सार्थकता छिपी है अर्थात् अनुवाद में अनुवादक को "कलाकारी" नहीं करनी चाहिए।

प्रायः अच्छे लेखक अच्छे अनुवादक भी रहे हैं। लेखक के लिए यह आवश्यक है कि उसके पास कहने के लिए कुछ हो। दूसरे, जो कुछ उसे कहना है उसे वह उसकी पूर्णता में पूरे संयम और पूरी निष्ठा के साथ व्यक्त कर सके।

*राजभाषा कक्ष, संस्कृति विभाग, शास्त्री भवन, नई दिल्ली

कहा यह जाता है कि असफल लेखक अनुवादक बन जाता है। किंतु मेरी मान्यता यह है कि सफल लेखक अच्छा अनुवादक होता है। उसके पास जो कुछ कहने के लिए है, वह उसे कह पाता है। जबकि असफल लेखक के पास या तो कहने को कुछ नहीं होता या फिर उसकी भाषा सक्षम नहीं होती। लेखक बनने का विचार रखने वाले लोग अनुवाद में लेखन का अभ्यास किया करते हैं। अनूदय कृति को पढ़ने के उपरांत अनुवादक के पास विचार हो जाते हैं। अब वह संग्राहक भाषा में इन विचारों को सहज समतुल्य अभिव्यक्ति प्रदान करता है। वह प्रत्येक वाक्य, प्रत्येक प्रोक्ति में ऐसे स्थलों को पकड़ता है जिनपर मूल लेखक ने बल दिया है। इतना ही नहीं वह अनुवाद में भी उन्हीं स्थलों पर उतना ही बल देने का प्रयास करता है। इस प्रकार, वह अनुवाद-कर्म में विचारों को अभिव्यक्ति देने का अभ्यास कर रहा होता है। इस अर्थ में प्रत्येक अनुवाद एक लेखकीय संभावना से युक्त होता है। जिस क्षण उसके मस्तिष्क में कोई मौलिक विचार या भाव कौंधता है, वह अपने अनुवाद-कर्म के अभ्यास के कारण बड़ी सहजता से उसे कागज पर उतारता जाता है। इस प्रकार अनुवाद लेखक के लिए पाठशाला है जहां वह दूसरों के विचारों का अनुवाद करने का अभ्यास करके अपने विचारों का अनुवाद करने में दक्षता प्राप्त करता है।

एक अन्य दृष्टिकोण से देखा जाए तो अनुवाद अनुवादक की मौलिक कृति ही है क्योंकि संग्राहक भाषा में न तो वे विचार ही पहले से विद्यमान थे और न ही वह संरचना। यदि ऐसा होता तो कदाचित् अनुवाद की तो कोई आवश्यकता ही न थी। विचार और अभिव्यक्ति शैली के संबंध में मौलिकता का प्रश्न अनुवादकीय ईमानदारी से भी जुड़ता है। संग्राहक भाषा का पाठक यदि सुधी पाठक है तो ही वह अनुवाद को इस चेतना के साथ पढ़ता है कि वह अनुवाद पढ़ रहा है। इस चेतना के नाते अनुवादक से उसकी अपेक्षाएं भी अधिक नहीं होती। इसके विपरीत यदि पाठक का स्तर वही नहीं है जो स्रोत भाषा की पाठ-सामग्री के पाठक का है तो (संग्राहक भाषा) में पाठक अनुवाद को मूल रचना की तरह पढ़ता है और इस नाते अनुवादक से उसकी अपेक्षाएं भी बढ़ जाती हैं। अनुवादक चाहे तो ईमानदारी दिखाते हुए अपनी रचना (अनुवाद) को अनुवाद रूप में पाठक को दे, न चाहे तो थोड़ा बेईमान होकर मूल रचनाकार का नाम छिपा जाए। किंतु यदि पाठक सुधी है तो अनुवादक की पोल जल्दी ही खुल जाने की संभावना है। □

विदेशी भाषा अंग्रेजी के अनिवार्य बने रहने पर हमारे विद्यार्थियों में राष्ट्रीय स्वाभिमान का विकल्प नहीं हो सकता।

—लोक नायक जयप्रकाश नारायण

जब तक देश में अंग्रेजी का आधिपत्य है, तब तक स्वतंत्रता पर जनता का अधिकार अधूरा है।

—डॉ० राजेन्द्र प्रसाद

अनुवाद की समस्याएं

□ डॉ. आर. के. मान*

अच्छे अनुवाद के लिए तीन मूलभूत शर्तें हैं—स्रोत भाषा का गहन ज्ञान, लक्ष्य भाषा की सही पकड़ और विषय की पर्याप्त जानकारी । ये तीनों शर्तें पूरी होने पर ही सही अनुवाद की आशा की जा सकती है ।

सरकारी कामकाज के प्रसंग में (विशेषकर 'क' और 'ख' क्षेत्रों में) आज को युग को 'अनुवाद युग' कहा जा सकता है । आज सरकारी कार्यालयों में अनूदित सामग्री की भरमार है, लेकिन आम कर्मचारी अंग्रेजी पाठ को ही तरजीह देता है और तथाकथित हिन्दी पाठ को छूने से कतराता है । यदि वह उसे छूने का दुःसाहस कर भी लेता है, तो सामान्यतः उसे निराशा ही हाथ लगती है । परिणामतः वह पुनः अंग्रेजी पाठ की शरण में जा कर ही चैन की सांस ले पाता है । अतः आम कर्मचारी के मन में यह धारणा घर कर गई है कि हिन्दी अत्यंत कठिन है और अंग्रेजी बहुत आसान है । इस स्थिति के लिए कौन जिम्मेदार है ? निःसंदेह इस घातक स्थिति के लिए गलत अनुवाद जिम्मेदार है । दूसरे शब्दों में वे लोग जिम्मेदार हैं जो पूर्वोक्त तीनों शर्तें पूरी नहीं करते हैं, लेकिन फिर भी 'अनुवाद' करते हैं क्योंकि नौकरी जो करनी है ।

भारत सरकार के आदेशों का पालन करते हुए विभिन्न विभागों/संस्थाओं ने हिन्दी अनुवादकों और हिन्दी अधिकारियों की सेना तो भर्ती कर ली है, लेकिन योग्यता की बलि चढ़ाकर । वैसे यह कोई अपवाद नहीं है, । इसके अतिरिक्त राजभाषा से जुड़े स्टाफ को विभाग/कार्यालय सहज रूप में नहीं ले पा रहे हैं । इसलिए यह स्टाफ उपेक्षा का शिकार बना हुआ है । परिणामस्वरूप इस स्टाफ को विभाग/संस्था के कामकाज (विषय) के बारे में प्रशिक्षण देने की कोई आवश्यकता नहीं समझी जाती है। परिणाम आपके सामने है अर्थात् हिन्दी की दुर्दशा । हिन्दी का स्वरूप जितना अधिक इस अनुवाद युग में विकृत हुआ है और हो रहा है, उतना अधिक पहले शायद ही कभी हुआ हो । वास्तव में आज कार्यालयों में जो हिन्दी देखने को मिलती है, अधिकांशतः वह सही अर्थ में है ही नहीं । प्रायः उससे कोई अर्थ नहीं निकलता है और निकलता भी है तो प्रायः गलत ।

यह सही है कि कुछ कर्मचारियों को तो भाषाओं का ही ज्ञान नहीं है और जिन्हें है भी, उन्हें विषय का ज्ञान नहीं है । परिणाम ? भाषा और विषय के साथ अन्याय । जिम्मेदारी किसकी है ? विभाग/संस्था की । क्यों ? क्योंकि इस स्टाफ को अवांछित स्टाफ मान लेने के कारण प्रशिक्षण देकर विषय की जानकारी नहीं करवायी जाती है । बैंक के प्रसंग में विचार करें तो पाएंगे कि सामान्य अधिकारियों को बैंकिंग के विभिन्न क्षेत्रों के बारे में आए दिन प्रशिक्षण दिया जाता रहता है, लेकिन हिन्दी अधिकारियों की उपेक्षा की जा रही है तथापि हर क्षेत्र से संबंधित सामग्री अनुवाद के लिए दे दी जाती है बगैर यह सोचे कि जब विषय का ही ज्ञान नहीं है तो सही अनुवाद कैसे सम्भव हो पाएगा । चिन्ता है तो केवल औपचारिकता की । परिणाम आपके सामने हैं—अधिकांश अनूदित सामग्री का कोई उपयोग नहीं है ।

यह सही है कि केवल शब्दकोशों के सहारे सही अनुवाद नहीं किया जा सकता, फिर भी शब्दकोशों का न्यूनाधिक सहारा तो लेना ही पड़ता है । आज बाजार में अंग्रेजी-हिन्दी तथा हिन्दी-अंग्रेजी के जितने भी शब्दकोश उपलब्ध हैं, वे उत्तम कोटि के नहीं कहे जा सकते । इनमें 25-30 प्रतिशत शब्द तो ऐसे होते हैं जिन्हें एक बार रोमन लिपि में लिख दिया गया है और उनके सामने देवनागरी लिपि में लिख दिया गया है । भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा तैयार की गई "बैंकिंग शब्दावली" को भी अधूरा प्रयास कहना ही उचित होगा । अतः सही शब्दकोश का अभाव भी अनुवादक के सामने प्रमुख समस्या है ।

अंग्रेजी से अनुवाद करते समय जब किसी वाक्य विशेष का भाव या शब्द विशेष का अर्थ साथ बैठे अन्य अधिकारियों से समझना चाहते हैं, तो वे तथाकथित अंग्रेज अधिकारी भी एं एं एं एं करके अपनी असमर्थता प्रकट करते हुए कहने लगते हैं । जो अधिकारी 20-20 साल से बैंक में काम कर रहे हैं, जब उनसे यह पूछा जाता है कि 'मचट बैंकिंग' के प्रसंग में इस वाक्य का क्या भाव है तो वे भी हाथ खड़े कर देते हैं कि 'सौरी सर, मैंने कभी इस विभाग में काम नहीं किया या गलत भावार्थ बतलाते हैं और आश्चर्य है कि ऐसे महारथी वेतनमान-3 और वेतनमान-4 में बैठे हुए हैं। ऐसी स्थिति में वह हिन्दी अधिकारी कैसे सही अनुवाद कर सकता है जिसे बैंकिंग का एक दिन का भी अनुभव नहीं है।

इतना ही नहीं, अनुवादक/हिन्दी अधिकारी को बंधुआ मजदूर समझ लेने के कारण अनुवाद के लिए उसे पर्याप्त समय भी नहीं दिया जाता है । प्रायः ऐसा समझ

*इंडियन बैंक क्षेत्रीय कार्यालय- 189-92, सैक्टर 7सी, चंडीगढ़

लिया जाता है कि अनुवादक/हिन्दी अधिकारी कोई मशीन है जिसमें अंग्रेजी सामग्री डालेंगे तो दो मिनट के बाद वह हिन्दी बनकर बाहर आ जाएगी। हिन्दी अधिकारी को अनुवाद के अलावा और भी कई काम देखने होते हैं। स्वाभाविक है कि जल्दबाजी में अनुवाद गलत हो सकता है।

अंग्रेजी के पारिभाषिक शब्दों के हिन्दी पर्यायों में एकरूपता का अभाव भी एक समस्या है। Deposit के लिए कोई 'निक्षेप' का प्रयोग करता है। Endorsment के लिए बेचान, पृष्ठांकन, परांकन तीनों शब्दों का प्रयोग देखने को मिलता है। Hypothecation के लिए दृष्टिबंधक और आडमान दोनों शब्द चल रहे हैं। इतना ही नहीं, यह भी देखा गया है कि एक ही कार्यालय अंग्रेजी के किसी शब्द विशेष के लिए अपने अलग-अलग परिपत्रों में अलग अलग हिन्दी पर्यायों का प्रयोग कर देता है। परिणामस्वरूप भ्रांति पैदा होती है। जैसे सबसिडी के लिए एक ही कार्यालय के विभिन्न परिपत्रों में अनुदान, उपदान, परिदान, आर्थिक सहायता, इमदाद आदि भिन्न-भिन्न शब्दों का प्रयोग देखा गया है। कार्यालय के एक ही परिपत्र में आन पाइलट बेसिस के लिए 'मार्गदर्शी आधार पर', 'अग्रणी आधार पर' और 'क्रमिक आधार पर' का प्रयोग निश्चित रूप से सराहनीय नहीं है।

क्षेत्रीय शब्दों का प्रयोग भी एक समस्या है। देश के कोने-कोने में स्थित शाखाओं में भेजे जाने वाले परिपत्रों में क्षेत्रीय शब्दों के प्रयोग से असुविधा पैदा होती है। सामलात (सांझी) जमीन के लिए 'परंबोक' (Poramboke) शब्द के प्रयोग से तमिलनाडु से बाहर के लोगों को कठिनाई होती।

अस्पष्ट भाषा का प्रयोग भी एक प्रमुख समस्या है। आज कार्यालयों में जो अनुवाद को हिन्दी देखने में आती है, वह हिन्दी व्याकरण की दृष्टि से हिन्दी है ही नहीं। वह स्वाभाविक हिन्दी नहीं है। वह तो 'मक्खी पर मक्खी मार' छाप हिन्दी है अर्थात् पूर्णतः कृत्रिम। यह अंग्रेजी सामग्री के शब्दशः अनुवाद का दुष्परिणाम है। अनुवादक/हिन्दी अधिकारी को प्रायः यही ध्यान नहीं रहता कि अंग्रेजी और हिन्दी अलग अलग भाषा परिवारों की भाषा हैं, दोनों की प्रकृति भिन्न हैं, दोनों के प्रयोग अलग अलग हैं और दोनों अलग-अलग संस्कृतियों से जुड़ी हुई हैं। हिन्दी/अंग्रेजी की वर्णमाला लिखना/पढ़ना आने का यह मतलब नहीं कि उसे हिन्दी-अंग्रेजी/अंग्रेजी-हिन्दी अनुवाद करने की दक्षता प्राप्त हो गई। नीम हकीम खतरा जान। अनुवाद के नाम पर वास्तव में भाषा और विषय के साथ बलात्कार ही होता है। द्रष्टव्य है 'आदर्श' अनुवाद की यह छोटी सी झलक—

अंग्रेजी शब्द/वाक्यांश	किया गया तथाकथित 'हिन्दी' अनुवाद
Uniform	पहनावा
Impounding of Forged Notes	जाली नोटों का अवरुद्ध किया जाना
Pay to self	स्वयं को दें/अदा करें
Movement	चाल चलन
Dry land	ऊसरभूमि
Flood	भाड़
Spurious Vaccine—Administration	नकली टीका—प्रशासन
Combine Harvestor	संयुक्त रूप से कृषि करने वाले
Security items	प्रतिभूति मदें
Gun	पिस्तौल
Sugar Mill	शक्कर मिल
Milch	दुधारी
Broiler	चिड़िया
Pilot Scheme	अग्रणी योजना
Feed	चारा
Weed	अपतृण
Flowering period	कोंपल अवधि
Optimum population	अधिकतम उपज
Water stagnation	रुद्ध पानी
Insurance Cover	बीमा आच्छादन
Dry cow	सूखी गाय
Revenue expenditure	राजस्व व्यय
Blouse	चंपर
Partial modification	पाक्षिक आशोधन
Purchase	खरीदी
Exclusive use	एकमात्र प्रोयोग
Clean loan	निशर्त ऋण
Not exceeding Rs. 5/-	रु. 5/- से अनधिक
Burglary	सेंधमारी
Cattle breeder	पशु प्रजनक
Designing	अभिकल्पन
Bearing (Flower) period	वहन अवधि
To be rounded	वर्तुलाकार निशान लगाना
Scale III branch	वेतनमान III शाखा
To supply	आपूरित करना
Right thumb	सीधा अंगूठा
To overtake	अधिकार में लेना

Possible efforts	संभव्य प्रयास
Removal	अपादान
Coverage of SC/ST	अ.जा./अ.ज.जा. के लिए आच्छादन
Deposits at Call	मांग पर जमाएं
Beneficiary	लाभ प्रद व्यक्ति
Direct Agriculturall lending	प्रत्यक्ष कृषि ऋणद
Restrictions	निर्बंधन
Official duty	आधिकारिक कार्य
To affix stamp	मुहर डालना
Commissions/Omissions	कार्य/लोप
Particular account	अमुक खाता
Entirely at Govt's cost	सरकार की पूर्ण लागत पर
Milch animals becoming dry	दुधारी जानवरों का सूख जाना
Main features	मुख्य अंश
As leakage of income	आय में रिसन-सा
leakage of income	आय-स्राव
Perceptible improvement	गोचर उन्नति
Repayment	अदायगी
Irregular features	असामान्य पहलू
Fraudulently	धोखात्मक रूप से
Credit advice	ऋण सूचना
Sanctioned	मंजूरीकृत
Cut off line	अधिकतम सीमा रेखा
Urban	शहरीय
To revoke suspension	निलम्बन का पुनः आह्वान करना
Colt	बछड़ा
Cousin	चचेहरा
Bull	सांडनी
To bore tube-well	नलकूप खोदना

यह तो बानगी मात्र है। फिर भी मुझे विश्वास है कि इससे आपके ज्ञान में अवश्य वृद्धि हुई होगी । जिस अनुवाद की शोभा ऐसी शब्दावली है उसे समझ लेना निःसंदेह टेढी खीर है । यह सराहनीय प्रयास यहीं तक सीमित नहीं है । अनुवाद के कुछ आदर्श नमूने भी देखते ही बनते हैं।

New plantation will prove more responsive for Drip Irrigation.

नई बुआई से ड्रिप सिंचाई को लाभ होगा।

It has been brought to our notice that most of the branches/offices are mailing letters intended for Thondarampattu branch to Thandrampet branch.

हमारे ध्यान में लाया गया है कि बहुतेरी शाखाएं/कार्यालय थोंडरामपट्टु शाखा को अभिप्रेत पत्रों थंडाम्पेट शाखा को डाक द्वारा भेज रहे हैं।

Please refer to your letter No 905/89 dated 12-4-89

कृपया आपके पत्र सं. 905/89 दिनांकित 12-4-89 का संदर्भ लें।

The refinance will be availabe only for installation of a complete pumping system consisting of pump sets and delivery system conforming to the B/S code.

संपूर्ण पंपिंग पद्धति जिसमें बी आई एस कूट के समनरुप पंपसेट व सिपुर्दगी पद्धति हो, के संस्थापन के लिए मात्र ही पुनर्वित उपलब्ध होगा।

A clarification has been sought to know whether the removal of monetary ceiling of subsidy for minor irrigation will apply to beneficiaries receiving second dose of assistance as well.

निम्नलिखित बातों को जानने के लिए स्पष्टीकरण मांगा जा रहा है यदि पूरक वित सहायता प्राप्त करने वाले हिताधिकारियों के लिए भी, लघु सिंचाई के इमदाद पर लगायी गई आर्थिक सीमा का अपादान प्रयुक्त होगा।

"Insurance coverage of the replanted corps in the event of crop failure due to floods—procedure—regarding."

"भाड़ के कारण फसल असफल होने की दशा में पुनः लगाई गई फसलों के लिए बीमा प्रावरण प्रणाली के संबंध में।"

It has been decided to raise the rate of interest allowed from 9% to 11%

यह निर्णय लिया गया है कि अनुमेय ब्याज दर को 9 % से 11 % को बढ़ाया जाए।

Branches are requested to note to above point.

शाखाओं से अनुरोध है कि उपर्युक्त बिन्दु को नोट करें ।

If they fail to discharge the duties expected of them they are liable for taking appropirate action as deemed fit by the competent authorities.

यदि वे, उनसे अपेक्षित काम करने में असमर्थ हो, तो सक्षम प्राधिकारियों द्वारा उपयुक्त मानी गयी रीति से उचित कार्यवाही के लिए बाध्य होंगे।

Your failure in this regard would be viewed very seriously as the Bank faces the risk of being overtaken by other banks if we don't perform this year as well.

इस संबंध में आपकी असफलता को अति गम्भीरतापूर्वक लिया जाएगा क्योंकि यदि हमने इस वर्ष अच्छा निष्पादन नहीं दिया तो बैंक को अन्य बैंकों द्वारा अपने अधिकार में लिए जाने के खतरे का सामना करना पड़ सकता है।

Press the lever top to its right with the right hand thumb.

लिवर टाप को आपके सीधे अंगूठे से सीधे तरफ कीजिए।

Attach due importance to these points, as the failure of one branch will nullify the growth of other branches.

उपर्युक्त बिन्दुओं को उचित महत्व दें चूंकि एक शाखा के असफल होने पर दूसरी शाखा की वृद्धि निष्फल की जाती है।

Before writing to Head office, branches should refer the Manuals and Circulars.

मुख्य कार्यालय को लिखने के पहले शाखाएं मैनुअल और परिपत्रों का संदर्भ लें।

Armed guard shall watch the movement of the staff.

सशस्त्र रक्षक को कर्मचारियों के चाल-चलन पर निगरानी रखनी चाहिए।

No refinance support is available from NABARD for Combine Harvesters.

संयुक्त रूप से कृषि करने वालों के लिए रा.कृ.ग्रा. वि. बैं. से पुनर्वित्त सहायता उपलब्ध नहीं होती।

Consequent delays in the time schedules at our end.

परिणामस्वरूप हमारे पक्ष में समय-सूची में विलम्ब होता है।

He shall wear the prescribed uniform smartly and correctly while on duty.

उसे काम पर रहते वक्त निर्दिष्ट पहनावे को सही और तरीके से पहने रहना चाहिए।

The circular may be brought to the notice of all the officers working in your branch/office.

यह परिपत्र आपकी शाखा/कार्यालय में कार्यरत सभी अधिकारियों के ध्यान में लाया जा सकता है।

Possibilities of obtaining long term lease of Govt. lands and taks to utilise them for in land fish culture should be explored and fish hatchery schemes could be prepared.

सरकारी भूमि एवं तालाबों दीर्घावधि के लिए पट्टे पर लेने की सम्भावना है ताकि उनका उपयोग अन्तर्देशीय मछली पालन की खोज के लिए किया जा सके तथा मछली मंडल उत्पत्ति शाला तैयार की जा सके।

Industrial effluents should not be allowed to be mixed or used. The precaution to be taken in case of sewage water fish culture is that the oxygenisation of ponds and the carbon-dioxide level are to be regularly monitored.

औद्योगिक बहिः पवाह को मिश्रित होने या उपयोग करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। गंदा पानी मत्स्य पालन के मामले में ऐसा पूर्वोपाय किया जाना चाहिए कि तालाब में आक्सीजनीकरण कार्बनडाइक्साइड के स्तरों का नियमित रूप से अनुवर्तन करना चाहिए।

इन उदाहरणों पर नजर डालने से बहुत- कुछ स्पष्ट हो गया होगा कि अनुवाद की वास्तविक समस्या क्या है और अनुवाद के नाम पर किस तरह हिन्दी की हत्या की जा रही है।

इतना ही नहीं, वाक्य-रचना, व्याकरण एवं अर्थ-सम्प्रेषण की दृष्टि से भी यह तथाकथित हिन्दी नितान्त अस्वाभाविक होती है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं--

"यह हमारे ध्यान में लाया गया है कि कुछ स्टाफ-सदस्य खासकर कर्मचारी संघ और अधिकारियों के संघ के प्रतिनिधियां शाखा प्रबन्धकों/विभागाध्यक्षों के पूर्वानुमति प्राप्त करने के बिना ही कार्यालय घंटों की समाप्ति के पहले कार्यालय छोड़कर चल जा रहे हैं।"

"यह निर्णय लिया गया है कि इस संबंध में शाखाओं के निष्पादन को नजदीक से मानीटर किया जाने तथा इन विवरणियों के प्रस्तुतीकरण में किसी प्रकार के विलम्ब या चूक को गम्भीरता से लिया जाएगा।"

"हमें अंचल प्रबन्धकों के पद को वेतनमान V से वेतनमान VI को उन्नत कर दिया गया है।"

"कुल आय 12.76 से 12.00 को घट गई है। ऐसी स्थिति को चालू नहीं रखा जा सकता।"

"यह मालूम हुआ कि सेलम में परिचालक के एजेंट के पास जो 150 पैकेजों रहने चाहिए के बदले में केवल 10 ही परेषक के थे।"

"कार्यक्रम का लक्ष्य है कि, लक्षित समूह के परिवारों को इमदाद और संस्थागत ऋण निहित पैकेज सहायता, द्वारा जहां पर आवश्यक हो, कार्यशील पूंजी को सम्मिलित करते हुए आय उत्पादन आस्तियां प्रदान करने के द्वारा, निर्धारित उद्देश्य को प्राप्त करना।"

"छुट्टी किराया रियायत की अन्तर्गत उठाए गए स्थानीय पर्यटन प्रभारों की प्रतिपूर्ति उस शर्त पर की जाएगी कि वे अपनी छुट्टी किराया रियायत के एक भाग के रूप में राज्य/केन्द्रीय सरकार/भा.प.वि.नि./प्रत्यायित अभिकरणों द्वारा आयोजित यात्राओं में भाग लेते हैं।"

"कृपया तदनुसार आपके रिकार्डों में नोट कर लें।"

"ऐसी खरीदियों की रिपोर्ट उच्चाधिकारियों के पास दी जाती है।"

"जब तक इन कॉलमों सहित आवेदन-पत्र मुद्रित करके आपूर्तित न किए जाएं, शाखाएं इन विवरणों को क्रमशः उधारकर्ता व गारंटीकर्ता के नामों के नीचे प्राप्त कर सकती है।"

इस प्रकार के वाक्यों का प्रयोग कहां तक उचित है, इस बारे में आप जरा विचार करके देखें। आज सरकारी कार्यालयों में जो अनुवाद किया जा रहा है वह प्रायः अंग्रेजी से हिन्दी में किया जाता है। अंग्रेजी और हिन्दी में कोई समानता नहीं है। इसलिए अंग्रेजी वाक्यों का शब्दशः अनुवाद कर दिया जाने पर नई भाषा (?) बिल्कुल अटपटी, अस्वाभाविक, कृत्रिम, अबोधगम्य बन जाती है। आज हिन्दी पर क्लिष्टता, दुरूहता, जटिलता, अस्पष्टता, कठिनता, अटपटेपन आदि के जो विभिन्न आरोप लगाए जाते हैं, वे इस 'आदर्श अनुवाद' के कारण ही लगाए जाते हैं। यह 'आदर्श अनुवाद' ही राजभाषा-प्रयोग की प्रगति में मुख्य बाधा बना हुआ है। कौन पढ़ेगा इस तथाकथित हिन्दी को और क्या समझ पाएगा इसे पढ़कर भी! शुक्र है, अंग्रेजी पाठ साथ रहता है, नहीं तो न जाने कितने लोगों का कल्याण हो गया होता इस अनुवाद के भरोसे।

आज कार्यालयों में जो हिन्दी देखने को मिलती है, उस पर अंग्रेजी की गंदी छाप साफ झलकती है। यदि अंग्रेजी के प्रभाव से मुक्त होकर अनुवाद करने का प्रयास किया जाए तो कम से कम हिन्दी जानने वाले व्यक्तियों द्वारा किए जाने वाले अनुवाद में तो कुछ स्वाभाविकता आ ही सकती है। आप अनुवादक/हिन्दी अधिकारी The को छोड़कर अंग्रेजी के प्रत्येक शब्द का अनुवाद करने के साथ-साथ हिन्दी का वाक्य भी अंग्रेजी वाक्य की नकल पर बनाता है। उसे यह ध्यान नहीं रहता कि अंग्रेजी में it और there का प्रयोग अधिकांशतः यों ही किया जाता है, अतः इनके अनुवाद की कोई आवश्यकता नहीं होती। जैसे It is raining, it is dark, there is no light, there were thirty boys in the room इसी प्रकार अंग्रेजी में a, an. the आदि article हैं, हिन्दी में नहीं हैं। a, an का अनुवाद 'एक' वह (अनुवादक) अवश्य करता है। the का अनुवाद वह नहीं कर पाता, यह बात उसे खटकती रहती है। इसी प्रकार hereby, thereby एतद्द्वारा, तद्द्वारा जब तक वह न लिख ले, उसे शांति नहीं मिलती। अंग्रेजी के प्रयोग a sum of के लिए 'रु. 5/- की एक राशि' लिखना वह अपना नैतिक कर्त्तव्य मानता है। a total of Rs. 7 million की जगह 'रु. 7 मिलियन का एक योग' उसे अटपटा नहीं लगता। अंग्रेजी के वाक्य में 10 शब्द हों तो उसका भरसक प्रयास होता है कि हिन्दी के वाक्य में भी 10 ही शब्द हों। अंग्रेजी के Indirect Speech का वह हिन्दी में ज्यों का त्यों 'अनुवाद' करके गद्‌गद् हो उठता है। उसे यह ध्यान नहीं रहता कि हिन्दी में Indirect Speech नहीं होता, परिणामतः उसका वह तथाकथित अनुवाद हिन्दी की प्रकृति के अनुरूप नहीं होता है।

वस्तुतः आज आम अनुवाद की मुख्य विशेषता यह देखने में आती है कि एक भाषा के शब्दों को दूसरी भाषा के शब्दों द्वारा बदल दिया जाता है और यह 'आप्रेशन' करते समय लक्ष्य भाषा के व्याकरण और उसकी प्रकृति को नजरअंदाज कर दिया जाता है। इस प्रकार जो माल तैयार किया जाता है, वह अधिकांशतः किसी काम का नहीं होता है। ऐसे ईमानदार अनुवादकों के लिए take का अर्थ 'लेना' और may का अर्थ 'सकना' ही हो सकता है, अन्य कुछ नहीं। इसीलिए तो वह necessary action may be taken के लिए 'आवश्यक कार्यवाही ली जा सकती है' लिखना उचित मानता है। बानगी के लिए निम्नलिखित उदाहरण दृष्टव्य है :—

'The present annual indent has been classified into (a)Security items, (b) Books/Registers, (c) Forms and (d) Sundry items (Vide Assistant General Manager (Exp.) letter dated 15-09-88 and Circular No.-19/89 dated 29-01-89 and Circular No.85/89 dated 25.04.89."

"वर्तमान वार्षिक इंडेन्ट को निम्नवत वर्गीकृत किया गया है— (क) प्रतिभूति मदें, (ख) बही/रजिस्टर (ग) फार्म व (घ) विविध मदें यथा सहायक महाप्रबंधक (व्यय) के पत्र दिनांक 15-09-88 और परिपत्र सं. 19/89 दिनांक 29-01-89 तथा परिपत्र संख्या 85/89 दिनांक 25-04-89 के जरिए।" क्या यह हिन्दी है? क्या इसका कोई अर्थ है? क्या यह भाषा के क्षेत्र में प्रदूषण नहीं? इस महाकृत्य से हिन्दी का कितना 'हित' हो रहा है, यह आप खुद ही सोच सकते हैं। ऐसे आदर्श नमूने आज हर विभाग में सहज सुलभ हैं। भारतीय दंड संहिता की धारा 420 का अनुवाद भी देखते ही बनता है—

The Indian Penal Code

Section *420*

"Where cheats an thereby dishonestly induces the person deceived to deliver any property to any person, or to make, alter or destroy the whole or any part of valuable security, or anything which is signed or sealed, and which is capable of being converted into a valuable security, shall be punished with imprsionment of eigher description for a term which may extend to serven years, and shall also be liable to fine."

"यदि कोई व्यक्ति छल करता है और तद्द्वारा उस व्यक्ति को जिसे धोखा दिया गया बेईमानी से उत्प्रेरित करता है कि वह कोई संपत्ति किसी व्यक्ति को परिदत्त कर दे या किसी मूल्यवान प्रतिभूति को या किसी वस्तु को जो हस्ताक्षरित या मुद्राँकित है और जो मूल्यवान में संपरिवर्तित किए जाने योग्य है, पूर्णतः या अंशतः रच दे, परिवर्तित कर दे या नष्ट कर दे तो उसे दोनों में से किसी भांति के कारावास से, जिसकी अवधि सात वर्ष तक की हो सकेगी, दंडित किया जाएगा और वह जुर्माने से भी दंडनीय होगा।"

इस सम्बन्ध में एक परिपत्र के भाषा-सौष्ठव का उल्लेख भी प्रासंगिक जान पड़ता है। देखिए एक झलक--

"Reg. Fixing of 2 specific days in a month for disbursement of loans to the Farmers and other Priority Sector beneficiaries.

"Through a separate communication with Reserve Bank of India, Bombay, it has been clarified that disbursement of loans in the above referred cases have to be made only on 2 days fixed for this purpose in the month."

"विषय :--किसानों एवं अन्य प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र के लाभग्रह व्यक्तियों को ऋण वितरण के लिए महीने में दो दिनों का निर्धारित करना।

"भारतीय रिजर्व बैंक, बम्बई के एक पत्र से स्पष्ट किया गया है कि उक्त मामलों में ऋण का वितरण महीने में निर्धारित केवल दो दिनों पर ही किया जाए।"

इस प्रकार देखते हैं कि आज सर्वत्र अनुवाद की भाषा की भरमार है। यहां तक कि आकाशवाणी से प्रसारित समाचारों की भाषा भी इस रोग से अछूती नहीं रह गई है। चलते-चलते एक नजर आकाशवाणी की भाषा पर भी --

16-2-87 को रात्रि 8.45 पर आकाशवाणी से समाचार प्रसारित करते हुए सुनाया गया कि आज जम्मू में विश्वविद्यालय के दीक्षित समारोह में श्री जैल सिंह (तत्कालीन राष्ट्रपति) ने कहा--"विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों में घृणा के बीज बोने की अनुमति नहीं दी जाएगी।"

क्या घृणा अनुमति लेकर फैलायी जाती है? स्पष्ट है कि No body will be allowed का शब्दशः अनुवाद करके अनुमति शब्द रखा गया है।

आकाशवाणी से प्रसारित समाचारों में अक्सर कहा जाता है--"विपक्ष ने वाक आउट किया', 'बहिर्गमन किया', विपक्ष के सदस्य उठकर बाहर चले गए'। 'वाक आउट किया' और बहिर्गमन किया' हिन्दी की प्रकृति के अनुरूप नहीं हैं।

हिन्दी अखबारों की भाषा भी दिन प्रति-दिन स्वाभाविकता से दूर हटती जा रही है। वह भी महज अनुवाद की भाषा बनती जा रही है और अशुद्धियों की दृष्टि से काफी समृद्ध भी। एक नजर इधर भी--

'लोकदल के राष्ट्रीय अध्यक्ष (चौ. चरण सिंह) के पुत्र श्री अजीत सिंह ने कहा बताया कि "उनके पिता मूर्छावस्था में कतिपय नहीं हैं।"

--नवभारत टाइम्स, 6 फरवरी, 1987

इसी प्रकार--

हरियाणा के "सिंचाई व ऊर्जा मंत्री चौधरी वीरेन्द्र सिंह ने चौधरी भजन लाल और चौधरी बंसीलाल को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि बस हत्याकांड से बिल्ली थैले से बाहर आ गई है।"

--पंजाब केसरी, 14 जुलाई, 1987

अशुद्धियों की दृष्टि से हिंदी के अखबारों में "पंजाब केसरी" का स्थान सर्वोपरि दिखलाई देता है।

इस विवेचन से आप समझ गए होंगे कि अनुवाद की मूल समस्या क्या है। इसके घातक परिणाम भी आपके सामने हैं। सर्वविदित हैं कि आज किसी भी पद के लिए चयन करते समय सर्वप्रथम 'योग्यता' की बलि चढ़ाई जाती है क्योंकि आज की एकमात्र आवाज है--'भ्रष्टाचारमेव जयते।'

अंत में यही कहा जा सकता है कि अटपटी, अस्पष्ट, दुरुह, भ्रामक, कृत्रिम हिंदी-लेखन के मुख्य कारण ये हैं--

विषय की पर्याप्त जानकारी का अभाव,
अंग्रेजी वाक्य-विन्यास का जबर्दस्त प्रभाव,
अंग्रेजी से हिंदी में शब्दशः अनुवाद,
अंग्रेजी/हिंदी का अपर्याप्त ज्ञान

अपनी बात को सहज रूप में व्यक्त कर सकने की योग्यता का अभाव, इत्यादि।

यही हैं अनुवाद की मुख्य समस्याएं।

भाषा का सबसे बड़ा गुण है स्वाभाविकता और सबसे बड़ा दोष है कृत्रिमता। आज जो अनुवाद की हिंदी हम देखते हैं, वह प्रायः कृत्रिमता की दुर्गंध से भरी होती है।

शाब्दिक समाज का विकास

☐ श्यामसुन्दर राव*

जनसंचार का महत्व

भाषा मनुष्य का सर्व प्रमुख अंग है। नागरिक जीवन एवं सभ्य समाज के लिए भाषा और जन संचार का महत्व उतना ही है जितना कि प्रत्येक मनुष्य के लिए अपना मस्तिष्क एवं स्नायु मंडल के साथ है। अनादि काल से मनुष्य का यह प्रयास रहा है कि वह अपने सामुदायिक जीवन को सुदृढ़ एवं संपर्कगत बनाए रखें जिस से व्यक्ति एवं समाज का पूर्ण रूप से विकास हो और उस समाज की अपनी एक विशिष्टिता बनी रहे।

समाज और व्यक्ति के विकास के लिए दो विषयों में कुशलता का प्रमुख स्थान रहा है-(1) संचार व सूचना प्रसारण (2) लिपिबद्धता व अभिलेखन। इन दोनों विषयों में मनुष्य ने कब से कुशलता प्राप्त की है उसका निर्धारण करना उतना आसान नहीं है क्योंकि इसके बारे में कई मत प्रचार में हैं। हां, इतना कह सकते हैं कि रचना एवं अभिलेखन के ताल या भूर्ज-पत्रों की पांडुलिपियां और उनका ग्रंथ बनाने की विधि बहुत प्राचीनकाल में ही काफी प्रचलित थी। इतना ही नहीं, रचना एवं सूचना प्रसारण का महत्व रोमन काल (समय) से ही जानकारी थी। रोमन कालीन इतिहासकार प्लिनी महोदय के अनुसार अभिलेखन व रचना की कुशलता सभ्य समाज एवं इतिहास के लिए एक प्रमुख तथा मूलभूत इस सभ्य युग का स्रोत रहा है। अतः लेखन तथा लिखित शब्द या लिपि एक महान जीवन चर्या, प्रण शक्ति, आजीवन संपदा, एक अटूट जीवनधारा बन गया है। इस की (लिपि एवं रचना कौशल) अविष्कार एवं प्रतिभा से न केवल एक दूसरे से बल्कि एक पीढ़ी से दूसरे और आगे कई पीढ़ियों तक के लिए किसी भी प्रकार का विचार, मत, धारणाएं, राग और मनोभावों को लिपिबद्ध करके भाषा और लिपि को और व्यवस्था और दूसरी ओर व्यवहार का रूप लिया। इस प्रकार भाषा और लिपि किसी व्यक्ति की नहीं वरन् एक सामाजिक वस्तु बन चुकी है जिसे अग्रज करना असंभव हैं। क्योंकि भाषा और लिपि हर व्यक्ति की और समाज की एक जीवन प्रमाण है और इस के ऊपर ही सारा ज्ञान, विज्ञान, विधि, विवेचन, साहित्य और रचना, संस्कृति, नागरिकता और इतिहास निर्भर है।

भाषा, लिपि और लेखन मुद्रण, विकास, आधुनिक इलैक्ट्रानिक उपकरण (रेडियो, टेलीविजन, उपग्रह माध्यम), कंप्यूटर मुद्रण और प्रसारण, मनुष्य की भाषा व्यवस्था और व्यवहार के विकास के कुछ असाधारण एवं प्रशंसनीयता के केवल उदाहरण मात्र हैं, जो जीवन का रंग-ढंग ही बदल दिया। लेजर संचार प्रकाश, तंत्रिका, व्यापक या बृहत संघटित परिपथ एव अंतरिक्ष मंच किसी वैज्ञानिक उपन्यास की काल्पनिक वस्तु नहीं बल्कि सत्य द्योतक सिद्ध हुए हैं। इन बातों से यह पुष्टि होती है कि मनुष्य की चेतना एव मानसिक सीमा को नापा नहीं जा सकता। अब एक नजर भाषा एवं संचार की उत्पत्ति पर है।

लिपि की उत्पत्ति एवं विकास

श्री जैक ल्यूहन के मतानुसार सभ्य समाज के विकास में चार अवस्थाएं सामान्य रूप से दिखाई देती हैं —(1) आदिवासी समाज, (2) लिपिकीय समाज, (3) मुद्रांकन समाज तथा उच्च प्रौद्योगिकी समाज। आदिवासी या प्रागैतिहासिक मनुष्य को लिखने के बारे में जानकारी नहीं थी। आज भी कुछ ऐसे आदिवासी जातियां विश्व के कई स्थानों पर पाई जाती हैं, जो भारत में भी मौजूद हैं, जिन्हें लिखने की आवश्यकता के बारे में जानकारी नहीं है क्योंकि इनका अपना समाज, संस्कृति तथा भौगोलिक और प्राकृतिक परिभितियां ह।

जैसे-जैसे मनुष्य आदिवासी सभ्यता से ऊंचा उठा, विशेषकर मध्य एशिया, चीन, एवं मिस्र और प्रांतों में, वह प्राकृतिक, अलौकिक और दैनिक जीवन के बारे में विचार करने लगा तथा अपना विचार, अनुमान और भावों को व्यक्त करने हेतु अपरिष्कृत या अशोधित प्रकार के आकारों को उपयोग में लाने जिसके नमूने आप को पुरातत्व व अवशेषों में देखने को मिलेंगे और आज भी कुछ आदिवासी खुद में अपने रोज व्यवहार में उन चिन्नों एव आकृतियों को इस्तेमाल करने की प्रथा विद्यमान हैं। स्काईथियन (दक्षिणी रूस के प्रचीनकाल निवासी) देश के प्रधान ने एक अवसर पर फारसी प्रधान को एक चित्रलिपि सदेश प्रेषित किया जिस के ऊपर एक पक्षी, चूहा, मंजूक और पांच बाण (तीर) के चिन्न अंकित थे। इस चित्रलिपि के द्वारा फारसी लोगों को यह संदेह प्रेषित किया कि "वे (फारसी) उनकी तरह (दक्षिणी रूसी) पक्षी जैसे उड़ सकते हैं, चूहे की तरह भूमिगत छुप सकते हैं, मेढ़क

*सी 100, अशोका इन्कलेव, सराय, अमरनगर, फरीदाबाद-121003(हरि.

जैसे कीचड़, दलदल से में उछल सकते हैं अथवा वे (फारसी) उनके साथ युद्ध का विचार छोड़ दें अन्यथा वे अपने तीरों से मार देंगे"।

लिपि और लेखन की प्रगति

आजकल जो लिपि लिखने में प्रयोग करते हैं वह मौखिक या उच्चारित शब्द या ध्वनि का लिखित अनुरूप है, जो वर्णानुक्रमणिक पद्धति कहलाती है अथवा इसे वर्णमाला कहते हैं। इसके अलावा कुछ ऐसी लिपियां हैं जो वर्णानुक्रम हीन हैं जिनमें चित्रलिपि सम्मिलित हैं जो आधुनिक युग के लिए अनपेक्षित हैं।

वर्णानुक्रमणिक पद्धति के विकास के पूर्व मनुष्य अपने विचारों और भावों को ध्वनि संकेत द्वारा सूचित करता था। जैसे जैसे मनुष्य प्रगतिशील होता गया वैसे-वैसे वह अपने विचारों और भावों को व्यक्त करने के लिए नई-नई पद्धतियों को प्रयोग में लाने लगा। जैसे कि स्मृति सहायक गांठ, चिन्ह संकेत आदि प्रयोग करने लगा। मिस्र देश में एक और पद्धति प्रयोग में आयी जो हिअरोगिलिफिक्स नाम से काफी प्रसिद्ध हुई, जिसमें चित्रलिपि और संकेतों का मिश्रण था और इस पद्धति को विद्वानों ने भविष्य वर्णमाला का अग्रदूत बताया है। मिस्र वासियों ने इस चित्र-संकेत लिपि को अंकित करने के लिए पेपाइरस का तल प्रयोग में लाए जिसकी वजह से आधुनिक कागज का नाम अंग्रेजी भाषा में 'पेपर' पड़ा, लेकिन कागज का नाम अंग्रेजी भाषा में 'पेप' पड़ा, लेकिन कागज बनाने की आधुनिक विधि चीन की देन है जो यूरोपीय देशों की 10 ई. शताब्दी खोज की काली स्याही (220 ई.रा.) जिसे "इंडियन इंक" भी कहते हैं क्योंकि यह स्याही बनाने की विधि भारत से होकर यूरोपीय देशों में फैली।

वर्णमाला एवं भाषा विकास

जितना पाश्चात्य वर्णमालाएं हैं उन सब ने 3600 वर्ष पूर्व मध्य एशिया में प्रचलित उत्तरी सेमेटिक वर्णमाला से जन्म लिया। इस वर्णक्रम के शब्द एवं उच्चारण वही थ जो दैनिक जीवन से संबंध रखते थे। इस वर्णमाला का पहला अक्षर चिन्ह बैल का सिर (अलेफ) और दूसरा चिन्ह घर (बेंत) जिस से अंग्रेजी का वर्णमाला शब्द "अल्फाबेट" ने जन्म लिया। उत्तरी सेमेटिक वर्णमाला से दो मुख्य शाखाओं का प्रादुर्भाव हुआ–केनानाईट तथा आरामाईक समुदाय।

सुमेरी लोग 3000 ई. पूर्व से ही पत्थरों को श्रेणी से काटकर चित्रांकित करते थे और लिपि या वर्णमालात्मक लिपि लगभग ई.पू. 2000–1500 ई.पू. में सीरिया में उत्पन्न हुई।

कीलाक्षर लिमि बेसिलोनी या, अस्सीरिया, पर्शिया में लगभग 1500 ई. पूर्व में काफी प्रचलित थी।

चीनियों ने कछुआ के सीप, जानवरों की हड्डियों पर कांस्य; संगयशब और चीनी मिट्टी बर्तनों पर और बांस पर आकृति बनाते थे। लगभग 712 ई. का काष्ठचित्रों को चीन ने ही विकसित किया।

फोनीशियनों (सिरिया राज्य का एक भाग) की केननाई लिपि को आगे विकास हुआ जिसे यूनानियों ने 1000 ई. वर्ष पहले अपनाया और उस लिपि में स्वर जोड़े। लगभग 700 ई. पर्व रोमियों ने उससे इस यूनानी लिपि को कतिपय संस्कार करके लेकिन वर्णमाला को जन्म दिया जो आज भी "ब्लेक लेटर्स या गोथिक" वर्णमाला के नाम से प्रसिद्ध है। और दूसरी शब्द "आरामाईक" से अरबी एवं यहुदी या हिब्रयू वर्णमालाएं जन्मी। इस तरह फोनी शियनों ने वोझिल हिआरोलाफिक्स को सुधार किए चिन्हों और संकेतों का ध्वन्यात्मक बल दिया। उत्तरोत्तर, रोमी, यूनानी एवं आंगलों सैक्स संशोधन एवं परिष्कार करते करते आज की व्यावहारिक आंग्ल वर्णमाला को जन्म दिया।

भारतीय वर्णमाला

भारतीय मान्यता यह रही है कि भाषा (वाणी) और विज्ञान ईश्वर की देन है। दोनों का आपस में घनिष्ठ संपर्क है। परन्तु लिपि की समस्या काफी जटिल हैं क्योंकि लिपि मानवकृत है। भारतीय भाषाओं की वर्णमाला की उत्पत्ति एवं विकास अपने आप में व्यापक इतिवृत्त है। अतएव इस इतिवृत्ति की सिर्फ निम्न चार उप वर्गों में संक्षिप्त रूप रेखा देकर भी सीमित रखा है। भारतीय लिपियों की एक खास बात यह है कि इनका अविष्कार उच्चारण करते समय मुख, ओष्ठों तथा दांतों का रूप आकृति नकल उतार कर किया गया (डा. फतेहसिंह, भूतपूर्व संचालक, पुरातत्व शोध संस्थान, जोधपुर)।

(1) ब्राह्मी लिपि, जो दोनों दिशाओं में (बाएं से दाएं, दाएं से बाएं) लिखी जा सकती थी, जो वैदिक काल के आस-पास प्रयोग में थीं। सिंधी (दोनों दिशाओं में लिखी जा सकती थी) लिपि इधर ब्राह्मी से भी और उधर मिस्र की हियरी गिलफिक्स से भी और सुमेर की कीलाक्षर से भी संबंधित है––अतएव डा. फतेह सिंह का उद्देश्य है कि मिस्री लिपि, सुमेरी लिपि, मेसेपतोमिया तथा सेमेटिक सिंधी लिपि, मेसपतोमिया तथा सेमेटिक सिंधी लिपियों सब वैदिक भाषा के आधार पर बनी हैं। धीरे-धीरे ब्राहमी लिपि एक तरफ भारतीय भाषाओं में और दूसरे तरफ याहुदी या हिब्रू और अरबी में चली गयी। ब्राह्मी लिपि का समय 600 ई.पूर्व से लेकर 400 ई.पू. बताया जाता है। ब्राह्मी लिपि से आठ भिन्न वर्षों का विकास हुआ है।

(2) उत्तर भारत की भाषाएं--400 ई.पू. से लेकर 1400 ई.पू. तक काफी विकास हुआ। गुप्त कालीन समय में ब्राह्मी एवं भारतीय लिपि का भी काफी विकास हुआ जिनका प्रभाव मध्य एशियाई लिपियों पर भी पड़ा और तिब्बत की वर्णमाला पर भी और उसी समय सिद्धमातृका लिपि का विकास हुआ जो आगे चल कर देवनागरी लिपि में विलीन हो गई जो संस्कृत और हिन्दी तथा अन्य भारतीय लिपियों में प्रयोग होता है।

(3) भारत की कई भाषाओं की लिपियां 1400 ई.पू. से काफी और विकास हुआ। जैसे बंगाली, आसामी, मराठी, गुजराती, उड़िया, और गुरुमुखी, जो लामड़ा वर्ग स परिष्कृत होकर बनी है, विकास हुआ।

(4) दक्षिण भारत की भाषाएं (तेलुगु, मलयालम, कन्नड़ तमिल) और सिंघल लिपि का लगभग 900 ई.पू. से विकास हुआ लेकिन ये सब भाषाएं भी सिद्ध मातृका देवानागरी लिपियों से काफी संबंध रखती हैं।

भारती की देवनागरी लिपि दुनिया के सर्वप्रथम सुपरिष्कृत लिपि है जिसका विकास स्वयंकृत है। भारतीय एवं विदेशी विद्वानों का मत यह है कि ब्राह्मी लिपि का विकास आर्यावर्त (भारत) में किसी दूसरी लिपि के प्रभाव के बिना, स्वतंत्र रूप से हुआ है)। देवनागरी शब्द उसी नाम का एक 'धार्मिक यंत्र' से संबंध रखता है। देवनागरी इतनी सुन्दर, स्पष्ट परिपूर्ण और सरल लिपि है कि एशियाटिक सोसाइटी के संस्थापक श्री विलियम जोन्स ने इसकी प्रशंसा में कहा है कि "संस्कृत भाषा की प्राचीनता कुछ भी क्यों न हों, यह अद्भुत (उत्कृष्ट) बनावट वाली है। यह ग्रीक (यूनानी) भाषा की अपेक्षा अधिक परिपूर्ण हैं, और लेटिन भाषा की अपेक्षा अधिक विपुल और दोनों की तुलना में अधिक शुद्ध संस्कार वाली हैं।"

इस तरह प्राचीन मध्य एशियाई देश, भारत और चीन से सारी मानव जाति के संचार/प्रचार के लिए व्यावहारिक लिपि, भाषा, कागज और स्याही का विस्तार किया जिसके लिए सारा विश्व इसका आभारी है।

श्रद्धांजलि

हिन्दी के सुप्रसिद्ध भाषा विज्ञानी डॉ. भोलानाथ तिवारी तथा हिन्दीसेवी श्री हरिशंकर सम्पादक, हिंदी शिक्षक तथा पूर्व प्रधानमंत्री हिंदी विद्यापीठ, बम्बई के आकस्मिक निधन से हिंदी की अपूर्णीय क्षति हुई है।

राजभाषा परिवार की इन दोनों दिवंगत हिंदी प्रेमियों की स्मृति को श्रद्धा नमन।

निर्माण कार्यों में संसाधन प्रबंधन

(रिसोर्स मैनेजमेंट इन कंस्ट्रक्शन)

☐ पी. जी. धरवाड़कर*

भूतपूर्व अध्यक्ष-सह-प्रबंधकनिदेशक, एन बी वी सी

अनुवाद : सर्वश्री वे शेषण, पार्थ मुखर्जी आदि

निर्माण कार्य कई विभिन्न विभागों से संबंध रखता है जैसे यांत्रिक (मैकेनिकल), विद्युत (इलैक्ट्रिकल), रासायनिक (कैमिकल), पर्यावरण (इन्वायरमेंट) और वास्तुशिल्पी इत्यादि। इन विभागों के परस्पर सहयोग से ही निर्माण परियोजना सफल होती है। आजकल जबकि साधन सीमित हैं, उपलब्ध साधनों का यथासाध्य (समुचित) उपयोग बहुत महत्त्वपूर्ण है। निर्माण बजट संपूर्ण राष्ट्रीय बजट का 50 प्रतिशत है और निर्माण क्रियाकलाप कुल राष्ट्रीय उत्पादन (ग्रास जीएनपी) में 10 प्रतिशत योगदान देते है। इसके अलावा देश में वर्तमान मजदूर संख्या का 10 से 15 प्रतिशत भाग निर्माण कार्य और उससे संबंधित कार्यकलापों से अपनी रोजी-रोटी कमाता है। इतने पर भी निर्माण उद्योग को वैज्ञानिक एवं सुव्यवस्थित ढंग से विकसित करने के लिए प्रयास नहीं किया जा रहा है।

संसाधन प्रबंधन न केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपितु विश्व स्तर पर भी एक गंभीर समस्या के रूप में है जिसके लिए GATT जैसे मंच का आयोजन किया गया है। इस मंच से पेचीदा माडलिंग (Intricate modeling) द्वारा सर्वोत्तम हल निकाले जाते हैं। आधुनिक निर्माण परिभाषा में निर्माण प्रबंधन में सरलता लाने के लिए (Keep it stupid simple) शब्द का प्रयोग करते हैं और मैं अपने इस लेख में भी इसी सरलता को अपनाने की कोशिश करूंगा।

प्रबंधन का वर्तमान स्वरूप पिछली शताब्दी में औद्योगिक क्रांति के समय इंग्लैंड के कारखानों द्वारा एक बड़ी सुनियोजित उत्पादन प्रणाली के रूप में उभरा। निस्संदेह इसके द्वारा वर्षों से विज्ञान और तकनीकी उन्नति और विकास की आवश्यकताओं को प्रोत्साहन मिला है। परन्तु वास्तविक महत्त्व इसे तब मिला जब जटिल समस्याओं के समाधान हेतु तेजीपन, कम लागत और दक्षता प्राप्ति में इसकी भूमिका आंकी गई जो आधुनिक परियोजनाओं के निर्माण कार्यों से अधिक अच्छी तरह से जुड़ी हुई है।

यद्यपि कुछ लोग इस बात से सहमत नहीं होंगे कि एक "अभियंता" होना एक "प्रबंधक" होने की तैयारी भर है, लेकिन इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि इंजीनियरिंग कार्यों का मूल नियम एक अच्छे प्रबंधन की ही देन है। अधिकांश विश्वविद्यालयों में इंजीनियरिंग विषयों में साधनों के बारे में अच्छा ज्ञान दिया जाता है। फिर भी एक इंजीनियर को अच्छा प्रशिक्षण और अच्छा अनुभव चाहिए ताकि परियोजनाओं के निर्माण कार्य में वह अच्छे से अच्छा कार्य करने में प्रभावशाली रहे। इसका अर्थ यह है कि उस अपनी समस्याओं के समाधान के लिए स्वयं ही नए विचार और युक्तियां आदि निकालने में सक्षम होना। यह भी एक तथ्य है कि अभियंता प्रशिक्षण के बाद भी स्वयंसिद्ध प्रबंधक नहीं हो जाता। उसे अभियांत्रिक (इंजीनियरिंग) शिक्षण के बाद भी कार्यक्षेत्र में प्रशिक्षण एवं अनुभव की जरूरत होती है ताकि वह निर्माण परियोजना के वातावरण में सफल हो सके। इसके लिए उसे निपुणता, विचार परिपक्वता, लक्ष्य, धारणा एवं सिद्धांत को विकसित करना चाहिए। एक बात जरूर ध्यान में रखनी चाहिए कि परियोजना निर्माण प्रबंधन अन्य प्रबंधों से अधिक कठिन है। यह अपने आप में जटिल, चुनौतीपूर्ण व जोखिम भरा व्यवसाय है। इस काम में सुरक्षा और जांच को प्राथमिकता दी जाती है। नेतृत्व, संचारण और प्रौद्योगिकी में दक्षता इस प्रबंधन के आधार स्तम्भ हैं। प्रबंधक में सही और स्वतंत्र निर्णय लेने की दक्षता होनी चाहिए ताकि औद्योगिक क्षेत्र में हो रही अवांछनीय गतिविधियों का मुकाबला कर सके। निर्माण प्रबंधक को सूक्ष्म योजना (metifulous planning) काम में, विस्तृत रूपरेखा व उचित कार्यसारणी बनाने में और समय-समय पर नियंत्रण एवं मानिटरी करने में सक्षम होना चाहिए। उन्हें लगभग हर परियोजना में उत्पन्न होने वाली जटिल स्थितियों को सुलझाना पड़ता है। उनमें परियोजना को निर्धारित समय पर और सीमित लागत के अंदर पूरा करने के लिए उच्च स्तर की प्रबंधन दक्षता, व्यावसायिक दृष्टिकोण व उपलब्ध साधनों के समुचित उपयोग की दक्षता, होनी चाहिए। किसी भी

*अध्यक्ष, इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियर्स

निर्माण परियोजनाओं में 5 साधन महत्वपूर्ण होते हैं। इन्हीं पर निर्माण परियोजना की सफलता निर्भर करती है, वे हैं :–

कर्मचारी, सामग्री, यंत्र, आर्थिक साधन और समय।

अत्यधिक जटिल समस्याओं की स्थिति में परियोजना को सफलतापूर्वक संपन्न करने के लिए प्रौद्योगिकी प्रबंधन व मानव व्यवहार को ध्यान में रखते हुए उपलब्ध औजार, साधन, उपकरण और कार्य प्रणाली का गुणकारी उपयोग करना चाहिए।

मानव अत्यंत महत्वपूर्ण संसाधन है जिसके प्रभावी उपयोग के लिए संस्था में निम्नलिखित विशिष्टताएं पाई जानी चाहिएं :

निर्माण संस्था को अपनी लक्ष्य प्राप्ति के लिए और अपने मानव संसाधन का प्रभावशाली उपयोग करने के लिए, अपने संस्थान में सामूहिक कार्यप्रणाली जैसे टीम रचना को प्रोत्साहित और आपसी विरोधाभास को समाप्त करना चाहिए। इसका अर्थ है शक्ति का पर्याप्त विकेन्द्रीकरण, उत्तरदायित्व के विस्तार के साथ-साथ अधिकार एवं उत्तरदायित्व का एकीकरण, ठीक संचार व्यवस्था, उपयुक्त नियंत्रण आदि। संस्थान की लक्ष्य प्राप्ति के लिए सर्वोपरि प्रबंधक का सर्वगुण संपन्न नेतृत्व ठीक वातावरण बनाने के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसकी प्राप्ति के लिए मानव संसाधन योजना, प्रशिक्षण प्रबंधन विकास एवं प्रेरणा, कल्याण एवं मानव सुरक्षा पर बल दिया जाना चाहिए।

निर्माण परियोजना के प्रबंधन में सेवार्थी (क्लाइंट) को मालिक, सलाहकार और ठेकेदार—इन तीन विभिन्न दलों के टकराव वाले स्वार्थों में तालमेल लाना चाहिए। किसी भी परियोजना को लागू करने के दौरान तालमेल और सामूहिक कार्य प्रणाली के कई माडल उपलब्ध होने चाहिएं। विकसित देशों में निर्माण प्रबंधन सलाहकारों के बिना किसी भी परियोजना को हाथ में नहीं लिया जाता क्योंकि इन्होंने उद्योगीकृत देशों में उद्योगों के मालिकों को प्रामाणिक लाभ पहुंचाएं हैं। मैं इस संदर्भ में यहां यह कह सकता हूं कि हमारे यहां के लोगों ने इस व्यवस्था के महत्त्व को पहचानने में बहुत उदासीनता दिखाई है। साथ ही उचित प्रकार के कर्मचारियों का अभाव और निरंतर बढ़ता हुआ श्रमिक वेतन, नई निर्माण कार्य प्रणाली अपनाने में कठिनाई, भूतकाल से चला आ रहा श्रमिकों का शोषण और व्याप्त असंतोष, काम में नीरसता को कम करने की आवश्यकता इत्यादि। ये सब स्थितियां इस महत्त्वपूर्ण साधन के प्रभावशाली उपयोग में निर्माण प्रबंधन के सामने चुनौतियां हैं।

निर्माण उद्योग में रोजगार और कमाई को एक उचित स्तर पर लाने के लिए, उचित डिजाइन वाली और प्रशिक्षित श्रम प्रधान निर्माण पद्धतियों की आवश्यकता है ताकि श्रम शक्ति का अति उत्तम उपयोग हो सके। निर्माण संस्थान महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय लक्ष्य प्राप्त करने में तभी सहायक हो सकते हैं जब वे सही दीर्घकालीन योजना एवं निर्माण कार्यक्रमों से निर्माण प्रणालियों को राष्ट्रीय स्तर पर सिद्ध कर दें। गुणवत्ता युक्त काम करने और उत्पादकता बढ़ाने के कार्य में लगे कार्यकुशल लोगों के लिए रोजगार के साथ-साथ उचित प्रशिक्षण कार्यक्रमों का होना आवश्यक है। अप्रत्यक्ष रूप से इससे श्रम शक्ति में कार्य संतोष पैदा होगा जो आजकल के युग में कार्यकुशलता और उत्पादकता बढ़ाने के लिए बहुत जरूरी है।

निर्माण सामग्री का किफायती उपयोग बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसकी कीमत बहुत ऊंची होने के कारण कुल निर्माण लागत का प्रायः 50 प्रतिशत भाग इस पर व्यय होता है। कभी-कभी तो निर्माण कार्यों के लिए अति आवश्यक सामग्रियों के मूल्य अपेक्षित मूल्यों से कहीं अधिक हो जाते हैं। इस प्रकार इन निर्माण सामग्रियों के असंगठित उत्पादक भी निर्माण उद्योग को बहुत नुकसान पहुंचा रहे हैं। यहां तक कि सीमेंट जैसे अति आवश्यक सामग्री में गुणवत्ता का अभाव है और इसके साथ-साथ भारत में निर्मित इस्पात दूसरे देशों के मुकाबले बहुत महंगा है। इसके अलावा कई बार आवश्यक सामग्री उपलब्धि की अनिश्चितता बनी रहती है क्योंकि कभी सामग्री बहुत ज्यादा परिमाण में मिल जाती है तो कभी इनका अभाव देखने को मिलता है। इनके ठीक मानकीकरण का भी अभाव है। साथ ही नई निर्माण सामग्री जैसे कि राख आदि का व्यवहार करने में हिचकिचाहट है। अधिप्राप्ति भंडारण और संपत्ति सूची नियंत्रण के लिए भी प्रभावशाली प्रणालियों का अभाव है। अतः सही सामग्री प्रबंधन से समय और लागत की बचत हो सकती है और साथ ही काम की गुणवत्ता भी बढ़ जाती है। इसलिए हर निर्माण संस्था को देश में उत्पादित सामग्री के यथासंभव इस्तेमाल की नीति पर जोर देना चाहिए। आधुनिक निर्माण योजना में यंत्र (मशीनरी) का प्रयोग अनिवार्य है। भारतीय ठेकेदार अभी भी यंत्रीकरण के लाभ को नहीं समझ रहे हैं। विदेशों में ठेकेदार उपकरण खरीद लेते हैं या किराए पर ले सकते हैं, परन्तु भारत में यह संभव नहीं है हालांकि निर्माण कार्यों में गुणवत्ता और तेजी लाने के लिए यंत्रीकरण की अत्यंत आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त यंत्रीकरण समय और सामग्री के नियंत्रित उपयोग एवं प्रभावी गुणवत्ता नियंत्रण में सहायक होता है।

मशीन के सर्वोत्तम उपयोग के लिए उसकी देखरेख सही होनी चाहिए। निर्माण कार्यों में ऐसे भी क्षण आ जाते हैं जबकि उपकरण कई दिन तक लगातार 24-24 घंटे इस्तेमाल करना पड़ता है, इसके लिए सही नियोजन, निवारक एवं आयोजित संपूर्ण देखरेख होनी चाहिए। उपकरण प्रबंधन के लिए भी उचित प्रशिक्षण प्राप्त चालक चाहिएं। जिनकी संख्या बहुत ही कम है। उपकरण उत्पादन उद्योग निर्माण कार्य में उपकरणों की बढ़ती मांग को पूरा करने में सक्षम नहीं है। इससे निर्माण साधनों/उपकरणों का आयात करना जरूरी हो जाता है।

सबसे अपर्याप्त साधन है, धन। उचित प्रबंधन के लिए पर्याप्त राशि का उपलब्ध होना अनिवार्य है। इसके लिए अग्रिम योजना, समय-समय पर जरूरी धनराशि को प्राप्त

करने का प्रबंध, खर्च प्रणाली का शुरू से ठीक-ठीक सुयोजन व खर्च का अति सावधानीपूर्वक नियंत्रण, सुव्यवस्थित लेखा और उचित लेखा परीक्षा (आडिट) की जरूरत है ताकि पूर्वानुमानित बजट के अनुसार परियोजना पूर्ण हो सके। आधुनिक प्रबंधन में यह ध्यान रखना चाहिए कि लागत लाभ (कास्ट बेनिफिट) समय से संबंधित हो ताकि उचित लागत नियंत्रण, परियोजना के लिए खर्च का प्रवाह, आदि शुरू से ही अनुमानित किया जा सके। लागत नियंत्रण परियोजना का ढाँचा बनने के समय से ही शुरू होना चाहिए जिससे उसकी उपयोगिता आधुनिक प्रणाली एवं व्यावसायिक गतिविधियों के अपनाने में अधिकतम रूप से महसूस हो।

इस संसाधन के सर्वोत्तम उपयोग के लिए एक प्रणाली की सृष्टि की गई है जिसका नाम है वैल्यू इंजीनियरी या वैल्यू मैनेजमेंट, जो बदलते हुए पर्यावरण सामग्री की कमियां, तेजी से होने वाली प्रौद्योगिकी हलचलों व प्रतिस्पर्धा के बावजूद ठेकेदार को अपने पैर पर खड़ा होने में सहायक होती है। इस विधि द्वारा प्रबंधन के लिए संगठित सहयोग चाहिए जिससे अनावश्यक लागत को निकाला जा सके। इससे निर्माण में लगने वाली सामग्री, समय बढ़ाने की प्रणाली और अपव्यय आदि पर अच्छा नियंत्रण रहता है।

निर्माण प्रबंधन में ठेकेदारों की समस्याओं का भी अवलोकन है। ठेकेदार शब्द कोई खराब शब्द नहीं है। उनके साथ संसाधन के रूप में व्यवहार कीजिए। वे कड़ी प्रतिस्पर्धा की स्थितियों में काम करते हैं। उन्हें निविदा देने के लिए अनुसंधान और मार्किट स्थिति का सर्वेक्षण और निविदा सफल होकर काम मिलने पर स्वंय की योजना, कार्यक्रम बनाने और काम खत्म करने से संबंधित प्रणालियों को स्वंय करना पड़ता है। ठेके कभी-कभी एक पक्षीय हो जाते हैं और ठेके के बिलों का उचित भुगतान समय पर नहीं होता है जिससे काम निर्विधन नहीं चल पाता। इसलिए तानाशाही शक्तियां और अवपीड़न के तरीके निर्माण ठेके में नहीं होने चाहिएं। ठेकेदार को अपना उचित लाभ लेने दीजिए, केवल नाजायाज फायदा मत उठाने दीजिए।

इस अवसर पर एक सवाल पूछ सकते हैं कि क्या बीते चार दशकों में निर्माण प्रबंधन विषय पर हमने पर्याप्त सबक सीखा है ? और इसका उत्तर होगा "नहीं" क्योंकि परियोजनाओं में गुणवत्ता की कमियां, लागत और समय का अधिधाव (ओवर रन) अभी भी अनियंत्रित हैं। अभी भी समय का उचित मूल्य जोकि पैसे से भी ज्यादा हो सकता है, नहीं समझा जा रहा है। निर्माण विलम्ब के लिए कई कारण हो सकते हैं जैसे स्थल जांच (साइट इन्वेस्टिगेशन) में कमियां, संभाव्यता (फीजिबिलिटी) अध्ययन का अधूरापन अपर्याप्त परियोजना, प्रतिवेदन, अनिर्भरशील मार्किटिंग सर्वेक्षण, अपर्याप्त विस्तृत योजना एवं कार्यक्रम और सबसे ज्यादा अप्रभावी पर्यवेक्षण जिससे काम न केवल घटिया होता है अपितु काम खत्म करने में समस्या खड़ी होती है। निर्माण जो संयंत्र बनाता है उसके संचालन एवं रख-रखाव में और भी समस्याएं पैदा होती हैं जिनसे निर्माण कार्य बुरी तरह से प्रभावित होता है।

विदेशों में निर्माण परियोजनाओं के निर्यात की संभावनाएं भी कम होती जा रही हैं। हालांकि द. कोरिया और तायवान ने विदेशों में निर्माण कार्य में काफी सफलता पाई है। हमें यह समझना चाहिए कि आधुनिकता के लिए उत्साहरहित प्रयास और कम उत्पादन और अप्रभावी निर्माण प्रबंधन ने हमें इस क्षेत्र में अभी तक सफल नहीं होने दिया है। हम आसानी से ज्यादा से ज्यादा विदेशी मुद्रा कमा सकते थे और अपने देश की विदेशी मुद्रा का घाटा कम कर सकते थे, किन्तु यह नहीं हो पाया।

दूसरी ओर विकसित देशों में जैसे –यू. एस. ए., जर्मनी और जापान में उपक्रमों के त्रुटिपूर्ण कार्य निष्पादन में प्रबंधन असफलता का पता लगाने का काफी प्रयास किया जा रहा है। इन प्रयासों से संबंधित पुस्तकें काफी मात्रा में उपलब्ध हैं। उदाहरण के लिए हाल में प्रकाशित हुई "जापान प्रबंधन कला" में सर्वश्री रिचर्ड पास्केल और एंथनी एतोस ने अमेरिकी प्रबंधन की कमजोरियों के बारे में बताया है जिससे उनकी अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता के स्तर में गिरावट आई है। उन्होंने युक्तिमूल विश्लेषण का पता लगाया है कि कैसे एक संस्था लम्बे समय तक उच्च स्तर पर काम कर सकती है। इस विश्लेषण का परिणाम एक आकर्षक "निदर्श" (माडल) है जिसका नाम है 7एस, जिसमें ढाँचा, प्रणाली, कौशल, शैली, स्टाफ और उच्च कोटि के लक्ष्य की धारणा सम्मिलित है जिसका नाम "मैनेजिरियल मोलेक्यूल" अर्थात् प्रबंध अणु रखा गया है जो मानव संसाधन को सर्वोत्तम इष्टतमीकरण (आप्टिमाइजेशन) करने के लिए सहायता देता है एवं संस्था के अंदर कार्य कर रहे मानव और संस्था के मान को एक आकार देकर एक अच्छे उपकरण की भाँति लम्बे समय के लिए कामयाब बनाता है।

एक और दार्शनिक (फिलास्फर) जान नाईस बिट ने "प्रबंधन की तंत्र शैली" (नेट वर्किंग स्टाइल) का प्रचार किया जो प्राधिकारी शैली से हटकर प्रवर्तनीय उद्यमी (इन्नोवेटिव एन्टरप्रीन्यूर) के लिए विशेष रूप से बनायी है। इस संस्था के ढाँचे का उद्देश्य है कि संस्था में काम कर रहा प्रत्येक कर्मचारी एक दूसरे के लिए संसाधन साबित हो सके। इसके कर्मचारियों के बीच में ऊंच-नीच के स्तर की भावना हट जाती है।

यह जरूरी नहीं है कि विदेशों में इस क्षेत्र में अपनाए जा रहे रिवाजों का हम अनुसरण करें, बल्कि आवश्यकता इस बात की है कि हम उनकी तकनीक का विश्लेषण करें और,अपने पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए उनकी जो तकनीक हमारे लिए लाभदायक हो उसे हम सावधानी के साथ अपनाए ताकि काम में सफलता व प्रगति प्राप्त की जा सके।

अंतिम विश्लेषण में यह स्पष्ट है कि वैज्ञानिक शक्ति प्रौद्योगिकी, अभियंत्री और सबसे ज्यादा मानव प्रवीणता पर, भरोसा करके हम निर्माण प्रबंधन में बेहतर सफलता हासिल कर सकते हैं। अगर हम अपने साधन का उचित विकास प्रबंधन और उपयोग करना चाहते हैं तो इसके लिए योजना रूपरेखा और कार्यान्वयन में प्रगतिशील समाधान ढूंढना होगा जिससे हम परियोजना और संयंत्र चलाने में तथा उनके रख रखाव में कुशल हो। मेरी राय में निर्माण प्रबंधक समाज के महत्त्वपूर्ण अंग हैं। वे मानव जीवन के स्तर में सुधार ला सकते हैं। इस अवसर पर मैं युवा पीढ़ी से विशेष आग्रह करूंगा कि वे पूरे उत्साह से और अधिक क्रियाशील होकर इस कार्य को आगे बढ़ाएं और आगे वाले भविष्य की चुनौतियों का सामना साहस से करें। □

विदुर नीति

आत्मज्ञानं समारम्भस्तितिक्षा धर्मनित्यता।
यमर्थान्नापकर्षन्ति स वै पण्डित उच्यते ॥ २० ॥

अपने वास्तविक स्वरूप का ज्ञान, उद्योग, दुःख सहनेकी शक्ति और धर्म में स्थिरता—ये गुण जिस मनुष्य को पुरुषार्थ से च्युत नहीं करते, वही पण्डित कहलाता है।

यस्य संसारिणी प्रज्ञा धर्मार्थावनुवर्तते।
कामादर्थे वृणीते यः स वै पण्डित उच्यते ॥२५॥

जिसकी लौकिक बुद्धि धर्म और अर्थ का ही अनुसरण करती है और जो भोगको छोड़कर पुरुषार्थ का ही वरण करता है, वही पण्डित कहलाता है।

क्षिप्रं विजानाति चिरं शृणोति,
विज्ञाय चार्थं भजते न कामात्।
नासम्पृष्टो व्युपयुङ्क्ते परार्थे,
तत् प्रज्ञानं प्रथमं पण्डितस्य ॥२७॥

विद्वान पुरुष किसी विषयको देर तक सुनता है किंतु शीघ्र ही समझ लेता है, समझकर कर्तव्यबुद्धि से पुरुषार्थमें प्रवृत्त होता है—कामनासे नहीं; बिना पूछे दूसरेके विषय में व्यर्थ कोई बात नहीं कहता है। उसका यह स्वभाव पण्डितकी मुख्य पहचान है।

नाप्राप्यमभिवाञ्छन्ति नष्टं नेच्छन्ति शोचितुम्।
आपत्सु च न मुह्यन्ति नराः पण्डितबुद्धयः ॥२८॥

पण्डितोंकी-सी बुद्धि रखनेवाले मनुष्य दुर्लभ वस्तुकी कामना नहीं करते, खोयी हुई वस्तुके विषयमें शोक करना नहीं चाहते और विपत्ति में घबराते नहीं हैं।

न हृष्यत्यात्मसम्माने नावमानेन तप्यते।
गांगो ह्रद इवाक्षोभ्यो यः स पण्डित उच्यते ॥ ३१॥

जो अपना आदर होने पर हर्षके मारे फूल नहीं उठता, अनादर से संतप्त नहीं होता तथा गंगाजी के समान जिसके चित्तको क्षोभ नहीं होता, वह पण्डित कहलाता है।

तत्त्वज्ञः सर्वभूतानां योगज्ञः सर्वकर्मणाम्।
उपायज्ञो मनुष्याणां नरः पण्डित उच्यते ॥ ३२ ॥

जो सम्पूर्ण भौतिक पदार्थोंकी असलियत का ज्ञान रखने वाला, सब कार्योंके करने का ढंग जाननेवाला तथा मनुष्योंमें सबसे बढ़कर उपायका जानकार है, वह मनुष्य पण्डित कहलाता है।

प्रवृत्तवाक्चित्रकथ ऊहवान् प्रतिभानवान्।
आशु ग्रन्थस्य वक्ता च यः स पण्डित उच्यते ॥३३॥

जिसकी वाणी कहीं रुकती नहीं, जो विचित्र ढंग से बातचीत करता है; तर्कमें निपुण और प्रतिभाशाली है तथा जो ग्रन्थके तात्पर्यको शीघ्र बता सकता है, वह पण्डित कहलाता है।

उड़िया : साहित्य, भाषा और राजभाषा

☐प्रदीप कुमार बक्शी*

प्राचीन भारत के इतिहास में जिस क्षेत्र को कलिंग, उत्कल, उड्र आदि नामों से जाना जाता रहा है वह आज उड़ीसा के नाम से प्रसिद्ध हो गया है। यहां की भाषा उड़िया है जो भारतीय गणतंत्र की पन्द्रह भाषाओं में से एक है, अतः स्वतंत्र भारत के संविधान में स्वीकृत है।[1] उड़िया भाषा का क्षेत्र मध्य प्रदेश और बिहार के क्रमशः पूर्वी और दक्षिणी जिलों, पश्चिम बंगाल के दक्षिण-पश्चिमी भागों और आन्ध्र प्रदेश के उत्तरवर्ती तटों का स्पर्श करता है। इस तरह उड़िया भाषा की निम्नलिखित भाषायी सीमा बनती है :

उत्तर एवं उत्तर-पूर्व	—बंगला
उत्तर, पश्चिम	—बिहारी उपभाषाएं
दक्षिण	—तेलूगू
दक्षिण, पश्चिम	—हिन्दी की उपभाषा छत्तीसगढ़ी

इस तरह उड़िया भाषा उत्तर-पश्चिम एवं दक्षिण-पश्चिम दोनों भागों में हिन्दी की उपभाषाओं से घिरी है। उड़िया की इस भाषायी स्थिति के परिणामस्वरूप इस पर मुंडा परिवार का तथा निकटवर्ती भाषाओं का प्रभाव पड़ा है। सन् 1961 की जनगणना के अनुसार उड़िया भाषियों की संख्या 156,10,736 थी, जो 1971 की जनगणना में बढ़कर 1,97,26,745 हो गई। सम्पूर्ण भारत की जनसंख्या के संदर्भ में उड़िया भाषा-भाषियों की संख्या 3.68 प्रतिशत ठहरती है।

उड़िया भाषा के विकास की एक सुदीर्घ परम्परा है। उड़ीसा के जउगढ़ पर्वत पर ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में उत्कीर्ण अशोक के शिलालेख से उड़िया भाषा का प्रारंभ माना जाता है; साथ ही इसके परवर्ती उदाहरण इसके सौ वर्ष बाद जैन सम्राट खारवेल के भुवनेश्वर के खण्डगिरी पर्वत पर उत्कीर्ण शिलालेखों में भी प्राप्त होते हैं। भरत मुनि ने अपने "नाट्यशास्त्र" में भी 'उड्र' विभाषा का उल्लेख किया है। वैसे वाक्यों के रूप में उड़िया के प्राचीनतम उदाहरण पन्द्रहवीं शताब्दी के प्राप्त होते हैं। सोलहवीं शताब्दी से तो चैतन्य प्रवर्तित वैष्णव धर्म के प्रभाव से प्राचीन उड़िया साहित्य का व्यवस्थित इतिहास का प्रारंभ माना जाता है। तब से लेकर अब तक उड़िया साहित्य की विविध विधाएं भारतीय साहित्य की श्रीवृद्धि में अपना बहुमूल्य योगदान देती आ रहीं हैं।

चौहदवीं शताब्दी से उन्नीसवीं शताब्दी अर्थात् पांच सौ वर्षों में उड़िया साहित्य ने भी अपने विकास और निर्माण के विविध चरणों को पार किया। माधाधर मानसिंह के शब्दों में इस काल के "सम्पूर्ण साहित्य का रूप ऐसा है कि उसमें धार्मिक और साहित्यिक दोनों तत्वों का सम्मिश्रण है। धार्मिक साहित्य में अकल्पनीय स्वप्न, भावना और कुण्ठाएं उन लेखकों के मन में मिलती है जो कि रामायण-महाभारत और भागवत पुराण के तीनों संयुक्त वर्तुलों के बाहर से कोई विषय लाने का साहस नहीं कर सके हैं।"[2] लेखक के विचारानुसार साहित्य सृजन के उपर्युक्त संकुचित क्षितिज में भी महान तथा अमर कृतियों की रचना हुई। लेखक के मतानुसार यदि असंख्य भाव-गीतों तथा गीति-काव्यों को अगर छोड़ भी दिया जाए तो रामायण के कम से कम बारह अनुवाद और महाभारत के चार अनुवाद प्रसिद्ध हैं।[3] इस युग के कवियों में लेखक ने बलराम दास, जगन्नाथ दास, चैतन्य और जयदेव, उपेन्द्र भंड, दीन कृष्ण दास, अभिमन्यु, सामन्त-सिंहर, कविसूर्य बलदेव रथ, भक्त चरणदास, गोपालकृष्ण, भीमा भाई[4] जैसे अत्यंत प्रसिद्ध कवियों और उनकी कृतियां का परिचय देते हुए यह स्थापित किया है कि सृजन के सीमित क्षेत्र होने के बावजूद भी जितनी कुशलता एवं व्यंजकता के दर्शन उपर्युक्त कवियों की रचनाओं में होते हैं वे अन्यत्र दुर्लभ हैं। फकीर मोहन सेनापति को आधुनिक उड़िया साहित्य में राष्ट्रीयता की लहर फूंकने वाले रचनाधर्मी का स्थान प्राप्त है। उन्होंने सर्वप्रथम सहकारी ढंग पर मुद्रण, प्रकाशन और पत्रकारिता का काम किया। रामायण और महाभारत के कई उड़िया अनुवाद फकीरमोहन के पूर्व में ही हो चुके थे किन्तु उन्होंने पुनः सम्पूर्ण रामायण और महाभारत

*भारत रिफैक्ट्रीज लि० रांची रोड, मरार (हजारीबाग)-829117

का मूल से उड़िया अनुवाद प्रस्तुत करके उन्हें जीवन्त बना दिया। फकीरमोहन की पैनी लेखनी ने गीति-काव्य, भजन, खण्डकाव्य, परिहास-व्यंग्य-साहित्य, कहानियां, उपन्यास, महाकाव्य (बुद्ध पर) तथा अनुवाद साहित्य जैसी अनेक विधाओं को सजाया-संवारा है।[5] राधानाथ राय, मधुसूदन राव जैसे महाकवियों ने फकीरमोहन के साथ जुड़कर उड़िया साहित्य के "वृहत्-त्रयी" का निर्माण किया जिसने साहित्य की सभी विधाओं में एक नई चेतना जागृत कर दी[6] परवर्ती काल में उड़िया साहित्य विविध राजनैतिक गतिविधियों से प्रभावित होता रहा। नाटक और रंगमंच उपन्यास और आख्यायिका-साहित्य परवर्ती काल में पर्याप्त लोकप्रिय हुए। राम शंकर राय, कामपाल मिश्र, भिखारी चरण पटनायक और गोविन्द सुरदेव ने उड़िया रंगभूमि को सामान्य मनोरंजन केन्द्र की सीमा-रेखा से ऊपर उठाकर समाज सुधार और राष्ट्रीय पुनरुत्थान समाज की व्यापक आकांक्षाओं के साथ समीकृत कर दिया। उड़िया गद्य को सजाने-संवारने का श्रेय राम शंकर फकीरमोहन, श्री रत्नकर पति, विपिन बिहारी राय, पंडित नीलकंठ दास, श्री शशिभूषण राय के ललित गद्य, गोपाल चन्द्र प्रहराज के पैने व्यंग्यों तथा पंडित गोप बंधु दास के काव्यमय निबंधों एवं भाषणों को है।[7] सृजन के अन्य क्षेत्रों में भी उड़िया में कार्य प्रारंभ निबंधों की है। सृजन के अन्य क्षेत्रों में भी उड़िया में कार्य प्रारंभ हुए हैं। डॉ. भोलानाथ तिवारी के शब्दों में "उड़िया भाषा के इतिहास पर ओड़िया भाषा के इतिहास" शीर्षक पं. विनायक मिश्र का प्रसिद्ध ग्रंथ है। गोपाल प्रहराज का महत्वपूर्ण ग्रंथ "ओड़िया कोष" है जिसमें कई भाषाओं के तुलनात्मक शब्द दिये गये हैं। पं. गोपीनाथ नंद ने "ओड़िया भाषा तत्त्व" तथा गिरिजा शंकर राय ने "सरल भाषा तत्त्व" शीर्षक ग्रंथ लिखे हैं। इन लोगों के अतिरिक्त ग्रंडी तथा गोलोक विहारी दल ने भी उड़िया भाषा पर कार्य किया है। जी.एस. राय का कार्य उड़िया व्याकरण पर है।"[8]

उड़िया शब्दावली में संस्कृत तत्सम शब्दों की प्रमुखता है किन्तु तद्भव एवं देशज शब्द भी पर्याप्त संख्या में मिलते हैं। फारसी, अंग्रेजी जैसी विदेशी भाषाओं के शब्दों को भी उड़िया ने आज आत्मसात कर लिया है। उड़िया तद्भव शब्दावली का विकास मूलतः संस्कृत से पालि भाषा के मार्फत हुआ :

संस्कृत	पालि	उड़िया
अद्य	अज्ज	आज
क्षण	खन	खन
नृत्य	नच्च	नाच
मत्स्य	मच्छ	माछ

डॉ. भोलानाथ तिवारी के मतानुसार उड़िया भाषा में आज राजनीतिक कारणों से तेलुगु और मराठी भाषाओं के शब्द पर्याप्त मात्रा में आ मिले हैं।[9]

राजभाषायी स्थिति

राजभाषा के रूप में भी आज उड़िया उड़ीसा राज्य में प्रतिष्ठित हो चुकी है। राजभाषा के रूप में उड़िया के विकास हेतु जो महत्त्वपूर्ण कार्य किए गए हैं उनमें निम्नलिखित का विशिष्ट स्थान है[10] :

1. उड़ीसा राजभाषा अधिनियम, 1954 का परित होना।

2. अधिनियम के अन्तर्गत कोई भी विनिर्दिष्ट प्रयोजन के लिए उड़िया भाषा का प्रयोग प्राधिकृत कर सकने का राज्य सरकार को प्राधिकार प्राप्त होना :

3. वर्ष 1966 की अधिसूचना के आधार पर पंचायती सामुदायिक, जनजातीय एवं ग्राम कल्याण, शिक्षा तथा वन विभाग आदि में सरकारी कामकाजी के प्रयोजनों के लिए दिनांक 15-5-1966 से उड़िया भाषा का प्रारम्भ सुनिश्चित, किया जाना।

4. प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर शिक्षा के माध्यम के रूप में उड़िया का अंगीकरण एवं पाठ्य-सामग्रियों का प्रकाशन,

5. राज्य सरकार के निदेशानुसार सन् 1968 से न्यायालयों में उड़िया भाषा का प्रयोग सुनिश्चित करने हेतु "उड़ीसा राजभाषा (विधायी) समिति" का गठन, एवं

6. सरकारी कामकाज में उड़िया भाषा का प्रयोग सुनिश्चित करने हेतु सहायक साहित्य का सृजन तथा अंग्रेजी-उड़िया शब्द-संग्रह का सरकारी स्तर से प्रकाशन।

भारत के संविधान के अनुसार भारत संघ की राजभाषा हिन्दी है।[11] हिन्दी के प्रयोग की दृष्टि से सम्पूर्ण उड़िया भाषा क्षेत्र को "ग" क्षेत्र में शामिल किया गया है।[12] अतः उड़िया भाषा-क्षेत्र में भारत संघ की राजभाषा हिन्दी के प्रयोग के लिए लक्ष्य की निश्चित प्रतिशतता निर्धारित है। राजभाषा अधिनियम, 1963 के प्रावधानों के अनुसार इस क्षेत्र में स्थित केन्द्रीय सरकार के सभी कार्यालयों में नामपट्ट साइनबोर्ड, सामान्य आदेश, सूचनाएं, पत्रशीर्ष आदि के मदों को हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार कराना अनिवार्य है।[13]

इस तरह सम्पूर्ण उड़िया भाषाभाषी क्षेत्र में राजभाषा के रूप में हिन्दी, अंग्रेजी और उड़िया तीनों ही वर्तमान काल में चलते हैं। केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में हिन्दी और अंग्रेजी में तथा राज्य सरकार के कार्यालयों में उड़िया और अंग्रेजी में सरकारी कामकाज निपटाए जा रहे हैं।

संदर्भ और टिप्पणियां

1. देखिए, भारत के संविधान की अनुसूची आठ
2. आज का भारतीय साहित्य—उड़िया, डॉ. मायाधर मानसिंह, पृष्ठ सं. 24
3. वही

4. भारतीय वाङ्मय---उड़िया, डॉ. मायाधर मानसिंह, पृष्ठ सं. 418---446

5. आज का भारतीय साहित्य---उड़िया, डॉ. मायाधर मानसिंह, पृष्ठ सं. 26

6. वही

7. वही

8. भाषाविज्ञान, डॉ. भोलानाथ तिवारी. पृष्ठ सं. 473

9. वही

10. भारतीय भाषाएं, कैलाशचन्द्र भाटिया, पृष्ठ सं. 67-68

11. भारत का संविधान, अनुच्छेद 343

12. राजभाषा (संघ के सरकारी प्रयोजनों के लिए प्रयोग) नियम, 1976 का नियम 2 (ज)

13. राजभाषा अधिनियम, 1963 (संशोधन अधिनियम, 1967) की धारा 3 (3) ।

कटुता

□प्रेम जी, प्रेम*

धुंआ किसी भी कोने से उठे,
दुर्गन्ध हर ओर पहुंच जाती है
पृथक पृथक हो सकता है रास्ता
धुंए की लकीर और गंध का
दुर्गन्ध का चौतरफा फैलाव
धुएं का आभास करवाता है,
धुंआ होता है संकेत
किसी कोने में लगी आग का ।

कारण कुछ भी हो
आग, आग होती है
उसकी तबाह करने की शक्ति
नहीं पूछती कारण
तुमसे, उससे या मुझसे ।

मतभेद को मन-भेद बनाती है
यही आग ।

आग,

अकारण नहीं लगती
उसके मूल में होता है
स्वार्थी षड्यंत्र

बोया करता है बीज
रंग के, धर्म के, संप्रदाय के, भाषा के ।
संकुचित करता रहता है
यही स्वार्थी षड्यंत्र
तुम्हारा, मेरा या उसका मन ।

आग हम लगाते हैं,
धुंआ देखती है दुनिया
कुंठितजन उठाते हैं लाभ
दुर्गन्ध का ।

एकता के अनेक सूत्रों में
एक सूत्र होगा
संपर्क भाषा का, राजभाषा का ।

संकल्पित हूं मैं
दुर्गन्ध, धुंए और आग से बचाकर
अपनाने के लिए
एक संपर्क भाषा, एक राजभाषा ।

कल मेरी अपनी मादरी जुबान
मुझसे पूछेगी कोई सवाल
तो उत्तर दूंगा
"राम की माता एक नहीं थी,
वे थीं तीन
कौशल्या, कैकेयी, सुमित्रा ।"
मां ही तो होती है,
भाषा ।

*भंवर भवन, कर्बला, लाड़पुर, कोटा (राज.)-324006

पुरानी यादें नए परिप्रेक्ष्य

अमर शहीद गणेश शंकर विद्यार्थी और राष्ट्रभाषा हिन्दी

गोरखपुर में अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के 19वें अधिवेशन के अध्यक्ष पद से अमर शहीद श्री गणेश शंकर विद्यार्थी ने जो ऐतिहासिक विचार व्यक्त किए थे, वे आज भी अपनी प्रासंगिकता की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं विचारणीय हैं। उनके ऐतिहासिक भाषण के मुख्य अंश प्रस्तुत हैं।

—सम्पादक

श्रीमान स्वागताध्यक्ष महोदय, देवियों और सज्जनों !

मैं आपके समक्ष कोई नई बात नहीं रखने जा रहा। जो कुछ कहूंगा वह भी बहुत त्रुटिपूर्ण होगा। मेरी विनम्र प्रार्थना है कि आप मेरी त्रुटियों पर ध्यान न दें, उनके लिए मुझे क्षमा करें और जिस बड़े कार्य के लिए हम-सब इस महान देश के कोने-कोने से आकर बाबा गोरखनाथ की इस पुरी में एकत्र हुए है, उसकी सिद्धि ही के लिए हम कुछ विशेष निष्कर्षों पर पहुंचें।

आज से उन्नीस वर्ष पहले जबकि इस सम्मेलन का जन्म नहीं हुआ था और उसके जन्म के पश्चात भी कई वर्षों तक अपनी मातृ भाषा का स्वतन्त्र अस्तित्व सिद्ध करने के लिए हमें पग-पग पर न केवल संस्कृत, प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, सौराष्ट्री आदि की छानबीन करते हुए शब्द विज्ञान और भाषा विज्ञान के आधार पर यह सिद्ध करने के लिए आवश्यकता पड़ा करती थी कि हिन्दी भाषा संस्कृत या प्राकृत की बड़ी कन्या है किन्तु बहुधा बात यहां तक पहुंच जाया करती थी और यह भी सिद्ध करना पड़ता था कि नानक और कबीर, सूर और तुलसी की भाषा का, बादशाह शाहजहां के समय जन्म लेने वाली उर्दू बोली के पहले कोई अलग गद्य रूप भी था। जिस भाषा में पद्य की रचना इतने ऊंचे दर्जे तक पहुंच चुकी हो, उसके सम्बन्ध में इस बात की सफाई देनी पड़े कि उसका उस समय गद्य रूप भी था, इससे बढ़ कर कोई हास्यास्पद बात नहीं हो सकती। मैं केवल एक सर्वमान्य बात को आपके सामने रख रहा हूं। और यह भी चाहूंगा कि आप में से जो सज्जन मुझसे इस विषय में मतभेद रखते हों वे इसके विपरीत संसार भर में कहीं से भी कोई भी उदाहरण निकाल कर उपस्थित करने की कृपा करें। मैं जो कुछ कहने वाला हूं, वह केवल इतना ही है कि राजनीतिक पराधीनता पराधीन देश की भाषा पर अत्यन्त विषम प्रहार करती है। विजयी लोगों की विजय गति विजितों के जीवन के प्रत्येक विभाग पर अपनी श्रेष्ठता की छाप लगाने का सतत् प्रयत्न करती है। स्वाभाविक ढंग से विजितों की भाषा पर इनका सबसे पहला वार होता है। भाषा जातीय जीवन और उसकी संस्कृति की सर्वप्रथम रक्षिका है वह उसके शील का दर्पण है, वह उसके विकास का वैभव है। भाषा जीती और सब जीत लिया। फिर कुछ भी जीतने के लिए शेष नहीं रह जाता। विजितों का अस्तित्व मिट चलता है। विजितों के मुंह से निकली हुई विजयी जनों की भाषा उनकी दासता की सबसे बड़ी चिह्न है। पराई भाषा चरित्र की दृढ़ता का अपहरण कर लेती है मौलिकता का विनाश कर देती है और नकल करने का स्वभाव बना करके उत्कृष्ट गुणों और प्रतिभा से नमस्कार करा देती है। इसी लिए जो देश दुर्भाग्य से पराधीन हो जाते हैं, वे उस समय तक जब तक कि वे अपना सब कुछ नहीं खो देते हैं, अपनी भाषा की रक्षा के लिए सदा लोहा लेते रहना अपना कर्तव्य समझते हैं। अनेक यूरोपीय देशों के इतिहास भाषा-संग्राम की घटनाओं से भरे पड़े है। प्राचीन रोम साम्राज्यों से लेकर अब तक के रूप, जर्मन, इटेलियन, आस्ट्रियन फेंच और ब्रिटिश सभी साम्राज्यों ने अपने अधीन देशों की भाषा पर अपनी विजय वैजयन्ती फहराई। भाषा-विजय का यह काम सहज में ही नहीं हो गया। भाषा समरस्थली के एक-एक इंच स्थान के लिए बड़ी-बड़ी लडाइयां हुई। देश की स्वाधीनता के लिए मर-मिटने वाले अनेक वीर-पुगुंवों के समयों में इस विचार का स्थान सदा ऊंचा रहा है कि देश की भौगोलिक सीमा की अपेक्षा मातृ-भाषा की सीमा की रक्षा की अधिक आवश्यकता है। वे अनुभव करते हैं कि भाषा बची रहेगी तो देश का

अस्तित्व और उसकी आत्मा बची रहेगी अन्यथा फिर कहीं उसका कुछ भी पता न लगेगा। भाषा संबंधी सबसे आधुनिक लड़ाई आयर-लैण्ड को लड़नी पड़ी थी। पराधीनता ने गालिक भाषा का सर्वनाश कर दिया गया था। दुर्दशा यहां तक हुई कि इने-गिने मनुष्यों को छोड़कर किसी को भी गालिक का ज्ञान न रहा था, आयरलैण्ड के समस्त लोग यह समझते थे कि अंग्रेजी ही उनकी मातृभाषा है और जिन्हें गालिक आती भी थी, वे उसे बोलते लजाते थे और कभी किसी व्यक्ति के सामने उसके एक शब्द का भी उच्चारण नहीं करते थे। आत्म विस्मृति के इस युग के पश्चात, जब आयर-लैण्ड की सोती हुई आत्मा जागी, तब उसने अनुभव किया कि उसने स्वाधीनता तो खो ही दी, किन्तु उससे भी अधिक बहुमूल्य वस्तु उसने अपनी भाषा भी खो दी। गालिक के पुनरुत्थान की कथा अत्यन्त चमत्कारपूर्ण और उत्साहवर्द्धक है। उसने अपने भाव और भाषा को विसर देने वाले समस्त देशों को प्रोत्साहन और आत्मोद्धार का संदेश मिलता है। इस शताब्दी के आरम्भ हो जाने के बहुत पीछे, गालिक भाषा पुनरुद्धार का प्रयत्न आरम्भ हुआ। देखते-देखते वह आयरलैण्ड भर पर छा गई। देश की उन्नति चाहने वाला प्रत्येक व्यक्ति गालिक पढ़ना और पढ़ाना अपना कर्त्तव्य समझने लगा।

सौ वर्ष बूढ़े एक मोची से डी-वेलरा ने युवावस्था में गालिक पढ़ी और इसलिए पढ़ी कि उनका स्पष्ट मत था कि यदि मेरे सामने एक ओर देश की स्वाधीनता रखी जाय और दूसरी ओर मातृभाषा और मुझसे पूछा जाय कि इन दोनों में से एक कौन सी लोगे तो एक क्षण के विलम्ब बिना मैं मातृभाषा को ले लूंगा, क्योंकि इसके बल से, मैं देश की स्वाधीनता भी प्राप्त कर लूंगा। राजनीतिक पराधीनता ने भारत वर्ष में भी उसी प्रकार, जिस प्रकार उसने अन्य देशों में किया, भाषा-विकास के मार्ग में रोड़े अटकाने में कोई कमी नहीं की। यद्यपि इस देश के मुसलमान शासक बहुत समय तक विजेता और विदेशी नहीं रहे और उनकी भाषा का विशेष प्रभाव देश के अन्य भागों पर बहुत कम पड़ा है, किन्तु तो भी उनके कारण, भारतीय भाषाओं का सहज स्वाभाविक विकास नहीं हो सका। सबसे अधिक हिन्दी की हानि हुई। उसकी सत्ता देश के उत्तर पश्चिम और मध्यवर्ती भाग में थी। यही प्रदेश शाही सत्ता के कारण, अरबी अक्षर में और फारसी साहित्य से इतने प्रभावित हुए कि उनका रंग रूप ही बदल गया और आज तक बहुत से स्थानों में सत्य-नारायण की कथा तक विधिवत अरबी अक्षरों में पढ़ी जाती है। एक भाषा दूसरी भाषा के संसर्ग में आकर शब्दों और वाक्यों का सदा दान-प्रतिदान किया करती है। यह हानिकारक या अपमानजनक बात नहीं। प्रत्येक भाषा के विकास के लिए इस बात की आवश्यकता है। किन्तु जब यह दान-प्रतिदान प्रभुता और पराधीनता की भावना से होता है एक भाषा को दूसरी भाषा के शब्दों और वाक्यों को इसलिए लेना पड़ता है कि दूसरी भाषा के लोग बलवान हैं, उनकी प्रभुता है, उनको प्रसन्न करना है, उनके सामने झुकना है, तो इससे लेने वालों की उन्नति नहीं होती, वे अपनी गांठ का बहुत कुछ खो देते ही हैं और पर-भाषा की सत्ता स्वीकार करके अपनी परवशता और हीनता को पुष्ट करते हैं और अपने सर्वसाधारण जन से दूर जा पड़ते हैं। इस देश में विजेताओं के साथ फारसी के प्रवेश से ये बातें हुई। इसलिए बाबा गोरखनाथ, गंग कवि आदि के गद्य पर जोर देते हुए हिन्दी के भक्तों को यह सिद्ध करने की आवश्यकता पड़ती रही कि फारसी के आगमन और उर्दू के जन्म से पहले भी हिन्दी गद्य रूप में वर्तमान थी और उसका स्वतन्त्र अस्तित्व था। फारसी से जो कुछ हुआ, वह उसका पासंग भी नहीं है, जो अंग्रेजी के आगमन से इस देश में हुआ। हिन्दी भाषा जिसे सम्मेलन के मंच से स्वर्गीय पण्डित बद्रीनारायण जी नागरी भाषा और स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी आर्य भाषा के नाम से पुकारना उचित समझते हैं, अंग्रेजी के कारण जितने घाटे में रही और अब तक है, उतने घाटे में वह शाही समय में न थी और यदि उसे स्वाभाविक वायुमण्डल मिलता तो कभी न रहती।

अंग्रेजी शासन के आरम्भ में फारसी अदालती भाषा थी। किन्तु अदालतों और उनकी भाषा से सर्वसाधारण का उस समय इतना संबंध नहीं था। अंग्रेजी शासन ने फारसी के स्थान पर उर्दू को अदालती भाषा का स्थान दिया। उस समय उर्दू का कोई विशेष और स्वतन्त्र अस्तित्व न था। मुसल-मान जिस हिन्दी को बोलते और लिखते थे, और जिसमें वे फारसी के कुछ शब्दों का भी प्रयोग करते थे, वही उर्दू थी। हिन्दी का उससे कोई सघर्ष नहीं था। उर्दू को उस समय पूरक भाषा का स्थान प्राप्त था। अर्थात देश के जो लोग शुद्ध हिन्दी नहीं बोल सकते हैं, वे फारसी के कुछ शब्दों और शक्लों को लेकर हिन्दी भाषा-भाषी थे। अंग्रेजी शासन ने उत्तर भारत में उर्दू को एक ऐसा स्थान देकर जो उसे पहले प्राप्त न था हिन्दी और उर्दू के कार्य के विवाद का सूत्रपात किया और इस प्रकार बहुसंख्यक हिन्दी भाषा-भाषी लोगों की सुविधा और विकास में बाधा उपस्थित कर दी। इसका यह फल हुआ कि उर्दू देश की बोली, समझी और लिखी जाने वाली भाषा से दूर की वस्तु हो गई है। उसने अपने आप को देश के भावी शब्दों और वाक्यों से भरना छोड़ दिया, उसने हर बात में अपना मुख फारसी की तरफ किया, देश की भाषाओं की ओर देखने की अपेक्षा उसने अंग्रेजी भाषा की ओर देखना तक अधिक आवश्यक समझा और हिन्दी भाषा-भाषियों व दो-दो भाषाओं का एक उर्दू के बदले हुए रूप का और दूसरे अंग्रेजी का भारी बोझ व्यर्थ में पड़ गया।

यह भी नहीं कहा जा सकता कि, उस समय उर्दू में अर्थात् अरबी अक्षरों में लिखी जाने और फारसी शब्दों से मिश्रित हिन्दी में यथेष्ट साहित्य ग्रंथ और साहित्य सेवी वर्तमान थे और सर्वत्र पढ़े-लिखे लोग इस प्रकार की भाषा को शिरोधार्य समझते थे। हिन्दी गद्य के खड़ी बोली में लिखे जाने का सूत्र-पात हो चुका था। लल्लूलाल, मुंशी सदासुख, सदल मिश्र, इंशा आदि की सुन्दर कृतियों का जन्म हो चुका था। अंग्रेजी

आगे चलकर पाठ्य पुस्तकों की आवश्यकता पड़ी और श्रीरामपुर के ईसाई पादरियों को अपने धर्म प्रचार की इन दोनों आवश्यकताओं की पूर्त्ति भी हिन्दी में की गई। किन्तु सरकारी सहायता के कारण उर्दू हिन्दी से एक नितांत अलग भाषा होती गई और साथ ही, अंग्रेजी का दबदबा दिन व दिन बढ़ता ही गया। इसी कारण हिन्दी साहित्य सम्मेलन के पहले और उसके पश्चात भी कुछ समय तक समय-समय पर हमें यह सिद्ध करने की आवश्यकता पड़ी थी कि हिन्दी भाषा का स्वतंत्र अस्तित्व है, उसका अलग स्रोत और अलग विकास है, वह करोड़ों जनों को सोचने, बोलने और लिखने की भाषा है और जो लोग उसकी अवहेलना करते हैं, वे देश में करोड़ों व्यक्तियों और उन की आवश्यकताओं और बात की अवहेलना करते हैं। अनेक मुखों से अनेक अवसरों पर यह बात कही गई। काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने जन्म ही से इस मंत्र का उच्चारण किया। हिन्दी के बड़े पढ़े आदमी राजा शिवप्रसाद, बाबू हरिश्चन्द्र, राजा लक्ष्मण सिंह, पं. मदन मोहन मालवीय, डा. सुन्दरलाल, बाबू श्याम सुन्दर दास आदि हिन्दी को स्वतंत्र अस्तित्व के माने जाने के लिए सतत परिश्रम करते रहे। इस प्रांत में, सर एन्टोनी मैकडोनिल ने हिन्दी में भी अदालती कागज लिए जाने की आज्ञा प्रदान की। यह बात यथार्थ में हिन्दी के विशेष पोषण के लिए नहीं थी। देश के कितने ही राजनीतिज्ञ तो इस आज्ञा से हिन्दी का उतना हित नहीं पाते, जितना कि वे उसमें और कुछ देखते हैं। उनकी धारणा तो यह है कि इधर यदि हिन्दी को कुछ बल मिला, उसकी कुछ उन्नति हुई तो उसका कारण यह है कि अनेक कारणों से देश के जीवन के प्रत्येक खंड में अधिक व्यापकता और विशालता का शुभागमन हुआ है, कचहरियों में कुछ कागजों का हिन्दी में लिया जाना, या बेमन से उसके अस्तित्व को स्वीकार कर लिया जाना उसका कारण नहीं। हिन्दी के अस्तित्व के लिए बहुत समय से संघर्ष है। यह संघर्ष उस समय था, जब गद्य रूप में हिन्दी कुछ भी नहीं थी और उस समय भी था, जबकि उस रूप से वह कुछ थी भी, और इस समय भी है जबकि गद्य और पद्य दोनों रूपों में हिन्दी के अस्तित्व से कोई मुकर नहीं सकता। इस समय भी हिन्दी को पूरा खुला हुआ मार्ग नहीं मिल रहा है। उसके निज के क्षेत्र पर केवल उसी का आधिपत्य नहीं है। अभी तक इस देश के करोड़ों बालक जिनकी मातृभाषा हिन्दी थी, कच्ची उम्र ही साधारण से साधारण विषयों की ज्ञान प्राप्ति के लिए विदेशी भाषा के भार से दाब दिए जाते थे। अब भी उच्च शिक्षा के लिए बालक ही क्या बालिकाएं तक उसी भार के नीचे दबती हैं।

बाल्यकाल से अंग्रेजी की छाया में पढ़ने के लिए विवश होने के कारण हमारे अधिकांश सुशिक्षित जनों के चित्त पर अंग्रेजी इतनी छा जाती है कि वह बहुधा मन में जो कुछ विचार करते हैं, उसे भी अंग्रेजी में ही करते हैं और अपने निकटस्थ जनों से अपनी बात कहते या लिखते हैं तो अंग्रेजी ही में। हिन्दी में लिखे हुए अनेक सुशिक्षित सज्जनों की भाषा शैली से इस बात का पता चल सकता है। उनका शब्द विन्यास, उनके वाक्यों की रचना और उनका व्याकरण सभी अंग्रेजी के ढंग का प्रतिबिम्ब है। हमारे सुशिक्षितों में ही ऐसे लोग मिल सकते है जो पुत्र और पति-पत्नी तक अकारण हिन्दी में पत्र व्यवहार करने की अपेक्षा अंग्रेजी में उसे करना अधिक अच्छा मानते हैं। यदि आप उनका ध्यान मातृभाषा की ओर आकर्षित करें, तो बहुधा यह उत्तर सुनने को मिले कि हिन्दी में अभी शब्दों और मुहावरों का उतना सुन्दर भण्डार नहीं है। हिन्दी की इसी दरिद्रता की दुहाई देकर उच्च शिक्षा में अंग्रेजी का समावेश भी अनिवार्य सिद्ध किया जाता है, निःसंदेह हिन्दी में अभी उपयुक्त शब्दों और वाक्यों की कमी है। कविवर रामनरेश त्रिपाठी का कहना है कि हम हिन्दी में केवल 300 शब्दों ही के घेरे में घूमते रहते हैं। किसी भी देशी भाषा के शब्दाकोष में इतनी दरिद्रता नहीं है। किन्तु इस दरिद्रता का दोष जितना हमारे सुशिक्षितों पर है, उतना दूसरों पर नहीं। वे अपनी आवश्यकता को विदेशी भाषा से पूरी कर लिया करते हैं। वे विदेशी भाषा बोलना सुगम समझते हैं। यदि हिन्दी पर कृपा भी करते हैं तो बहुधा देखने में यह आता है कि उनकी बातों में अंग्रेजी शब्दों की भरमार होती है और कभी कभी तो उनके वाक्यों की हिन्दी का परिचय केवल उनकी हिन्दी क्रियाओं से ही लगता है। यदि हमारे सुशिक्षित इस प्रकार भाषा की अनावश्यक और अपावन वर्ण संकरता न करें, अपने भावों को उसमें व्यक्त करना आवश्यक समझें तो कुछ ही समय में, हमारी भाषा की उपरिकथित दरिद्रता दूर हो जाये और हिन्दी भाषा-भाषियों की शिक्षा और ज्ञान का मापदण्ड भी ऊंचा हो जाये। स्वर्गीय जस्टिस तैलंग ने मराठी भाषा पर इसी प्रकार अंग्रेजी भाषा की चढ़ाई देखकर सुशिक्षित महाराष्ट्र सज्जनों की एक ऐसी परिषद की स्थापना की थी, जिसके सदस्य नित्य कुछ समय तक अंग्रेजी शब्दों और वाक्यों का प्रयोग नहीं करते थे और उनका स्थान शुद्ध मराठी प्रयोगों को देते थे।

संक्षेप में जो लोग हिन्दी को मातृभाषा मानते हैं, उनके सामने स्पष्ट ढंग से यह बात सदा रहनी चाहिए कि हिन्दी की जो इधर उन्नति हुई, वह उसकी आगामी बाढ़ के लिए कदापि ऐसी नहीं हैं कि हम समझ लें कि अब गाड़ी चलती जायेगी, वह रुकेगी नहीं, अब हमें चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है? हिन्दी की स्वाभाविक गति के लिए तो अनेक बाधाओं के हटाने की आवश्यकता है, किन्तु उन सबके दूर होने में तो अभी बहुत समय लगेगा इस बीच में कम से कम हम अवहेलना की बाधा को उपस्थित न होने दें और अचेत न हों जायें। साहित्यिक ढंग से यह मातृ भाषा के प्रचार और पुष्टि के लिए जहां और जिस प्रकार जो कुछ भी हो सके उसका करना हम सबके लिए नितांत आवश्यक है।

क्रमशः अंक 48

[दैनिक गणेश (17-6-89) कानपुर से साभार उद्धृत]

(क) हिंदी सलाहकार समितियों की बैठकें

कार्मिक, लोक शिकायत तथा पेंशन मंत्रालय

हिन्दी सलाहकार समिति की बैठक 8 अगस्त, 1989 को राज्य मंत्री (कार्मिक) की अध्यक्षता में हुई। बैठक के आरम्भ में अध्यक्ष ने समिति के सदस्यों का स्वागत किया।

श्री रामेश्वर ठाकुर, संसद सदस्य ने यह टिप्पणी की कि समिति की बैठकों में हिन्दी के प्रयोग के बारे में जो आंकड़े दिये जाते हैं वे कभी-कभी सही स्थिति नहीं दर्शाते। उनका सुझाव था कि भविष्य में आंकड़ों के साथ-साथ एक समग्र विश्लेषण भी प्रस्तुत किया जाये जिसे स्वीकार कर लिया गया।

नकद पुरस्कार राशि बढ़ाये जाने के बारे में की गई कार्रवाई के विवरण की मद संख्या 8 में दी गई जानकारी के बारे में सचिव (राजभाषा) श्री राधाकान्त शर्मा ने सूचित किया कि हिन्दी टिप्पण तथा मसौदा लेखन की नकद पुरस्कार राशि को बढ़ाये जाने के सुझाव पर केन्द्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 27 जुलाई, 1989 को हुई बैठक में विचार किया गया था और इसे सिद्धान्त रूप में स्वीकार कर लिया गया था। इस निर्णय को शीघ्र ही कार्यान्वित कर दिया जाएगा।

अध्यक्ष ने विस्तार से बताया कि संघ लोक सेवा आयोग जो परीक्षाएं आयोजित करता है, वे दो प्रकार की होती हैं—एक तो वस्तुनिष्ठ और दूसरी वर्णनात्मक प्रकार की। जहां तक वस्तुनिष्ठ परीक्षाओं का प्रश्न है सभी के प्रश्न-पत्र शीघ्र हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में कर दिये जाएंगे। दूसरी प्रकार की परीक्षाओं के मूल्यांकन के संबंध में गोपनीयता और गुणवत्ता का एक जैसा स्तर बनाए रखने की समस्या को ध्यान में रखते हुए विचार किया जा रहा है। अध्यक्ष ने यह कहा कि इस प्रश्न की जांच के लिए स्थापित विशेषज्ञ समिति से यह रिपोर्ट जल्दी प्रस्तुत करने के लिए कहा गया है।

इसके पश्चात् हिन्दी के प्रयोग के बारे में 31-3-89 तथा 30-6-89 को समाप्त तिमाही की प्रगति रिपोर्ट पर विचार हुआ। सर्वप्रथम श्री गोपालराव एकबोटे ने इस बात पर आपत्ति प्रकट की कि "क" और "ख" क्षेत्रों के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र की सरकारों, उनके कार्यालयों या गैरसरकारी व्यक्तियों को भेजे गए पत्र आदि में अधिकांश पत्र अंग्रेजी में भेजे गए हैं। हिन्दी में भेजे गये पत्रों का प्रतिशत कम रहने के कारणों को स्पष्ट करते हुए सचिव (कार्मिक) ने बताया कि इस मंत्रालय द्वारा अधिकांश पत्र कम्प्यूटरों द्वारा भेजे गए हैं जैसा कि समिति को सूचित किया जा चुका है कि कम्प्यूटरों को द्विभाषी बनाने की दिशा में हमें काफी सफलता मिल चुकी है और निर्वाचन सदन, पटेल भवन और सी.जी.ओ कम्प्लेक्स में स्थित इस मंत्रालय के कार्यालयों में लगे हुए कम्प्यूटरों को द्विभाषी बना दिया जाएगा, उसके बाद स्थिति में निश्चित सुधार होगा।

के.स.हि. परिषद के प्रतिनिधि ने इस बात पर आपत्ति की कि पिछले वर्ष हिन्दी के कामकाज का जायजा लेने के लिए इस मंत्रालय के 4 सम्बद्ध कार्यालयों में से 3 का ही निरीक्षण किया गया। यह आश्वासन दिया गया कि चौथे कार्यालय अर्थात् लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी का निरीक्षण शीघ्र कर दिया जाएगा।

श्री एकबोटे ने हिन्दी कार्यशालाओं का मुद्दा उठाया और उन्होंने आग्रह किया कि हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त जिन 403 कर्मचारियों/अधिकारियों को हिन्दी कार्यशाला में प्रशिक्षित नहीं किया जा सका है उनके प्रशिक्षण के लिए एक कार्यक्रम तैयार किया जाना चाहिए। अध्यक्ष ने यह स्वीकार किया कि हिन्दी कार्यशालाओं में 15—20 कर्मचारियों के बैच बनाकर उन्हें हिन्दी टिप्पण तथा मसौदा लेखन में प्रशिक्षित किया जायेगा।

तारों में हिन्दी के प्रयोग की स्थिति पर भी चर्चा हुई। इस संबंध में सचिव (कार्मिक) ने उल्लेख किया कि ऐसे तारों की संख्या अधिक नहीं है जिनका मानकीकरण

और हिन्दी में अनुवाद किया जा सके। फिर भी उन्होंने विश्वास दिलाया कि जहां कहीं संभव होगा हिन्दी में तार भेजने का प्रयास किया जाएगा।

हिन्दी परिषद के प्रतिनिधि ने यह भी कहा कि 56 अनुभागों में से कोई भी अनुभाग ऐसा नहीं है जिसे हिन्दी में काम करने के लिए विनिर्दिष्ट किया गया हो। इस संबंध में विस्तृत चर्चा हुई और यह निर्णय लिया गया कि कार्य की कुछ ऐसी मदें तय कर ली जायेंगी जिनमें पूरी तरह से हिन्दी का प्रयोग किया जाएगा।

हिन्दी परिषद के प्रतिनिधि ने इस बात पर भी आपत्ति की कि हिन्दी आशुलिपि/टंकण में प्रशिक्षित आशुलिपिकों/टाइपिस्टों की संख्या काफी है लेकिन उनकी सेवाओं का उपयोग हिन्दी आशुलिपि/टंकण के लिए नहीं किया जा रहा है। इस विषय पर चर्चा के बाद यह निर्णय लिया गया कि हिन्दी के काम के लिए हिन्दी आशुलिपि/टंकण में प्रशिक्षित कर्मचारियों की सेवाओं का और अधिक उपयोग किया जाएगा।

शहरी विकास मंत्रालय

मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति की बैठक दिनांक 17 जुलाई 1989 को सम्पन्न हुई। समिति के सदस्यों ने कहा कि मंत्रालय में निदेशक (राजभाषा) का पद होना चाहिए तथा अलग से राजभाषा कार्यान्वयन अनुभाग का गठन किया जाना चाहिए ताकि मंत्रालय में राजभाषा संबंधी नियमों आदि का कार्यान्वयन सुचारू रूप से हो सके। अध्यक्ष महोदया ने कहा कि यह मामला अभी चल रहा है। इस पर श्री तुलसी राम, संसद सदस्य ने जानना चाहा कि ये दोनों कार्य कब तक हो जाएंगे। संयुक्त सचिव (वित्त) ने कहा कि इस मामले पर समिति की अगली बैठक तक निर्णय लेने का प्रयत्न किया जाएगा।

हिन्दी संस्था संघ को कोई वैकल्पिक स्थान देने तथा नागरी प्रचारिणी सभा की जमीन नापने के संबंध में

हिन्दी संस्था संघ को स्थान देने के संबंध में सदस्यों को स्थिति से अवगत कराया गया। नागरी प्रचारिणी सभा की जमीन नापने के संबंध में दिल्ली विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष ने कहा कि वे बैठक के बाद श्री सुधाकर पाण्डेय से संपर्क कर लेंगे और इस मामले को जल्दी से निपटा लेंगे।

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद के प्रतिनिधि, श्री पन्नालाल शर्मा ने कहा कि विजेताओं को पुरस्कार मंत्री महोदया द्वारा किसी समारोह में ही प्रदान किए जाए। इससे पुरस्कार विजेताओं के अतिरिक्त अन्यों को भी प्रोत्साहन मिलेगा। उन्होंने यह भी कहा कि मंत्रालय में लागू मौलिक लेखन योजना का व्यापक विज्ञापन दिया जाय।

समिति ने दिल्ली विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष द्वारा बताई गई स्थिति नोट की। श्री सुधाकर पाण्डेय ने कहा कि दिल्ली विकास प्राधिकरण में कुछ फार्म आदि ऐसे हैं जिनमें केवल नाम ही भरना होता है; ये काम हिन्दी में किए जा सकते हैं। दिल्ली विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष ने कहा कि ये काम कम्प्यूटर से होते हैं। इस पर श्री सुधाकर ने कहा कि कम्प्यूटर हिन्दी में भी होने चाहिए। दिल्ली विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष ने आश्वासन दिया कि यह कार्य हिन्दी में करने का प्रयास किया जायेगा।

श्री तुलसीराम, संसद सदस्य ने कहा कि दिल्ली विकास प्राधिकरण में धारा 3 (3) का भी पालन नहीं हो रहा है। यहां नियमानुसार 50 प्रतिशत हिन्दी टाइपराइटर भी नहीं है, 40 पत्रों का उत्तर अंग्रेजी में दिया गया है। दिल्ली विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष ने कहा कि इस संबंध में अगली बैठक में विवरण दिया जायेगा। श्री पन्नालाल शर्मा ने कहा कि दिल्ली विकास प्राधिकरण द्वारा आम जनता तथा कर्मचारियों के लाभ संबंधी कागजात जैसे कि आवंटन पत्र, पदोन्नति पत्र आदि हिन्दी में भेजे जाएं, इससे लोग अपने आप ही हिन्दी में रुचि लेंगे। दिल्ली विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष ने आश्वासन दिया कि हम इस दिशा में प्रयास करेंगे।

श्री तुलसी राम, संसद सदस्य ने कहा कि "क" तथा "ख" क्षेत्रों के गैर सरकारी व्यक्तियों को भेजे जाने वाले पत्र 100 प्रतिशत हिन्दी में होने चाहिए। उन्होंने मंत्रालय द्वारा "ख" क्षेत्र में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों को भेजे गए पत्र आदि में आई गिरावट पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने यह भी कहा कि प्रवीणता प्राप्त कर्मचारियों को सरकारी कार्य हिन्दी में ही करना चाहिए। उन्होंने मंत्रालय तथा इससे सम्बद्ध अधीनस्थ कार्यालयों में द्विभाषी कम्प्यूटरों के उपयोग पर जोर दिया। श्री आर. एस. गुप्ता ने निर्माण महानिदेशालय द्वारा हिंदी पत्राचार के संबंध में दिए गए आंकड़ों में त्रुटियों की ओर ध्यान दिलाया। उन्होंने कहा कि मुद्रण निदेशालय के नियंत्रणाधीन भारत सरकार के मुद्रणालयों में हिन्दी के 9 पद रिक्त पड़े हुए हैं और उन्होंने सुझाव दिया कि उपयुक्त

उम्मीदवार न मिलने की स्थिति में इन पदों को भर्ती नियमों में कुछ छूट देकर शीघ्र ही भरा जाना चाहिए। उन्होंने मुद्रण निदेशालय द्वारा भेजे गए हिन्दी/अंग्रेजी के कुल पत्रों तथा पिछली तिमाही की तुलना में इस तिमाही में लक्ष्य/प्रतिशत के आंकड़ों के बारे में कहा कि ये ठीक प्रतीत नहीं होते। उन्होंने एन. बी. सी. सी. द्वारा "ग" क्षेत्र में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों को भेजे गए पत्र आदि के आंकड़े भी ठीक नहीं पाए।

श्री पन्नालाल शर्मा ने कहा कि सभी कार्यालयों में हिन्दी आशुलिपिकों से हिंदी में ही कार्य लिया जाना चाहिए। इस संबंध में उन्होंने सुझाव दिया कि हिन्दी में डिक्टेशन देने वाले अधिकारियों को भी कुछ प्रोत्साहन दिया जा सकता है, जिससे हिन्दी आशुलिपिकों की सेवा का भरपूर लाभ उठाया जा सके। सभी संबंधितों ने पाई गई इन त्रुटियों को दूर करने का आश्वासन दिया।

राजभाषा विभाग के सचिव श्री राधाकांत शर्मा ने बताया कि हिन्दी में सोफ्टवेयर उपलब्ध हैं और कंप्यूटर में दोनों भाषाओं का प्रयोग किया जा सकता है। हम चाहते हैं कि सभी कार्यालयों में कंप्यूटर प्रारम्भ से ही द्विभाषी हों और जो द्विभाषी न हों, उन्हें सोफ्टवेयर द्वारा द्विभाषी कराया जा सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि राजभाषा विभाग में एक तकनीकी कक्ष है जो आपको इस संबंध में तकनीकी परामर्श तथा सहायता दे सकता है।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग)

मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग) की हिन्दी सलाहकार समिति की बैठक शिक्षा राज्य मंत्री की अध्यक्षता में 22-9-89 को शास्त्री भवन, नई दिल्ली में संपन्न हुई।

बैठक की कार्रवाई आरंभ करते हुए अध्यक्ष महोदय ने समिति को बताया कि पहले तो पूरे मंत्रालय को इकट्ठी हिन्दी सलाहकार समिति थी परन्तु अब शिक्षा विभाग की अलग समिति बन गई है। उन्होंने इस समिति के सभी नए और पुराने सदस्यों का स्वागत किया।

विभाग की 30 जून 1989 को समाप्त तिमाही प्रगति रिपोर्ट पर चर्चा आरंभ करते हुए सचिव राजभाषा श्री राधाकांत शर्मा ने कहा कि "क" और "ख" क्षेत्र को भेजे जाने वाले पत्रों में हिन्दी का प्रयोग शत-प्रतिशत रूप से होना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि हिन्दी में प्राप्त पत्रों में से बहुत बड़ा प्रतिशत ऐसे पत्रों का है जिनके बारे में यह कहा गया है कि उनका उत्तर दिया जाना अपेक्षित नहीं था। वे चाहते थे कि इस बात की जांच कराई जाए कि हिन्दी में प्राप्त जिन पत्रों के बारे में यह कहा गया है कि उनका उत्तर अपेक्षित नहीं था उन्हें एक बार देख लिया जाए।

तारों की स्थिति पर चर्चा करते हुए जहां इस बात की प्रशंसा की गई कि स्थिति में पिछली तिमाही की तुलना में कुछ सुधार हुआ है हिन्दी आशुलिपि/टंकण में प्रशिक्षण के बारे में इस विभाग की स्थिति संतोषजनक नहीं समझी गई। य निर्णय लिया गया कि भविष्य में अधिक से अधिक संख्या कर्मचारियों को हिन्दी आशुलिपि/टंकण में प्रशिक्षित कि जाएगा। टाइपराइटरों को लेकर भी आपत्ति व्यक्त की गई राजभाषा नियमों के अनुसार "क" क्षेत्र में स्थित मंत्रालय विभागों में हिन्दी की टाइपराइटरों की संख्या रोमन लि के टाइपराइटरों से आधी अवश्य होनी चाहिए। इसी प्रक इस तिमाही में केवल दो टाइपराइटर खरीदे गए और वे रोमन लिपि के थे। यह स्पष्ट किया गया कि ये टाइपराइ प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय में खरीदे गए थे। यह आश्वासन दि गया कि भविष्य में टाइपराइटर खरीदते समय राजभ नियमों का ध्यान रखा जाएगा और साथ ही इस बात का पता लगाया जाएगा कि क्या अंग्रेजी के टाइपराइटरों का की-बोर्ड बदलकर स्थिति में कुछ सुधार लाया जा सकता अध्यक्ष महोदय ने इस संबंध में स्थिति की पुनरीक्षा क राजभाषा विभाग को स्थिति से अवगत कराने का निर्देश दि

श्री जगदंबी प्रसाद यादव ने यह आग्रह था कि सारा व काज मूल रूप से हिन्दी में किया जाना चाहिए। उनका क था कि नियम 8(4) के अधीन कुछ न कुछ अनुभाग नि दिष्ट किये जाने चाहिए। इस पर निदेशक (राजभाषा स्थिति स्पष्ट करते हुए बताया कि संस्कृत प्रभाग, भाषा प्र आदि में कार्य की बहुत सारी ऐसी मदें निर्धारित की ग जोकि पूरी तरह से हिन्दी में निपटाई जाती हैं। इस पर अ महोदय ने कहा कि इस प्रकार की मदों की एक सूची स के सदस्यों के बीच परिचालित कर दी जाए।

शिक्षा विभाग के अधीन विभिन्न अधीनस्थ कार्या स्वायत्त संगठनों में हिन्दी के प्रयोग की स्थिति का जायजे के लिए निरीक्षण किए जाने का आग्रह भी किया गया जिस पर यह आश्वासन दिया गया कि इस प्रकार के नि में गति लाई जाएगी। साथ ही यह भी निर्णय लिया कि विभाग के जो भी अधिकारी किसी कार्यालय/स संगठन के निरीक्षण के लिए जाते हैं उनकी निरीक्षण बैठकों में हिन्दी के प्रयोग के बारे में भी कुछ महत्त्वपूर्ण जोड़ दिए जाएंगे। जिससे कि वहां अन्य बातों के साथ हिन्दी के प्रयोग की स्थिति का जायजा लिया जा सके। योगा वर्मा संसद सदस्या का यह आग्रह था कि त और वैज्ञानिक विषयों पर हिंदी में लिखी हुई जिन को पुरस्कृत किया जाता है उनका व्यापक प्रचार-प्रसार जाना चाहिए। इस पर अध्यक्ष महोदय ने यह निर्देश कि राष्ट्रीय पुस्तक न्यास को यह कहा जाए कि वे जहां क पुस्तक मेलों का आयोजन करें उनमें हिन्दी में लिखी हु पुरस्कृत पुस्तकों के लिए एक अलग से शेल्फ की व करें ताकि तकनीकी; वैज्ञानिक और कानूनी विषयों प रूप से हिन्दी में लिखी गई पुस्तकों को प्रोत्साहन मिल

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव ने यह भी कहा कि राजभाषा हिन्दी होने पर भी "शिक्षा विश्व" और "यूनेस्को समाचार" में जो लेख होते हैं वे सभी अंग्रेजी से हिंदी में अनूदित होते हैं। उनका कहना था कि इन दोनों पत्रिकाओं में जो लेख हों; वे मूलतः हिंदी में लिखे जाने चाहिए। उनका यह भी कहना था कि "दूत" जो कि "कूरियर" का हिंदी अनुवाद है उसमें भारतीय लेखकों के लेख होने चाहिए। अध्यक्ष महोदय ने इस विषय पर विचार करने का आश्वासन दिया।

यह आश्वासन दिया गया कि शिक्षा विभाग से जुड़े हुए विषयों पर मूल रूप से हिन्दी में लिखी पुस्तकों को प्रोत्साहित करने के लिए पुरुस्कार योजना जल्द ही शुरू कर दी जाएगी ।

योजना मंत्रालय

योजना मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति एक बैठक योजना मंत्री की अध्यक्षता में दिनांक 12 सितम्बर, 1989 को योजना भवन में हुई। अध्यक्ष ने पत्राचार में हिन्दी के प्रयोग की स्थिति का उल्लेख करते हुए कहा कि सांख्यिकी विभाग में यह उत्साहवर्धक है परन्तु योजना आयोग में पिछली तिमाही के दौरान हिन्दी में भेजे गए पत्रों में कमी आई है। उन्होंने बताया कि आयोग के सचिव ने इस स्थिति के बारे में अपने वरिष्ठ अधिकारियों के साथ इस संबंध में उपचारों उपायों के संदर्भ में विचार-विमर्श किया और यह विश्वास किया जा सकता है कि स्थिति में पुनः सुधार होगा ।

1. समिति को सूचित किया गया कि योजना संबंधी हिन्दी शब्दावली उपसमिति का गठन कर लिया गया है तथा उसकी एक बैठक हो चुकी है। यह आशा व्यक्त की गई कि उप समिति अपना कार्य शीघ्र ही पूरा कर लगी।

2. समिति को बताया गया कि योजना आयोग में सहायक निदेशक (राजभाषा) के दो पदों के सृजन संबंधी प्रस्ताव अभी भी विचाराधीन है और आयोग के एकीकृत वित्त प्रभाग के साथ परामर्श चल रहा है। यह आशा व्यक्त की गई कि इस संबंध में शीघ्र ही निर्णय ले लिया जाएगा ।

3. सांख्यिकी विभाग की ही तरह योजना आयोग में भी हिन्दी में डिक्टेशन देने के संबंध में अधिकारियों को प्रोत्साहित करने संबंधी राजभाषा विभाग द्वारा सुझाई गई प्रोत्साहन योजना लागू कर दी गई है ।

4. योजना आयोग द्वारा इस आशय के अनुदेश जारी कर दिए गए हैं कि "क" तथा "ख" क्षेत्रों को भेजे जाने वाले सभी सरकारी तार देवनागरी में ही भेजे जाएं और यदि किसी कारणवश तार अंग्रेजी में भेजा जाना आवश्यक हो तो ऐसा सलाहकार (प्रशासन) की लिखित अनुमति से ही किया जा सकेगा ।

5. अध्यक्ष महोदय ने सुझाव दिया कि जनता से प्राप्त हिन्दी पत्रों की पावती हिन्दी में भेजी जानी चाहिए, भले ही उस पत्र का उत्तर देना अपेक्षित न भी हो। उन्होंने यह भी मत व्यक्त किया कि यदि "क" तथा "ख" क्षेत्रों से पत्र अंग्रेजी में भी आएं तो भी उनका उत्तर हिन्दी में ही देना चाहिए।

6. राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र द्वारा पहले से सप्लाई किए गए पी.सी. अगले वर्ष में जून, 90 तक हिन्दी में काम योग्य बनाए जाने की व्यवस्था और भविष्य में ऐसे पी. सी. लगाने का प्रबंध जो हिन्दी में भी काम योग्य हों। समिति को सूचित किया गया कि राष्ट्रीय-सूचना विज्ञान केन्द्र ने विभिन्न सरकारी विभागों में कई पर्सनल कम्प्यूटर और पर्सनल कम्प्यूटर पर आधारित टर्मिनल लगाए हैं: इन विभागों को देवनागरी में आंकड़े भरने की सामर्थ्य प्रदान करने के लिए राष्ट्रीय सूचना-विज्ञान केन्द्र द्विभाषी टर्मिनल लगाने का काम कर रहा है।

7. राष्ट्रीय सूचना-विज्ञान केन्द्र द्विभाषी रूप में कम्प्यूटरीकरण की सेवाएं प्रदान करने की स्थिति में है। यह संबद्ध विभाग व उपक्रम आदि पर निर्भर करता है कि वे कम्प्यूटर का उपयोग देवनागरी लिपि के माध्यम से करते हैं या रोमन लिपि के माध्यम से।

8. समिति को बताया गया कि आठवी पंचवर्षीय योजना (1990-95) तैयार करने के संदर्भ में संघ सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वियन की गति को तेज करने की एक व्यापक योजना तैयार करने के लिए पहली बार राजभाषा से संबंधित एक कार्यदल का गठन किया गया जिसके अध्यक्ष, राजभाषा विभाग के सचिव हैं। उक्त कार्यदल की सिफारिशों पर योजना आयोग गहराई से विचार करेगा ।

9. सलाहकार (प्रशासन) ने समिति को सूचित किया कि "योजना" पत्रिका सूचना तथा प्रसारण मंत्रालय द्वारा प्रकाशित की जाती है, योजना आयोग द्वारा नहीं । फिर भी समय-समय पर उसमें हिन्दी के बारे में सामग्री प्रकाशित की जाती है। श्री हुताशन शास्त्री, श्री जगदीश सैनी तथा डा. लक्ष्मी नारायण दुबे का मत था कि पत्रिका में राजभाषा से संबंधित अधिकाधिक जानकारी प्रकाशित की जानी चाहिए तथा साथ ही बैठक की कार्रवाई और गोष्ठी की रिपोर्ट भी प्रकाशित होनी चाहिए।

10. योजना आयोग में हिन्दी में भेजे गए पत्रों के प्रतिशत अनुपात में आई कमी के संदर्भ में डा. वी.के. दुबे ने सुझाव दिया कि आयोग के जिन प्रभागों/अनुभागों में अधिक पत्राचार होता है और यदि उन्हें हिन्दी में पत्र भेजने में अभी कठिनाई आ रही हो तो ऐसे उपाय किए

जाने चाहिएं जिससे वे उन पत्रों को हिन्दी में भेज सकें। फिलहाल प्रयोग के तौर पर ऐसे कुछ प्रभागों को एक-एक हिन्दी अनुवादक दिया जा सकता है जिसकी सहायता से वे हिन्दी में पत्र भेज सकते हैं। सलाहकार (प्रशासन) ने कहा कि मंत्रालय में अनेक प्रभाग हैं और प्रत्येक प्रभाग को अलग-अलग अनुवादक देना संभव नहीं होगा। इसके अलावा अनुवादक द्वारा किए गए अनुवाद कार्य को जांचने की समस्या भी उत्पन्न होगी।

11. डा. राजकिशोर पाण्डेय ने कहा कि उन्होंने योजना आयोग की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में प्रेक्षक के रूप में भाग लिया था। इस बैठक में यह बताया गया कि जो अधिकारी हिन्दी में डिक्टेशन देना चाहते हैं, उन्हें इसके लिए हिन्दी अनुभाग या अन्य अनुभागों से आशुलिपिकीय कर्मचारी को बुलाना पड़ता है। यह उनके लिए कठिनाई का कारण है और इसे दूर करने का प्रयत्न किया जाना चाहिए। जो अधिकारी हिन्दी में काम करना चाहते हैं उन्हें हिन्दी के आशुलिपिक और टाइप करने वाले कर्मचारी उपलब्ध कराए जाने चाहिएं।

12. श्री हुताशन शास्त्री ने सुझाव दिया कि कार्यालय में कामकाज के संबंध में सरकार की ओर से सदैव निवेदन की भाषा न होकर आग्रह किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि हिन्दी का प्रयोग करते समय जिन अंग्रेजी शब्दों के हिन्दी पर्याय चयन करने में दिक्कत आती हो तो वहां अंग्रेजी शब्द ज्यों का त्यों लिख दिया जाना चाहिए।

13. सभी सदस्यों ने एक स्वर से इस बात की सराहना की कि योजना आयोग तथा सांख्यिकी विभाग द्वारा हिन्दी पखवाड़े, का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न कार्यक्रमों जैसे हिन्दी पुस्तकालय प्रदर्शनी, हिन्दी कार्यशालाएं, हिन्दी आशुलिपि प्रतियोगिता, हिन्दी टंकण प्रतियोगिता आदि का आयोजन करके मंत्रालय में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने का वातावरण तैयार किया गया।

कल्याण मंत्रालय

मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति की छठी बैठक 23 अगस्त, 1989 को माननीय कल्याण मंत्री की अध्यक्षता में संपन्न हुई।

मंत्रालय में हिंदी में काम करने वाले कर्मचारियों/अधिकारियों की संख्या हिंदी में प्रशिक्षित अधिकारियों/कर्मचारियों की तुलना में बहुत कम है। सचिव कल्याण एक बैठक आयोजित कर अधिकारियों को हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित करेंगे। इसी प्रकार संयुक्त सचिव (प्रशासन) एक अन्य बैठक बुलाएंगे जिसमें यह विचार किया जाएगा कि ऐसे क्या कारण हैं अथवा क्या कठिनाइयां हैं जिनके कारण अधिकारी/कर्मचारी हिंदी में प्रशिक्षित होने के बावजूद हिंदी में कार्य नहीं करते हैं अथवा नहीं कर पा रहे हैं। उनकी जो कठिनाइयां होंगी उनके समाधान के लिए आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

मंत्रालय के अनुवादकों को हिंदी अनुवाद का प्रशिक्षण दिलाने के संबंध में यह निश्चय हुआ कि मंत्रालय में हिंदी अनुवादकों के सारे पद भर लिए जाने के बाद हिंदी अनुवादकों को हिंदी अनुवाद प्रशिक्षण के लिए भेजा जाएगा। मंत्रालय में हिंदी में प्रशिक्षित किए जाने वाले आशुलिपिकों/टंककों की बड़ी संख्या को ध्यान में रखते हुए यह निर्णय लिया गया कि अधिक से अधिक आशुलिपिकों और टंककों को हिंदी आशुलिपि/टंकण में प्रशिक्षण के लिए भेजा जाएगा। जो भी नए टाइपराइटर खरीदे जाएं वह देवनागरी के हों। देवनागरी टाइपराइटरों की संख्या नियमों के अंतर्गत निर्धारित प्रतिशत के अनुकूल होनी चाहिए।

समिति ने चिंता व्यक्त की कि कुछ कार्यालयों में अभी भी राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) का अनुपालन नहीं हो रहा है। इसी प्रकार कहीं हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर अंग्रेजी में दिए जा रहे हैं अथवा "क" तथा "ख" क्षेत्रों में स्थित केन्द्रीय/राज्य सरकारों के कार्यालयों और व्यक्तियों को पत्र अंग्रेजी में भेजे जा रहे हैं अथवा कहीं हिंदी टाइपराइटर हैं तो हिंदी टाइपिस्ट नहीं, और कहीं हिंदी टाइपिस्ट हैं तो हिंदी टाइपराइटर नहीं। मंत्रालय के संस्थानों में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें विलम्ब से हुई हैं या बिल्कुल नहीं हुई। इन सभी कमियों के संबंध में संबद्ध संस्थाओं के उपस्थित वरिष्ठ पदाधिकारियों द्वारा यह आश्वासन दिया गया कि भविष्य में राजभाषा अधिनियम एवं नियमों का पूरी तरह से अनुपालन सुनिश्चित किया जाएगा। मंत्रालय द्वारा इस संबंध में उन्हें यह आश्वासन दिया गया कि राजभाषा विभाग द्वारा परिचालित नवीनतम मानदण्डों के अनुसार हिंदी कर्मचारी भी मंजूर किए जाएंगे इस संबंध में सचिव (राजभाषा) श्री राधाकान्त शर्मा ने इस बात को रिकार्ड करने का अनुरोध किया कि नवीनतम मानदण्डों के अनुसार, हिंदी पदों के सृजन के लिए मंत्रालय/विभाग के सचिव पूर्ण रूप से सक्षम हैं और ऐसे मामले वित्त मंत्रालय को भेजने की आवश्यकता नहीं है जो कि नवीनतम मानदण्डों के अनुसार हों क्योंकि ये आदेश वित्त मंत्रालय के परामर्श से ही जारी किए गए हैं।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय तथा महासागर विकास विभाग

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय तथा महासागर विकास विभाग की नवगठित संयुक्त हिन्दी सलाहकार समिति की बैठक में 1-6-1989 को विज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री श्री के. आर. नारायणन् ने उपस्थित सरकारी तथा गैर-सरकारी सदस्यों को बैठक में भाग लेने के लिए आभार प्रकट किया और मंत्रालय

विभिन्न विभागों में हिन्दी के प्रयोग के बारे में हिन्दी में बोल कर संक्षिप्त जानकारी दी। सभी सदस्यों ने मंत्री जी के हिन्दी में भाषण देने की सराहना की।

समिति ने निम्नलिखित निर्णय लिए :—

1. विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अंतर्गत कार्यरत विभागों में एक-एक वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी के पद बनवाए जाएं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग तथा अन्य विभागों में राजभाषा नीति अनुभाग अलग से खोले जाएं ताकि भारत सरकार की राजभाषा नीति का कार्यान्वयन ठीक ढंग से हो सके।

2. हिन्दी आशुलिपि तथा हिन्दी टाइप सीखे हुए लोगों की सेवाओं का उपयोग किया जाए और अधिकाधिक कर्मचारियों को हिन्दी आशुलिपिक/टाइप में प्रशिक्षित किया जाये। अधिकारियों के हिन्दी में डिक्टेशन देकर काम करवाने की प्रोत्साहन योजना को और आकर्षक बनाया जाये और उसका व्यापक रूप से प्रचार किया जाये।

3. "क" तथा "ख" क्षेत्रों में स्थित वैज्ञानिक विभागों के कार्यालयों में जहां हिन्दी आशुलिपिक तथा हिन्दी टाइपिस्ट का पद नहीं है वहां पद बनाया जाए और जहां ये पद खाली पड़े हैं, उन्हें भरा जाए।

4. विभागों द्वारा प्रकाशित द्विभाषिक प्रकाशन स्कूलों/कालेजों/विश्वविद्यालयों में नियमित रूप से भेजे जाएं ताकि विज्ञान की प्रगति के बारे में उन्हें जानकारी मिल सके। विभिन्न विज्ञान और प्रौद्योगिकी विषयों की और अधिक हिन्दी पुस्तकें खरीदी जाएं।

5. विभिन्न वैज्ञानिक विषयों के प्रकाशनों का हिन्दी में अनुवाद करवाया जाए तथा वैज्ञानिक विषयों के हिन्दी लेखकों को वैज्ञानिक संस्थाओं के दौरों पर ले जाया जाना चाहिए ताकि उन्हें मौलिक रचना हिन्दी में लिखने के लिए प्रेरणा मिल सके।

6. प्रत्येक वर्ष कम से कम एक वैज्ञानिक सेमिनार हिन्दी में आयोजित किया जाये।

7. वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुसंधानशालाओं द्वारा प्रकाशित होने वाली अंग्रेजी की पत्रिकाओं को हिन्दी में भी प्रकाशित किया जाना चाहिये ताकि वैज्ञानिक विषयों के हिन्दी लेखकों को मौलिक लेखों में प्रोत्साहन मिल सके।

गैर-सरकारी सदस्यों को विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में पर्यवेक्षक के रूप में आमंत्रित करने तथा उन्हें परिचय पत्र जारी करने के प्रश्न पर सदस्य-सचिव ने सूचित किया कि क्योंकि विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें बहुत अल्प सूचना पर बुलाई जाती हैं इसलिए उन्हें बुलाने में कठिनाई होगी। उन्होंने राजभाषा विभाग के संयुक्त सचिव से आग्रह किया कि इस संबंध में स्पष्ट अनुदेश जारी करें। राजभाषा विभाग के संयुक्त सचिव ने इस पर विचार करने का आश्वासन दिया।

मंत्री महोदय ने राष्ट्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी संचार परिषद् द्वारा दी गयी वित्तीय सहायता तथा सहयोग के आधार पर प्रकाशित "महासागर विकास : एक परिचय" पुस्तक का विमोचन किया।

इलैक्ट्रानिकी परमाणु ऊर्जा तथा अन्तरिक्ष विभाग

दिनांक 11 अक्तूबर, 1989 को नई दिल्ली में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री, की अध्यक्षता में संयुक्त हिन्दी सलाहकार समिति की सातवीं बैठक हुई।

अध्यक्ष ने इन विभागों द्वारा हिन्दी के क्षेत्र में किए गए प्रशंसनीय कार्य की सराहना की। उन्होंने खासकर इस बात की प्रशंसा की कि इन विभागों द्वारा कार्यशालाओं तथा सेमिनारों के आयोजन फलस्वरूप, सरकारी कामकाज में तकनीकी लेखन को बढ़ावा मिला है।

2. सचिव श्री राजामणि के अनुरोध पर, मंत्री जी ने इलैक्ट्रानिकी विभाग के डा. ओम विकास द्वारा खासकर बच्चों के लिए लिखी गई और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान तथा प्रशिक्षण परिषद् द्वारा प्रकाशित "कम्प्यूटर से बातचीत" नामक पुस्तक का विमोचन किया। तत्पश्चात् सचिव, इलैक्ट्रानिकी विभाग ने हिन्दी के प्रयोग की दिशा में हुई प्रगति का विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि :

1. तकनीकी हिन्दी लेखन प्रोत्साहन तथा सूचना प्रसारण कक्ष का गठन मुख्यत: तकनीकी विषयों पर हिन्दी में मौलिक लेखन को प्रोत्साहन प्रदान करने और इलैक्ट्रानिकी के क्षेत्र में आम जनता को अधुनातम विकास की जानकारी हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कराने के उद्देश्य से किया गया है।

2. राजभाषा शील्ड योजना वित्तीय वर्ष 1989-90 से निम्नलिखित 3 प्रमुख श्रेणियों के लिए आरम्भ की गई है :—1. इलैक्ट्रानिकी विभाग के प्रभागों/अनुभागों के लिए राजभाषा शील्ड 2. इलैक्ट्रानिकी विभाग के सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों तथा संस्थाओं के लिए राजभाषा शील्ड तथा 3. इलैक्ट्रानिकी विभाग के अधीनस्थ कार्यालयों के लिए राजभाषा शील्ड।

3. इलैक्ट्रानिकी विभाग ने हिन्दी में मौलिक पुस्तक लेखन पर पुरस्कारों की राशि को नीचे दिए गए अनुसार बढ़ाने का प्रस्ताव किया है :—

1. प्रथम पुरस्कार	10,000 रुपये
2. द्वितीय पुरस्कार	7,500 रुपये
3. तृतीय पुरस्कार	5,000 रुपये
4. सान्त्वना पुरस्कार (3)	2,500 रुपये

4. सदस्यों को आश्वासन दिया गया कि इलैक्ट्रोनिकी विभाग ने इलैक्ट्रानिकी का विकास करने के साथ-साथ हिन्दी के प्रयोग के क्षेत्र में भी तरक्की की है और द्विभाषी बहुभाषी इलेक्ट्रानिकी उपकरण उपलब्ध कराने में अग्रणी भूमिका निभाई है। इसके फलस्वरूप अधिकांश कम्प्यूटरों पर द्विभाषी रूप में कार्य करना अब संभव हो गया है। अब तो मुद्रक भी हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में आसानी से उपलब्ध हो गए हैं। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि इन प्रयासों के फलस्वरूप बैंक और बीमा उद्योगों में देवनागरी कम्प्यूटरों के माध्यम से हिन्दी के प्रयोग में तेजी लाने में काफी मदद मिलेगी।

इसी प्रकार, परमाणु ऊर्जा विभाग के संयुक्त सचिव श्री आर. बी. बुद्धिराजा ने पिछले एक वर्ष के दौरान परमाणु ऊर्जा विभाग में हुई प्रगति का ब्यौरा प्रस्तुत किया। इसकी मुख्य-मुख्य उपलब्धियां नीचे दिए अनुसार हैं :—

1. वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी के पद का दर्जा बढ़ाकर निदेशक (राजभाषा) कर दिया गया है। परमाणु ऊर्जा विभाग हिन्दी आशुलिपिकों के अतिरिक्त पदों का भी सृजन कर रहा है जिससे हिन्दी में डिक्टेशन देने के इच्छुक अधिकारियों को सुविधा होगी।

2. मुख्य सचिवालय के 4 अनुभागों में कुछ ऐसे विषय विनिर्दिष्ट किए गए हैं जिनमें केवल हिन्दी में ही कामकाज किया जाएगा।

परमाणु ऊर्जा विभाग ने निर्णय किया है कि वे आगे से केवल द्विभाषी इलेक्ट्रोनिक टाइपराइटरों और टेलेक्स मशीनों को ही खरीदेंगे।

वैज्ञानिक समुदाय में हिन्दी को लोकप्रिय बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसमें 'रसायन विज्ञान में उभरते हुए क्षितिज' 'हिन्दी का प्रगामी प्रयोग' : 'नाभिकीय बिजली का विकास' जैसे तकनीकी विषयों पर संगोष्ठियों का आयोजन शामिल हैं। भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र ने भोपाल विश्वविद्यालय के सहयोग से नाभिकीय ऊर्जा' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया। 'पर्यावरण प्रदूषण और उद्योग' विषय पर भी एक और संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

5. परमाणु ऊर्जा विभाग ने भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र के सहयोग से नाभिकीय भौतिकी शब्दावली तैयार करके वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग से अनुमोदन करवाया है।

6. परमाणु ऊर्जा विभाग ने वैज्ञानिक तथा तकनीकी विषयों पर हिन्दी में मौलिक लेखन को बढ़ावा देने के लिए और साथ ही शोध पत्रिकाएं प्रकाशित करने के लिए एक समिति का गठन किया है।

7. डा. होमी भाभा पुरस्कार योजना के अन्तर्गत पुरस्कारों की राशि नीचे दिए अनुसार बढ़ा दी गई है :—

प्रथम पुरस्कार	15,000 रु.
द्वितीय पुरस्कार	10,000 रु.
तृतीय पुरस्कार	7,500 रु.

अन्य भाषाओं की मानक पुस्तकों के हिन्दी अनुवाद के लिए भी 10,000 रु., 7,500 रु. और 5,000 रु. के तीन पुरस्कार रखे गए है।

तत्पश्चात् अन्तरिक्ष विभाग के सचिव प्रो. यू.आर. राव की अनुपस्थिति में विक्रम साराभाई अन्तरिक्ष केन्द्र, त्रिवेन्द्रम के निदेशक डा. सुरेश चन्द्र गुप्त ने अन्तरिक्ष विभाग तथा इसके विभिन्न संगठनों में हिन्दी के प्रयोग में हुई प्रगति का ब्यौरा प्रस्तुत किया जो संक्षेप में नीचे दिए अनुसार हैं :—

1. प्रशिक्षण, प्रोत्साहन तथा सहायक साहित्य तैयार करने पर विशेष ध्यान दिया गया है, क्योंकि इनकी अधिकांश इकाइयां 'ग' क्षेत्र में स्थित हैं।
2. हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त/कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों की सहायता के लिए अधिसूचित कार्यालयों में वर्ष 1988 के दौरान 8 कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।
3. अन्तरिक्ष विभाग ने भी विक्रम साराभाई पुरस्कार की राशि बढ़ाकर 10,000 रु. कर दी है।

4. वर्ष 1988-89 के दौरान हिन्दी में दो अन्तः केन्द्र तकनीक सेमिनारों और कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिसमें से एक सेमियार 'राष्ट्रीय विकास के लिए अन्तरिक्ष अनुसंधान" विषय पर श्री हरिकोटा स्थित शार केन्द्र आयोजित किया गया और दूसरा से मिनार बंगलोर स्थित इसरो उपग्रह केन्द्र में "बाह्य अन्तरिक्ष के शांतिपूर्ण उपयोग" विषय पर आयोजित किया गया जिसमें अन्तरिक्ष विभाग के सचिव महोदय, प्रो. यू.आर.राव ने हिन्दी में लगभग एक घंटे तक सारगर्भित मुख्य भाषण दिया।

5. अन्तरिक्ष विभाग के एक वरिष्ठ वैज्ञानिक ने 'राकेट एक परिचय" नामक एक पुस्तक, मूल रूप से हिन्दी में लिखी।

6. अहमदाबाद की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने अंतरिक्ष उपयोग केन्द्र, अहमदाबाद में "उपग्रह संचार और भारत में इसकी उपयोगिता "विषय पर अखिल भारतीय सेमिनार और "तकनीकी हिन्दी का विकास" विषय पर कार्यशाला में प्रस्तुत लेखों के संकलन के लिए विशेष पुरस्कार प्रदान किया।

7. अन्तरिक्ष विभाग को इन्दिरा गांधी राजभाषा योजना के अन्तर्गत वर्ष 1987-88 में द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

8. विभाग में हिन्दी के कार्यान्वयन के लिए अन्तः केन्द्र शील्ड योजना आरम्भ हुई।

तत्पश्चात् विभिन्न मुद्दों पर गहरी दिलचस्पी के साथ चर्चा हुई। माननीय सदस्यों ने जिन महत्त्वपूर्ण मुद्दों को उठाया और अपनी सिफारिशें दी, उनके ब्यौरे संक्षेप में नीचे दिए गए हैं :—

1. श्री मधुकर राव चौधरी ने ई.टी. एण्ड टी. द्वारा प्रस्तुत कार्यसूची से संबंधित कागजातों के मुद्रण की सुन्दर क्वालिटी की प्रशंसा की। उच्च स्तर पर लिए गए महत्त्वपूर्ण निर्णयों के फलस्वरूप ई.टी. एण्ड टी. में हिन्दी में मूल पत्राचार तीन से चार गुना बढ़ गया है। उन्होंने अन्य विभागों/संगठनों को भी इसी प्रकार के सामयिक और प्रभावी उपाय करने की सलाह दी। उन्होंने 'लिपि' जैसे द्विभाषी/बहुभाषी वर्ड प्रोसेसर का विनिर्माण करने के लिए सी एम सी की भी सराहना की, जिसमें अक्षरों की क्वालिटी बहुत बढ़िया है। उन्होंने अपने स्वयं के क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के क्षेत्र में कार्य करने के लिए इलेक्ट्रॉनिकी विभाग को भी बधाई दी और संबंधित अधिकारियों से आग्रह किया कि इन उपलब्धियों के लिए जिस अधिकारी ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है उन्हें इसका उचित प्रतिफल दिया जाए। श्री पन्नालाल शर्मा और डा. रत्नाकर पाण्डेय, श्री चौधरी के विचारों से पूरी तरह सहमत थे। संबंधित अधिकारी ने जिस आत्म प्रेरणा, कठिन परिश्रम और उत्साह के साथ इस प्रकार का अच्छा कार्य किया है उसकी सराहना करते हुए उन्होने कहा कि उसका उत्साह-वर्द्धन करने और उसका मनोबल बढ़ाने एवं अभिरुचि बनाए रखने के लिए कुछ न कुछ अवश्य किया जाना चाहिए। डा. पाण्डेय ने आगे यह भी बताया कि वित्त मंत्रालय ने इस आशय के स्पष्ट आदेश पहले ही ज़ारी कर दिए हैं कि सभी मंत्रालयों/विभागों के सचिव पर्याप्त संख्या में हिन्दी पदों को भरने में स्वयं ही सक्षम हैं और इसमें किसी ओर से किसी भी प्रकार की अड़चन या रुकावट नहीं होनी चाहिए। इलेक्ट्रोनिकी विभाग में निदेशक (राजभाषा) के पद को भरने के संबंध में ही पन्नालाल शर्मा तथा डा. रत्नाकर पाण्डेय के सुझावों के उत्तर में सचिव, इलेक्ट्रोनिकी विभाग ने सदस्यों को सूचित किया कि संयुक्त निदेशक का एक पद सृजित कर लिया गया है।

2. श्री पन्ना लाल शर्मा तथा अन्य सदस्यों ने इच्छा व्यक्त की कि डॉ. ओम विकास द्वारा लिखी गई "कम्प्यूटर से बातचीत" नामक पुस्तक सभी विद्यालयों को उपलब्ध कराई जानी चाहिए।

3. श्री पन्नालाल शर्मा तथा डॉ. रत्नाकर पाण्डेय ने "भारतीय भाषाओं के लिए प्रौद्योगिकी मिशन" की प्रगति के बारे में जानना चाहा। इलेक्ट्रोनिकी विभाग के सचिव महोदय ने सदस्यों को सूचित किया कि प्रो. सम्पत्त की अध्यक्षता में गठित एक समिति इससे संबंधित सभी पहलुओं पर विचार कर रही है। ।

4. श्री बाल्मीकि चौधरी द्वारा किसी शब्दावली के बारे में पूछे जाने पर वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी, श्री जयनारायण ने सदस्यों को सूचित किया कि इलेक्ट्रोनिकी विभाग ने लगभग 7,000 शब्दों का एक संकलन तैयार किया है और इस कार्य को पूरा करने के लिए एक कार्यदल का भी गठन किया गया है जिसमें इलेक्ट्रोनिकी विभाग के वैज्ञानिकों और वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के प्रतिनिधियों को शामिल किया गया है। वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के परामर्श से इलेक्ट्रोनिकी विभाग इस शब्दावली को अन्तिम रूप देगा।

5. डॉ. रत्नाकर पाण्डेय का एक और सुझाव यह था कि संयुक्त हिन्दी सलाहकार समिति की एक उप समिति का गठन किया जाए जो इन विभागों के हिन्दी में रुचि लेने वाले वैज्ञानिकों के साथ परामर्श करके हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने तथा टेक्नोलॉजी विकास से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर विचारों का विश्लेषण करके उनका पता लगा सके। उप समिति अपनी सिफारिशें माननीय मंत्री महोदय को दो महीने के अन्दर पेश कर दें और उसके बाद एक महीने के अन्दर इन पर समुचित अनुवर्ती कार्रवाई की जाए।

6. डॉ. पाण्डेय ने इस बात पर भी जोर दिया कि हिन्दी प्रभाग के विविध कार्य की एक पंचवर्षीय योजना तैयार की जाए और इसके कार्यान्वयन के लिए समुचित जनशक्ति तथा बजट की व्यवस्था की जाए। इसके अलावा, उनकी यह दृढ़ राय थी कि हिन्दी को सीधे सचिव के अन्तर्गत लाया जाए ताकि हिन्दी से संबंधित कार्य को उचित बल और प्रोत्साहन मिल सके।

7. डॉ. रत्नाकर पाण्डेय, श्री पन्नालाल शर्मा तथा श्री अक्षय कुमार जैन ने जानना चाहा कि "इलैक्ट्रोनिकी भारती" का प्रकाशन 3-4 अंकों के बाद क्यों बन्द कर दिया गया। उन्होंने आग्रह किया कि व्यापक रूप से बहु प्रशंसित इस तिमाही पत्रिका को आगे से नियमित रूप से प्रकाशित किया जाना चाहिए।

8. यांत्रिक/इलेक्ट्रॉनिक उपकरण के संबंध में संसदीय राजभाषा समिति द्वारा भारत के राष्ट्रपति जी को प्रस्तुत रिपोर्ट का जिक्र करते हुए डॉ. रत्नाकर पाण्डेय ने इलेक्ट्रोनिकी विभाग से कम्प्यूटरों तथा अन्य इलेक्ट्रोनिकी उपकरणों में हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के प्रयोग की गति में तेजी लाने का अनुरोध किया ताकि सर्वोच्च संस्था अर्थात् प्रधानमंत्री जी की अध्यक्षता में गठित केन्द्रीय हिन्दी समिति द्वारा निर्धारित नीतियों पर अक्षरशः अमल करने में सुविधा हो।

8. प्रो. चन्द्रशेखर झा ने सुझाव दिया कि भविष्य में तीनों विभागों द्वारा हिन्दी के क्षेत्र में हुई प्रगति का एक तुलनात्मक विवरण संकलित करके प्रस्तुत किया जाए।

9. अध्यक्ष महोदय ने रचनात्मक सुझाव देने तथा विचार-विमर्श के लिए सभी सदस्यों तथा बैठक का संचालन हिन्दी में सुचारू रूप से करने के लिए इलेक्ट्रोनिकी विभाग के सचिव महोदय को भी धन्यवाद दिया।

(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें

मणिपुर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति मणिपुर, इम्फाल की वर्ष 1989 की प्रथम बैठक 20 जुलाई 89 को श्री एस. एस. राव की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। कार्यवाही का संचालन करते हुए श्री बद्री यादव ने बताया कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति मणिपुर, इम्फाल की वर्ष 1989 की प्रथम बैठक अपने नियत समय से सम्पन्न हो रही है, पिछली बैठक 9 फरवरी 1989 को हुई थी।

अध्यक्ष श्री राव ने समिति को बताया कि समिति के अन्य महत्वपूर्ण कार्यों के साथ-साथ, केन्द्र सरकार के कामकाज में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग संबंधी प्रगति-रिपोर्ट की समीक्षा भी करना है।

हिन्दी प्रयोग : तिमाही रिपोर्ट की समीक्षा

नगर के सर्वोत्तम कार्यालयों की प्रगति-रिपोर्ट को दर्शाया गया है, जिसके अन्तर्गत के.रि.पु. बल एवं क्षेत्रीय तसर अनुसंधान केन्द्र, इम्फाल है। प्रस्तुत है--उनकी प्रगति रिपोर्ट—

1. केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ग्रुप केन्द्र, लांजिंग

उपर्युक्त केन्द्र के उपाधीक्षक श्री के. के. तलवाड़ ने निम्नलिखित प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की—

1. 80% काम हिन्दी में होता है।
2. सामान्य आदेश, अधिसूचनाएं, ज्ञापन आदि केवल हिन्दी में जारी किए जा रहे हैं।
3. तार भी हिन्दी में दिए जा रहे हैं।
4. सूचनापट्ट, नामपट्ट आदि केवल हिन्दी में हैं।
5. कुछ आवश्यक चीजें द्विभाषी हैं।

श्री तलवाड़ ने अध्यक्ष से निवेदन किया कि हिन्दी में कार्य करने पर राजपत्रित अधिकारियों को भी प्रोत्साहन आदि दिया जाना चाहिए जिससे हिन्दी की उत्तरोत्तर तीव्र प्रगति हो सके।

2. क्षेत्रीय तसर अनुसंधान केन्द्र, इम्फाल

1. राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन।
2. हिन्दी के उत्तरोत्तर प्रगति संबंधी तिमाही रिपोर्ट।
3. राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) का अनुपालन।

(क) फार्मों, रजिस्टरों, नामपट्ट, सूचनापट्ट, लिफाफो के पते आदि का द्विभाषीकरण

(ख) पत्राचार में हिन्दी का प्रयोग वर्ष 1987-88 तथा 1988-89 के दौरान हिन्दी में पत्राचार निर्धारित लक्ष्य से ज्यादा हुआ। आंकड़े निम्नवत है :—

वर्ष	कुल प्रेषित पत्र	हिन्दी में प्रेषित पत्र	हिन्दी पत्राचार का %	निर्धारित लक्ष्य
1986-87	5747	60	1.04%	10%
1987-88	5209	883	16.95%	10%
1988-89	4403	985	22.37%	10%

(ग) हिन्दी में प्राप्त पत्रों के उत्तर

वर्ष	हिन्दी में प्राप्त पत्र	जिनका उत्तर हिन्दी में दिया	अन्तरित पत्रों की संख्या
1987-88	275	182	93
1988-89	524	360	164

अन्य उपस्थित प्रतिनिधियों ने हिन्दी के प्रति जागरूकता लाने के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए—

1. नगर स्तर पर केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों के लिए निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया जाना चाहिए।
2. हिन्दी के प्रगामी प्रगति को बढ़ावा देने के लिए सर्वश्रेष्ठ प्रगति वाले कार्यालयों को शील्ड दिया जाना चाहिए।
3. कर्मचारियों के लिए वर्कशाप का आयोजन करना चाहिए।

4. केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों के लिए एक केन्द्रीय पुस्तकालय होना चाहिए ।

5. नगर स्तर पर अनेक कार्यक्रम आयोजित करना चाहिए—जैसे निबन्ध प्रतियोगिता, सांस्कृतिक कार्यक्रम, नाटक/एकांकी (अभिनय) प्रतियोगिता आदि ।

बेंगलूर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (केन्द्रीय सरकार कार्यालय हेतु) बेंगलूर की वर्ष 1989-90 की दिनांक 29 सितंबर 1989 को आयोजित प्रथम बैठक की अध्यक्षता एच. एम. टी. के निदेशक (का) श्री एम. आर अलवा ने की । राजभाषा विभाग की ओर से श्री भगवानदास पटैरया, उप सचिव (का) नई दिल्ली, श्री रामचंद्र मिश्र, उप निदेशक (का) (दक्षिण) बेंगलूर और केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो से श्री मंगल प्रसाद, संयुक्त निदेशक, हिन्दी शिक्षण योजना से भी श्री एम पी दुबे और श्रीमती फैणे उपस्थित रहे । बैठक का संचालन श्री राजेश्वर सिंह सचिव एवं प्रबन्धक (राजभाषा) एच एम. टी. ने किया ।

सदस्यों को बताया गया कि अप्रैल 1989 में संयुक्त हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया था, जो अत्यन्त सफल रहा । कुछेक सदस्यों ने पुनः मांग की कि ऐसी कार्यशाला पुनः आयोजित की जाए । अध्यक्ष ने आश्वासन दिया कि यह कार्यशाला अक्तूबर-नवम्बर में करने का प्रयत्न किया जाएगा ।

श्री सिंह ने बी. पी. एल. द्वारा दी जाने वाली राजभाषा शील्ड का उल्लेख करते हुए केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के लिए एच. एम. टी. की ओर से दी जाने वाली राजभाषा शील्ड की घोषणा भी की और सदस्यों से अनुरोध किया कि रिपोर्ट समय पर भेजी जाएं । जिससे सही मूल्यांकन हो सके और कार्यालय को राजभाषा शील्ड दी जा सके ।

श्री पटैरया ने अपने भाषण में बेंगलूर में स्थित कार्यालयों में हो रही प्रगति पर संतोष व्यक्त किया । उन्होंने यह आशा व्यक्त की कि भविष्य में उन्हें और अच्छी प्रगति देखने को मिलेगी ।

अध्यक्ष श्री अलवा ने सुझाव दिया कि हर कार्यालय में कम से कम एक अनुभाग/विभाग ऐसा घोषित किया जाए जिसमें हिन्दी में काम हो ।

श्री एम. पी. दुबे, सहायक निदेशक ने केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान में चलाए जा रहे पाठ्यक्रम और हिन्दी शिक्षण योजना में अभी हाल में घोषित पुरस्कारों/प्रोत्साहनों में जो संशोधन हुए हैं उसके बारे में जानकारी दी ।

श्री मंगल प्रसाद, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो ने धन्यवाद ज्ञापन देते हुए ब्यूरो में चलाए जा रहे अनुवाद पाठ्यक्रमों की जानकारी देते हुए अनुरोध किया कि इस पाठ्यक्रम में प्रतिभागियों को भेजा जाए ।

देवास

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तीसरी बैठक दिनांक 29-9-89 को बैंक नोट मुद्रणालय, देवास के सभा भवन में हुई । समिति के अध्यक्ष श्री मु. वै. चार, महाप्रबन्धक, बैंक नोट मुद्रणालय, देवास ने बैठक की अध्यक्षता की ।

बैठक में राजभाषा विभाग के मध्य क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय के प्रभारी अधिकारी श्री डी. के. पणिक्कर के अतिरिक्त केन्द्रीय सरकार के विभिन्न कार्यालयों, उपक्रमों तथा बैंकों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे ।

देवास नगर में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति इस प्रकार रही—

हिन्दी में प्राप्त पत्र एवं उत्तर

1. हिन्दी में प्राप्त कुल पत्र	6201
2. हिन्दी में उत्तर	4172
3. हिन्दी पत्रों के अंग्रेजी में उत्तर	148

हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर अंग्रेजी में देना राजभाषा नियम-5 का उल्लंघन है । निम्नलिखित कार्यालयों द्वारा हिन्दी पत्रों के उत्तर अंग्रेजी में दिए गए—

1. केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग (विद्युत)	5
2. दूर संचार विभाग	129
3. ओरियन्टल इंश्योरेंस कम्पनी	4

पत्राचार	पिछली बैठक के दौरान	प्रतिशत
1. कुल जारी पत्र	20,847	
2. हिन्दी में भेजे गए	17,413	
3. अंग्रेजी में भेजे गए	3,434	
4. हिन्दी पत्रों का प्रतिशत	84%	76%

तार

1. कुल तार	759	
2. हिन्दी में	263	
3. अंग्रेजी में	496	
4. हिन्दी तारों का प्रतिशत	36%	14%

पत्राचार के आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि पिछली बैठक और इस बैठक के दौरान सभी सदस्य कार्यालयों ने अध्यक्ष महोदय के इस अनुरोध को सार्थक तरीके से अपनाया कि शनैः शनैः हिन्दी की प्रगति बढ़ाई जाए । इस तिमाही में बैंक आफ महाराष्ट्र से सभी 185 तार हिन्दी में भेजे गए । ओरियन्टल फायर इंश्योरेंस से भी अपने सारे अर्थात 6 तार हिन्दी में भज ।

राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि श्री डी. के. पणिक्कर ने सबसे पहले समिति के सदस्यों को मूल पत्राचार तथा देवनागरी तारों में हुई वृद्धि के लिए बधाई देते हुए सभी सदस्यों की सक्रियता और अध्यक्ष महोदय के कुशल नेतृत्व के प्रति अपना आभार व्यक्त किया । उन्होंने सभी सदस्यों से अनुरोध किया कि नगर समिति की बैठकों को सार्थक और उपादय बनाने के लिए यह जरुरी है कि सभी कार्यालय राजभाषा विषयक अपनी प्रगति की पूरी जानकारी सदस्य सचिव के पास बैठक से पहले भिजवा दें ।

राजभाषा विषयक विविध जानकारियों के लिए सभी कार्यालयों को हिन्दी कार्यशालाएं चलानी चाहिए। कृपया यह ध्यान अवश्य रखें कि इनमें वही कर्मचारी/अधिकारी मनोनीत किए जाएं जिन्हें हिन्दी का समुचित कार्यसाधक ज्ञान हो अर्थात् "प्राज्ञ" परीक्षा स्तर तक हिन्दी पढ़ी हो । देवास जैसे नगर में तीन समूह बनाकर कार्यशालाओं का आयोजन किया जा सकता है अर्थात् पहला समूह–केन्द्रीय कार्यालयों का, दूसरा बैंकों का तथा तीसरा बीमा कंपनियों और उपक्रमों का। इन आयोजनों में नगर समिति के सचिव का सहयोग भी लिया जा सकता है । कृपया यह ध्यान रखें कि कार्यशालाओं का आयोजन और उसमें प्रशिक्षण राजभाषा की प्रगति हेतु अनिवार्य व्यावहारिक आवश्यकता है जिसका अनुपालन करना हमारी जिम्मेदारी है ।

औरंगाबाद

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति औरंगाबाद की आठवीं बैठक दिनांक 20-9-89 के श्री सोमेश्वर, समाहर्ता केन्द्रीय उत्पाद तथा सीमा शुल्क, औरंगाबाद की अध्यक्षता में हुई ।

हिन्दी शिक्षण योजना के अंशकालिक केन्द्र औरंगाबाद के अधीन आगामी सत्र जनवरी, 1990 से प्रवीण तथा प्राज्ञ की नियमित कक्षाएं आयोजित करने के प्रस्ताव पर चर्चा हुई। यह तय हुआ कि आकाशवाणी कार्यालय, औरंगाबाद के श्री साहेबराव सोनवणे तथा केन्द्रीय उत्पाद तथा सीमा शुल्क औरंगाबाद कार्यालय की श्रीमती विजया वि. जाधव, दोनों हिन्दी अनुवादकों द्वारा यह कार्य चलाया जाएगा।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य कार्यालयों में से हिन्दी में सबसे अच्छा कामकाज करने वाले प्रथम तीन कार्यालयों (1) आकाशवाणी कार्यालय औरंगाबाद (2) बैंक ऑफ महाराष्ट्र, अंचल कार्यालय औरंगाबाद (3) न्यू इंडिया इंशुरन्स कं. लि. शाखा औरंगाबाद को वर्ष 1988 में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष द्वारा तीन ट्राफियां प्रदान की गयी ।

सभी कार्यालयों द्वारा 7 दिन के (संक्षिप्त अनुवाद) अनुवाद प्रशिक्षण की मांग की गयी । अध्यक्ष महोदय ने कहा कि इसके लिए उचित प्रबंध करने हेतु राजभाषा विभाग को अलग से लिखा जाएगा। इस प्रस्ताव पर सभी ने सहमति प्रदान की तथा जिन कर्मचारियों को हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान नहीं है, उनके लिए कक्षाएँ चलाना अत्याधिक आवश्यक हो गया है। इसके लिए या तो राजभाषा विभाग की ओर से अतिथि प्रशिक्षक भेजे जाएं अथवा वहां पर स्थित कार्यालयों में से यथोचित उपाय प्रबंध करने की बात पर अनुमोदन प्रदान करने के बारे में पत्र लिखने का प्रस्ताव अनुमोदित किया गया ।

जीवन बीमा निगम कार्यालय औरंगाबाद द्वारा इस बात पर असंतोष व्यक्त किया गया कि उन्हें हिन्दी विषयक कामकाज में हिन्दी में तार भेजने के मामले में तार-कार्यालय की ओर से सहयोग प्राप्त नहीं होता ।

सभी उपस्थित सदस्यों द्वारा औरंगाबाद केन्द्रीय उत्पाद तथा सीमाशुल्क समाहर्तालय के पत्रिका की सराहना की गई । यह भी प्रस्ताव रखा गया कि औरंगाबाद स्थित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सभी सदस्य कार्यालयों द्वारा एक समन्वयीन पत्रिका निकाली जाएं । इस बात पर सभी सदस्य सहमत हो गए । हर कार्यालय को इसके लिए 200/- रुपये का खर्चा वहन करना पड़ेगा । **यदि इस पर सभी कार्यालय अपनी लिखित रूप में सहमति प्रदान करेंगे तो इस बात को आगे कार्यवाही हेतु बढ़ाया जा सकता हैं । इसमें संरक्षक के पद पर श्री सोमेश्वर समाहर्ता को नियुक्त करने की बात भी तय हुई थी । सभी कार्यालय इस पर अपनी लिखित सम्मति तत्काल भेजें ।**

मंगलूर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वर्ष 1989-1990 की प्रथम बैठक 12-9-1989 को कार्पोरेशन बैंक के प्रधान कार्यालय में अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक श्री वाय. एस. हेगड़े की अध्यक्षता में हुई । राजभाषा विभाग की ओर से डॉ. महेशचंद्र गुप्त, निदेशक (अनुसंधान), श्री रामचंद्र मिश्र, उप निदेशक (का.) दक्षिण क्षेत्र और सर्वकार्य प्रभारी अधिकारी श्री कामत उपस्थित थे । बैठक के आयोजन में भारत पेट्रोलियम ने न केवल सक्रिय सौजन्य प्रदान किया अपितु उनके महाप्रबंधक मद्रास श्री नीलकण्ठन पधारे । उन्होंने अपने भाषण में भारत पेट्रोलियम में हो रही प्रगति के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने यह भी कहा कि इससे पूर्व उनकी ओर से हैदराबाद में एक शील्ड कुछ दिन पूर्व दी जा चुकी है और आगे चलकर इस प्रकार की दो

शील्डें बेंगलूर व तिरुवनंतपुर में देने जा रहे है । उन्हें विश्वास है कि इस प्रकार के प्रोत्साहन हिन्दी के प्रयोग की वृद्धि में सहायक और प्रेरण-वर्धक होंगे ।

इस अवसर पर प्राप्त रिपोर्टों तथा प्रत्यक्ष रूप से समय-समय पर देखे गए विभिन्न कार्यालयों की प्रगति के आधार पर श्रेष्ठ कार्य करने वाले केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों बैंक और सरकारी उपक्रमों में से निम्नलिखित को चलवैजयंती मुख्य अतिथि डॉ. गुप्त ने प्रदान की ।

1. वरिष्ठ अधीक्षक, डाक घर मंगलूर
2. केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, मंगलूर
3. नैशनल इंश्योरेंस कम्पनी, मंडल कार्यालय मंगलूर

बैठक का शुभारंभ श्री नीलकण्ठन, महाप्रबंधक, भारत पैट्रोलियम ने दीप प्रज्वलित करके किया । नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा तैयार की गई नेहरू स्मृति पुस्तिका का विमोचन मुख्य अतिथि डॉ. महेशचंद्र गुप्त ने किया । डॉ. गुप्त ने हिन्दी के प्रयोग पर बल दिया । उन्होंने कहा कि कार्यालय में हिंदी का प्रयोग बढ़े, इसके लिए तिमाही समीक्षा करने की बजाय मासिक समीक्षा की जानी चाहिए । उप निदेशक श्री मिश्र ने कार्यालयों के कार्य की समीक्षा में विशेष रूप से भारत पेट्रोलियम, कार्पोरेशन बैंक, केनरा बैंक, सिंडिकेट बैंक, वरिष्ठ अधीक्षक (डाक घर), विजया बैंक द्वारा किए जा रहे प्रयासों का उल्लेख किया । उन्होंने कहा कि मंगलूर नगर समिति श्री वाइ. एस. हेगड़े के मार्गदर्शन में सदस्य कार्यालयों द्वारा विभिन्न दिशाओं में किए जा रहे सहयोग से प्रशंसनीय स्थान प्राप्त कर सकी है ।

उदयपुर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की दिनांक 30 जून, 1989 को आयोजित बैठक की अध्यक्षता श्री महेन्द्र देव कौशिक, ने की तथा भोपाल स्थित राजभाषा विभाग के मध्य क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय के सहायक निदेशक श्री डी. के. पणिकर बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे ।

क्षेत्रीय प्रचार कार्यालय, स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर, हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड, रेलवे प्रशिक्षण विद्यालय, भारतीय खान ब्यूरो, लक्ष्मी विलास पैलेस होटल (आई. टी. डी.सी.) आदि कार्यालयों में हिन्दी की सराहनीय प्रगति है । अन्य कार्यालयों में राजभाषा नियमों के अनुपालन की स्थिति संतोषजनक है । फिर भी, मूल पत्राचार में हिन्दी के प्रयोग में वृद्धि की जानी चाहिए ।

उदयपुर नगर में कुछ ऐसे कार्यालय भी हैं जहां हिन्दी की टंकण मशीनें नहीं हैं और हिन्दी टंकक भी नहीं हैं । इस पर राजभाषा विभाग के सहायक निदेशक, श्री पणिकर ने कहा कि सरकारी निदेशों के अनुसार प्रत्येक कार्यालय में कम से कम 50 प्रतिशत हिन्दी क. टंकण मशीनें होनी चाहएं अतः हिन्दी की टंकण मशीन प्राप्त करने के लिए आवश्यक कार्यवाही की जानी चाहिए । साथ ही; उन्होंने यह भी कहा कि अंग्रेजी के टंककों/आशुलिपिकों को क्रमशः हिन्दी/टंकण/हिन्दी आशुलिपि सीखना अनिवार्य है ।

भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण आदि कार्यालयों में हिन्दी अनुवादक के पद हैं, परन्तु अब तक उन पर भर्ती नहीं की गई है । श्री पणिकर ने कहा कि जिन कार्यालयों में अनुवादक के पदों की रिक्तियां हैं वे अपने-अपने विभागों को लिखें । उन्होंने यह भी कहा कि जब तक स्थायी नियुक्तियां न हो तब तक तदर्थ आधार पर या दैनिक पारिश्रमिक पर इसकी व्यवस्था की जा सकती है ।

सचिव ने बैठक में बताया कि जिन कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों की संख्या 80 प्रतिशत से अधिक है ऐसे कार्यालयों को राजभाषा नियम, 1976 की धारा 10(4) के अनुसार अधिसूचित किया जाना चाहिए ।

विभिन्न कार्यालयों की हिन्दी प्रगति के विवरण से यह ज्ञात हुआ कि हिन्दी में तारों का प्रतिशत बहुत कम है । सचिव ने बैठक में बताया कि हिन्दी में तार देना बहुत सरल होता है और साथ ही सस्ता भी पड़ता है ।

सचिव डॉ. पुरुषोत्तम छंगाणी ने बताया कि अब द्विभाषिक रूप में टेलेक्स उपलब्ध हैं और सरकारी निदेशों के अनुसार जिन कार्यालयों में टेलेक्स हैं वे अंग्रेजी के स्थान पर द्विभाषिक टेलेक्स लगाने की कार्यवाही करें । उन्होंने चर्चा के दौरान बताया कि हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड में द्विभाषिक टेलेक्स लगाया गया है।

श्री पणिकर ने समिति के अध्यक्ष से अनुरोध किया कि वे हिन्दी में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन की उदयपुर में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा स्थापित करने की दृष्टि से पुरस्कार चालू करें। पुरस्कार के साथ-साथ हिन्दी में अच्छा कार्य करने वाले कार्यालयों को प्रशस्ति-पत्र भी दिये जाएं। कई नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियां ऐसा कर भी रही हैं। उसका हिन्दी के प्रयोग पर अनुकूल प्रभाव पड़ा है। इस पर अध्यक्ष महोदय ने कहा कि समिति द्वारा इस वर्ष से पुरस्कार दिये जायेंगे।

श्री पणिकर ने बैठक में यह भी बताया कि अब हिन्दी शिक्षण/हिन्दी टंकण प्रशिक्षण/हिन्दी आशुलिपि प्रशिक्षण के संक्षिप्त एवं गहन पाठ्यक्रम चलाये जाते हैं ताकि हिन्दी के प्रयोग को बल मिल सके । उन्होंने बताया कि अब केवल 30 दिनों में एक हिन्दी टाइपिस्ट तैयार हो सकता है और इसी तरह केवल 45 दिनों में एक हिन्दी आशुलिपिक प्रशिक्षित किया जा सकता है । यह पाठ्यक्रम केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा चलाये जाते हैं । हिन्दी शिक्षण/टंकण प्रशिक्षण की अधिक जानकारी के लिये नीचे दिये गये पते पर सम्पर्क किया जा सकता है ।

डॉ. धर्मवीर, निदेशक, हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान, 8वां तल, पर्यावरण भवन, सी.जी.ओ. परिसर, लोदी रोड, नई दिल्ली-110003

मेरठ

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मेरठ की 14वीं बैठक 25-7-1989 को आयकर भवन, में श्री एन.सी. गुप्त, आयकर आयुक्त (अपील) की अध्यक्षता में हुई। मुख्य अतिति के रूप में डा. महेशचन्द्र गुप्त, निदेशक राजभाषा विभाग उपस्थित थे। बैठक का संचालन समिति के सदस्य सचिव तथा सहायक निदेशक (राजभाषा), श्री हरिशंकर सिंह ने किया। बैठक में 39 सदस्य कार्यालयों के 61 प्रतिनिधि उपस्थित थे।

हिन्दी शिक्षण योजना के अंतर्गत मेरठ नगर में हिन्दी/टंकण/आशुलिपि प्रशिक्षण केन्द्र नहीं है। सदस्यों ने मांग की कि राजभाषा विभाग को टंकण यंत्र, प्रशिक्षक, सामान आदि की व्यवस्था करते हुए तत्काल प्रशिक्षण केन्द्र खोलने चाहिए। डॉ. महेशचन्द्र गुप्त ने कहा कि सीमित साधनों के कारण इस कार्य में समय लग सकता है। ऐसी स्थिति में निजी प्रयासों से हिन्दी टंकण व आशुलिपि के प्रशिक्षण के लिए कर्मचारियों को प्रेरित किया जाए। इस सम्बन्ध में अनेक प्रोत्साहन योजनाएं भी लागू हैं।

कई कार्यालयों में निर्धारित अनुपात में हिन्दी टंकण यंत्र नहीं हैं। समिति ने फैसला किया है कि सभी सदस्य कार्यालय पुराने बेकार पड़े हुए अंग्रेजी टंकण यंत्रों के कुंजी पटल बदलवा लें; इसमें खर्च कम होगा। आयकर विभाग, मेरठ ने कुंजी पटल बदलवाएं हैं। आयकर विभाग के सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री हरि शंकर सिंह से इस बारे में संपर्क स्थापित किया जा सकता है।

डॉ. गुप्त ने कहा कि हिन्दी न केवल भारत की राजभाषा है, अपितु विश्व की तीसरी सबसे बड़ी भाषा है। विश्व मंच पर अपने राष्ट्र की पहचान बनाने के लिए हिन्दी का प्रयोग, उसका प्रचार-प्रसार करने की अत्यधिक जरूरत है। देवनागरी एक वैज्ञानिक लिपि है। इस लिपि में संप्रेषणीयता की शक्ति है। हिन्दी अपनत्व और प्यार की भाषा है। भारतीय समुदाय की उन्नति और वैज्ञानिक विकास के लिए हिन्दी के प्रयोग को आगे बढ़ाना होगा। हिन्दी के प्रयोग को गति देने के लिए सरकार पूर्ण सक्रिय है। इस निमित्त विभिन्न पुरस्कार योजनाएं, शील्ड योजना, प्रतियोगिताएं आदि आयोजित की जाती हैं। अनेक उच्चस्तरीय गोष्ठियां, वैज्ञानिक पत्रिकाएं हिन्दी में प्रकाशित हो रही हैं। प्रवेश परीक्षाओं विभागीय परीक्षाओं, प्रशिक्षण आदि के लिए हिन्दी का विकल्प प्राप्त है। डॉ. गुप्त ने आयकर विभाग के अधिकारियों से अपील की कि वे वकीलों को हिन्दी में काम करने के लिए प्रेरित करें। उत्तर प्रदेश तथा अन्य कई राज्यों में कानून की पढ़ाई हिन्दी माध्यम से होती है। निचली अदालतों में हिन्दी में काम होता है। ऐसी स्थिति में कोई वजह नहीं है कि भारत सरकार के कार्यालयों में वकील हिन्दी में काम न करें।

ता. 30-6-89 को समाप्त तिमाही की केन्द्रीय सरकार के कामकाज में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की तिमाही प्रगति रिपोर्टों का सारांश

क्रम सं.	कार्यालय का नाम	टाइपिस्ट		आशुलिपिक		टाइपराइटर		भेजे गए पत्रादि			हिन्दी में प्राप्त पत्रादि	
		कुल	हिन्दी जानने वाले	कुल	हिन्दी जानने वाले	कुल	हिन्दी	कुल	हिन्दी में	अंग्रेजी में	कुल	हिन्दी में जवाब
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
1.	इंडियन ओवरसीज बैंक, मेरठ	4	1	—	—	1	—	691	516	175	90	90
2.	रक्षा संपदा कार्यालय, मेरठ	5	5	—	—	6	4	1230	390	840	390	390
3.	रक्षा ले. नि. (प्रशि.), मेरठ	1	—	1	—	7	2	711	276	435	50	50
4.	केनरा बैंक, मं० कार्या., मेरठ]	3	1	—	—	5	2	5121	1030	4091	256	166
5.	रा. प्र. सर्वेक्षण संगठन, मेरठ	—	—	—	—	—	—	935	935	—	373	300
6.	केन्द्रीय तारघर, मेरठ	—	—	—	—	2	1	505	463	—	202	152

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
7.	क्षेत्रीय प्रचार अधिकारी, मेरठ	1	1	—	—	2	1	261	255	6	92	83
8.	तार परियात मेरठ	—	—	—	—	3	1	845	323	522	366	306
9.	इलाहाबाद बैंक, मं. कार्यालय मेरठ	4	4	1	—	7	2	3183	2659	524	2407	1902
10.	सिंडीकेट बैंक, मं०, कार्या० मेरठ	3	2	2	—	7	2	3466	2367	1099	490	237
11.	भा.जी. बीमा निगम, मेरठ	59	रोस्टर बन रहा है	13	रोस्टर बन रहा है	172	42	7197	6062	1135	5580	2310
12.	ने. इंश्योरेन्स कं. लि. मंडल कार्यालय, मेरठ	22	16	2	—	29	21	2420	1806	534	1439	1126
13.	इलाहाबाद बैंक, क्षे. का. मेरठ	6	5	1	—	11	5	6318	5592	726	1286	1153
14.	संयुक्त रा. ले. नि. (निधि) मेरठ	1	1	1	—	6	2	28697	8556	20139	954	881
15.	न्यू बैंक ऑफ इंडिया, प्रा. का.	1	—	—	—	19	6	9449	5232	4217	1638	1172
16.	आयकर आयुक्त (अपील) मेरठ	—	—	2	1	2	—	13	2	11	5	2
17.	आयकर आयुक्त कार्यालय मेरठ	3	1	7	2	16	4	1550	1550	—	600	550
18.	आयकर उपायुक्त (अपील) मेरठ	—	—	—	—	—	—		254		138	338
19.	आयकर उप निदे. अनु. मेरठ	1	1	3	3	2	2	372	284	88	108	108
20.	सी.एवं क.उ. शुल्क, सभा. मेरठ	16	11	53	45	93	15	12468	7302	6178	3465	2975
21.	क्षेत्रीय लेखा अधिकारी, मेर	2	1	—	—	1	—	400	400	—	300	250
22.	रक्षा ले. नि. (अन्य श्रेणी), मेरठ	116	15	2	—	74	15	25350	4331	21019	2600	1792
23.	पंजाब एंड सिंध बैंक, क्षे. का. मेरठ	1	—	1	—	4	1	2128	666	1462	119	67
24.	सैन्ट्रल बैंक आफ इंडिया, क्षे० का. मेरठ	1	—	5	1	6	3	2076	1838	218	948	780
25.	बैंक आफ बड़ौदा, अंचल कार्यालय	9	5	14	1	18	5	4175	3225	950	575	527
26.	क्षे. भ. निधि आयुक्त, मेरठ	54	12	—	—	8	2	2605	2401	204	3900	3266
27.	क्षेत्रीय प्रचार कार्यालय, मेरठ	1	1	—	—	2	1	261	255	6	92	83
28.	आंध्रा बैंक शाखा कार्यालय	2	—	—	—	—	—	435	133	302	47	47
29.	बैंक आफ महाराष्ट्र, मेरठ	—	—	—	—	1	—	1220	1022	208	807	701
30.	प्रवर डाक अधीक्षक, मेरठ	1	1	1	1	4	1	1419	1360	55	520	495
31.	भा. स्टेट बैंक, अ. का., मेरठ	61	17	—	—	63	13	39171	31628	8543	16690	12257
32.	के.स. स्वास्थ्य योजना, मेरठ	18	3	—	—	6	2	800	710	90	230	175
33.	न्यू इंडिया इंश्योरेन्स कं. मुजफ्फर नगर	10	8	—	—	15	6	3038	2024	1014	709	331

झांसी

दिनांक 25-8-89 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक हुई।

बैठक के प्रारम्भ में समिति के सदस्य सचिव, झांसी मंडल के राजभाषा अधिकारी, श्री रा.चं. धमनियां ने समिति के अध्यक्ष एवं मंडल रेल प्रबन्धक, श्री चमनलाल काव, उपाध्यक्ष, श्री रमेश त्रिपाठी, गृह मंत्रालय, के प्रतिनिधि श्री शमशेर अहमद खान, अनुसंधान अधिकारी, गृह मंत्रालय, गाजियाबाद तथा उपस्थित सभी केन्द्रीय कार्यालयों, राष्ट्रीयकृत बैंकों/उपक्रमों से पधारे सदस्यों/प्रतिनिधियों का स्वागत किया।

अध्यक्ष ने कहा जो कर्मचारी हिन्दी में कार्य करने करने में सजग नहीं हैं। उनके लिए मंडल रेल प्रबन्धक कार्यालय में हिन्दी प्रशिक्षण की व्यवस्था की कमी है, जिसमें गृह मंत्रालय के हिन्दी प्राध्यापक प्रशिक्षण देते हैं। आप ऐसे कर्मचारियों को हिन्दी प्रशिक्षण के लिए भेज सकते हैं। इसी तरह हिन्दी आशुलिपि की कक्षाऐं इस कार्यालय में चल रही हैं। आपके इसी तरह कार्यालय में जो आशुलिपि एवं टंकक हिन्दी आशुलिपि तथा टंकण में अप्रशिक्षित हैं उन्हें भी आप इन कक्षाओं में प्रशिक्षण हेतु भेज सकते हैं।

गृह मंत्रालय के प्रतिनिधि श्री शमशेर अहमद खान, अनुसंधान अधिकारी, गाजियाबाद के सुझाव पर मंडल रेल प्रबन्धक ने बैठक में ही पांच सदस्यों की समिति गठित कर दी थी निरीक्षण दल ने निम्नलिखित कार्यालयों का उनके सामने दी गई तारीखों में निरीक्षण किया था :—

कार्यालय का नाम	निरीक्षण की तारीख
1. अधीक्षक, केन्द्रीय उत्पादन एवं सीमा शुल्क, झांसी	7-3-89
2. प्रबन्धक, यूनिइटिड इंडिया इंश्योरेंस कं. लि., झांसी	7-3-89
3. प्रबन्धक, नेशनल इंश्योरेन्स कं. लि. झांसी	7-3-89
4. श्रम प्रवर्तन अधिकारी, झांसी	7-3-89
5. प्रबन्धक, भारतीय जीवन बीमा निगम, झांसी	8-3-89
6. प्रबन्धक, यूनियन बैंक आल इंडिया, झांसी	8-3-89
7. प्रबन्धक, न्यू बैंक आफ इंडिया, झांसी	8-3-89
8. प्रबन्धक, केनरा बैंक, झांसी	8-3-89
9. सहायक आयकर आयुक्त, झांसी	9-3-89
10. दूर संचार मंडल अभियन्ता (डी ई टी), झांसी	9-3-89
11. क्षेत्रीय कार्यालय, सेन्ट्रल बैंक आफ इंडिया, झांसी	9-3-89
12. दि ओरियण्टल इंश्योरेन्स कं. लि., झांसी	9-3-89

उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि इस निरीक्षण के आधार पर 6 महिने में आयोजित इस बैठक में उस कार्यलय को ट्राफी प्रदान की जानी चाहिए जहा हिन्दी में काफी कार्य हो रहा है मंडल रेल प्रबंधक ने कहा कि इसस कम्पटीशन बढ़ेगा।

निरीक्षण रिपोर्ट के अनुसार सहायक आयकर आयुक्त, प्रबन्धक, नेशनल इंश्योरेंस कं. लि. एवं प्रबन्धक, यूनाइटिड इंडया इंश्योरेंस कं० लि. के कार्यालय में काफी काम हो रहा है।

मंडल रेल प्रबन्धक ने सुझाव दिया था कि रेलवे के अलावा अन्य केन्द्रीय कार्यालयों के लिए कर्मचारियों को प्रशिक्षण हेतु भेजा जाए। जनवरी, 89 में प्रबोध, प्रवीण एवं प्राज्ञ की कक्षाएं रेलवे तथा केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल, में परीक्षा प्रारम्भ की थीं। इनमें प्रबोध में 34, प्रवीण में 29 तथा प्राज्ञ में 51 कर्मचारी सम्मिलित किए गये जिनमें से मई 89 की परीक्षा में 49 कर्मचारी बैठे थे और उनमें से 42 कर्मचारी उत्तीर्ण हुए। जुलाई, 89 से पुनः उपरोक्त कक्षाएं उपर्युक्त बताये गये दोनों स्थानों पर प्रारम्भ की गई हैं। जिनमें अब तक 164 कर्मचारी नामित हैं। सभी उपस्थित सदस्यों से अनुरोध है कि वेनामित किए गए कर्मचारियों को कक्षाओं में भेजने हेतु आदेश जारी करें।

हिन्दी टंकण एवं आशुलिपि प्रशिक्षण

फरवरी, 89 से हिन्दी आशुलिपि एवं हिन्दी टंकण कक्षाएं रेलवे कक्ष में चालू की गई थीं जिसमें रेलवे के 8 एवं अन्य केन्द्रीय कार्यालयों के 3 आशुलिपिक प्रशिक्षण ले रहे हैं जिनकी परीक्षा जनवरी, 90 में होगी।

हिन्दी टंकण की पिछली कक्षा में रेलवें के 5 एवं अन्य केन्द्रीय कार्यालयों के 3 टंकक प्रशिक्षण ले रहे थे जिनमें से रेलवे के 4 एवं केन्द्रीय कार्यालय के 2 टंकक परीक्षा में बैठे तथा प्राइवेट रूप से 4 टंकक परीक्षा में बैठे हैं। आशुलिपिकी जुलाई, 89 की परीक्षा में रेलवे के 3 आशुलिपिक परीक्षा में बैठे हैं।

अगस्त, 89 से नयी टंकण कक्षा प्रारम्भ की गई जिसमें रेलवे के 8 सदस्य तथा अन्य केन्द्रीय कार्यालयों के 4 टंकक प्रशिक्षण ले रहे हैं। सभी उपस्थित सदस्यों से

अनुरोध है कि वे अधिक से अधिक टंककों एवं आशुलिपिकों को कक्षाओं में भेजने का प्रयास करें ताकि उक्त प्रशिक्षण पूरा किया जा सके।

अनुसंधान अधिकारी ने कहा कि निरीक्षण दल जो हिन्दी कार्य का निरीक्षण करता है उसके आधार पर अच्छा कार्य करने वाले कार्यालयों को जो शील्ड/ट्राफी प्रदान करने का प्रश्न है इस संबंध में मेरा सुझाव है कि इसकी व्यवस्था क्षेत्रीय बैंक ही चल शील्ड/ट्राफी देकर करें तो अच्छा होगा।

सभी स्थानीय केन्द्रीय कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकों में गृह मंत्रालय के आदेशानुसार केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् के प्रतिनिधि को भी आमंत्रित किया जाए।

हिन्दी प्राध्यापक श्री मोहर सिंह दोहरे ने बताया कि मई, 89 की परीक्षाओं हेतु 114 कर्मचारियों ने परीक्षा फार्म भरे थे, जिसमें से 49 कर्मचारी परीक्षा में बैठे थे और 42 उत्तीर्ण हुए।

जुलाई, 1989 से नवम्बर, 1989 सत्र में 154 कर्मचारियों को नामित किया गया। इस सत्र में मंडल रेल प्रबन्धक कार्यालय में प्रबोध, प्रवीण व प्राज्ञ की एक-एक कक्षा एकान्तर दिनों में तथा प्रबोध व प्राज्ञ की एक-एक कक्षा एकान्तर दिनों में केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल, में गठित की गई है।

उन्होंने सभी सदस्यों से अनुरोध किया कि उनके यहां जो भी कर्मचारी प्रशिक्षण के लिए शेष हों, कृपया उन्हें कक्षाओं में नामित करें।

श्री दोहरे ने बताया कि राजभाषा विभाग ने अभी नये आदेश जारी किए हैं उनके अंतर्गत जिन कर्मचारियों ने हिन्दी तीसरी भाषा के रूप में मैट्रिक तक पढी है उनके लिए भी हिन्दी का प्रशिक्षण अनिवार्य है।

गृह मंत्रालय के प्रतिनिधि, श्री खान ने कहा कि यहां 54 कार्यालय हैं और इस बैठक में सदस्यों की उपस्थिति अच्छी होती है। अतः 1000/-रु. को बढ़ाकर 2000/- किया जाना चाहिए। इस सम्बन्ध में मुख्यालय को पत्र लिखा परन्तु इस सम्बन्ध में अभी तक स्वीकृति प्राप्त नहीं हुई है।

विभिन्न केन्द्रीय कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों से प्राप्त छमाही की हिन्दी प्रगति रिपोर्ट: मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय झांसी

मंडल कार्यालय ने कुल 18,988 पत्र लिखे गये इनमें से 17,361 पत्र हिन्दी में लिखे गये तथा 91.4% तक लक्ष्य प्राप्त किया :

मंडल कार्यालय से धारा 3(3) के कुल 1,973 सामान्य आदेश जारी किये गये जो सभी द्विभाषिक रूप में जारी हुए, प्रेस विज्ञप्तियां कुल 163, टेंडर नोटिस 393, संविदा करार 207 आदि सभी द्विभाषिक रूप में जारी किये गये। मंडल में कार्यरत कुल अधिकारी 116 और तृतीय श्रेणी के कुल 12,954 कर्मचारी हैं, इनमें से कुल 4 परिचालनिक कर्मचारी प्रशिक्षण के लिए शेष हैं बाकी सभी प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं। मंडल पर कुल 54 टंकक ह, जिनमें से 38 टंकक प्रशिक्षण प्राप्त कर चुकें हैं, 5 टंकक प्रशिक्षण ले रहे हैं और 11 टंकक प्रशिक्षण के लिये शेष हैं।

मंडल पर कुल 42 आशुलिपिक हैं, जिनमें से 28 आशुलिपिक प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं, 7 आशुलिपिक प्रशिक्षण ले रहे हैं तथा 7 आशुलिपिक प्रशिक्षण के लिए शेष हैं। हिन्दी सहायकों द्वारा 49 कर्मचारियों को डेस्क प्रशिक्षण दिया गया। इसमें हिन्दी सहायक सभी अनुभागों में जाकर कर्मचारियों को उनके काम में सहायता करते हैं और उनको हिन्दी में कार्य करने के लिए उत्साहित करते हैं।

मंडल पर कुल 142 टाइपराइटर हैं, जिनमें से 60 देवनागरी और 82 रोमन टाइपराइटर हैं।

जनता के संपर्क में आने वाले रेल कर्मचारियों के नाम, पदनाम बैज, बाहु बिल्ले, स्टेशनों के नाम बोर्ड, स्टेशन कर्मचारियों के नाम, पदनाम, बोर्ड सभी हिन्दी अंग्रेजी द्विभाषिक रूप में तैयार किये गये हैं। स्टेशन पर आरक्षण चार्ट हिन्दी अथवा हिन्दी-अंग्रेजी में बनाकर प्रदर्शित किये जाते हैं। स्टेशनों पर आर.आर. 25% खान-पान रसीदें 50% अतिरिक्त किराया रसीदें 30% हिन्दी में बनायी जातीं हैं।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जयन्ती : मंडल कार्यालय में दिनांक 9-5-89 को आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जयन्ती मनाई गई जिसमें सागर से डॉ लक्ष्मीनारायण दुबे एवं झांसी से डॉ सियाराम शरण शर्मा आदि हिन्दी के विद्वानों ने इसमें भाग लिया और कर्मचारियों को आचार्य द्विवेदी जी के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट किये। मंडल पर "रेल संदेशिका" नामक पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है। मई, 89 में "आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी" विशेषांक के नाम से प्रकाशित की गई है।

बडोदरा

बडोदरा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 15 वी बैठक दिनांक 21-8-89 को आयोजित हुई। इस की अध्यक्षता श्री जगत नारायण निगम, समाहर्ता केन्द्रीय उत्पादन व सीमा शुल्क, बडोदरा ने की।

अध्यक्ष ने कहा कि बडोदरा स्थित सभी केन्द्रीय सरकारी संगठन ऐसा कारगर तंत्र विकसित करें जिसके जरिए हिन्दी के प्रयोग से संबंधित मूलभूत कानूनी व्यवस्थाएं तथा वार्षिक कार्यक्रम की उक्त व्यवस्थाएं उनके कार्यक्षेत्र में सतत रूप से क्रियान्वित होती रहे।

विशेष उल्लेख के तौर पर अध्यक्ष ने कहा कि उन्होंने केन्द्रीय उत्पाद व सीमा शुल्क समाहर्तालय, वडोदरा के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजस्व विभाग के निदेशानुसार यह स्पष्ट रूप से बता दिया है कि राजभाषा नीति के समुचित क्रियान्वयन में किसी भी तरह की ढील या चूक को कर्त्तव्य की अवहेलना माना जायेगा और दोषी पाए गए कार्मिक के खिलाफ तदनुसार अनुशासनिक कार्यवाही की जायेगी।

अध्यक्ष ने कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग के प्रति सृजनात्मक माहौल बनाने की जरूरत पर जोर दिया। ऐसे माहौल के सृजन हेतु उन्होंने निम्नलिखित उपायों पर अपनी प्रशासनिक सुविधानुसार अमल करें:—

(1) कार्यालय में स्थायी हिन्दी प्रदर्शनी लगवाई जाय जिसमें मुख्यतः हिन्दी प्रगति विषयक उपलब्धियों को दर्शाने वाली सामग्री रखी जा सकती है।

(2) कार्यालय के प्रत्येक अनुभाग को भारत सरकार द्वारा प्रकाशित शब्द संग्रह एवं शब्दावलियां उपलब्ध करायी जाएं।

(3) हिन्दी के ताजा समाचार पत्र/पत्रिकाओं के लंच समय में पठन-पाठन की व्यवस्था कार्यालय में की जाए।

(4) भारत सरकार द्वारा प्रकाशित हिन्दी संबंधी वीडियो कैसेटों एवं चल-चित्रों का प्रदर्शन किया जाए। यह सामग्री समूल्य है और प्रभारी अधिकारी (वितरण), फिल्म प्रभाग, 24, पैडर रोड, बम्बई-400026 के पते पर उपलब्ध हो सकती है।

(5) अधिकारियों के लिए हिन्दी कार्यशाला की तर्ज पर "जागरूकता-कार्यक्रम" आयोजित किए जाएं जिनमें हिन्दी के प्रयोग से संबंधित सांविधानिक व्यवस्थाओं, अधिनियम एवं नियमों की व्यवस्थाओं तथा इस संबंध में सरकार द्वारा समय-समय पर जारी प्रशासनिक अनुदेशों की सम्यक् जानकारी दी जाए।

2.4. समिति के सदस्य कार्यालयों में हिन्दी की समीक्षा एवं समिति द्वारा लिए गए निर्णय :

2.4.1 हिन्दी, हिन्दी टंकण, हिन्दी आशुलिपिक प्रशिक्षण :

हिन्दी प्रशिक्षण के संबंध में समिति को बताया गया कि पश्चिम रेलवे-मंडल कार्यालय, पेट्रोफिल्स का.ओ.लि. तथा आई.पी.सी.एल. में हिन्दी प्रशिक्षण के लिए काफी कार्मिक शेष हैं और मुख्यतः आयकर विभाग, केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल आदि संगठन के प्रशिक्षण-पात्र कार्मिकों के लाभार्थ हिन्दी शिक्षण योजना के तहत कक्षाएं गठित की गयी हैं।

हिन्दी टंकण एवं आशुलिपि की प्रशिक्षण व्यवस्था के बारे में श्रीमती पंड्या ने कहा कि नगर के अनेक कार्यालय विभागीय अंशकालिक व्यवस्था के तहत हिन्दी आशुलिपि टंकण का प्रशिक्षण प्रदान कर रहे हैं, यह अत्यंत उत्साह की बात है। उन्होंने समिति को सूचित किया कि वडोदरा की बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में हिन्दी टंकण-प्रशिक्षण की व्यवस्था सदस्य-बैंकों के संबंधित कार्मिकों के लाभार्थ की जा रही है।

2.4.4 हिन्दी पत्राचार :

समिति के पास उपलब्ध जानकारी के अनुसार जून तिमाही के दौरान विभिन्न कार्यालयों से हिन्दी में प्रेषित पत्रों का प्रतिशत समिति के समक्ष निम्नानुसार रखा गया :—

क्रम	कार्यालय	हिन्दी पत्राचार का प्रतिशत
1.	पश्चिम रेलवे मंडल कार्यालय	60.6%
2.	केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल	55%
3.	क्षेत्रीय भविष्य निधि कार्यालय	55%
4.	केन्द्रीय उत्पादन व सीमा शुल्क	51%
5.	डाक प्रशिक्षण केन्द्र	36%
6.	रेलवे स्टाफ कॉलेज	21%
7.	भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण	17%
8.	पेट्रोलियम कॉ.ऑ.लि.	10.93%
9.	भारतीय खाद्य निगम	6.8%
10.	भारतीय सर्वेक्षण विभाग	5.1%
11.	आकाशवाणी, वडोदरा	2%
12.	दूर संचार विभाग	0.5%

राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन, राष्ट्रीय विमान पत्तन कार्यालय, आई.पी.सी.एल. तथा गुजरात रिफाइनरी ने इस संबंध में स्पष्ट जानकारी नहीं दी है।

इस अवसर पर उन्होंने समाहर्ता केन्द्रीय उत्पादन व सीमा शुल्क बड़ोदरा तथा पदेन अध्यक्ष वडोदरा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति को इस बात के लिए बधाई दी गई कि उन्होंने अपने समाहर्तालय में राजभाषा नीति के अनुपालन में हुई चूक को कर्त्तव्य की अवहेलना के दायरे में लेकर दोषी पाए गए कार्मिक के खिलाफ अनुशासनिक कार्यवाही शुरू करने के स्पष्ट आदेश जारी किए हैं। श्री हरिओम श्रीवास्तव ने कहा कि यह एक अनुकरणीय कदम है और बड़ोदरा स्थित केन्द्रीय सरकारी संगठनों के विभागाध्यक्ष भी इसी तरह की कार्यवाही के बारे में निदेश जारी कर सकते हैं।

पी.डी.आई.एल. के वरिष्ठ प्रबन्धक श्री सुधीर कुमार ने सुझाव दिया कि बडोदरा नगर राजभाषा कार्यान्वयन हिन्दी-संवर्धन हेतु फिल्मों का प्रदर्शन करवा दें।

बताया गया कि कार्यवृत्त के उक्त पैरा 2.4.4(4) के अनुसार समिति के सदस्य-कार्यालय भारत सरकार द्वारा प्रकाशित हिन्दी संबंधी वीडियो कैसेटों/चलचित्रों का प्रदर्शन करा सकते हैं। तथापि, अध्यक्ष महोदय ने आश्वासन दिया कि समिति के तत्वावधान में हिन्दी फिल्म-प्रदर्शन के उक्त सुझाव पर विचार किया जायेगा।

बैंकों के लिए संयुक्त हिन्दी टाइपिंग प्रशिक्षण केन्द्र

बड़ोदा नगर बैंक राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 18 अप्रैल 89 को हुई दूसरी बैठक में लिये गये निर्णय के अनुसार बड़ौदा स्थित प्रमुख बैंकों के वरिष्ठ कार्यापालकों ने दिनांक 15-7-89 को एक बैठक की समिति के अध्यक्ष श्री सी.बी. राममूर्ति, उप महाप्रबंधक, परिचालन के प्रस्ताव पर सभी बैंकों के वरिष्ठ कार्यपालकों ने यह निर्णय लिया कि बैंक ऑफ बड़ौदा के तत्वावधान में समिति की ओर से बैंकों के लिये एक हिन्दी टाइपिंग प्रशिक्षण केन्द्र खोला जाये। प्रशिक्षण केन्द्र के स्थान की व्यवस्था बैंक ऑफ बड़ौदा द्वारा की जायेगी। प्रशिक्षण के लिये आवश्यक हिन्दी टाईपराइटरों की व्यवस्था के लिये बैंक आफ बड़ौदा प्रधान कार्यालय–छः, भारतीय स्टेट बैंक–चार, देना बैंक –दो; बैंक ऑफ इंडिया–दो और सेंट्रल बैंक–एक टाईपराइटर उपलब्ध करायेगा। प्रशिक्षण पर होने वाले अन्य खर्चों की राशि सभी बैंकों द्वारा उनके प्रशिक्षणार्थियों की संख्या के आधार पर वहन की जायेगी।

उपर्युक्त निर्णयों के आधार पर दिनांक 25-9-89 से बड़ौदा में समिति के स्तर से हिन्दी टाइपिंग प्रशिक्षण केन्द्र का शुभारंभ किया गया। केन्द्र का उद्घाटन भारत सरकार हिन्दी शिक्षण योजना की उपनिदेशक (प्रशिक्षण) श्रीमती इन्दिरा पंड्या के हाथों से दीप जलाकर संपन्न हुआ। उद्घाटन के अवसर पर श्रीमती पंड्या ने समिति के द्वारा इस प्रकार के केन्द्र की स्थापना करने के संबंध में बैंक ऑफ बड़ौदा के प्रयासों की अत्यंत प्रशंसा की। उन्होंने यह भी कहा कि बैंक समिति के स्तर से इस प्रकार का प्रथम केन्द्र केवल बड़ौदा नगर में ही खोला गया है। इसलिये यह अत्यंत महत्वपूर्ण उपलब्धि है। उन्होंने इस अवसर पर समिति के अध्यक्ष से अनुरोध किया कि यदि संभव हो तो इस प्रशिक्षण में वे बैंकों के साथ–साथ केन्द्रीय सरकार के अन्य कार्यालयों के प्रशिक्षणार्थियों को भी शामिल करें क्योंकि अंततः नगर समितियां गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग का ही प्रतिनिधित्व करती हैं। इस अवसर पर बड़ौदा नगर बैंक राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री ए.वी.पारेख उप महाप्रबंधक (परिचालन एवं सेवाएं) ने सरकार के वार्षिक कार्यक्रम 1989-90 के हिन्दी प्रशिक्षण संबंधी लक्ष्यों के साथ इस केन्द्र की स्थापना के महत्त्व को जोड़ते हुए सभी प्रशिक्षणार्थियों का अभिनंदन किया। उद्घाटन समारोह में भारतीय स्टेट बैंक के मुख्य प्रबंधक (कार्मिक), श्री ठाकुर, बैंक ऑफ बड़ौदा के मुख्य प्रबंधक (परि. व उप.) श्री किरीट देसाई, मुख्य प्रबंधक (मा.सं.वि.) श्री एस.सेनगुप्ता ने भाग लेकर सभी का उत्साह बढ़ाया। अंत में बैंक आफ बड़ौदा, प्रधान कार्यालय, कार्यालय प्रशासन के मुख्य प्रबंधक श्री एस.एन. मेहरोत्रा ने सभी बैंकों से पधारे हुए प्रबंधकों, राजभाषा अधिकारियों एवं प्रशिक्षणार्थियों के प्रति आभार प्रदर्शित किया।

उद्घाटन कार्यक्रम का संचालन बड़ौदा नगर बैंक राजभाषा कार्यान्वयन समिति की सदस्य सचिव एवं बैंक ऑफ बड़ौदा, प्रधान कार्यालय की प्रबंधक (राजभाषा) सुधा जावा द्वारा किया गया।

भोपाल

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक डॉ. राजेन्द्र कुमार, निदेशक क्षेत्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला, भोपाल की अध्यक्षता में 27-7-89 को सम्पन्न हुई।

समिति के कार्यवाहक अध्यक्ष, डॉ. राजेन्द्र कुमार, ने कहा कि आप लोगों की उपस्थिति इस बात की द्योतक है कि यहां लोगों में हिन्दी में काम करने के प्रति उत्साह है यद्यपि कहीं कुछ कठिनाइयां हैं, मैं देख रहा हूं कि यहां बैठे हुए अधिकांश लोग हिन्दी भाषी हैं, हिन्दी में दक्ष हैं, हिन्दी में काम कर सकते हैं। नगर समिति की इस प्रकार की बैठकों में हम नई–नई योजनाओं, नए कार्यक्रमों, तिमाही रिपोर्टों और राजभाषा के कार्यान्वयन में आने वाली कठिनाइयों पर चर्चा करते हैं। यद्यपि राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम में बहुत सी मदें ऐसी है जिनमें न केवल मेरी प्रयोगशाला में अपितु आपके कार्यालयों में भी लक्ष्यों की पूर्त्ति नहीं हो पाई है पर हमें मिल जुलकर प्रयास करना है और आप जो कठिनाइयां महसूस करते हैं उन्हें यहां बताएं। हमें परस्पर सहयोग से ही आने वाली कठिनाइयों को हल करना है और यही इस बैठक का उद्देश्य भी है।

मूल पत्राचार

सदस्य सचिव ने कहा कि वर्ष 1989-90 के वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार 90 प्रतिशत मूल पत्र हिन्दी में भेजे जाने हैं और सभी कार्यालयों को वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों की पूर्त्ति करना है। उन्होंने आगे कहा कि कुछ कार्यालयों की अपनी कठिनाइयां हो सकती हैं जिनका नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के स्तर पर समाधान भी किया जा सकता है। सचिव ने उपस्थित सदस्यों से उनके कार्यालयों से 90 प्रतिशत मूल पत्र हिन्दी में भेजने में आने वाली कठिनाइयों के विषय में जानकारी चाही।

कुछ कार्यालयों ने बताया कि कार्यालयों मे हिन्दी के कार्य हेतु पर्याप्त आशुलिपिक और हिन्दी टाइपिस्ट नहीं हैं जिसकी

वजह से कार्यालय का संपूर्ण कार्य हिन्दी में करने में कठिनाई होती है।

विभिन्न सदस्यों द्वारा व्यक्त विचारों से यह बात उभरकर सामने आई कि दिल्ली स्थित केन्द्रीय/मुख्य कार्यालयों व मंत्रालयों से अधीनस्थ कार्यालयों को जो पत्र भेजे जाते हैं वे प्रायः शत-प्रतिशत रुप से अंग्रेजी में होते हैं जिसकी वजह से सदस्य अधिकारियों के मन में यह बात रहती है कि यदि अंग्रेजी के पत्र का उत्तर हिन्दी में दिया गया तो क्या पता उस पर कब तक कार्यवाही होगी ? अधिकांश सदस्यों ने एक मत से इस बात पर जोर दिया कि यदि उनके मुख्यालय अथवा दिल्ली, बंबई स्थित केन्द्रीय कार्यालयों से हिन्दी में पत्र आते हैं तो निःसंदेह इसके बड़े ही अच्छे परिणाम होंगें और अधीनस्थ कार्यालयों को भी हिन्दी में पत्र भजने की प्रेरणा मिलेगी।

अध्यक्ष ने विभिन्न कार्यालयों के प्रतिनिधियों से विचार-विमर्श के उपरान्त व्यवस्था दी कि केन्द्रीय कार्यालयों व दिल्ली स्थित मुख्यालय के स्तर पर अधिक से अधिक मूल पत्र हिन्दी भाषी राज्यों में स्थित कार्यालयों को हिन्दी में ही भजने हेतु प्रस्ताव राजभाषा विभाग को भेजा जाए क्योंकि गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के वरिष्ठ अधिकारी/पर्यवेक्षक विभिन्न मंत्रालयों की बैठकों में जाते हैं और वहां इस स्तर पर इस बात को बड़ी सुगमता से उठाया जा सकता है।

सचिव ने कहा कि भोपाल स्थित विभिन्न कार्यालयों- अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति आयोग कार्यालय, जनगणना कार्यालय जैसे कार्यालयों में राजभाषा में अच्छा कार्य हो रहा है ; भोपाल शहर में अनेक ऐसे कार्यालय और उपक्रम हैं जहां राजभाषा का काम प्रशंसनीय ढंग से हो रहा है। यदि कार्यालयों में उत्साहवर्द्धक ढंग से किए जा रहे राजभाषा के कार्य को देखते हुए प्रशंसनीय काम करने वाले कार्यालयों को शील्ड देने की योजना लागू की जाती है तो इससे अन्य कार्यालयों में प्रतिस्पर्धा की भावना बढ़ेगी व जो कार्यालय/कर्मचारी हिन्दी में कार्य कर रहे हैं उन्हें भी अपने काम को हिन्दी में ही करने की प्रेरणा मिलेगी। सभी सदस्यों से सर्वानुमति से "शील्ड योजना" लागू करने के प्रस्ताव का अनुमोदन किया।

प्रबोध प्रवीण और प्राज्ञ का प्रशिक्षण

सचिव ने बताया कि भोपाल के अनेक कार्यालयों म ऐसे कर्मचारी और अधिकारी हैं जिनकी मातृभाषा उडिया, तेलुगु आदि है और ऐसे लोगों को हिन्दी प्रबोध, प्रवीण और प्राज्ञ तक का प्रशिक्षण देना है किंतु यहां हिन्दी शिक्षण योजना के अन्तर्गत कोई प्रशिक्षण केन्द्र नहीं है। यद्यपि इस प्रकार के पाठ्यक्रमों के लिए पत्राचार की सुविधा है फिर भी आवश्यकता इस बात की है कि यहां हिन्दी के काम में लगे हुए अधिकारियों के परस्पर सहयोग से प्रबोध, प्रवीण और प्राज्ञ के प्रशिक्षण हेतु प्रशिक्षण का कार्यक्रम आरम्भ किया जाए।

अध्यक्ष ने कहा कि हिन्दी के काम में लगे हुए विभिन्न अधिकारी परस्पर सहयोग से हिन्दी प्रबोध, प्रवीण और प्राज्ञ का प्रशिक्षण देने हेतु प्रशिक्षण केन्द्र भोपाल में आरंभ करें।

अनुवाद दल का गठन

समिति के सचिव ने बताया कि भोपाल के अधिकांश कार्यालयों में हिन्दी अनुवादक और हिन्दी अधिकारी जैसे पद हैं ही नहीं और उसकी वजह यह है कि बहुत से कार्यालय तो इतने छोटे कार्यालय है जहां इस प्रकार के पदों का सृजन ही नहीं किया गया है और न ही मुफस्सिल क्षेत्र के इन कार्यालयों में इन पदों के सृजन की कोई संभावना नहीं है। ऐसे कार्यालयों में विभिन्न प्रकार के फार्मों/पत्रों आदि के अनुवाद में वहां के अधिकारियों और कर्मचारियों को कठिनाई आती है जो यथार्थ में ठीक भी है।

अध्यक्ष द्वारा इस मद पर विभिन्न सदस्यों के विचार जानने के बाद अनुवाद उप-समिति गठित की गई --

अध्यक्ष--डॉ. श्रीवास्तव, निदेशक ; केन्द्रीय कृषि इंजीनियरिंग संस्थान, भोपाल --अध्यक्ष

सदस्य श्री कुलभूषण शर्मा प्रबंधक (हिन्दी) भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स लिमि. भोपाल

सदस्य-श्री जे.पी. मिश्रा, हिन्दी अधिकारी, केन्द्रीय कृषि इंजीनियरिंग संस्थान, भोपाल

(ग) संपदा निदेशालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति

26-9-89 को संपदा निदेशक श्री देवेंद्र नाथ भार्गव की अध्यक्षता में सम्पदा निदेशालय में बैठक हुई।

पिछली बैठक के कार्यवृत्त पर की गई अनुवर्ती कार्रवाई पर समिति ने अपनी संतुष्टि व्यक्त की और निम्नानुसार टिप्पणी/सिफारिश की :-

(क) एन.आई.सी. द्वारा लगाए गए पर्सनल कम्प्यूटरों द्वारा द्विभाषी रुप में कार्य करने के सम्बन्ध में एन.आई.सी. की प्रतिनिधि सुश्री कपूर से विचार-विमर्श हुआ। उन्होंने बताया कि पर्सनल कम्प्यूटरों पर हिन्दी में आसानी से काम हो सकता है और इन पर प्रतीक्षा सूचियां आदि भी बनाई जा सकती हैं और साधारण टाइपराइटर की भांति हिन्दी में टाइप भी किया जा सकता है। अध्यक्ष महोदय, ने यह भी इच्छा व्यक्त की कि उनकी तरफ से एक अर्ध-शासकीय पत्र श्री कौशिक, निदेशक (तकनीकी) राजभाषा विभाग को लिखकर उनसे इस सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी मांगी जाए।

(ख) जिन अनुभागों का "क" और "ख" क्षेत्रों के साथ पत्राचार का प्रतिशत 50% से कम है, समिति ने इस प्रतिशत को यथाशीघ्र बढ़ाने की सिफारिश की। ज्ञातव्य है कि "क" और "ख" क्षेत्रों में होने वाला पत्राचार शत-प्रतिशत हिन्दी

में ही होना चाहिए । इस विषय पर सभी सम्बन्धित अनुभागों ने आश्वासन दिया है कि वे उक्त पत्राचार का प्रतिशत बढ़ाने के अपने सर्वोत्तम प्रयास करेंगें ।

(ग) पुराने एवं अंग्रेजी के 10 कण्डम टाइपराइटरों के "की-बोर्ड" बदलवाकर देवनागरी के "की-बोर्ड" लगवाने के प्रस्ताव के बारे में सहायक निदेशक (सामान्य) ने समिति को जानकारी दी कि वे इस विषय में कम्पनी वालों से सम्पर्क कर रहे हैं ।

(घ) तदर्थ मंजूरियों को हिन्दी में जारी करने के सम्बन्ध में समिति ने अपनी चिन्ता व्यक्त की कि अभी तक एक भी मंजूरी हिन्दी में जारी नहीं की जा रही है । इस सम्बन्ध में अध्यक्ष महोदय ने सहायक निदेशक (समन्वय-1) को निर्देश दिया कि वह तदर्थ मंजूरियों का एक प्रोफार्मा हिन्दी में बनाकर कम्प्यूटर में फीड करवा दें ।

सरकारी कामकाज में हिन्दी के अधिक प्रयोग पर बल देने की दृष्टि से निम्नलिखित निर्णय लिए :-

(क) हिन्दी पाठ्यक्रमों के प्रशिक्षण के सम्बन्ध में संसदीय राजभाषा समिति को यह आश्वासन दिया गया था कि मार्च 1990 तक सभी कर्मचारियों को हिन्दी में प्रशिक्षित करा दिया जाएगा । अध्यक्ष महोदय ने इस सम्बन्ध में टिप्पणी की कि इस अवधि को एक वर्ष और बढ़वा लिया जाएगा और जिन कर्मचारियों को अभी प्रशिक्षण दिया जाना अपेक्षित है उनकी सूची तैयार की जाए ।

(ख) केन्द्रीय रजिस्ट्री अनुभाग को निदेश दिया गया कि वे "क" और "ख" क्षेत्रों में कोई भी चैक या तार अंग्रेजी में न भेजें ।

(ग) केन्द्रीय रजिस्ट्री अनुभाग यह सुनिश्चित करे कि "क" और "ख" क्षेत्रों को भेजे जाने वाले पत्र हिन्दी में ही हों और लिफाफों पर पता हिन्दी में लिखा हो । हालांकि कुछ अर्ध-शासकीय/पत्र आदि अगर वे मंत्रियों या सचिवों को भेजे जाने वाले हैं और बहुत ही तात्कालिक प्रकृति के हैं तो अंग्रेजी में भी जारी किए जा सकते हैं लेकिन केन्द्रीय रजिस्ट्री अनुभाग को इस प्रकार के कागजातों को जारी करने से पहले सम्बन्धित उपनिदेशकों से लिखित अनुमति लेनी होगी और इसका रिकार्ड रखना होगा ।

(घ) उपनिदेशक (राजभाषा) शहरी विकास मंत्रालय, श्री आई.पी. कोहली ने सुझाव दिया कि सभी अनुभागों को चाहिए कि वे हर महीने अपने द्वारा किए गए पत्राचार का रिकार्ड रखें, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि कहीं उनके हिन्दी पत्राचार का प्रतिशत कम तो नहीं हो रहा है, और वे इसकी रिपोर्ट अपने शाखा-अधिकारियों व हिन्दी अनुभाग को भेजते रहें, इससे "क" और "ख" क्षेत्रों में होने वाले हिन्दी पत्राचार का प्रतिशत बढ़ेगा । इस सुझाव का अध्यक्ष महोदय ने अनुमोदन किया । □

हिन्दी प्रसार : नई चुनौतियां--कम्प्यूटीकरण के संदर्भ में

राजभाषा के क्षेत्र में नये आयामों का आकलन करने के उद्देश्य से राजस्थान सरकार के भाषा विभाग द्वारा स्थानीय सूचना केन्द्र में हिन्दी दिवस की पूर्व संध्या पर समारोह आयोजित किया गया, जिसमें एक उच्चस्तरीय संगोष्ठी तथा तकनीकी प्रदर्शनी प्रमुख थी। संगोष्ठी का विषय था "हिन्दी प्रसार : नई चुनौतियां"। संगोष्ठी में कम्प्यूटरीकरण के साथ होने वाले हिन्दी प्रयोग पर विशेष बल दिया गया।

संगोष्ठी का विषय प्रवर्तन करते हुए भाषा निदेशक श्री कलानाथ शास्त्री ने राजस्थान में हिन्दी की प्रगति का ब्यौरा देते हुए कहा कि राजस्थान में प्रशासन विधि एवं न्याय तथा शिक्षा सभी क्षेत्रों में हिन्दी की प्रगति संतोषजनक है। कम्प्यूटरीकरण के युग के साथ हिन्दी प्रयोग का तादात्मय स्थापित करने के लिए विगत कुछ वर्षों में द्विभाषी व बहुभाषी कंप्यूटर का निर्माण बढ़ा है, यह एक शुभ संकेत है। जहां अंग्रेजी कंप्यूटर कार्य कर रहे हैं उन्हें हिन्दी में कार्यक्षम बनाने का अभियान चलाया जाना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त भविष्य में द्विभाषी या हिन्दी के उपकरण ही खरीदे जाएं, यह भी जरूरी है। श्री शास्त्री ने बताया कि इन बहुभाषी कंप्यूटरों तथा टर्मिनलों की जानकारी भाषा विभाग द्वारा विभिन्न विभागों को पहुंचाई गई है तथा जहां इसकी आवश्यकता है, वहां इसे खरीदा जाए--यह अनुशंसा भी की गई है।

भाषा निदेशक ने कहा कि कई बार उन्नत यांत्रिक उपकरणों के अभाव में हिन्दी के फार्म, प्रमाण-पत्रों पर नाम आदि अंग्रेजी कंप्यूटर द्वारा भरने पड़ते हैं। उन्होंने कहा कि भारतीय नामों व पतों के लिए कंप्यूटर पर अपनाई गई रोमन लिपि कभी-कभी भ्रम पैदा करती है। एक उदाहरण देते हुए कहा कि हिन्दी का नाम सुंडाराम व सुन्दरम् रोमन लिपि में एक ही तरह से लिखा जाएगा। पर हिन्दी में ऐसी भ्रान्ति नहीं हो सकती।

विषय को आगे बढ़ाते हुए आयकर आयुक्त डॉ. ओंकारनाथ त्रिपाठी ने कहा है कि हिन्दीकरण के समक्ष यांत्रिक चुनौती इतनी नहीं है जितनी मानसिक। हम मानसिक रुप से अंग्रजी के गुलाम हैं। अपन शादी व अन्य शुभ कार्यों के कार्ड अंग्रेजी में छपवाते हैं। हमें आजीवन हिन्दी में हस्ताक्षर करने की शपथ लेनी चाहिए। डा. त्रिपाठी ने हिन्दी प्रयोग को गति देने के लिए 12 सूत्रीय कार्यक्रम रखा। उन्होंने सुप्रीम कोर्ट में हिन्दी को मान्यता दिलवाने हेतु वातावरण बनाने का आह्वान किया। इसी क्रम में उदयपुर विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर डा. के.एल. शर्मा ने हिन्दी प्रयोग के संवैधानिक पक्ष को उजागर किया।

इस अवसर पर उद्योग, विज्ञान एवं तकनीकी तथा कम्प्यूटर विभाग के निदेशक श्री रवि माथुर ने कहा कि कम्प्यूटर की अपनी अलग भाषा होती है। उससे किए फलनों को बाद में किसी भी भाषा में टंकित किया जा सकता है। श्री माथुर ने कहा कि 21वीं सदी के प्रवेश की तैयारी में दो चुनौतियां विशेष हैं एक इलेक्ट्रानिक्स व दूसरी कम्प्यूटर की। यद्यपि कंप्यूटर की अपनी मशीनी भाषा है फिर भी जर्मन, रूस आदि विकसित देशों ने उनकी अपनी भाषा में काम करने वाले कंप्यूटरों का निर्माण कर लिया है। उन्होंने कंप्यूटर की दिशा में आने वाली चुनौती के संदर्भ में कहा कि मूलतः कंप्यूटर का आविष्कार पश्चिमी देशों में हुआ है, अतः फिलहाल वे अंग्रेजी भाषा पर केन्द्रित हैं। सॉफ्ट वेयर में उस मशीनी भाषा को अन्य भाषा में रूपान्तरित करने का प्रयास किया जा रहा है। श्री रवि माथुर ने जानकारी दी कि आई.आई.टी. कानपुर ने एक ऐसा कार्ड ईजाद किया है जिसे मूलतः अंग्रेजी में काम करने वाले कंप्यूटर में लगाया जाए तो उसमें हिन्दी तथा देश की अन्य भाषाओं का भी उपयोग किया जा सकता है तथा आंकड़ों का विश्लेषण तैयार हो सकता है। श्री माथुर ने स्पष्ट किया कि तकनीकी क्षेत्र में भी हिन्दी अब पिछड़ी भाषा नहीं रही। उन्होंने राजस्थान में ग्रामीण स्तर पर बहुभाषी कंप्यूटर के लगाए जाने की जानकारी दी।

संगोष्ठी क मुख्य अतिथि राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० सच्चिदानन्द सिन्हा ने कहा कि भाषा अपने विचारों का सम्प्रेषण करने का माध्यम है। श्री सिन्हा ने कहा कि केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में आज चाहे हिन्दी का अनिवार्य विषय के रूप में कोई स्थान नहीं हो, किन्तु राजस्थान विश्वविद्यालय में हिन्दी को अनिवार्य विषय के रूप में रखा गया है।

हिन्दी प्रयोग के संदर्भ में मात्रात्मक दृष्टि से नहीं, गुणात्मक दृष्टि से सोचा जाना चाहिए। भाषा का सम्प्रेषणीयता से जुड़े माध्यमों को बोधगम्य रूप में अभिव्यक्त होना चाहिए ।

राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री सुरेन्द्रनाथ भार्गव ने कहा कि राजस्थान विधि एवं न्याय क्षेत्र में हिन्दी प्रयोग की दृष्टि से हिन्दी भाषी क्षेत्रों में अग्रणी है । यहां सत्र न्यायालय तक फैसले अनिवार्य रूप से हिन्दी में दिए जाते हैं । उच्च न्यायालय में भी हिन्दी प्रयोग बढ़ रहा है । याचिकाएं हिन्दी में प्रस्तुत होती हैं। बहस हिन्दी में होती है । साधनों की कमी तथा अपरिहार्य व व्यावहारिक कठिनाइयों के कारण उच्च न्याय.लय में हिन्दी में ही निर्णय देने में कुछ बाधाएं हैं, किन्तु उनका निराकरण करते हुए भविष्य में इसे बढ़ाया जाएगा । वे स्वयं व उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री रणवीर सहाय वर्मा आदि हिन्दी में फैसले दे रहे हैं ।

अध्यक्ष पद से बोलते हुए पर्यटन एवं भाषा राज्य मंत्री डा० गिरिजा व्यास ने कहा कि हिन्दी दिवस समारोह प्रतिवर्ष मनाने की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है । हमारी प्रगति का लेखा-जोखा रखने व हिन्दी के प्रति निष्ठा प्रगट करने का ही यह दिन है । भाषा मंत्री जी ने बताया कि बहुभाषी कम्प्यूटर को आवश्यक स्थानों पर खरीद कर लगाए जाने का प्रयास किया जाएगा ।

इस अवसर पर भाषा विभाग एवं कम्प्यूटर निदेशालय तथा देश की कुछ जानी मानी कम्प्यूटर निर्माण कंपनियों यथा-ब्लूस्टार दिल्ली, क्वार्क कानपुर, एच सी एल दिल्ली के तत्वावधान में बहुभाषी कम्प्यूटरों तथा विज्ञान व तकनीकी संदर्भ ग्रन्थों की प्रदर्शनी भी लगाई गई। प्रदर्शनी का उद्घाटन न्यायाधीश श्री सुरेन्द्रनाथ भार्गव ने किया ।

कम्प्यूटर कंपनियों द्वारा अंग्रेजी से हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं वाले कार्डों व टर्मिनलों का प्रदर्शन किया गया जिसे दर्शकों द्वारा सराहा गया । राजस्थान के आयुक्त एवं सचिव शिक्षा एवं भाषा श्री हरिमोहन माथुर ने भी प्रदर्शनी को देखा ।

इन आयोजनों में राजस्थान सरकार के बैंकों व भारत सरकार के वरिष्ठ राजभाषा व अन्य अधिकारीगण, हिन्दी प्रेमी न्यायाधीश आदि बड़ी संख्या में सम्मिलित हुए । □

विशाखापत्तनम् इस्पात परियोजना में राजभाषा संगोष्ठी

दि. 14 सितम्बर 1989 को विशाखापट्टणम इस्पात परियोजना में "इस्पात उद्योग में उत्पादक कार्य संस्कृति का विकास--मूल आवश्यकताएं" नामक विषय पर राजभाषा संगोष्ठी आयोजित की गई जिसमें अन्य इस्पात संयंत्रों के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया।

श्री जी. के. खरे, मंडल रेल प्रबंधक ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री दिलबाग राय आहूजा ने कहा कि "इस्पात उद्योगों में उत्पादक कार्य संस्कृति का विकास देश के आर्थिक विकास का एकमात्र उपाय है। केवल समय की पाबंदी, कार्य के प्रति निष्ठा, उत्पादन में गुणवत्ता लाने के प्रयास से उत्पादक कार्य संस्कृति का विकास सर्वांगीण रूप से नहीं हो पाएगा। इनके साथ-साथ कार्मिकों को संस्थान में एक ऐसा माहौल पैदा करना होगा जिससे उत्पादकता बढ़े। प्रतिभागियों ने गहरी चर्चा करके अपने सुझाव प्रस्तुत किए जो इस प्रकार हैं :

सुझाव :

1. अनुशासन ही सच्ची कार्य संस्कृति का जन्मदाता है।
2. राष्ट्रीय एकता की प्राप्ति में राष्ट्रभाषा का उपयोग संप्रेषण की बाधा को दूर करेगा।
3. संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी को अंग्रेजी का स्थान लेना होगा।
4. कार्य संस्कृति में सुरक्षा, गुणवत्ता, लागत-नियंत्रण आदि को पूर्ण महत्त्व देना।
5. उत्पादक कार्य संस्कृति के लिए हिन्दी सहित भारत की सभी भाषाओं में आपसी सहयोग और सहनशीलता की भावना का विकास।
6. सामुदायिक उद्देश्यों से संबंधित कार्यों को प्राथमिकता देना।
7. सामुदायिक योजना, निर्णय इत्यादि से संबंधित संचारण वृद्धि।
8. नियामक एवं उत्पादनहीन कार्यविधियों की पहचान व निवारण।
9. व्यक्तिगत उत्तरदायित्व व्यवस्था।

10. प्रतियोगितात्मक व्यवस्था।

11. कार्य से संबंधित मूल्यों का प्रशिक्षण।

12. योजना, कार्यान्वयन एवं नियंत्रण।

13. एक संयंत्र में प्राप्त श्रमवीर पुरस्कारों एवं सुझाव योजनाओं को अन्य संयंत्रों में सार्वभौमिक रूप से लागू करने के उपाय।

14. पदोन्नति की नीति निर्धारित करके उसे लम्बे समय तक लागू रखा जाए। साथ ही समय-समय पर उसमें सुझावों का भी समावेश किया जाना।

15. टीम वर्क की सहायता से लक्ष्य प्राप्त करना।

16. श्रमिक संघों को उत्पादकता के प्रति उत्तरदायी बनाना।

17. सामग्री क्रय पद्धति में तुलनात्मक रवैया अपनाना।

18. क्रय के आंकड़ों का खपत के आंकड़ों के साथ समुचित संयोजन।

19. भंडार में पड़ी अनुपयोगी सामग्रियों का उचित समय पर छुटकारा।

20. न्यूनतम लागत के निर्धारण द्वारा अतिरिक्त संसाधनों का विकास।

संगोष्ठी के समापन समारोह में इस्पात एवं खनन मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य श्री ऋषि मामचन्द्र कौशिक संपादक "अजंता" हैदराबाद मुख्य अतिथि रहे।

समारोह में आए हुए सज्जनों का स्वागत करते हुए परियोजना के राजभाषा अधिकारी श्री सी. एल. नारायण ने यहां हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए संपन्न होने वाले विविध कार्यकलापों का जिक्र किया।

अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री दिलबाग राय आहूजा ने संगोष्ठी में व्यक्त विचारों पर राय देते हुए कहा कि "लागत में नियंत्रण, कार्यकुशलता में विकास और अनुशासन के पालन से औद्योगिक क्षेत्र में उत्पादक कार्य संस्कृति बढ़ेगी और इस दिशा में प्रतिनिधियों द्वारा दिए गये सुझाव अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।"

श्री ऋषि मामचन्द्र कौशिक ने कहा कि "विशाखापट्टणम् इस्पात परियोजना में हिंदी संबंधित अनेकानेक कार्यकलाप हो रहे हैं। यह बहुत ही प्रशंसनीय विषय है।"

इसके पश्चात् मुख्य अतिथि ने इस अवसर पर निकाले गये विशेषांक का विमोचन किया और हिंदी टंकण में प्रशिक्षित कर्मचारियों सर्वश्री टी. श्रीराममूर्ति एस. कनकाराव, एस. रायप्पराजु, टी. वी. बी. एस. जी. तिलक, पी. राजाराम, जी. बालापरमेश्वर राव, पी. ए. सूर्यनारायण तथा जी. त्रिनाथ-राव को नकद पुरस्कार बांटे।

सितम्बर 1988 से सितम्बर 1989 तक की अवधि में अत्यधिक काम हिंदी में करने के लिए "राजभाषा शील्ड" इस बार वित्त विभाग को दी गई जिसे मुख्य अतिथि के करकमलों से श्री पी० डोकी, मुख्य वित्त प्रबंधक ने ग्रहण किया। □

हिमाचल में हिन्दी संगोष्ठी

भाषा एवं संस्कृति विभाग द्वारा राज्य स्तरीय हिंदी दिवस समारोह का आयोजन 14 तथा 15 सितम्बर 89 को बिलासपुर में किया गया। इस दो दिवसीय कार्यक्रम का उद्घाटन 14 सितम्बर को बिलासपुर के अतिरिक्त जिलाधीश, श्री एम. एल. शर्मा ने किया। अध्यक्षीय भाषण में श्री शर्मा ने लेखकों से आग्रह करते हुए कहा कि वे हिंदी के जो हिमांचल प्रदेश की राजभाषा तथा साहित्यिक भाषा दोनों ही है तथा जो हमारी राष्ट्रभाषा है, उत्थान के लिए कार्य करें।

प्रस्तुति : जगदीश शर्मा

इससे पूर्व विभाग की ओर से सहायक निदेशक श्री जगदीश शर्मा ने प्रदेश सरकार द्वारा हिंदी के प्रचालन के लिए सरकारी कामकाज तथा साहित्य के क्षेत्र में चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं तथा कार्यक्रमों का हवाला दिया।

प्रथम सत्र कहानी संवाद का था जिसमें प्रदेश के नवोदित तथा प्रतिष्ठित कहानीकारों को आमंत्रित किया गया था। उनमें से केवल 4 नये नवोदित लेखक कहानीकार के रूप में शामिल हुए। यह थे श्री दिलीप सिंह वर्मा, श्रीमती यमुना संख्यान, कुमारी शांता वर्मा और श्री सुदर्शन पटियाला, जिन्होंने क्रमशः "चक्र गृहों का" "जंजीर" "यथार्थ"; तथा "डूबते किनारे" शीर्षकों से अपनी हिंदी कहानियां प्रस्तुत कीं। लगभग सभी समीक्षकों की राय थी कि यद्यपि प्रदेश के कहानी क्षेत्र में यह नाम चर्चित नहीं है किंतु यह कहानियां ईमानदारी से लिखी अपने आस-पास के परिवेश तथा यथार्थ को खोजती टटोलती कहानियां हैं जिसमें "यथार्थ" की जमीन को पूरी तरह अपने पांव के नीचे रखने की कोशिश की गई है और यह इन कहानीकारों की संभावनाओं की ओर साफ संकेत करती हैं। कहानियों के समीक्षक थे प्रतिष्ठित कहानीकार और कवि श्री सुन्दर लोहिया हिमाचली आंचलिक साहित्य के

विद्वान् श्री एम. आर. ठाकुर, विद्वान् समीक्षक और कवि डॉ. अनिल राकेशी तथा "जागृति" के संपादक श्री प्रेम बिज। इस सत्र में विशेष अतिथि के रूप में कहानी संवाद में भाग लेते हुए दैनिक ट्रिब्यून के सहायक संपादक श्री विजय सहगल ने सभी कहानीकारों में अच्छी संभावना बताते हुए कहा कि इन लेखकों को अपनी कृतियों में बहुत कुछ सुधार करने की आवश्यकता है जिसके लिए इन्हें काफी प्रयास करना होगा। इन्होंने भी अन्य समीक्षकों की भांति कुमारी शांता की कहानी को इस संवाद में पढ़ी गई सबसे अच्छी कहानी बताया।

15 सितम्बर को श्री विजय सहगल ने "हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता—समस्याएं तथा समाधान" नामक विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया जिसमें हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता का संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत करते हुए लेखक ने साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में समाचार पत्र और साहित्यिक पत्रकारिता की सामान्य समस्याओं का उल्लेख करते हुए अर्थाभाव प्रचार-प्रसार की कठिनाइयां, प्रकाशन और मुद्रण व्यावसायिक पत्रकारिता तथा राज्याश्रय से जुड़े अनेक प्रश्नों को बहस के लिए खुला छोड़ा। चर्चा में भाग लेते हुए श्री जगदीश शर्मा ने पत्रकारिता की समस्याओं को दो भागों में बांटा। एक वे समस्याएं जो कि पत्रकार अथवा इस व्यवसाय से जुड़े लोगों से संबंधित है तथा दूसरी वे समस्याएं जो साहित्यिक लेखकों को समाचारपत्र तथा पत्रिकाओं में स्थान पाने के लिए भुगतनी पड़ती हैं। उनके विचार से हिमाचल प्रदेश के संबंध में यह और भी अधिक है क्योंकि कोई भी बड़ा समाचार-पत्र अथवा पत्रिका यहां से नहीं निकलती। इसी कारण यहां की साहित्यिक गतिविधियों को अधिक स्थान नहीं मिल पाता। डॉ. चमन लाल गुप्त ने साहित्यिक पत्रकारिता को तीन भागों—व्यवसायिक पत्रिका, सरकारी पत्रिका तथा विशेष धारा से जुड़े लेखकों द्वारा चलाई जाने वाली साहित्यिक पत्रकारिता का उल्लेख किया और इन्होंने हिन्दी पाठकों में पढ़ने की कम रुचि की ओर इशारा किया। पत्रकार श्री प्रेम बिज का विचार था कि पत्रकारिता का साहित्य के विकास को महत्वपूर्ण योगदान रहा है और यही स्थिति आज भी है। श्री खजूरिया ने हिमाचली साहित्यिक पत्रकारिता की बात करते हुए कहा कि राजनीतिक प्रभाव से दूर रखने तथा इस दिशा में साधन संपन्न लोगों को आगे आना चाहिए। इसके अतिरिक्त दीनू कश्यप, लोहिया और बद्री सिंह भाटिया ने भी बहस में भाग लिया। इस सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध लेखक और पत्रकार श्री सत्येन शर्मा ने की। इनके अनुसार पत्रकारिता "घर फूंक तमाशा" देखने वाली बात है। उन्होंने मांग की कि प्रदेश में पत्रिकाओं के लिए अनुदान की नीति को अधिक व्यापक और सुदृढ़ बनाना चाहिए ताकि इनका और विकास हो सके। मंच का संचालन किया—लक्ष्मी चौहान ने।

इसी दिन शाम को प्रसिद्ध हिंदी लेखक स्वर्गीय मोहन राकेश के नाटक "आषाढ़ का एक दिन" का मंचन स्थानीय किसान भवन में किया गया। नाटक प्रदेश की प्रसिद्ध संस्था परिधि द्वारा मंचित किया गया जिसका निर्देशन प्रसिद्ध रंग-कर्मी श्री देवेन जोशी ने किया। नाटक में अंबिका के रूप में मंजु, विलोम के रूप में विजय शर्मा तथा कालीदास के रूप में राजेन कौशल की भूमिका बहुत ही सराही गई। मल्लिका को वंदना शर्मा ने भी अच्छी तरह निभाया।

हरिद्वार में विज्ञान जनचेतना कार्यक्रम

उत्तर प्रदेश विज्ञान लेखक एवं संवाददाता समिति के तत्वाधान में रुड़की, जनपद हरिद्वार में दिनांक 10 सितबर, 89 को द्वि-दिवसीय विज्ञान जन-चेतना कार्यक्रम का आयोजन बी. एस. एम. महाविद्यालय, सभाकक्ष में किया गया। कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न विद्यालयों द्वारा विज्ञान प्रदर्शनी एवं जूनियर्स, सीनियर्स के लिए विज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता एवं विज्ञान, प्रौद्योग, पर्यावरण, स्वास्थ्य, कृत्रिम ऊर्जा, ईंधन, सामाजिक वानिकी आदि से सम्बद्ध विज्ञान साहित्य का प्रदर्शन किया गया।

प्रदर्शनी का उद्घाटन केन्द्रीय विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री जी. सी. श्रीवास्तव ने किया। विद्यार्थियों के बौद्धिकस्तर के आकलन हेत चार सदस्यीय निर्णायक मण्डल (सर्वश्री प्रो. जी. पी. श्रीवास्तव, अवकाश प्राप्त मुख्य अभियंता, विद्युत एवं निदेशक प्रशिक्षण, रुड़की विश्वविद्यालय, डॉ. युद्धवीर सिंह, डॉ. आई. बी. शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक, केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रुड़की एवं डॉ. प्रसून चतुर्वेदी, वैज्ञानिक, भौतिकी रुड़की विश्वविद्यालय का गठन किया गया। प्रदर्शनी में केन्द्रीय विद्यालय को सर्वाधिक अंक प्राप्त होने के कारण डॉ. कुंजबिहारी लाल स्मृति चल-वैजन्ती प्रदान की गई।

9 सितम्बर को ही विज्ञान एवं प्रौद्योग परिषद, उ. प्र. द्वारा तैयार की गई वीडियो फिल्म "विज्ञान के बढ़ते चरण" तथा पर्यावरण संरक्षण पर अत्यन्त रोचक फिल्मों का प्रदर्शन हुआ।

दिनांक 10 सितम्बर को जूनियर्स/सीनियर्स वर्ग के छात्र/छात्राओं का विज्ञान प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम दो सत्रों में चलता रहा। इस प्रतियोगिता में श्री. एस. एम. इंटर कॉलेज, राजकीय इन्टर कॉलेज, केन्द्रीय विद्यालय, सेन्ट गैब्रियल्स अकादमी विश्वविद्यालय, आदर्श बाल निकेतन, आर्य कन्या पाठशाला, इन्टर कॉलेज, सेन्ट ऐन्स सेकेन्ड्री विद्यालय, सनातन धर्म कन्या इन्टर कालेज, फ्लोराडेस विद्यालय नाक्स विद्यालय आदि के प्रतियोगियों ने भाग लिया।

विज्ञान प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम का संचालन रुड़की विश्व-विद्यालय के शोध छात्रों (सुश्री अमित कुमार श्रीवास्तव, सुनीत कुमार यादव, के. एस. पनेसर, तथा अशोक पंवार) ने बड़े रोचक ढंग से किया, जिसकी दर्शकों ने सराहना की। प्रतियोगिता में सेंट गैब्रियल्स विद्यालय एवं केन्द्रीय विद्यालय

चित्र समाचार-II

भारतीय कपास निगम लि., बम्बई के कार्यालय में हिन्दी कार्य का निरीक्षण करते हुए राजभाषा विभाग के सचिव श्री राधाकान्त शर्मा (दांए) साथ में अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक श्री मा. बि. लाल

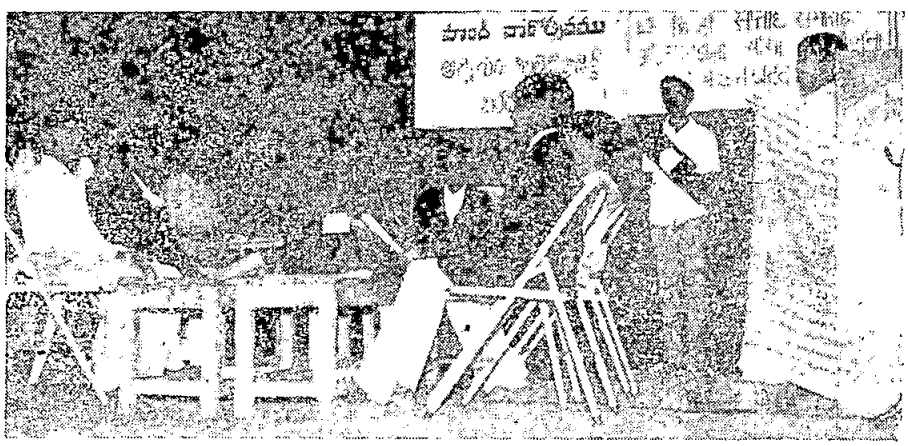

गुण्डाला शीशा परियोजना बण्डल भट्ट में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम की झलक

लखनऊ पूर्वोत्तर रेलवे मण्डल में भाषण देते हुए श्री गौरी शंकर, महाप्रबन्धक

सम्बोधित करते हुए बैंक आफ बड़ौदा के उप महाप्रबन्धक श्री रसिक भाई देसाई, श्री डी. एम. देसाई श्री कलानाथ शास्त्री, श्री ओंकारनाथ त्रिपाठी, श्री एस. कृष्णन क्षेत्रीय प्रबन्धक आदि

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) मद्रास में हिन्दी कार्यक्रम की एक झलक

मौसम विभाग, पुणे में सभा को सम्बोधित करते हुए उपमहाप्रबन्धक श्री नूतन दास तथा अन्य अधिकारीगण

पुरस्कार वितरण समारोह की एक झलक

पंजाब नेशनल बैंक के उप महाप्रबन्धक (कार्मिक) श्री बी. एस. वासन (दाएं) से बातचीत करते हुए राजभाषा भारती के उप सम्पादक डा. गुरुदयाल बजाज

समिति में भाग लेते हुए सर्वश्री सोमजी भाई, सुधाकर पाण्डेय पन्ना लाल शर्मा एवं डॉ. विश्वनाथ अय्यर

भारत गोल्ड माइन्स लि. में कार्यक्रम की एक झलक.

सरस्वती वन्दना प्रस्तुत करती हुई महिला कर्मचारी

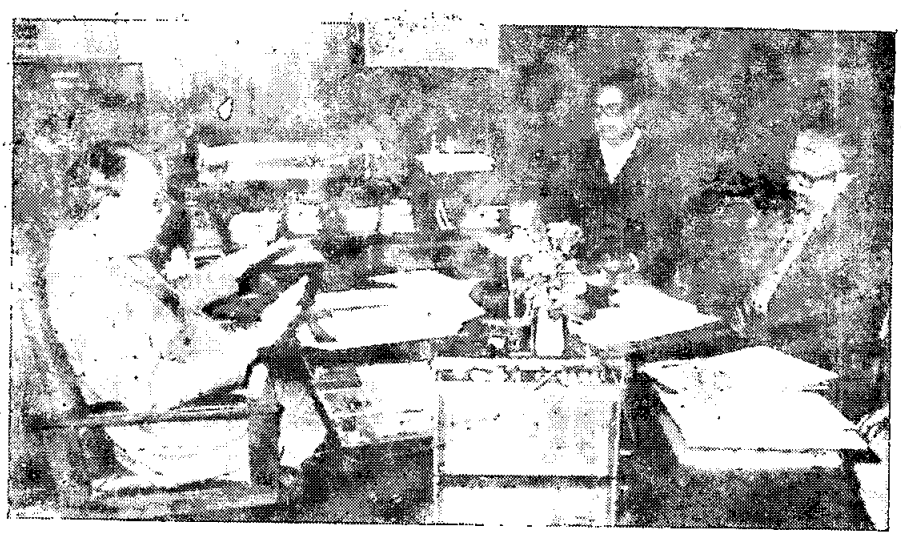

बैंक आफ बड़ौदा के उत्तरी अंचल के उप महाप्रबन्धक श्री एन.एस. खन्ना (बाएं) से बैंक में हिन्दी प्रयोग के बारे में चर्चा करते हुए डॉ. गुरुदयाल बजाज (दाएं) तथा मध्य में वरिष्ठ प्रबन्धक श्री एस.के. साही

को समान अंक प्राप्त होने के कारण डॉ. कुंज बिहारी लाल स्मृति चल-वैजन्ती संयुक्त रूप से दोनों टीमों को प्रदान की गई।

उसी दिन सांय पुरस्कार वितरण समारोह एवं आमंत्रित व्याख्यान माला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो डी आर गुप्ता वैज्ञानिक, रसायन विज्ञान, पंतनगर विश्वविद्यालय, नैनीताल ने विद्यार्थियों का आह्वान किया कि वे राष्ट्र निर्माण में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अपनी रूचि पैदा करें।

इस अवसर पर विज्ञान एवं प्रौद्योग विभाग, भारत सरकार के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. अनुज सिन्हा ने इस बात पर बल दिया कि ग्रामीण विकास के लिए हम सभी का उत्तरदायित्व हो जाता है कि हम पहले ग्रामीण जनता को साक्षर बनाए। उनके दैनिक जीवन में काम आने वाले वैज्ञानिक यंत्र, मॉडल, पोस्टरों द्वारा उन विषयों की जानकारी भी कराएं, चाहे वह कृषि के क्षेत्र में हो अथवा स्वस्थ्य या पर्यावरण के क्षेत्र में। समिति द्वारा इस अवसर पर एक विशेषांक "मानव एवं पर्यावरण" का भी विमोचन किया गया। प्रो. पी. एस. परेसर, रसायन इंजीनियरिंग विभाग, रूड़की विश्वविद्यालय ने भी प्रदूषण के बढ़ते हुए माहौल पर नियंत्रण करने के लिए जोर दिया।

संगठन अध्यक्ष श्री जगदीश चन्द्र रंजन ने यह घोषणा की कि प्रतिवर्ष उत्कृष्ठ विज्ञान साहित्य लेखन पर 2,000/- तथा उत्कृष्ट विज्ञान समाचार संकलन पर रु. 1,000/- का पुरस्कार प्रदान किया जाएगा।

क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन, कोच्चिन

दिनांक 14 सितम्बर, 1989 को कोचिन में क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्णाटक, पांडिचेरी, केरल और लक्ष्यद्वीप राज्यों में राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन की दिशा में हुई प्रगति का जायजा लेने के सम्बन्ध में आयोजित था। सम्मेलन में उक्त प्रदेशों में स्थित भारत सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों और राष्ट्रीयकृत बैंकों के अध्यक्षों राजभाषा अधिकारियों सहित कुल 223 व्यक्तियों ने भाग लिया। सम्मेलन दो सत्रों में हुआ।

सम्मेलन की अध्यक्षता राजभषा विभाग, गृह मंत्रालय के सचिव और भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार श्री राधा कान्त शर्मा ने की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अग्रणी साहित्यकार हिन्दी-तमिल और संस्कृत के विद्वान पद्मश्री डा. के. एम. जार्ज थे। विशेष अतिथि के रुप में अतिथि सांसद श्री के वी थाम्स एवं मुख्य आयकर आयुक्त थे। राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष एवं मुख्य आयकर आयुक्त श्री एम के केशवन के अतिरिक्त राजभाषा विभाग के निदेशक अनुसंधान डा. महेश चन्द्र गुप्त और उपसचिव श्री भगवानदास पटैरया तथा क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय के सहायक निदेशक डा. जोस आस्टिन उपस्थित थे।

उप सचिव (कार्यान्वयन) ने सम्मेलन का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए सभी उपस्थित हिंदी सेवी अधिकारियों का स्वागत किया।

मुख्य अतिथि—पद्मश्री डा. के. एम. जार्ज ने सम्मेलन में उपस्थित होने में गौरव का अनुभव करते हुए कहा कि भले ही "मेरी मातृभाषा मलयालम है और यह मुझे विरासत में मिली है, परन्तु सभी भारतीय भाषाओं और उनके साहित्य को अपना समझकर उनका आदर करता हूं। सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में राजभाषा विभाग पिछले 25 वर्षों से सक्रिय काम करता चला आ रहा है और हर वर्ष इस कार्य में उसे उत्तरोत्तर सफलता मिल रही है।" उन्होंने प्रश्न उठाए कि हिन्दी को वर्तमान स्थिति से ऊपर उठाकर प्रादेशिकता के बन्धनों से मुक्त करके भारतीय साहित्य की सर्वांगीण अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में परिवर्तित क्यों नहीं किया जा सकता और विश्वास व्यक्त किया कि ऐसा करना बिल्कुल संभव है। **डा० जार्ज ने कहा कि हिन्दी राष्ट्रीय एकता और भारतीय संस्कृति को मजबूत करने का सशक्त माध्यम है। हिन्दी पूरे देश की भाषा है। उन्होंने कहा कि मैं एक ऐसे भविष्य की कामना करता हूँ जिसमें भारत के कोने-कोने से पाठक सच्चे दिल से घोषित करेंगे कि हिन्दी उनकी भाषा है और हिन्दी का साहित्य उनका अपना साहित्य है।**

सचिव, राजभाषा श्री आर. के. शर्मा ने सभा में उपस्थित सभी का स्वागत करते हुए अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि भारतीय संस्कृति में केरल प्रदेश का विशेष योगदान है। केरल भारत की मिली-जुली संस्कृति का एक सुन्दर भाग है। यह बड़े गौरव की बात है कि हिन्दी दिवस के अवसर पर यह सम्मेलन केरल प्रान्त में ही आयोजित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि हिन्दी देश के अधिकांश भागों में बोली और समझी जाने वाली भाषा है और यह इस देश को एकता के सूत्र में बांधने का कार्य-कर रही है। सचिव (राजभाषा) ने कहा कि राजभाषा विभाग में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान दे रहा है। इस समय हिन्दी के उत्तरोत्तर विकास को सुनिश्चित करने के लिए विशेष यांत्रिक सुविधाएं भी उपलब्ध हैं, जिनका हिन्दी के प्रचार-प्रसार में उपयोग किया जा रहा है। राजभाषा अधिकारियों और उपस्थित व्यक्तियों को राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए उन्होंने अपील की कि राजभाषा के कार्यान्वयन में हमें अनुवाद की मानसिकता को छोड़ना चाहिए और मूल रूप में फाइलों पर अपने टिप्पण और पत्रादि हिन्दी में लिखने का प्रयास करना चाहिए।

निदेशक (अनुसंधान) डा. महेश चन्द्र गुप्त ने कहा कि केरल में ओणम के त्यौहार का एक विशेष महत्त्व है। ओणम के उत्सव के तुरन्त बाद केरल में 14 सितम्बर, को क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन आयोजित करना एक ऐतिहासिक घटना है। हिन्दी के प्रचार को आगे बढ़ाने के लिए विभिन्न कार्यालयों/उपक्रमों राष्ट्रीयकृत बैंकों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि राजभाषा अधिकारी नींव के पत्थर के समान एक कठिन परन्तु राष्ट्रीय महत्त्व के कार्य में लगे हुए हैं।

लोकसभा सांसद श्री के. वी. थामस ने राजभाषा हिन्दी में उत्कृष्ट काम के लिए कार्यालयों/उपक्रमों और बैंकों के प्रतिनिधियों और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के अध्यक्षों को राजभाषा पुरस्कार से सम्मानित किया।

भोजनोपरांत दूसरे सत्र की अध्यक्षता भी सचिव (राजभाषा) ने की। इस सत्र में राजभाषा के कार्यान्वयन में आने वाली विभिन्न कठिनाइयों पर विस्तार से चर्चा हुई और सचिव महोदय ने स्वयं हिन्दी अधिकारियों और अन्य प्रतिभागियों की शंकाओं का समाधान किया।

सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, तिरुअनन्तपुरम ने हिन्दी प्रवीण, प्रबोध और प्राज्ञ परीक्षाओं के संबंध में कहा कि राजभाषा विभाग द्वारा जारी आदेश एक दूसरे से मेल नहीं खाते, अतः उन पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता है। सचिव महोदय ने इस संबंध में यदि कोई विसंगति है, तो उसे शीघ्र दूर करके समग्र आदेश जारी करने का आश्वासन दिया।

दक्षिण रेलवे, हैदराबाद के प्रतिनिधि ने कहा कि प्रोत्साहन योजना के अन्तर्गत रेलवे कर्मचारियों को देय रु. 50 का प्रोत्साहन पर्याप्त नहीं है, यह कम से कम 100 रुपये होना चाहिए।

एक प्रतिभागी ने यह प्रश्न उठाया कि पत्राचार पाठ्यक्रम ठीक प्रकार से नहीं चल रहा है, अतः इसमें सुधार करने की आवश्यकता है। सचिव (राजभाषा) ने बताया कि पत्राचार पाठ्यक्रम का दायित्व शिक्षा विभाग के अन्तर्गत केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय का है।

कार्यालयों में पदोन्नति के प्रश्न पर सचिव (राजभाषा) ने बताया कि विभिन्न कार्यालय, उपक्रम, बैंक आदि पदोन्नति के संबंध में अपनी-अपनी नीति बनाते हैं। राजभाषा विभाग द्वारा इस संबंध में दिशा-निर्देश के लिए सामान्य आदेश जारी किया गया है।

एक प्रतिभागी द्वारा उठाए गए प्रश्न पर सचिव (राजभाषा) ने कहा कि यदि बार-बार पत्र लिखने पर भी राजभाषा विभाग से किसी बात का उत्तर नहीं मिलता तो कार्य की गम्भीरता को देखते हुए उन्हें लिखा जा सकता है और सम्पर्क भी किया जा सकता है।

प्रतिभागियों ने हिन्दी शिक्षण योजना की पाठ्यपुस्तकों में मुद्रण टाइप बहुत छोटे होने की शिकायत की। सचिव (राजभाषा) ने इस संबंध में बताया कि पाठ्यपुस्तकों की छपाई का काम स्वैच्छिक संस्थाओं को सौंपा गया था, परन्तु ये प्रकाशन संतोषजनक ढंग से नहीं निकाले गए। भविष्य में यह काम इन संस्थाओं को नहीं दिया जाएगा। यदि कोई संस्था इन प्रकाशनों को न लाभ न हानि (नो प्रोफिट नो लास) के आधार पर प्रकाशित कर सके तो यह कार्य उसे सौंपने में प्रसन्नता होगी।

सचिव (राजभाषा) ने यह कहा कि हिन्दी शिक्षण योजना के प्रशिक्षणार्थियों को पाठ्यक्रम की जो पुस्तकें दी जा रही हैं वे वापस न ली जाएं।

एक प्रतिभागी ने प्राज्ञ के स्थान पर बैंकों में चलाए जाने वाले पाठ्यक्रम को राजभाषा विभाग द्वारा मान्यता दिए जाने का अनुरोध किया। सचिव ने इस पर भविष्य में विचार करने का आश्वासन दिया।

एक प्रश्न के उत्तर में सचिव, राजभाषा ने कहा कि बैंकों और उपक्रमों में हिंदी संबंधी पदों का सृजन निरंतर अवश्य होते रहना चाहिए। राजभाषा संबंधी पदों को प्रबंधन का अंग माना जाए और इन पदों पर काम करने वाले अधिकारियों को मुख्य धारा में मिलने के अवसर होने चाहिए।

चर्चा के दौरान सचिव (राजभाषा) ने निदेश दिया कि राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों के कार्यवृत्तों पर समुचित कार्रवाई की जानी चाहिए और कार्यवृत्तों का गुणात्मक मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

बैंकों के प्राज्ञ पाठ्यक्रम की पुस्तकों के उपलब्धि स्थान के बारे में यह स्पष्ट किया गया कि पुस्तकें केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, शीतला मार्ग आगरा से मंगाई जाएं। इसी क्रम में यह उल्लेख किया गया कि बैंकों के लिए प्रवीण का पत्राचार पाठ्यक्रम तैयार किया गया है जिसे राजभाषा विभाग ने मान्यता दे दी है।

बैंकों के कुछ अधिकारियों की ओर से यह सुझाव दिया गया कि सी. ए. आई. आई. बी. परीक्षा में हिन्दी का एक अनिवार्य प्रश्नपत्र रखा जाए।

हिन्दुस्तान इन्सैक्टेसाइड्स लि. के संबंध में बताया गया कि वहां हिन्दी संबंधी स्टाफ की प्रोन्नति की कोई व्यवस्था नहीं है और वेतनमानों में असमानता है।

तिरुअनंतपुरम "न. रा. का. स." की ओर से यह उल्लेख किया गया है कि अनेक कर्मचारियों को हिन्दी पढ़ाना शेष है। अतः अल्पकालीन गहन पाठ्यक्रम चलाए जाएं। इस विषय में सचिव (राजभाषा) महोदय ने बताया कि हिन्दी की विभिन्न संस्थाओं द्वारा आयोजित परीक्षाओं को मान्यता देने के बारे में विचार किया जाएगा। इस संदर्भ में यह भी सुझाव आया कि हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान कराने के लिए हिन्दी की संस्थाओं द्वारा प्रयोजन मूलक हिन्दी के पाठ्यक्रम प्रारंभ कराए जाएं।

सम्मेलन के अवसर पर होटल इण्टरनेशनल में ही राजभाषा की प्रगति से संबंधित एक प्रदर्शनी भी लगाई गई। प्रदर्शनी में दक्षिण भारत में स्थित कई उपक्रमों/राष्ट्रीयकृत बैंकों के अतिरिक्त द्विभाषी और बहुभाषी कम्प्यूटर बनाने वाला कंपनियों ने भी भाग लिया। सचिव (राजभाषा) सहित प्रतिभागियों ने प्रदर्शनी की सराहना की। □

बैंकों में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने हेतु सार्थक प्रयास

बैंक ऑफ बड़ौदा के इतिहास में 20 जुलाई, 1908 महत्त्वपूर्ण दिन है, क्योंकि इसी दिन स्वर्गीय महाराज सयाजीराव गायकवाड़ (तृतीय) के संरक्षण में बैंक की स्थापना हुई थी। स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान अनेक बाधाओं-अवरोधों को झेलते हुए यह बैंक आज अपनी 2154 शाखाओं (जिनमें से 48 शाखाएं विदेशों में हैं) के द्वारा देश के सामाजिक व आर्थिक परिवर्तन की प्रक्रिया में विनम्र भूमिका निभा रहा है। विश्व बैंक निधिकृत परियोजनाओं में अपनी सहभागिता, निर्यात-विकास परियोजना के अन्तर्गत निधि-संचालन के लिए बैंक के निर्धारण और अपनी विदेशी शाखाओं के माध्यम से जहां एक ओर यह बैंक अन्तर्राष्ट्रीय बैंकिंग में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाए हुए है, वहीं दूसरी ओर भारत के बैंकिंग परिदृश्य में अपनी 'बॉब' वित्तीय सेवाएं, 'बॉब कार्ड', "प्रयोगशाला से भूमि तक" कार्यक्रम, बहु सेवा एजेन्सी, ग्राम विकास केन्द्र आदि जैसी बहुपक्षीय गतिविधियों द्वारा यह बैंक अग्रणी भारतीय बैंकों में से एक है।

राजभाषा कार्यान्वयन की दृष्टि से बैंक की "क" और "ख" क्षेत्रों में 1775 तथा "ग" क्षेत्र में 330 शाखाओं में से क्रमशः 1650 तथा 65 शाखाएं राजभाषा नियम 10 (4) के अन्तर्गत अधिसूचित हैं। दिनांक 30 जून, 1989 को समाप्त तिमाही के अनुसार समेकित रूप से बैंक ऑफ बड़ौदा में हिन्दी में पत्राचार और तारों की स्थिति इस प्रकार है :

हिन्दी में पत्राचार		लक्ष्य
"क" क्षेत्र	93%	90%
"ख" क्षेत्र	55%	50%
"ग" क्षेत्र	39%	10%
हिन्दी में तार		**लक्ष्य**
"क" क्षेत्र	56.07%	25%
"ख" क्षेत्र	27.21%	25%
"ग" क्षेत्र	26.18%	—

बैंकिंग उद्योग को सही दिशा देने में बैंक के प्रतिभासम्पन्न कार्यपालकों की भूमिका प्रमुख रहती है। बैंक ऑफ बड़ौदा के उत्तरी अंचल के उप महा-प्रबन्धक श्री एन. एस. खन्ना राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में एक हस्ताक्षर हैं। श्री खन्ना (नारायण सिंह खन्ना) ने बी. कॉम. आनर्स तथा सनदी लेखाकार (चार्टर्ड एकाउन्टेण्ट) की परीक्षाएं अंग्रेजी माध्यम से उत्तीर्ण की हैं। हायर सेकेण्डरी तक हिन्दी की पढ़ाई बैंकिंग कामकाज हिंदी में करने में सहायक सिद्ध हुई है। बैंक ऑफ बड़ौदा की सेवा में आने के बाद विभिन्न पदों—क्षेत्रीय प्रबन्धक, सहायक महाप्रबन्धक के रूप में कार्य किया। वर्ष 1986 में राजस्थान अंचल में उप महाप्रबन्धक के रूप में बैंकिंग गतिविधियों तथा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में इनका योगदान महत्त्वपूर्ण है।

प्रस्तुति : डॉ० गुरुदयाल बजाज

कुछ समय पूर्व ही श्री खन्ना ने उत्तरी अंचल के प्रमुख का कार्यभार ग्रहण किया। इनके प्रयासों के फलस्वरूप बैंक ऑफ बड़ौदा के इस अंचल में हिंदी के प्रयोग में उत्तरोत्तर प्रगति हो रही है। सितम्बर 1989 की प्रगति रिपोर्ट के अनुसार हिंदी प्रयोग की स्थिति इस प्रकार है :—

हिंदी में पत्राचार

'क' क्षेत्र	74.4%
'ख' ,,	55.5%
'ग' ,,	14%

जयपुर प्रवास के दौरान श्री खन्ना नगर राजभाषा कार्यान्वयन (बैंक) समिति के अध्यक्ष थे। इनके निदेशन में बैंकों में हिन्दी के कार्यान्वयन की स्थिति का जायजा लेने के लिए दो सर्वेक्षण दल गठित किए गए। इन सर्वेक्षण दलों के जिम्मे "बैंकों के प्रशासनिक कार्यालयों में हिन्दी का प्रयोग : अपेक्षित मात्रा में न बढ़ने के कारण एवं उनके उपाय" सुझाना तथा "बैंकों में ग्राहक सेवा और हिन्दी" विषय पर अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की जानी थी। इन दोनों दलों ने बड़े व्यवस्थित ढंग से सर्वेक्षण के बाद बैंकों में हिन्दी के कामकाज को बढ़ाने की दिशा में अमूल्य सुझाव दिए। मेरी इच्छा यह जानने की थी कि जो सुझाव सर्वेक्षण दलों ने दिए थे—उन्हें श्री खन्ना अपने अधीनस्थ शाखाओं/कार्यालयों में लागू कर पाए अथवा नहीं? इसी दृष्टि से श्री खन्ना से भेंट की। उनसे होने वाले बातचीत के मुख्य अंश 'राजभाषा भारती' के पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत हैं :—

खन्ना साहब! हिन्दी में काम करते हुए आप कैसा महसूस करते हैं?

अच्छा लगता है। मेरे सेवा दायित्व का यह एक अंग है कि सरकार की राजभाषा नीति का अनुपालन करूं और नियमों के अनुसार अंचल-अध्यक्ष होने के नाते अपने सहयोगियों तथा अधीनस्थों को भी कामकाज हिन्दी में करने के लिए प्रेरित करूं।

स्वयं काम करना आसान है किन्तु दूसरे अधिकारियों को आप किस प्रकार प्रेरित करते हैं?

किसी अधिकारी द्वारा यदि कोई मसौदा, पत्र आदि अंग्रेजी में प्रस्तुत किया जाता है और मुझे यह जानकारी होती है कि अमुक अधिकारी हिन्दी जानता है तो उस हालत में मैं प्रस्तुत मसौदे पर हस्ताक्षर करने के बजाय "क्या यह मसौदा हिन्दी में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता?" लिखकर लौटा देता हूं। यदि कोई अधिकारी अपनी टिप्पणी अंग्रेजी में लिखता है तो मेरी टिप्पणी—"क्या यह टिप्पणी हिन्दी में लिखने में कोई कठिनाई है?" के साथ फाईल वापस कर दी जाती है। केवल मेरी इन छोटी-छोटी टिप्पणियों का परिणाम यह होता है कि अगली बार संबंधित अधिकारी अपने पत्रादि हिन्दी में प्रस्तुत कर देते हैं।

कर्मचारी अथवा अधिकारी हिन्दी में काम करने से क्यों कतराते हैं?

डॉ. बजाज! "क" तथा "ख" क्षेत्रों में हमारे बैंक के अधिकांशतः कर्मचारियों को हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान है। सेवा में आते समय उन्हें अंग्रेजी में काम लायक ज्ञान नहीं होता, लेकिन ब्रांच में बाकी साथियों की देखा-देखी वे भी अंग्रेजी में कार्य करना शुरू कर देते हैं। फिर यदि उसी ब्रांच में कोई दूसरा अधिकारी आ जाता है जो हिन्दी में काम करवाना चाहता है तो कर्मचारियों को अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी में काम करना कठिन लगता है।

इस प्रकार की विपरीत स्थिति से बचने का आपके पास क्या उपाय है?

बहुत सीधा और सरल उपाय है। जब कोई कर्मचारी/अधिकारी बैंकिंग सेवा में आए, उसे प्रारंभिक बैंकिंग प्रशिक्षण हिन्दी माध्यम से दिया जाए और उसे मानसिक रूप से तैयार कर दिया जाए कि वे हिन्दी में काम करना पसन्द करें।

राजभाषा विभाग चाहता है कि "क" तथा "ख" क्षेत्रों में प्रारंभिक (इंडक्शन)/ सेवाकालीन प्रशिक्षण हिन्दी माध्यम से हो। क्या आपके बैंक में ऐसी सुविधा है?

हमारे बैंक के "क" तथा "ख" क्षेत्रों के प्रशिक्षण केन्द्रों में कार्यक्रम हिन्दी में चलाए जा रहे हैं। जहां किसी प्रशिक्षण अधिकारी को थोड़ी बहुत कठिनाई होती है, वहां हिन्दी अंग्रेजी में मिले-जुले व्याख्यान दिए जाते हैं। हमारे बैंक में 'ग' क्षेत्र से पदोन्नति के बाद स्थानान्तरित होकर उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, दिल्ली, राजस्थान आदि क्षेत्रों में आने वाले हिंदी से इतर मातृभाषी अधिकारियों द्वारा कार्यभार ग्रहण करने के बाद पहला आग्रह यह रहता है कि हमें किसी ऐसी ब्रांच में पोस्टिंग दीजिए, जहां अंग्रेजी से काम चल जाए।

खन्ना साहब! सभी को बड़े शहरों में नियुक्ति दे पाना संभव नहीं रहता होगा?

जयपुर प्रवास के दौरान मैंने राजस्थान अंचल में आने वाले अहिंदीभाषी अधिकारियों को नियुक्ति देने से पूर्व एक पन्द्रह दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू करवाया—"अहिंदी भाषियों के लिए हिन्दी कार्यशाला"। इस कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए मैंने स्पष्ट किया कि आप सबको शहरों में नियुक्ति दे पाना संभव नहीं है। यदि शहर में नियुक्त कर भी दिया जाए तो प्रत्येक ग्राहक आपसे अंग्रेजी में बात नहीं कर पाएगा। बैंक के बाद घर पर नौकर/सब्जी वाला/धोबी/नाई आदि से अपने कार्य के लिए आप अंग्रेजी में कैसे कह पाएंगे?" अर्थात् मैंने उन्हें हिन्दी सीखने की आवश्यकता जता दी। इस प्रशिक्षण में आम बोलचाल के शब्दों, उच्चारण तथा हिन्दी में बातचीत करने पर विशेष जोर दिया गया।

क्या इस प्रशिक्षण के संतोषजनक परिणाम निकले?

डॉ. बजाज! इस प्रशिक्षण की समाप्ति पर जब मैं इन अधिकारियों से मिला तो मैंने इन अधिकारियों से केवल हिन्दी में बातचीत करने को कहा। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि सभी हिन्दी से इतर मातृभाषी अधिकारियों ने मेरे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में दिए। इन अधिकारियों में से अधिकांश की नियुक्ति क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों में की गई।

इससे बैंकिंग कामकाज तो अवश्य प्रभावित हुआ होगा?

बिल्कुल नहीं! अगली बैठक में मैंने अधिकारियों से बारी-बारी से पूछा कि उन्हें ग्राहकों से बातचीत में कोई दिक्कत तो नहीं होती? यदि कोई अधिकारी चाहे तो उसे किसी अन्य ब्रांच में नियुक्ति दी जा सकती है। प्रायः सभी अधिकारी अपनी पोस्टिंग से संतुष्ट थे और बैंकिंग लक्ष्यों की प्राप्ति भी ठीक रही।

जयपुर प्रवास के दौरान बैंकों की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष के रूप में आपके निर्देशन में दो सर्वेक्षण दल गठित किए गए थे। उनके बारे में अपने कुछ अनुभव बताना चाहेंगे?

डा. बजाज ! प्रथम दल के जिम्मे लगाया गया कार्य था--"बैंकों के प्रशासनिक कार्यालयों में हिन्दी का प्रयोग : अपेक्षित मात्रा में न बढ़ने के कारण एवं उनके उपाय" सुझाना।

"क्या यह मसौदा हिन्दी में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता ?"

"क्या यह टिप्पणी हिन्दी में लिखने में कोई कठिनाई है ?"

···मेरी इन छोटी छोटी टिप्पणियों का परिणाम यह होता है कि अगली बार संबंधित अधिकारी अपने पत्रादि हिन्दी में प्रस्तुत कर देते हैं।"

नारायण सिंह खन्ना,
उप महाप्रबंधक

सर्वेक्षण दल ने गहन पूछताछ तथा जांच पड़ताल के बाद कुछ सिफारिशें की थीं ? क्या उन पर बाद में अमल भी किया गया ?

दल के कुछेक निष्कर्षों पर अवश्य कार्यवाही की गई थी। बैंक ऑफ बड़ौदा के राजस्थान अंचल में कर्मचारियों, हिन्दी टंकण एवं आशुलिपि के प्रशिक्षण, हिन्दी स्टाफ की नियुक्ति, आवश्यक संदर्भ साहित्य जुटाना आदि कार्य प्राथमिकता के आधार पर पूरे किए गए। किन्तु विधिक मामले तथा हिन्दी के प्रयोग संबंधी अनिवार्यता जैसे विषय हमारी सीमा से बाहर थे। समेकित रूप में इस दल की सभी सिफारिशें कार्यान्वित की गई थीं।

दूसरे सर्वेक्षण दल ने "बैंकों में ग्राहक सेवा और हिन्दी" को लेकर कुछ निष्कर्ष प्रस्तुत किए थे उन पर कैसे कार्रवाई की गई ?

इस दल की एक प्रमुख सिफारिश के अनुसार नराकास के अधीन एक संयुक्त कार्यशाला सभी बैंकों के अधिकारी/कर्मचारियों के लिए तथा एक कार्यशाला हिन्दी भाषियों को हिन्दी सिखाने के लिए विशेष रूप से आयोजित की गई। दूसरी सिफारिश उच्च अधिकारियों को अपना कार्य हिन्दी में करने से संबंधित थी। मैं स्वयं अपना कार्य तो हिन्दी में ही करता था, अन्य अधिकारियों को भी अपनी टिप्पणियों के माध्यम से बैंक कार्य को हिन्दी में करने के लिए प्रेरणा देता रहा हूं। तीसरी सिफारिश यह थी कि जो भी खाताधारक अपने खातों का परिचालन हिन्दी में करें उन्हें शाखा प्रबन्धक द्वारा वर्ष में एक बार प्रशंसा-पत्र भेजे जाएं।

क्या प्रशंसा-पत्र भी जारी किए गए ?

डॉ. बजाज ! हमारे राजस्थान अंचल में ग्रामीण, अर्द्ध शहरी और शहरी शाखाओं से अधिकांशतः ग्राहक हिन्दी में पत्राचार करते हैं और कुल मिलाकर 85% कार्य हिन्दी में होता था। इसलिए इस सिफारिश पर कार्रवाई अपेक्षित नहीं समझी गई।

डा० महेश चन्द गुप्त, निदेशक (अनुसंधान) ने मुझे बताया कि आप 'राजभाषा भारती' के नियमित पाठक हैं, इस पत्रिका के बारे में आपकी निष्पक्ष राय क्या है ?

'राजभाषा भारती' में दिए जा रहे लेख और सामग्री स्तरीय हैं। मेरे विचार से बैंकिंग संबंधी लेख अवश्य दिए जाने चाहिएं। बैंकिंग की कार्य-प्रणाली संबंधी बैंकों में 'ऋण सुविधा' आदि सामान्य पाठक की रुचि के लेख शामिल किए जाएं। इस पत्रिका के दो-तीन अंकों से शुरू 'प्रेरणा-पुंज' स्तंभ के अन्तर्गत प्रकाशित सामग्री विशेष रूप से उल्लेखनीय है। मैं महसूस करता हूं कि 'राजभाषा भारती' संघ की राजभाषा नीति का एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है।

खन्ना साहब ! मेरा एक अन्तिम प्रश्न है कि सरकारी कामकाज में बैंकों में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए क्या कदम उठाए जाने चाहिएं ?

मेरे विचार से बैंकों में कर्मचारियों को मानसिक रूप से हिन्दी में कार्य करने के लिए तैयार किया जाना चाहिए। कर्मियों को यह बात समझा दी जानी चाहिए कि हिन्दी

में कार्य करना आसान है । वे तकनीकी शब्दों के हिन्दी पर्यायों को ढूंढने के बजाय ऐसे शब्दों को देवनागरी लिपि में लिखकर सरल भाषा का प्रयोग कर सकते हैं । बैंक कर्मियों को डैस्क प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए । जो कर्मचारी/अधिकारी पूरे वर्ष हिन्दी में अधिकाधिक कार्य करते हैं उन की वार्षिक गोपनीय पंजी में इस कार्य का विशेष रूप से उल्लेख किया जाना चाहिए । पदोन्नति के समय हिन्दी में कार्य करने वाले ऐसे कर्मियों को कुछ अतिरिक्त अंक दिए जाने चाहिए ।

श्री एन.एस. खन्ना द्वारा हिन्दी में कार्य करने के लिए जारी प्रेरणादायक पत्र :

बैंक ऑफ़ बड़ौदा

(प्रधान कार्यालय : मांडवी, बड़ौदा)

एन०एस०खन्ना
उपमहाप्रबंधक

अंचल कार्यालय
पो.ब. 198 पहली मंजिल, जीवन बीमा विनियोग भवन
45, हजरतगंज, लखनऊ-226 001.
तार : "रॅगडोरब", टेलेक्स : 535-203.
फोन : 48251/4

Bank of Baroda

(Head office: Mandvi, BARODA)

ZONAL OFFICE
P.B. 198, 1st Floor, L.I.C. Investment Bldg.,
45, Hazratganj, Lucknow 226 001
Gram : "RLGDORAB", Telex : 535-203,
Phone : 48251/4

सं./No. उप्रगं/12/अ.शा./राभाक/82

दिनांक/Date : 24 सितम्बर, 1986
2 आश्विन, 1908
(शक)

महोदय

यह पत्र मैं स्वयं अपने हाथ से लिख रहा हूं, कारण स्पष्ट है - हिन्दी भाषी स्टाफ भी बैंक में हिन्दी का प्रयोग करते समय कुछ झिझक महसूस करता है। कुछ कारण मेरे ध्यान में लाए गए हैं, जैसे : अभ्यास की कमी तथा कामकाजी हिन्दी पर पकड़ की कमी, मानसिक रूप से तैयार न होना तथा हिन्दी में लिखने के लिए अतिरिक्त स्टाफ की मांग आदि। x x x x x x

कृपया अपने ग्राहक-वर्ग के हित और अपने बैंक की छवि को ध्यान में रखते हुए अधिकाधिक कार्य हिन्दी में - सरल और सुबोध हिन्दी में करें।

शुभ कामनाओं सहित,

आपका

(एन. एस. खन्ना)

बैंकों में हिन्दी माध्यम से प्रशिक्षण–एक अच्छी शुरुआत

19वीं शती के अंतिम दशक में स्वाधीनता प्राप्ति के लिए जहां कांग्रेस के नेतृत्व में भारतीय जन-मानस राजनैतिक स्तर पर करवट-दर-करवट बदल रहा था, समाजार्थिक दृष्टि से उसको पूर्णता प्रदान करने के लिए विभिन्न प्रदेशों के भिन्न-भिन्न भाषा भाषियों तथा सम्प्रदायों के राष्ट्र प्रेमी महानुभावों—सर्वश्री इ.सी. जैसावाला, लाला लाल चन्द, काली प्रोसोन्तो राय, प्रभुदयाल, बख्शी जैसीराम आदि की प्रेरणा से पंजाब नेशनल बैंक की स्थापना हुई। 12 अप्रैल 1895 को लाहौर के अनारकली बाजार स्थित आर्य समाज मंदिर के निकट भवन में इस बैंक की प्रथम शाखा खुली। बैंक के प्रथम खाताधारक थे, पंजाब केसरी लाला लाजपतराय और प्रथम शाखा प्रबन्धक थे—लालाजी के छोटे भाई।

इस बैंक ने सन् 1947 से पूर्व राष्ट्रीय आन्दोलन में सहयोग दिया। "जलियांवाला बाग ट्रस्ट" का खाता भी इसी बैंक में खोला गया, जिसका संचालन महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू प्रभृति राष्ट्रनायकों ने किया। स्वाधीनता प्राप्ति के पूर्व तथा बाद में अनेक आर्थिक संघर्षों का सामना करते हुए, इस बैंक ने बैंकिंग उद्योग में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बना लिया है। संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की दृष्टि से भी इस बैंक के "क" क्षेत्र में 1863, "ख" क्षेत्र में 543 तथा "ग" क्षेत्र में 379 शाखाएं/कार्यालय हैं। इनमें से क्षेत्रवार 1849, 206 तथा 24 शाखाएं अथवा कार्यालय क्रमशः राजभाषा नियम 10(4) के अन्तर्गत अधिसूचित है। राष्ट्रीय हितसाधक के रूप में स्थापित पंजाब नेशनल बैंक संघ की राजभाषा नीति के अनुपालन में भी अग्रणी है। समेकित रूप से बैंक की कुल 2785 कार्यालयों/शाखाओं में 30 जून, 1989 को समाप्त तिमाही रिपोर्ट के अनुसार राजभाषा प्रयोग की स्थिति निम्नप्रकार से है :—

	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
हिन्दी में मूल पत्राचार	90.29%	66.69%	13.10%
हिन्दी में तार	71.95%	42.6 %	4.92%

इस बैंक का प्रधान कार्यालय नई दिल्ली में स्थित हैं। बैंक के प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रभारी उप महाप्रबन्धक (कार्मिक) श्री वी.एस. वासन हैं। श्री वेंकटाचलम श्रीनिवासन, शैक्षिक रिकार्ड में श्री वी.एस. वासन हो गए, जोकि केरल मूल के हैं। उनके पिता टिस्को में सेवारत थे, अतः श्री वासन की शिक्षा-दीक्षा जमशेदपुर के मिशनरी अंग्रेजी माध्यम स्कूल में हुई। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से सीनियर कैम्ब्रिज परीक्षा पास करने के बाद बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से 1967 में मैकेनिकल इंजीनियरिंग डिग्री प्राप्त करने के बाद जमशेदपुर में ही टाटा स्टील उद्योग में जूनियर इंजीनियर बने। सीढ़ी-दर-सीढ़ी आगे बढ़ते हुए श्री वासन वरिष्ठ प्रशिक्षण अधिकारी पद तक पहुंचे, किन्तु विभिन्न रुचियों के धनी श्री वासन ने 1969 में प्रबन्धन में डिग्री तथा कार्मिक प्रबंधन एवं श्रम में स्नातकोत्तर डिग्री लेने के बाद 1979 में भारत हैवी इलैक्ट्रिकल्स के नई दिल्ली स्थित कारपोरेट कार्यालय में उप प्रबन्धक (कार्मिक) का पदभार ग्रहण किया।

प्रस्तुति : डॉ. गुरुदयाल बजाज

1980 में बैंकिंग सेवा चयन बोर्ड के माध्यम से पंजाब नेशनल बैंक में मुख्य (चयन एवं प्रशिक्षण) के पद पर तैनाती के बाद सहायक महाप्रबन्धक और 1987 में उप महाप्रबन्धक (कार्मिक) बने। बैंक में भर्ती होने वाले सभी प्रकार के कार्मिकों को प्रशिक्षण दिलाना उनका दायित्व है। राजभाषा विभाग द्वारा तयशुदा नीति के अधीन कार्मिकों को प्रशिक्षण, प्रशिक्षण सामग्री आदि हिन्दी में अथवा द्विभाषिक रूप में दी जानी होती है। आजीवन अंग्रेजी माध्यम से शिक्षित श्री वासन बैंक में चलने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रमों में हिन्दी लागू करने के साथ-साथ अपना अधिकांश बैंकिंग कार्य हिन्दी में करते हैं। जिज्ञासा पूर्ति हेतु मैंने श्री वासन से भेंट की। 'राजभाषा भारती' के पाठकों की जानकारी के लिए प्रस्तुत हैं बातचीत के मुख्य अंश :—

वासन साहब ! मुझे बताया गया है कि आप कार्यालयीन काम-काज हिन्दी में करते हैं ?

डॉ बजाज, क्या आपको विश्वास नहीं हो रहा है, लीजिए प्रमाण। (इसके साथ ही श्री वासन ने 3-4 हिन्दी पत्र मेरी ओर बढ़ा दिए।)

अविश्वास की बात नहीं है, मेरी जिज्ञासा यह है कि आपने शैक्षिक जीवन में तकनीकी एवं गैर-तकनीकी शिक्षा अंग्रेजी माध्यम से ग्रहण की। फिर हिन्दी में काम कैसे कर पाते हैं ?

"हिन्दी में कार्य करना मुझे अच्छा लगता है। ....आज जो मैं हिन्दी बोल रहा हूं इसका श्रेय मेरे हिन्दी अध्यापक श्री पाण्डेय को जाता है।"

—वेंकटाचलम श्रीनिवासन
(वी.एस. वासन)

भाई वजाज ! मैंने प्रारंभिक शिक्षा भले ही मिशनरी स्कूल में हासिल की, लेकिन बिहार में चल रहे 6-7 मिशनरी स्कूलों के संचालकों ने राजभाषा हिन्दी के महत्त्व को तब समझ लिया था और 1956 में ऑप्शनल विषय के रूप में हिन्दी पढ़ाना शुरू कर दिया था। सीनियर कैम्ब्रिज परीक्षा में मेरा ऑप्शनल पेपर एडवांस्ड हिन्दी था। हिन्दी की जो पुस्तकें मैंने पढ़ी थीं—वह मुंशी प्रेमचन्द का "सप्त सरोज" कहानी संग्रह और कामता प्रसाद गुरु की "हिन्दी व्याकरण" थी। मैंने सातवीं कक्षा तक संस्कृत भी पढ़ी है।

हिन्दी पढ़ने की प्रेरणा आपने कहां से पाई ?

मेरी बड़ी बहिन हिन्दी की छात्रा थी, उनको हिन्दी पढ़ते देखकर मेरा मन बना। आज जो मैं हिन्दी बोल रहा हूं, इसका श्रेय मेरे हिन्दी अध्यापक श्री रामधारी शंकर पाण्डेय को जाता है।

मैं महसूस करता हूं कि बैंक का कामकाज हिन्दी में करना आपको अच्छा लगता होगा ?

हिन्दी में कार्य करना मुझे अच्छा लगता है। हमारे प्रधान कार्यालय के प्रभागों एवं विभागों के लिए पिछले चार सालों के लिए शील्ड प्रतियोगिता शुरू कर रखी है। पिछले दो सालों से यह शील्ड लगातार कार्मिक प्रभाग को मिल रही है। इससे पहले हमारे प्रभाग को सांत्वना तथा द्वितीय पुरस्कार मिले थे। इस उपलब्धि का श्रेय हमारी राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जिसमें मेरे सहयोगी सहायक महाप्रबन्धक (कार्मिक) श्री असीमेश राय चौधरी, मुख्य (कार्मिक) श्री महेन्द्र कुमार शर्मा, राजभाषा अधिकारी श्री भगवान दास बधवा तथा पूरे स्टाफ को जो हिन्दी में कार्य करता है, को दिया जाना चाहिए।

कार्मिक विभाग में हिन्दी में पत्राचार की वृद्धि किस तरह होनी चाहिए, इसकी मानीटरिंग होती है। मैं इसके लक्ष्य बढ़ाता जाता हूं, यही कारण है कि पिछले चार सालों में 70 प्रतिशत से बढ़कर अब हमारे कार्मिक प्रभाग में 85 प्रतिशत कार्य हिन्दी में होने लगा है।

जो 85 प्रतिशत कार्य हिन्दी में हो रहा है वह पत्राचार किस प्रकृति का है ?

अनुकम्पा के आधार पर नियुक्तियां, अन्तर-अंचल स्थानांतरण, नई नियुक्तियों संबंधी सम्पूर्ण कार्रवाई कार्मिक विभाग द्वारा हिन्दी में की जाती हैं।

सम्पूर्ण देश में बैंक के आंचलिक क्षेत्रीय शाखा कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए किस तरह से प्रयास किए जा रहे हैं ?

हमारे बैंक के 8-9 जोनल ऑफिस और रीजनल ऑफिस तो 'क' और 'ख' क्षेत्रों में है। सिर्फ दो को छोड़कर जो 'ग' क्षेत्र में हैं। मेरा यह प्रयास रहा है कि 'क' और 'ख' क्षेत्रों में जितना भी हमारा पत्राचार है, सभी पत्र हिन्दी में ही जाएं। हमारे कार्मिक प्रभाग में जितने भी मैनेजर हैं, यह उनकी जिम्मेदारी है कि हमारे पत्र या किसी पत्र का उत्तर दिया जाना है तो वह हिन्दी में ही जाना चाहिए। मुझे पूरा भरोसा है कि हमारे पत्राचार की वृद्धि हमेशा बनी रहेगी।

चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों से संबंधित पत्राचार किस भाषा में कर रहे हैं ?

चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी जिनको आप क्लास फोर कहते हैं, इन लोगों का पंजाब नेशनल बैंक में एक तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। यह लगातार पिछले तीन सालों से हो रहा है। हमारे पास 12 अंचल प्रशिक्षण केन्द्र हैं, जिनमें से एक क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक का प्रशिक्षण केन्द्र लखनऊ में है। वहां तो तमाम काम हिन्दी में हो रहा है और इसमें तमाम कर्मचारियों/अधिकारियों का बैंकिंग विषय प्रशिक्षण पूर्ण रूप से हिन्दी में होता है। व्याख्यान हिन्दी में ही होते हैं, प्रशिक्षण सामग्री (ट्रेनिंग मैटेरीयल) हिन्दी में दी जाती है। चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के लिए "ग्राहक सेवा" प्रशिक्षण में भी हम शाखा में ग्राहक सेवा के विषय पर व्याख्यान करते हैं, वे हिन्दी में ही होते हैं। इसी विषय में उन्हें बोला जाता है कि रिकार्ड मैनेजमेंट हिन्दी में रखा जाए क्योंकि इनका रख-रखाव सब पियन करते हैं।

अधीनस्थ कर्मचारियों की प्रोन्नति परीक्षाओं में माध्यम क्या चल रहा है ?

अधीनस्थ कर्मचारी जोकि लिपिक वर्ग की पदोन्नति परीक्षा में बैठते हैं, इन दोनों के लिए भी लिखित परीक्षा होती है। इस परीक्षा की तैयारी करने के लिए अधीनस्थ वर्ग से लिपिक वर्ग के लिए प्रोन्नति-पूर्व प्रशिक्षण हेतु बैंकिंग विषय सहित पूरा प्रशिक्षण कार्यक्रम हिन्दी में होता है। टैस्ट पेपर हिन्दी में होता है। जबाब भी हिन्दी में देते हैं और इंटरव्यू भी हिन्दी में होता है।

आपके यहां जो ट्रेनिंग सेन्टर हैं उनमें प्रशिक्षण माध्यम क्या है ?

हिन्दी ही है। "क" क्षेत्र में लिपिक वर्ग में जो ट्रेनिंग होती है उनमें हमारे व्याख्यान हिन्दी में ही होते हैं। "ख" में मिले जुले। लेकिन "क" क्षेत्र में पटना, देहरादून, दिल्ली, भोपाल, कानपुर, जयपुर जितने भी "क" क्षेत्र के प्रशिक्षण केन्द्र हैं--लिपिक वर्ग के कर्मचारियों को हिन्दी में ट्रेनिंग दे रहे हैं क्योंकि यह आंचलिक प्रशिक्षण केन्द्र लिपिक वर्ग के कर्मचारियों को प्रशिक्षण देते हैं। दिशामान (इंडक्शन) के 3 साल बाद पुनश्चर्या (रिफेशर) यह सब हिन्दी में ही होता है। आपको यह भी सूचना देना चाहता हूं कि हमारे जो मैनुअल हैं, हिन्दी में ही हैं। प्रशिक्षण सामग्री व्याख्यान हिन्दी में दिए जाते हैं और हिन्दी में प्रशिक्षक ट्रेन्ड हैं। जो हमारे फैकल्टी सदस्य हैं वह भी व्याख्यान हिन्दी में ही करते हैं। इसकी उन्हें रुचि भी है। वह स्वयं हिन्दी में ही पाठ्य सामग्री बनाते हैं, अपने ढंग से हिन्दी में ही करते हैं जितना भी हो सके। कुछ लोग जो नहीं कर सकते वह राजभाषा अधिकारी की मदद लेते हैं। "ग" क्षेत्र में तो प्रशिक्षण अंग्रेजी में ही हो रहा है।

आप ट्रेनिंग प्रभारी हैं और बैंक में हिन्दी टंकण में प्रशिक्षण हेतु आपने केन्द्र खोला है। इसके बारे में आपके अनुभव क्या हैं ?

यह तो मेरे दिल की बात की है। हमारा प्रयास यह है कि जितने भी हमारे आशुलिपिक या जितने भी लिपिक वर्ग में टंकक है। इन लोगों को हम हिन्दी टाइप का प्रशिक्षण दें। प्रधान कार्यालय में हमने लगभग 22 टाइपराइटर खरीदे हैं और सुखद आश्चर्य यह है कि हमारे ही बैंक के 2 कर्मचारियों (हिन्दी स्टेनोग्राफर) को प्रशिक्षण हेतु नियुक्त किया गया है। गौरव की बात है कि पिछले वर्ष भारत सरकार की परीक्षा में शत प्रतिशत हमारे स्टाफ सदस्य पास हुए, जिसमें 90 प्रतिशत से ऊपर तो बहुत से कर्मचारी पास हैं। अब चौथा-पांचवां बैच चल रहा है। इसमें लगभग 44 कर्मचारी इस समय ट्रेनिंग ले रहे हैं।

अब तक कुल कितने लोगों को प्रशिक्षित किया गया है ?

100 के लगभग। पहले बैच में 36 कर्मचारियों में 23 कर्मचारी तो 100 प्रतिशत अंक लाए हैं। मैं तो यह कहूंगा कि परिणाम के तौर पर केन्द्र सफल रहा है।

श्री वासन के कथन की गवाह हैं हिन्दी में उन की टिप्पणियां:--

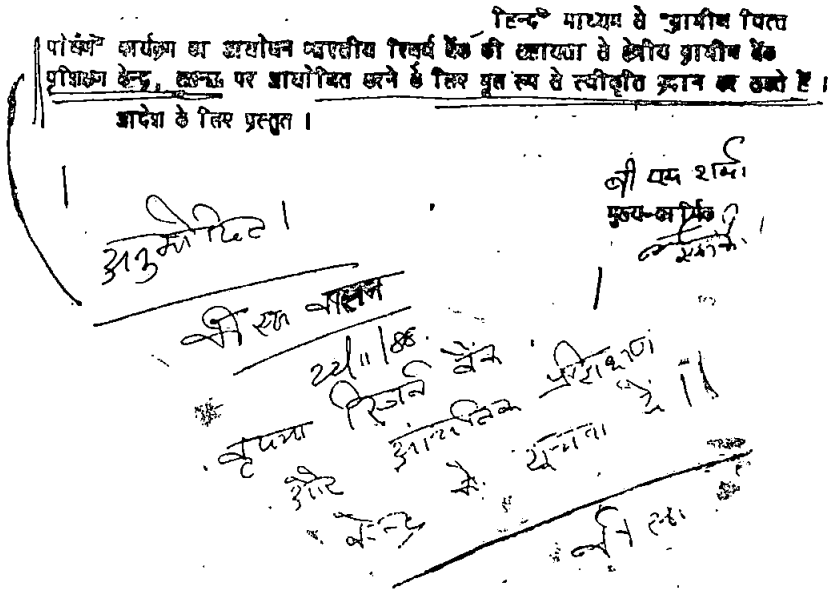

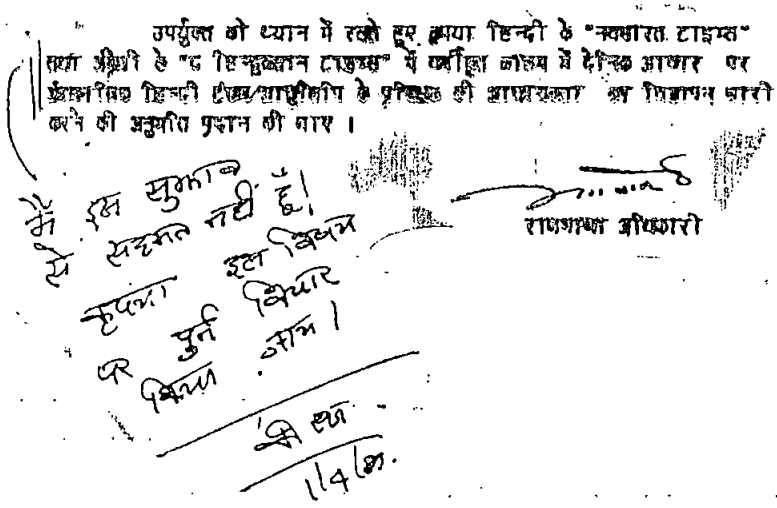

भारत कोकिंग कोल लि० में हिन्दी का प्रयोग

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, अपने एक क्षेत्र, चांच विक्टोरिया को छोड़कर, जिसका आधा भाग पश्चिम बंगाल में पड़ता है, पूर्ण रूप से हिन्दी प्रदेश में कार्यरत है । हमारी कार्य सीमाएं पश्चिम बंगाल के वर्द्धमान जिले से प्रारम्भ होकर बिहार प्रान्त के धनबाद जिले और गिरीडीह के दुधा क्षेत्र तक विस्तृत हैं। ये सभी इलाके हिन्दी भाषी हैं। श्रमिक वर्ग एवं श्रमिक नेतागण से हिन्दी में पत्राचार एवं विचार-विमर्श हमारे दैनिक काम-काज के अंग बन गये हैं। प्रौढ़ शिक्षा के व्यापक क्षेत्र में हिन्दी में अपने कर्मचारियों को साक्षर बनाने के लिए हमने एक सुनियोजित योजना बनाई है जिसके दोहरे लाभ हमें मिल रहे हैं।

हमने अनेक बैंकों, जिनकी हमने श्रमिकों को सूदखोरी के चंगुल से बचाने के लिए स्थापित कराया है तथा विभिन्न सोसाइटियों, विभागीय दुकानों, प्रशिक्षण केन्द्रों एवं श्रमिक कालोनियों के पूर्ण प्रशासन में, हिन्दी के प्रयोग के लिए साधन एवं सहयोग दे रहे हैं। धनबाद क्षेत्र में अनेक पुस्तकालय वाचनालय एवं गोष्ठियों तथा क्लबों में हिन्दी के साहित्य एवं पत्र-पत्रिकाओं के योगदान हमारे लिए हिन्दी में काम करने के वातावरण के निर्माण में सहायक बनते हैं। धनबाद में हिन्दी के सबसे बड़े पुस्तकालय गांधी सेवा सदन कोल संस्था की ओर से धनबाद की जनता के लिए हिन्दी साहित्य के ग्रन्थों की एक बड़ी देन है।

लोक क्षेत्रीय उपक्रमों में भारत कोकिंग कोल लिमिटेड सबसे पहले अपनी व्यवस्था के माध्यम से हिन्दी टंकण एवं आशुलिपि तथा भाषा प्रशिक्षण के केन्द्रों की स्थापना करने वालों में स्थान रखता है। हिन्दी आशुलिपि एवं टंकण के प्रशिक्षण हेतु हमारी निजी व्यवस्था के अधीन 7 केन्द्र चल रहे हैं जिनमें कुल 460 अंग्रेजी टाइपिस्टों एवं 263 अंग्रेजी स्टेनोग्राफरों की संख्या में से क्रमशः 190 को हिन्दी टाइपिंग एवं 56 को हिन्दी स्टेनोग्राफी में प्रशिक्षण दिया जा चुका है। सम्प्रति 66 हिन्दी टाइपिंग एवं 140 स्टेनोग्राफी का प्रशिक्षण ले रहे हैं।

अगले वर्ष अर्थात् 1990-91 तक उन सभी अंग्रेजी टाइपिस्टों एवं स्टेनोग्राफरों को, जिनको हिन्दी भाषा का ज्ञान रहेगा, हिन्दी टंकण एवं आशुलिपि में प्रशिक्षित करायेंगे। साथ ही जो हिन्दी का ज्ञान नहीं रखते हैं, उनको हिन्दी प्रशिक्षण की व्यवस्था चल रही है।

आज प्रतिष्ठान में कुल 157 हिन्दी टाइपराइटर उपलब्ध और 10 प्रशिक्षण हेतु तत्काल प्राप्त होने वाले हैं। कुल अंग्रेजी के टाइपराइटरों का सर्वेक्षण किया जा रहा है और परमावश्यक स्थितियों को छोड़कर वर्ष 1991-92 की पूर्ति तक हम सभी अंग्रेजी के टाइपराइटरों को या तो हिन्दी से बदल देंगे या उनके की बोर्ड बदल देंगे।

यह भी उल्लेखनीय है कि अंग्रेजी की टाइपराइटरों की खरीद पर प्रतिबन्ध लगा दिए गए है।

परम अनिवार्यताओं के लिये खरीद मात्र विद्युत चालित टाइपराइटरों की हो रही है जो द्विभाषी हैं अन्यथा मात्र देवनागरी लिपि के टाइपराइटर खरीदे जा रहे हैं। इन विद्युत चालित टाइपराइटरों में 6 कार्यरत हैं और दो की आपूर्ति शीघ्र हो रही है। पुराने अंग्रेजी के 15 टाइपराइटरों की कुंजी पटल परिवर्तन की कार्यवाही हो रही है।

जुलाई, 1989 की कुल श्रम शक्ति में से प्रायः 12,662 ऐसे पदाधिकारी एवं कर्मचारी हैं जो राजभाषा अधिनियम के क्रियान्वयन की सीमा में आते हैं। इनमें से भी 609 टाइपिस्ट एवं स्टेनोग्राफरों की संख्या है। बाकी संख्या 12,053 है। इनमें प्रायः 9800 व्यक्ति हिन्दी भाषा का कार्यसाधक ज्ञान रखते हैं, शेष 2,253 व्यक्तियों को हिन्दी भाषा का कार्यसाधक ज्ञान देने की व्यवस्था की जानी है।

उल्लेखनीय है कि 168 लोग प्रवीण, 185 प्राज्ञ की परीक्षायें पास कर चुके हैं और सम्प्रति 200 व्यक्तियों को प्रबोध एवं 175 को प्रवीण तथा 105 को प्राज्ञ परीक्षा के लिए प्रशिक्षण कार्य चल रहे हैं। शेष को वर्ष 1991-92 तक प्रशिक्षित कर दिया जाएगा।

इस वर्ष कुल 6 हिन्दी कार्यशालाएं आयोजित की गई हैं जिसमें 4 त्रिदिवसीय एवं 2 एक दिवसीय रही। एक विशेष कार्यशाला मुख्यालय के वरिष्ठ अधिकारी वर्ग के लिए भी आयोजित की गई। इनसे विभिन्न विषयों पर कुल 321 कर्मी/पदाधिकारी लाभ उठा चुके हैं।

इनके अलावा जो अन्य व्यवस्था मूलक कदम उठाये गये हैं उनमें हिन्दी विभाग का व्यापक रूप से उन्नयन सम्मिलित हैं। प्रत्येक क्षेत्र में एक वरीय हिन्दी अनुवादक/अधीक्षक देने के उद्देश्य से 20 पद सृजित किये गये हैं, जिसमें 12 स्थानों पर कर्मचारी कार्यरत हैं। राजभाषा पदाधिकारी का पदोन्नयन कर पद को ई–3 में किया गया है जबकि हिन्दी अनुदेशक (टाइपिंग-स्टेनोग्राफी) हेतु पदाधिकारी वर्ग में एक पद सृजित किया गया है। गैर तकनीकी पदों पर लगे नियुक्ति प्रतिबंध में विशेष ढील देकर हिन्दी प्रसार-प्रचार हेतु स्टेनोग्राफरों के 13 पद सृजित किये गये हैं।

प्रस्तुति : प्रफुल्ल रंजन सिन्हा

इन सभी प्रयत्नों के अलावा प्रतिष्ठान में हिन्दी में काम काज को सुदृढ़ गति से चलाने के लिए चैक प्वाइंटस की स्थापना की गई है जिसमें प्रेस में किसी भी रिपोर्ट या फार्म का माल अंग्रेजी में छपने पर प्रतिबंध और अंग्रेजी टाइप राइटरों की खरीद पर रोक सम्मिलित है, जिसका उल्लेख हम पहले कर चुके है।

विभागीय परीक्षाओं में अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त कर दी गई हैं तथा तकनीकी प्रशिक्षण केन्द्र के काम काज हिन्दी में सम्पादित हो रहे हैं।

अनुशासनात्मक कार्यवाहियों में हिन्दी भाषा के प्रयोग का पालन अनिवार्यता के साथ हो रहा है।

एक क्रमानुसार कार्य सम्पादन हेतु निम्नलिखित विभागों को पूर्णतः हिन्दी में कार्य करने के लिए नामित किया गया है; –

(क) आन्तरिक सुरक्षा विभाग;
(ख) सभी नगर प्रशासकों के कार्यालय;
(ग) सभी खदानों के कार्मिक विभाग;
(घ) विक्रय विभाग;
(ङ) गैर-अधिशासी स्थापना विभाग;
(च) क्षेत्रीय स्तर के कार्मिक विभाग;
(छ) प्रधान कार्यालय का श्रम शक्ति एवं नियुक्ति विभाग;
(ज) वैद्युतकीय एवं यांत्रिक विभाग;
(झ) निर्देशकीय कार्यालयों के प्रशासन विभाग।

इनके साथ ही निम्नलिखित विभागों में न्यूनतम 50% काम हिन्दी में अनिवार्य किया गया है :–

(क) निर्देशक (कार्मिक) का सचिवालय ;
(ख) प्रबंध विकास विभाग (सम्प्रति मानव संसाधन विभाग);
(ग) तकनीकी प्रशिक्षण विभाग;
(घ) मुख्य महाप्रबंधक (कार्मिक) का कार्यालय ;
(ङ) औद्योगिक संबंध प्रभाग;
(च) सभी क्षेत्रीय कल्याण विभाग;
(छ) वस्तु प्रबंधन विभाग;
(ज) यातायात विभाग; एवं
(झ) महाप्रबंधक (प्रशासन) का कार्यालय।

इसी बैठक के समानान्तर एक समीक्षा समिति गठित की गई है जिसके अध्यक्ष एक क्षेत्रीय महाप्रबंधक हैं। यह समिति समय-समय पर कृत कार्यों की समीक्षा करती है। इस वर्ष अब तक कंपनी के उच्चाधिकारियों द्वारा 51 अधीनस्थ कार्यालयों में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की स्थिति का निरीक्षण किया गया है।

मुख्यालय में 19 जून, 1989 से केन्द्रीय राजभाषा पुस्तकालय की स्थापना की गई है, जिसका उद्घाटन माननीय सांसद एवं इस गणमान्य समिति के सदस्य श्री नरेश चन्द्र चतुर्वेदी जी के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। इसमें विभिन्न विषयों की 3000 हिन्दी पुस्तकें उपलब्ध हैं। कुल 40 हिन्दी पत्रिकायें और 10 हिन्दी दैनिक नियमित रूप से उपलब्ध रहते है। □

दूरदर्शन केन्द्र

बेंगलूर

केन्द्र में दिनांक 11-9-89 से 18-9-89 तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। सप्ताह के दौरान निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए गए :—

दिनांक 11-9-89 को हिन्दी कार्यशाला का शुभारम्भ किया गया। श्री एस. वी. अदानाणी ने "सरल हिन्दी का प्रयोग" विषय पर प्रशिक्षार्थियों को प्रशिक्षण दिया दिनांक 12-9-89 को श्री एम. पी. दुबे, सहायक निदेशक हिन्दी शिक्षण योजना, बेंगलूर ने "सरकारी पत्र व्यवहार एवं आवेदन पत्र" विषय पर प्रकाश डाला।

तीसरे दिन दिनांक 13-9-89 को श्रीमती सीमा फेणे सहायक निदेशक, हि. शि. यो बेंगलूर ने "साधारण टिप्पणियां एवं आलेखन" विषय पर प्रकाश डाला।

राजभाषा की प्रगति के उद्देश्य से केन्द्र में कुछ प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। दिनांक 12-9-89 को हिन्दी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें दो वर्ग निर्धारित किए गए। एक वे जिन्होंने हिन्दी का ज्ञान प्राप्त कर लिया है, दूसरे वे जो अभी हिन्दी सीख रहे हैं। कर्मचारियों ने उत्साह से इनमें भाग लिया।

दिनांक 14-9-89 को "हिन्दी दिवस" समारोह का आयोजन किया गया। इसमें डा० एजाजुद्दीन फिरोज, विभागाध्यक्ष शासकीय कला महाविद्यालय, बेंगलूर मुख्य अतिथि थे। केन्द्र के माननीय निदेशक श्री के. एम. अनीस-उल-हक ने इस कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

दिनांक 15-9-89 को केन्द्र में सुलेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें दूरदर्शन के सभी उत्साही कर्मचारियों ने भाग लिया।

दिनांक 18-9-89 को हिन्दी सप्ताह समापन दिवस का आयोजन रहा। श्री सी. सत्यानन्दन, अधीक्षक अभियन्ता ने समारोह की अध्यक्षता की। इस अवसर पर अध्यक्ष ने राजभाषा संबंधी विचार व्यक्त करते हुए कहा कि यदि दिल में किसी भी कार्य को करने की इच्छा हो तो उसकी सफलता निश्चित है।

हिन्दी अधिकारी कु. वी. अम्बा ने सप्ताह के दौरान किये गये कार्यों एवं आयोजित कार्यक्रमों पर विस्तृत जानकारी दी। तत्पश्चात् अध्यक्ष ने पुरस्कार दिए। प्रतियोगिताओं में जिन्होंने पुरस्कार प्राप्त किया उनके नाम इस प्रकार हैं :— निबन्ध प्रतियोगिता उच्च स्तर में श्रीमती ए. छाया, श्री एच. जी. वासुकी एवं श्री विजी जॉन क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे। निबंध प्रतियोगिता के निम्नस्तर वर्ग में श्री आर. एस. वेंकटेश, श्री एम. जी. श्रीहर्षन, एवं श्री के. एन. रविकुमार क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे। हिन्दी साहित्य के साहित्यकारों की विशिष्ट रचनाएं पुरस्कार स्वरूप दी गई।

हैदराबाद

दूरदर्शन केन्द्र, हैदराबाद में दिनांक 15-9-89 को "हिन्दी दिवस" समारोह संपन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता केन्द्र के निदेशक श्री डी. बालकृष्णा ने की। मुख्य अतिथि थे सालारजंग संग्रहालय के निदेशक डा. मोहनलाल निगम। हिन्दी अधिकारी श्री एस. एस. धुर्वे ने मुख्य अतिथि तथा अन्य आमंत्रित सदस्यों का स्वागत करते हुए "हिन्दी दिवस" के महत्व पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात् सहायक केन्द्र निदेशक टी. वी. राघवाचारी तथा हिन्दी शिक्षण योजना के हिन्दी प्राध्यापक श्री भूपिंदरसिंह ने अपने विचार व्यक्त किए।

मुख्य अतिथि डा. मोहनलाल निगम ने उपस्थितों से निवेदन किया कि यदि वे हिन्दी को संपर्क भाषा के रूप में लाना चाहते हैं तो वे अपने दैनंदिन कामकाज में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करें।

केन्द्र निदेशक श्री डी. बालकृष्ण ने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि नेहरू जी ने यह स्पष्ट किया था कि हर एक प्रांत की भाषा वहां की राजभाषा होगी और इन सभी भाषाओं को जोड़ने वाली संपर्क भाषा हिन्दी होगी। अंग्रेजी भारत की भाषा नहीं है। हिन्दी सीखने में बहुत सरल है और यही एक भाषा है जो पूरे भारत में अधिक लोगों द्वारा बोली और समझी जाती है। यह हमारा कर्त्तव्य है कि अपनी भाषाओं का विकास करें तथा हिन्दी को राजभाषा के रूप में उचित स्थान दें।

जालंधर

दूरदर्शन केन्द्र, जलंधर में दिनांक 14-9-89 को हिन्दी दिवस तथा 14 से 20 सितम्बर, 89 तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया।

हिन्दी दिवस

14-9-89 को केन्द्र पर हिन्दी दिवस समारोह मनाया गया, जिसकी अध्यक्षता केन्द्र के निदेशक श्री एम. एल. पंडित ने की। समारोह में मुख्य अतिथि के तौर पर श्री एन. के. अरोड़ा, आयुक्त, जलंधर डिवीजन को आमन्त्रित किया गया। श्री मदन गोपाल गौतम, उपनिदेशक (कार्यक्रम) ने श्री अरोड़ा तथा समारोह में भाग लेने वाले सभी स्टाफ सदस्यों का स्वागत किया। उन्होंने हिन्दी दिवस की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए केन्द्र में राजभाषा संबंधी हो रहे कार्य की सराहना की। हिन्दी अधिकारी श्री विश्वमित्र धीर ने सरकार की राजभाषा नीति पर प्रकाश डाला तथा केन्द्र पर हो रहे राजभाषा संबंधी कार्य की रिपोर्ट प्रस्तुत की।

केन्द्र के लेखा अनुभाग से श्री बी. एस. बिन्दरा, लिपिक वर्ग–1 ने राष्ट्रभाषा, राजभाषा तथा सम्पर्क भाषा हिन्दी को बेझिझक अपनाने पर जोर देने वाली एक स्वरचित कविता पढ़ी। श्रीमती इन्दु वर्मा, कार्यक्रम निष्पादक तथा श्री जसबीर सिंह, हिन्द आशुलिपिक ने हिन्दी को राजभाषा के रूप में सहर्ष अपनाने पर बल दिया।

निदेशक, श्री पंडित ने कर्मचारियों को संबोधित किया तथा हिन्दी अपील पढ़कर सुनाई, जिसे बाद में सभी कर्मचारियों में वितरित किया गया। उन्होंने कर्मचारियों से आग्रह किया कि वे अपना अधिक से अधिक काम हिन्दी में करें।

श्री अरोड़ा, आयुक्त, जलंधर डिविजन ने सशक्त शब्दों में कहा कि जब तक शिक्षित समाज स्वाभाविक रूप से हिन्दी को नहीं अपनाता तब तक हिन्दी के प्रचार व प्रसार को हम पूर्णतया सफल कह पाने में असमर्थ हैं, अतः हिन्दी के बारे में हमें केवल विचार ही व्यक्त नहीं करते रहना है बल्कि उस पर कार्य भी करना होगा।

अन्त में केन्द्र में उपनिदेशक (प्रशासन) का कार्य देख रहे श्री बी. के. एस. चीमा, सहायक अभियंता ने मुख्य अतिथि तथा केन्द्र के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का धन्यवाद किया।

हिन्दी सप्ताह

दिनांक 14 से 20 सितम्बर, 1989 तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। सप्ताह के आयोजन से पूर्व एक परिपत्र द्वारा सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से जिन विषयों की ओर विशेष ध्यान देने हेतु अनुरोध किया गया उनमें से निम्नलिखित कुछ उल्लेखनीय हैं :—

1. हिन्दी में प्रवीणता/कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त सभी कर्मचारियों द्वारा फाइल पर टिप्पण/आलेखन का कार्य अधिक से अधिक हिन्दी में करना।
2. हिन्दी में प्राप्त, सभी पत्रों/आवेदनों आदि का उत्तर अनिवार्य रूप से हिन्दी में देना।
3. सप्ताह के दौरान राजभाषा संबंधी कार्यक्रम तथा तद्विषयक परिचयांकन (Captions) यथासंभव प्रसारित करना।
4. हिन्दी कार्यक्रमों संबंधी सम्पूर्ण पत्राचार हिन्दी में करना।

सप्ताह के दौरान केन्द्र के प्रसारणों में राजभाषा संबंधी विभिन्न परिचयांकन दिखाए गए जिन्हें हिन्दी अनुभाग द्वारा तैयार किया गया था।

इस संदर्भ में केन्द्र की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए श्री धीर ने यह भी बताया कि हिन्दी अनुभाग द्वारा पहले ही अंग्रेजी-हिन्दी शब्दावली के 25 चार्ट तथा हिन्दी-अंग्रेजी के 3 चार्ट जारी किए जा चुके हैं और यह सिलसला जारी जारी रहेगा। उन्होंने कहा कि कर्मचारियों को हिन्दी शिक्षण योजना के अंतर्गत प्रशिक्षण देने के अतिरिक्त केन्द्र पर विभागीय व्यवस्था के अन्तर्गत हिन्दी टंकण/हिन्दी आशुलिपि की प्रशिक्षण का भी प्रबन्ध किया गया है तथा समय-समय पर हिन्दी कार्यशाओं का भी आयोजन किया जाता है। सरकार द्वारा स्वीकृत विभिन्न प्रोत्साहनों का लाभ उठाते हुए अपना अधिक से अधिक काम राजभाषा हिन्दी में करने के लिए उन्होंने कर्मचारियों से विशेष अनुरोध किया।

केन्द्र पर दिनांक 1-9-89 को आयोजित हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता का परिणाम दिनांक 18-9-89 को घोषित किया गया। प्रतियोगिता में श्री संजीव कुमार, लिपिक वर्ग–2 (अमृतसर) और श्री हीर चन्द नेगी, प्रस्तुति सहायक प्रथम रहे।

आकाशवाणी

पोर्टब्लेयर

आकाशवाणी, पोर्टब्लेयर में हिन्दी सप्ताह का आयोजन दिनांक 14 से 20-9-89 तक किया गया। इस अवधि में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर्मचारियों से आग्रह किया गया कि वे अपना अधिकतम सरकारी काम काज हिन्दी में ही करें।

दिनांक 16-9-89 को "सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी की भूमिका", "आज का युवा और अनुशासन" और "बदलता परिवेश और राजभाषा" विषयों पर हिन्दी में निबन्ध लखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें राजपत्रित और अराजपत्रित कर्मचारियों ने भाग लिया।

दिनांक 18-9-89 को हिन्दी में टिप्पण और प्रारूप लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई।

दिनांक 21-9-89 को एक समारोह केन्द्र निदेशक श्री लीलाधर मण्डलोई की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें पोर्टब्लेयर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष तथा क्षेत्रीय तटरक्षक मुख्यालय के कमाण्डर कैप्टन विमल कुमार मुख्य अतिथि थे। कैप्टन कुमार ने केन्द्र में आयोजित प्रतियोगिता के विजेता प्रतियोगियों को आकाशवाणी केन्द्र, पोर्टब्लेयर की ओर से नकद पुरस्कार और प्रमाण-पत्र प्रदान किए। विजेता प्रतियोगियों का विवरण इस प्रकार हैं :—

हिन्दी निबन्ध लेखन प्रतियोगिता

प्रवीणता प्राप्त

श्री मोहम्मद सलीम राही	प्रथम	रु. 250/–
श्रीमती रीता राव	द्वितीय	रु. 150/–
श्री कन्हैयालाल कोरकू	तृतीय	रु. 100/–
श्री सोमनाथ सान्याल	प्रमाण-पत्र	

कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त

श्री बुद्धदेव मजूमदार	प्रथम	रु. 250/–
श्री असित दत्ता	द्वितीय	रु. 150/–
श्री संतोषकुमार राय	तृतीय	रु. 100/–
श्री सी. कोटेश्वर राव	प्रमाण पत्र	

टिप्पण/आलेखन प्रतियोगिता

प्रवीणता प्राप्त

श्री वेलिगंटन	प्रथम	रु. 250/–

कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त

श्री एम. वी. रामचन्द्रन् नायर	प्रथम	रु. 250/–

इस अवसर पर अध्यक्ष कैप्टन विमल कुमार ने कहा कि आकाशवाणी पोर्टब्लेयर और जनगणना कार्यालय हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने में सक्रिय भूमिका अदा कर रहे हैं और आशा व्यक्त की कि इस प्रकार के अवसर देकर कर्मचारियों का उत्साहवर्धन किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि इस मार्ग में आने वाली कठिनाइयों को सायास दूर करना चाहिए और अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में किया जाना चाहिए।

हिन्दी अधिकारी श्री नवीनचन्द्र तुमुंग ने इस दौरान केन्द्र में हुए हिन्दी सम्बन्धी गतिविधियों का विस्तृत विवरण दिया। केन्द्र निदेशक, श्री लीलाधर मण्डलोई ने सहभागियों का स्वागत किया और कहा कि दैनंदिन व्यवहार में भी हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने का सतत प्रयास किया जा रहा है।

अन्त में केन्द्र अभियंता श्री आर. वेणुगोपाल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

कलकत्ता

दिनांक 15 से 21 सितम्बर, 1989 की अवधि के दौरान आकाशवाणी भवन स्थित मुख्य अभियंता (पूर्वी क्षेत्र), आकाशवाणी व दूरदर्शन, उप-महानिदेशक (पूर्वांचल) आकाशवाणी केन्द्र, निदेशक, आकाशवाणी केन्द्र, निदेशक (विज्ञापन), विज्ञापन प्रसारण सेवा, आकाशवाणी, भुगतान व लेखा अधिकारी, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, आकाशवाणी, कलकत्ता कार्यालयों द्वारा सामूहिक 'हिन्दी—सप्ताह" दिनांक 15-9-1989 को श्री वारीन्द्र शंकर धर, मुख्य अभियंता (पूर्वी क्षेत्र), आकाशवाणी व दूरदर्शन की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। उद्घाटन समारोह में राजभाषा का महत्त्व, दैनंदिन कार्यान्वयन में निरन्तरता लाने एवम् प्रयोग को गतिशील बनाने के संबंध में सर्वश्री बी. के. सरकार, सहायक केन्द्र निदेशक, उप-महानिदेशक (पूर्वांचल), आकाशवाणी, बी. के. दे, मुख्य अभियंता (पूर्वी क्षेत्र), आकाशवाणी व दूरदर्शन, एम वी वसन्तकुमारी, केन्द्र निदेशक, आकाशवाणी, अरुण कुमार विश्वास, केन्द्र निदेशक (विज्ञापन), विज्ञापन प्रसारण सेवा, आकाशवाणी, डॉ. गिरिवरधारी सिंह, उप-निदेशक (राजभाषा), आकाशवाणी महानिदेशालय, श्रीकांत ना. दैवज्ञ, हिन्दी अधिकारी, आकाशवाणी, ब्रज बिहारी दास, हिन्दी अधिकारी, मुख्य अभियंता (पूर्वी क्षेत्र) एवम् वारीन्द्र शंकर धर, मुख्य अभियंता (पूर्वी क्षेत्र) (अध्यक्ष) आदि ने अपने विचार रखे।

कर्मचारियों को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से दिनांक 18-9-89 को सद्यः भाषण, 19-9-89 को निबंध लेखन; 20-9-89 को कविता-पाठ प्रतियोगिताएं आयोजित हुई, जिसमें अधिकाधिक प्रतिभागियों में उत्साह देखने में आया।

प्रतिभागियों को उनकी स्तरीय प्रस्तुति के आधार पर क्रमवार 200/–, 150/–, 100/–, (प्रथम, द्वितीय, तृतीय), सांत्वना पुरस्कार क्रमशः 75/–, 50/–, 100/–, के अलावा सभी गैर पुरस्कृत प्रतिभागियों को 20/– रुपये के प्रोत्साहन पुरस्कार वितरित करने की घोषणा की गई (जिसमें एक या अधिकांश प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों ने भाग लिया हो।) इसमें लगभग 80 प्रतिभागी लाभान्वित हुए।

दिनांक 21-9-89 को हिन्दी समापन समारोह श्री के. खान, मुख्य अभियंता (पूर्वी क्षेत्र), आकाशवाणी व दूरदर्शन, कलकत्ता की अध्यक्षता में हुआ। उक्त अवसर पर श्री न. रा. कुलरत्न, उप-निदेशक (पूर्वी क्षेत्र), हिन्दी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, कलकत्ता ने पुरस्कार, प्रमाण-पत्र एवम् कार्यालयों के अधिकारी/कर्मचारियों के हिन्दी शिक्षण योजना की प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ, हिन्दी टंकण आदि परीक्षाएं उत्तीर्ण करने के फलस्वरूप प्राप्त प्रमाण-पत्र आदि वितरित किए।

हैदराबाद

14 सितम्बर, 89 को "हिन्दी दिवस" समारोह केन्द्र निदेशक श्री टी. एन. गणेशन् की अध्यक्षता में आरंभ हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे—हैदराबाद विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग के प्रधान प्रोफेसर वाई. वेंकटरामण राव। श्रीमति मीरा पाहूजा, कार्यक्रम अधिशासी ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया और समारोह के अध्यक्ष श्री टी. एन. गणेशन्, अधीक्षक अभियंता श्री ए. जे. राव और मुख्य अतिथि को अपना-अपना स्थान ग्रहण करने के लिए आमंत्रित किया।

अध्यक्षीय भाषण में केन्द्र निदेशक श्री टी. एन. गणेशन ने कहा कि इस कार्यालय में दूसरी बार "हिन्दी दिवस" मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कार पाने वालों को उन्होंने बधाई दी। अगले वर्ष अधिक प्रतियोगिताओं के साथ "हिन्दी दिवस" और भी बड़े पैमाने पर मनाने का आश्वासन दिया। पिछले एक वर्ष में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित रिपोर्ट केन्द्र के हिन्दी अनुवादक श्री जी. अज्मतुल्ला ने प्रस्तुत की। इस अवसर पर कर्मचारियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

5-9-89 को हिन्दी टिप्पण और मसौदा लेखन परीक्षा रखी गई। इस में श्रीमती गीता महादेवन् सी. जी. (I) कुमारी शेशु, कुमारी, सी. जी. (II), और चार्लेस, जी. फेर्नाडिज सी. जी. II को क्रमशः पहला, दूसरा, तीसरा पुरस्कार दिया गया।

12-9-89 को आयोजित की गई थी "हिन्दी में सामान्य जानकारी की परीक्षा"। इस में प्रश्न दो प्रकार के थे। पहले कुछ वाक्य दिये गये और प्रतिभागियों को यह पता लगाना था कि वे वाक्य सही है या नहीं? दूसरे भाग में—कार्यालय में एक विशेष बोर्ड पर प्रति दिन एक शब्द हिन्दी में और उसका अंग्रेजी अर्थ लिखा जाता है। परीक्षार्थियों से कहा गया कि जितने भी ऐसे हिन्दी शब्द उन्हें याद है वह लिखें। इस प्रतियोगिता में पहला पुरस्कार श्रीमती गीता महादेवन, सी. जी. II को, दूसरा पुरस्कार श्री चार्लेस जी फेर्नाडिज सी. जी. II को, और तीसरा पुरस्कार श्री डी. सूर्यनारायणा सी. जी. II को मिला।

उपर्युक्त दोनों परीक्षाओं का प्रबोधन केन्द्र निदेशक ने किया।

13-9-89 को हिन्दी कवितापाठ प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसमें श्री असलम फरशौरी उप-संपादक को पहला, श्री डी. प्रसाद राव, कार्यक्रम अधिकारी को दूसरा, श्री आर. दुर्गा राज, प्रसारण निष्पादक को तीसरा पुरस्कार मिले। इसी दिन हिन्दी गीतों की प्रतियोगिता भी आयोजित की गई जिसमें बड़ी संख्या में कर्मचारियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता का पहला पुरस्कार श्री एल. गिरिराज को दूसरा पुरस्कार श्रीमती वी. उमा को और तीसरा पुरस्कार श्रीमती खमर सुल्ताना को मिला।

समारोह के दौरान दि. 14-9-89 के दिन आयोजित किए गए हिन्दी चुटकुलों की प्रतियोगिता में अनुभव से जुड़े हादसों को चुटकुलों के रूप में पेश करने के कारण केन्द्र निदेशक श्री टी. एन. गणेशन् को पहला पुरस्कार मिला। साइन्स रिपोर्टर श्री सी. जगनमोहन, कार्यक्रम अधिकारी श्री बी. जी. एस. राव को क्रमशः दूसरा और तीसरा पुरस्कार मिले।

पुरस्कार वितरण के बाद मुख्य अतिथि ने कहा कि भारत बहुभाषी देश है। इस देश में विभिन्न भाषाओं का अपना अपना महत्व है। लेकिन सरकारी काम-काज के लिए किसी एक भाषा को अपनाना आवश्यक है। इसको ध्यान में रखते हुए हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्थान दिया गया है क्यों कि हिन्दी ही एक मात्र ऐसी भाषा है जो देश के अधिक लोगों द्वारा बोली और समझी जाती है।

कार्यक्रम का संचालन कार्यक्रम अधिशासी श्रीमती मीरा पाहूजा ने किया।

सिलचर

दिनांक 14-9-89 को हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया जिसमें आकाशवाणी के कर्मचारियों के अतिरिक्त सिविल निर्माण स्कंध (सिविल) एवं इलैक्ट्रीकल के कर्मचारियों ने भी भाग लिया। अतिथि श्री कमलापति मिश्र ने कहा कि हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना संघ सरकार का संवैधानिक दायित्व है। हम अपनी बात को दूसरे की जुबान से नहीं व्यक्त कर सकते और यदि व्यक्त करने की कोशिश करते हैं तो उसमें उसकी स्पष्ट छाप दिखाई पड़ती है। अंग्रेजी भाषा विदेशों से सम्पर्क भाषा का काम कर सकती है, हमारे विचारों को व्यक्त करने का माध्यम कभी भी नहीं बन सकती।

आमंत्रित अतिथि श्री रवीन्द्र नाथ द्विवेदी ने कहा कि हिन्दी को संविधान में राजभाषा के रूप में स्वीकार कर लिया गया है। प्रश्न यह नहीं रह गया है कि हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है या राजभाषा। अब प्रश्न यह है कि हम किस तरह इसका प्रचार-प्रसार करें। इस बात को नकारा नहीं जा सकता कि हिन्दी भाषा ही सबसे सरल एवं सम्पर्क भाषा है।

इस अवसर पर केन्द्र के समाचार सम्पादक श्री जी. मुखर्जी ने अपने सेवाकाल के बड़े ही रोचक संस्मरण सुनाए। उन्होंने जोर देकर कहा कि हिन्दी ही एकमात्र भाषा है जिसके माध्यम से प्रायः देश के हरेक कोने में अपने विचारों को व्यक्त किया जा सकता है।

मुख्य अतिथि डा. ओमवीर सिंह सिकरवार ने संक्षेप में कहा कि भाषा का उद्देश्य केवल संप्रेषण ही नहीं है बल्कि भाषा समाज की संस्कृति, चिंतन, मनन इत्यादि का साधन है। भाषा के माध्यम से किसी समाज का प्रतिबिंब देखा जा सकता है। हमारे देश में वह भाषा केवल हिंदी ही है जिसके माध्यम से हमारा रूप एक विराट हिन्दुस्तान का बन सकता है और इसी के माध्यम से विदेशों में हमारी पहचान बन सकती है।

अंत में केन्द्र अभियंता श्री बी० एन. बनर्जी ने आगंतुक अतिथि एवं श्रोताओं को हार्दिक धन्यवाद दिया।

रेडियो कश्मीर, जम्मू

रेडियो कश्मीर जम्मू में 14 से 22 सितम्बर, 1989 तक हिन्दी सप्ताह सम्बन्धी विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस पर एक रेडियो गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें हिन्दी की संवैधानिक स्थिति, राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास सम्बन्धी सरकार की विभिन्न योजनाएं एवं हिन्दी के प्रचार-प्रसार सम्बन्धी भावी योजनाओं पर विस्तार से चर्चा हुई।

दिनांक 22 सितम्बर, 1989 को जम्मू में स्थित केन्द्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों में कार्यरत कवियों की गोष्ठी हुई। जिसमें केन्द्रीय विद्यालय गांधीनगर से मुख्य अतिथि प्रो. जी. पी. सिंह ने कहा कि हिन्दी में कार्य सच्ची लगन और निष्ठापूर्वक करना चाहिए। इसको मात्र सप्ताह के कार्यक्रमों तक ही सीमित नहीं रखा जाना चाहिए। बल्कि हमें वर्ष भर तक हिन्दी के प्रचार प्रसार एवं दैनिक कार्यालयीय कार्य को करने का संकल्प लेना चाहिए।

समारोह के अध्यक्ष श्री घनश्याम शर्मा ने सभी आमंत्रित कवियों, निर्णायकों, उपस्थित अधिकारियों और कर्मचारियों को धन्यवाद दिया और राष्ट्र भाषा हिन्दी के महत्त्वपूर्ण कार्य को आगे बढ़ाने हेतु सभी कर्मचारियों से अपील की।

रायपुर

आकाशवाणी रायपुर में हिन्दी दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय स्वाभिमान जगाने तथा हिन्दी के विकास पर हुए कार्यों का मूल्यांकन करने के उद्देश्य से हिन्दी कोश प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इसमें विश्वकोश संग्रह, शब्द-संग्रह सहित विभिन्न मंत्रालयों के लगभग 60 शब्दकोशों का प्रदर्शन किया गया।

हिन्दी दिवस पर आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता आकाशवाणी रायपुर के अधीक्षण अभियंता श्री प्रद्युमन कुमार बंसल ने की। श्री मिर्जा मसूद ने कार्यक्रम का संचालन किया।

इस अवसर पर वर्ष 1988-89 में कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी टिप्पण-आलेखन के लिए गुणवत्ता और मात्रा की दृष्टि से किए गए मूल्यांकन के आधार पर चार-चार सौ रुपये के प्रथम पुरस्कार सर्वश्री मोहम्मद शफी मेमन तथा दीनाराम देवांगन, दो-दो सौ रुपये के तीन द्वितीय पुरस्कार श्रीमती लक्ष्मी वाडिया, श्री चैतदास तथा श्री ईश्वरी लाल देवांगन को और डेढ़-डेढ़ सौ रुपये के पांच तृतीय पुरस्कार श्रीमती विनीता चक्रवर्ती, श्री श्याम सुंदर जैसवानी, श्री गिरिवरलाल नागवंशी, श्री कन्हैयालाल नागवंशी तथा श्री शीतल प्रसाद को दिए गए। केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् नई दिल्ली द्वारा आयोजित हिन्दी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता में आकाशवाणी रायपुर से सफल उम्मीदवारों को प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

भुज (कच्छ)

आकाशवाणी भुज की राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा 14 दिसम्बर को हिन्दी दिवस बड़े उत्साह से मनाया गया। समिति के अध्यक्ष श्री मनहर जोशी की अध्यक्षता में आयोजित समारोह में डा. नवीनकुमार शर्मा, हिन्दी अधिकारी प्रादेशिक देना बैंक, भुज तथा श्री आर. एम. दुबे, प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय नं. 2 भुज, मुख्य अतिथि थे।

(1) कार्यालय में काम हिन्दी में ज्यादा से ज्यादा किया गया और उस दिन ज्यादातर पत्रों पर हिन्दी में हस्ताक्षर किए गए।

(2) कार्यालय में हिन्दी पुस्तकों की एक प्रदर्शनी लगाई गई। प्रदर्शनी का उद्घाटन डा. नवीनकुमार शर्मा, हिन्दी अधिकारी, देना बैंक भुज ने किया।

(प्रतियोगिता)

(3) हिन्दी टिप्पणी प्रतियोगिता रखी गई।

प्रथम कुमारी टी. ए. भाईजीवाला लिपिक
द्वितीय श्री रमेश जानी उदघोषक
तृतीय श्री एच. आर. राठोड लिपिक

प्रथम तीन विजेताओं को पुरस्कार दिए गए और बाकी प्रतियोगिता में हिस्सा लेने वालों को प्रमाणपत्र दिए गए।

तदुपरान्त अतिथि एवम् अधिकारियों तथा कर्मचारियों की उपस्थिति में निम्नदर्शित प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया—

1. वाक प्रतियोगिता

इस प्रतियोगिता में निम्नलिखित विषय रखे गए—

(1) आकाशवाणी में हिन्दी में प्रगामी प्रयोग; (2) पैंसठवां संविधान संशोधन; (3) जवाहर रोजगार योजना; (4) वृक्ष महिमा; (5) मेरे घर में कंस का राज।

इस प्रतियोगिता में श्री किशोरमूर्ति अभियांत्रिकी सहायक प्रथम; श्री दानाराम राना लिपिक श्रेणी द्वितीय; तथा श्री रमेया जानी उदघोषक तृतीय रहे ।

(3) गैर फिल्मी हिन्दी गीत गान प्रतियोगिता

इस प्रतियोगिता में निम्नानुसार विजेता रहे ––

श्री कान्तीलाल जोशी, मंजीरा वादक––प्रथम; श्री केणु-भाई चारण; लेखापाल––द्वितीय; श्री राघवजी भाई सोनी; सिक्युरिटी गार्ड––तृतीय ।

(4) हस्ताक्षर प्रतियोगिता

इस प्रतियोगिता में कार्यालय के ज्यादातर अधिकारियों/कर्मचारियों ने हिस्सा लिया । विजेता निम्नानुसार रहे तथा उनको पुरस्कार दिए गए––

श्री जयन्ती जोशी 'शबाब' कार्यक्रम निष्पादक––प्रथम
श्री शैलेष व्यास सहायक समाचार संपादक––द्वितीय
श्री डी. डी. मोदी––डीझल तकनिशियन––तृतीय

प्रतियोगिताओं के विजेताओं को अतिथि महोदय श्री आर. एम. दुबे प्राचार्य केन्द्रीय विद्यालय नं.-2 भुज के हाथों द्वारा पुरस्कार दिए गए और अन्य को प्रोत्साहन हेतु' प्रमाण पत्र दिए गए । उसके बाद श्री वी. एच. बलवाणी, प्रशासनिक अधिकारी ने हिन्दी में प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु कर्मचारियों को हिन्दी में ज्यादा उपयोग में लाने की सलाह दी ।

मुख्य अतिथि श्री दुबे ने उपस्थित सभी अधिकारियों/कमचारियों को कार्यालय में हिन्दी में प्रगामी प्रयोग के बारे में अपने विचारों से अवगत कराया ।

कार्यालय के अध्यक्ष श्री मनहर जोशी ने अधिकारियों/कर्मचारियों को हिन्दी में प्रगति लाने के लिए उत्साहित करने हेतु अपनी ओर से इस समय सभी प्रकार की सहायता का आश्वासन दिया । कर्मचारियों का उत्साह बढ़े और दिन प्रतिदिन हिन्दी में काम करने की क्षमता बढ़े । इसलिए कार्यालय में जो हिन्दी नहीं जानते उनको प्रशिक्षण दिलाने हेतु उनकी सुविधा अनुसार कार्यालय की ओर से हिन्दी टंकण का प्रशिक्षण के लिए कंडला पार्ट भेजा गया और 6 कमचारियों को प्रशिक्षण दिलाया गया ।

अहमदाबाद

14 सितम्बर 1989 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया । समारोह का उद्घाटन केन्द्र निदेशक श्री जी. ए. परमार ने किया । समारोह में एक कवि गोष्ठी का आयोजन भी किया गया । कार्यक्रम के प्रसारण के लिए रिकार्डिंग की गई जिसे इसी दिन रात को प्रसारित किया गया । हिंदी दिवस समारोह का संचालन श्री रामगोपाल सिंह, हिंदी अनुवादक ने किया । हिंदी शिक्षण योजना के सहायक निदेशक श्री सोनेलाल कौल ने केन्द्र सरकार की राजभाषा नीति से अवगत कराया । निदेशक न केन्द्र के सभी कर्मचारियों से हिंदी में कार्य करने का अनुरोध किया तथा हिंदी में कार्य करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित किया और हिन्दी के कार्यान्वयन के लिए किए जा रहे प्रयासों का भी जिक्र किया तथा कहा कि केन्द्र के इतिहास में पहली बार इस केन्द्र पर हिन्दी "प्राज्ञ" की कक्षाओं का आयोजन किया गया है । सत्र में इसी केन्द्र पर 21 कर्मचारी हिन्दी प्राज्ञ का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं । आगामी अलग-अलग सत्रों में केन्द्र के अप्रशिक्षित सभी कर्मचारियों को हिंदी प्राज्ञ का प्रशिक्षण देने की योजना है । हिन्दी शिक्षण योजना के सहायक निदेशक श्री सोनेलाल कौल तथा श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा, हिन्दी प्राध्यापक के सहयोग से हिंदी प्राज्ञ कक्षाओं का आयोजन संभव हो पाया है ।

समारोह में हिन्दी सप्ताह तथा हिन्दी कार्यशाला का उद्घाटन केन्द्र निदेशक श्री जी. ए. परमार ने किया । श्री राम गोपाल सिंह, हिन्दी अनुवादक ने हिन्दी सप्ताह तथा हिन्दी कार्यशाला से परिचित कराया । समारोह में केन्द्र के समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों ने सोत्साह भाग लिया ।

"हिन्दी सप्ताह"

14 सितम्बर 1989 से 21 सितम्बर 1989 तक हिन्दी सप्ताह मनाया गया । इस बीच अन्य कार्यक्रमों के साथ निम्नलिखित चार प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया :––

(1) श्रुतलेखन प्रतियोगिता : 15-9-1989
(2) हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता : 16-9-89
विषय–राजभाषा हिन्दी ही क्यों ?
(3) हिन्दी टिप्पण आलेखन प्रतियोगिता : 18-9-89
(4) वाद-विवाद प्रतियोगिता : 19-9-89

विषय:––क्या आप स्वतन्त्रता के आन्दोलन की भाषा हिन्दी में कार्य करने में गर्व अनुभव करते हैं या अंग्रेजी में, क्यों ? पक्ष-विपक्ष में तर्क ।

"हिन्दी कार्यशाला"

केन्द्र के अधिकारियों/कर्मचारियों के मनोबल को बढ़ाने तथा हिन्दी में कार्य करने के संकोच को दूर करने तथा हिन्दी के प्रति और अधिक अभिरुचि पैदा करने की दृष्टि से हिन्दी सप्ताह के साथ-साथ 14 सितम्बर से 21 सितम्बर 1989 तक सात दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का भी आयोजन किया गया, जिसमें व्याख्यान देने के लिए बाहर के कार्यालयों से तथा केन्द्र से विषय से सम्बन्धित विद्वानों को आमंत्रित किया गया ।

3647 HA/89––10

कार्यशाला में केन्द्र के 15 कमचारियों को प्रशिक्षित किया गया । विद्वान व्याख्याताओं के व्याख्यानों का प्रशिक्षार्थियों ने पूरा-पूरा लाभ उठाया ।

"समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह"

हिन्दी सप्ताह एवं हिन्दी कार्यशाला का समापन समारोह 20 सितम्बर 1989 को केन्द्र निदेशक श्री जी. ए. परमार की अध्यक्षता में आयोजित किया गया । श्री राम गोपाल सिंह, हिन्दी अनुवादक ने हिन्दी सप्ताह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के परिणामों की घोषणा की । चार प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेता इस प्रकार रहे :–

(1) श्रुतलेख प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार : 100/- रु. श्रीमती ललीतामूर्ती,
द्वितीय पुरस्कार : 75/- रु. श्री नरेन्द्र सहारकर
तृतीय पुरस्कार : 50/- रु. कु. संध्या मेनन
प्रोत्साहन 25/- रु. श्रीमती मंजुला शाह
25/- रु. श्रीमती प्रेमलता नाम्बियार
25/- रु. श्रीमती लीना एन. शाह

(2) हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार : 100/- रु. श्रीमत के. वी. सुधा
द्वितीय पुरस्कार : 75/- रु. डा. राम नरेश पाण्डेय
तृतीय पुरस्कार : 50/- रु. श्री सतीश सक्सेना

(3) टिप्पण-आलेखन प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार 100/- रु. कु. संध्या मेनन
द्वितीय पुरस्कार 75/- रु. कु. शीला नायर
तृतीय पुरस्कार 50/- रु. श्रीमती साधना भट्ट
प्रोत्साहन 25/- रु. श्री नरेन्द्र सहारकर
25/- रु. श्रीमती लीना एन० शाह
25/- रु. श्री सतीश सक्सेना

(4) वाद-विवाद प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार 100/ रु.- डा. राम नरेश पाण्डेय
द्वितीय पुरस्कार 75/- रु. श्रीमती हसीना कादरी
तृतीय पुरस्कार 50/- रु. डा. चन्द्रसेन नावाणी
प्रोत्साहन 25/- रु. श्री यज्ञेश दवे
25/- रु. श्री सतीश सक्सेना
25/ रु. श्री गजानन बी. मराठे।

उक्त पुरस्कार विजेताओं को प्रमाणपत्र एवं पुरस्कार (चैक) श्री जी. ए. परमार, केन्द्र निदेशक एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, आकाशवाणी, अहमदाबाद ने प्रदान किए ।

डॉ. राम नरेश पाण्डेय ने "राजभाषा हिन्दी" विषय पर अपने उद्‌गार व्यक्त किए और समस्त कर्मचारियों से राजभाषा हिन्दी में कार्य करने का निवेदन किया । उन्होंने कहा कि किसी भी देश की उन्नति सही मायनों में उसकी अपनी भाषा के बिना, उसकी अस्मिता के बिना सम्भव नहीं है ।

अन्त में, केन्द्र निदेशक श्री जी. ए. परमार ने इस बात पर बल दिया कि केन्द्र के समस्त कमचारियों को हिन्दी में कार्य करना चाहिए ।

पटना

आकाशवाणी सहित सूचना तथा प्रसारण मंत्रालय के पटना स्थित विभिन्न क्षेत्रीय संगठनों के संयुक्त तत्वावधान में आकाशवाणी पटना के परिसर में 14 से 21 सितंबर 1989 तक (सात कार्य दिवस) हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया ।

(क) इस अवसर पर निम्नलिखित प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं :–

14-9-89 हिंदी निबंध प्रतियोगिता
15-9-89 भाषण प्रतियोगिता
16-9-89 वाद-विवाद प्रतियोगिता

विषय:–सदन की राय में–

"संघ लोक सेवा आयोग को अपनी परीक्षाओं से अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त कर देनी चाहिए ।"

18-9-89 हिंदी टंकण प्रतियोगिता
19-9-89 तकनीकी शब्दावली प्रतियोगिता

श्री यशवंत खरात, केन्द्र निदेशक ने अपने भाषण में सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि राष्ट्र, मानवता युग-बोध आदि से जुड़ी कविताओं ने उन्हें अभिभूत किया है । कवि गोष्ठी में भाग ले रहे सभी कवियों को उन्होंने बधाई दी । उन्होंने सभी कवियों और विशेषत: उक्त कवि गोष्ठी के अध्यक्ष पंडित श्री रामदयाल पाण्डेय से आग्रह किया कि बिहार राज्य को उच्च एवं गौरवशाली परंपरा को व्यंजित करने वाला कोई गौरव-गीत रचा जाए, जिससे बिहारवासियों में अपने अतीत और वर्तमान के प्रति गौरव की भावना जगे । उन्होंने आश्वासन दिया कि ऐसे गीतों की श्रृंखला को आकाशवाणी पटना से प्रसारित कराने की व्यवस्था करेंगे । केन्द्र निदेशक के इस उद्‌गार का सभी कवियों और श्रोताओं ने स्वागत किया । कवि गोष्ठी का संचालन हिंदी अधिकारी श्री जय प्रकाश नारायण ने किया ।

पुरस्कार वितरण

21 सितंबर, 89 को हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय, तथा तृतीय स्थान पाने वाले प्रतियोगियों को पुरस्कार तथा प्रमाण-पत्र वितरित करते हुए डा. बैकुण्ठनाथ ठाकुर निदेशक, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी ने हिंदी में सरकारी काम-काज करने के लिए आकाशवाणी केन्द्र पटना द्वारा किए जा रहे प्रयत्नों और कार्यों की सराहना की ।

श्रीमती रोजलीन लकरा, सहायक केन्द्र निदेशक, विज्ञापन प्रसारण सेवा आकाशवाणी पटना ने सभागतों और प्रतियोगियों को समारोह को सफलता पूर्वक सम्पन्न करने में सहयोग के लिए धन्यवाद दिया । श्री यशवंत खरात, केन्द्र निदेशक महोदय ने डा. बैकुण्ठलाल ठाकुर का आभार माना और उन्हें धन्यवाद दिया ।

इन्दौर

आकाशवाणी इंदौर में 14 सितंबर, 89 को "हिंदी दिवस" का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. एम. के. सिन्हा प्रबंध निदेशक, स्टेट बैंक ऑफ इंदौर, इंदौर तथा अध्यक्ष श्री के. के. शर्मा, अधीक्षण अभियंता एवं कार्यालयाध्यक्ष, आकाशवाणी, इंदौर थे।

मुख्य अतिथि डॉ. एम. के. सिन्हा ने कहा कि देश में आकाशवाणी ने जितना प्रयास हिंदी को फैलाने के लिए किया है उतना शायद ही किसी अन्य संस्थान ने किया हो। कुछ लोग तो "हिंदी दिवस" मनाने के कुछ समय बाद तक ही हिंदी में काम करते हैं, किंतु इस संस्था के लोग तो वर्ष भर ऐसी चेष्टा करते रहते हैं।

श्री के. के. शर्मा ने अध्यक्षीय भाषण में इस सुअवसर पर सभी को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए आशा व्यक्त की कि भविष्य में अधिकारी एवं कर्मचारी और अधिक उत्साह के साथ अपना कार्य हिंदी में करेंगे।

आरंभ में मुख्य अतिथि का स्वागत अधीक्षण अभियंता श्री के. के. शर्मा एवं सहायक केन्द्र निदेशक श्री श्रीकांत ठकार ने किया। श्री मेघसिंह, हिंदी अधिकारी ने कार्यालय में संपन्न हिंदी की गतिविधियों की जानकारी दी।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, इंदौर द्वारा 11 मई 89 को आयोजित 10वीं बैठक में आकाशवाणी, इंदौर को वर्ष 1988 में हिंदी में किए गए उल्लेखनीय कार्यों के लिए जो ट्रॉफी और प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया था, उसी को दृष्टिगत रखते हुए कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को इस दिशा में और अधिक प्रेरित करने के उद्देश्य से हिंदी दिवस के पूर्व कार्यालय में 8-9-89 को हिंदी निबंध, 11-9-89 को हिंदी टिप्पण/आलेखन एवं 12-9-89 को हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में से समारोह में कुल रुपये 3,850/- के नकद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र मुख्य अतिथि डॉ. एम. के. सिन्हा ने 23 विजेता प्रतियोगियों को दिए।

श्री टी. वी. चांदोरकर, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक ने आभार व्यक्त किया।

कानपुर

आकाशवाणी कानपुर में 14 सितंबर 1989 को हिंदी दिवस मनाया गया। इसी दिन एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसका संचालन केन्द्र के कार्यक्रम अधिशासी श्री सतीश माथुर ने किया। विचार गोष्ठी की अध्यक्षता कानपुर विश्वविद्यालय की भूतपूर्व उपकुलपति डॉ. (श्रीमती) हेमलता स्वरूप ने की। सर्व प्रथम श्री महेश चन्द्र वर्मा, सहायक केन्द्र निदेशक ने स्वागत भाषण दिया। तत्पश्चात् केन्द्र के सर्वश्री राममूर्ति, धनंजय तिवारी, श्रीमती सुधारानी, प्रतुल जोशी, राजीव दुबे, राजेन्द्र प्रसाद सिंह, कुमारी प्रधान हर्षवाला, डॉ. गरिमा मिश्रा, आदि अधिकारियों ने राजभाषा हिन्दी के प्रयोग एवं प्रचार-प्रसार के संबंध में अपने विचार प्रकट किए।

अंत में अध्यक्ष महोदया ने अपने सारगर्भित भाषण में राष्ट्रभाषा के महत्व पर प्रकाश डाला।

दिनांक 20-9-89 को हिंदी सप्ताह के समापन दिवस को एक कविगोष्ठी आयोजित की गई जिसकी अध्यक्षता डॉ. गिरिराज किशोर ने की

14 सितम्बर, 1989 हिंदी दिवस के अवसर पर "राजभाषा का प्रयोग एवं तत्संबंधी व्यावहारिक कठिनाइयां" विषय पर जानीमानी कथाकार डॉ. सुमति अय्यर से ली गई भेंटवार्ता का भी प्रसारण केन्द्र से किया गया।

विदेश प्रसारण प्रभाग

22 सितंबर को विदेश प्रसारण प्रभाग, आकाशवाणी नई दिल्ली ने हिंदी सप्ताह के समापन दिवस पर एक कार्यक्रम आयोजित किया। इस अवसर पर नवभारत टाइम्स के प्रधान संपादक श्री राजेंद्र माथुर मुख्य अतिथि थे। आकाशवाणी में उपमहानिदेशक श्री निर्मल सिकदार ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

विदेश प्रसारण प्रभाग में उपनिदेशक डॉ. भीमराज शर्मा के स्वागत भाषण के साथ कार्यक्रम की कार्यवाही प्रारम्भ हुई। हिंदी अधिकारी कु. राकेश शर्मा ने कार्यालय में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए किए गए प्रयत्नों तथा हिंदी के कार्यान्वयन के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

मुख्य अतिथि श्री राजेंद्र माथुर ने, कार्यालय द्वारा प्रकाशित स्मारिका का विमोचन किया।

तत्पश्चात् विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार तथा प्रमाण-पत्र दिए गए।

अध्यक्षीय भाषण में श्री निर्मल सिकदार ने कहा कि राजभाषा सप्ताह में ही हिंदी में काम न कर सारे वर्ष भर हिंदी में कार्य होना चाहिए तथा उन्होंने सुझाव दिया कि टिप्पणी लिखते समय यह ध्यान रखा जाए कि वह सुपाठ्य हो और यह मान कर चला जाए कि इसे हिंदीतर भाषा भाषी भी पढ़ सकें। पारिभाषिक शब्दावली को मूलरूप में लिखने का सुझाव भी दिया।

निदेशक श्री उमेश दीक्षित ने आभार व्यक्त किया।

लघु उद्योग सेवा संस्थान

हैदराबाद

16 मार्च, 1989 को संस्थान में हिन्दी दिवस के आयोजन के अवसर पर उच्च शिक्षा एवं शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, हैदरावाद के हिंदी विभाग में प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डॉ. कृष्णकुमार गोस्वामी मुख्य अतिथि रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री के. प्रसादराव, निदेशक, लघु उद्योग सेवा संस्थान, हैदराबाद ने की।

संस्थान के वरिष्ठ हिंदी अनुवादक श्री नरेश कुमार श्रीवास्तव ने राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी वर्ष की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की।

निदेशक श्री राव ने कार्यालय में हिंदी के कार्य में उत्तरोत्तर प्रगति के अपने संकल्प को दोहराया। संस्था में 14 सितंबर, 1989 को आयोजित हिन्दी निबंध एवं हिंदी वाक् प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मुख्य अतिथि डॉ. गोस्वामी ने प्रमाण-पत्र एवं नकद पुरस्कार दिए।

निबन्ध प्रतियोगिता :

कु. के. आर. राजेश्वरी,	प्रथम पुरस्कार
श्री एम. वी. रेड्डी,	द्वितीय पुरस्कार
श्री के. रंगा रेड्डी,	तृतीय पुरस्कार

वाक् प्रतियोगिता

श्री के. रंगा रेड्डी,	प्रथम पुरस्कार
श्री के. रघुनंदन,	द्वितीय पुरस्कार
श्री सी. आर. बद्रीनाथ,	तृतीय पुरस्कार

डॉ. गोस्वामी ने राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा के आपसी संबंध को स्पष्ट करते हुए हिंदी के राजभाषा के रूप में चयन के समय की आवश्यकताओं एवं परिस्थितियों की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने यह भी बताया कि हिंदी को ही क्यों राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया तथा उसमें राजभाषा के रूप में विकसित होने के लिए क्या विशेष बातें, सुविधाएं या संभावनाएं थीं।

श्रीनगर

संस्थान द्वारा दिनांक 14-9-1989 को "हिन्दी दिवस" मनाया गया। श्री एस. मोहन शर्मा, निदेशक, खादी ग्रामोद्योग कमीशन, श्रीनगर ने समारोह का उद्घाटन किया तथा संस्थान के निदेशक, श्री मनमोहन वर्मा ने समारोह की अध्यक्षता की। श्रीनगर में स्थित दूसरे कार्यालयों तथा इस कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने प्रतिदिन के राजकीय कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को अधिक से अधिक बढ़ावा देने के लिए विचार-विमर्श किया। इसके बाद दिनांक 14-9-89 से 20-9-1989 तक इस कार्यालय द्वारा हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया।

समारोह की कार्यवाही का संचालन संस्थान के वरिष्ठ हिंदी अनुवादक श्री धर्मपाल सिंह जाखड़ द्वारा किया गया तथा साथ ही उन्होंने "हिंदी दिवस" की पृष्ठभूमि पर भी प्रकाश डाला।

श्री निरंजन लाल, सहायक निदेशक (यांत्रिक) ने समारोह में पधारे अतिथियों तथा विभिन्न कार्यालयों के प्रतिनिधियों का स्वागत किया। मुख्य अतिथि श्री एस० मोहन शर्मा ने द्वीप प्रज्ज्वलित करके समारोह का उद्घाटन किया। श्री शर्मा ने कहा कि हिंदी एक जानदार भाषा है इसलिए उसके प्रयोग को अधिक से अधिक बढ़ावा देने में गर्व अनुभव करना चाहिए।

श्री कृष्ण कुमार, उप निदेशक (यांत्रिक) ने कहा कि जब भी हिन्दी दिवस आता है तो हम हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार की बात करते हैं, परन्तु 40 वर्ष के बाद भी हम हिंदी के लिए उतना कुछ नहीं कर पाए जितना कि हमें करना चाहिए था।

श्री वी. के. वली, अध्यक्ष, क्षेत्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला (शाखा), श्रीनगर ने कहा कि आज इस शुभ अवसर पर पधारने में मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हुई हैं क्योंकि यहां पर जो कुछ भी राजभाषा के संबंध में मैं सुनूंगा उसे अपने कार्यालय कामकाज में लागू करने के लिए प्रयत्न कर सकूंगा।

श्री रामचन्द्र पांडे, सहायक निदेशक (प्रशासन) खादी ग्रामोद्योग कमीशन, श्रीनगर ने प्रशासनिक कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग की आवश्यकता पर बल दिया।

श्री रमेश काबू, सहायक निदेशक, बी.आई.एस., श्रीनगर न कहा कि हमारा कार्यालय यहां पर अभी नया ही खुला है फिर भी हम हिंदी प्रसार के लिए अपना पूर्ण योगदान दे रहे हैं।

श्री इंद्रजी खुश, सहायक निदेशक (खाद्य रक्षण) लघुउद्योग सेवा संस्थान, श्रीनगर ने कहा कि जब से स्थानांतरित होकर यहां आया तो मुझे हिंदी का इतना अधिक ज्ञान नहीं था परंतु वरिष्ठ हिंदी अनुवादक श्री जाखड़ के प्रोत्साहन देने पर मैंने कुछ काम हिन्दी में करना शुरू किया। हमें दफ्तरी कामकाज में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग करके गर्व अनुभव करना चाहिए।

श्रीमती नन्सी धर, कार्यवाहक हिन्दी अधिकारी डाक महाध्यक्ष कार्यालय, श्रीनगर ने कहा कि हमें हिंदी वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों को पूरा करने का हर संभव प्रयत्न करना चाहिए । बोलचाल की तथा सरल हिन्दी का कार्यालयीन कामकाज में प्रयोग करना चाहिए। शैली के लिए नहीं अटकना चाहिए। सुबोध हिंदी का प्रयोग करना चाहिए ।

श्री विद्यारत्न पुरी, ल.उ.प्र. अधिकारी (चर्म/पादुका) ने कहा कि आज का आयोजन हमें प्रेरणा देता है कि हम जितना अधिक कार्यालयीन कामकाज राजभाषा हिंदी में कर सकते हैं उतना हमें करना चाहिए। हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिन्दी में दिया जाना चाहिए । अधिक से अधिक पत्राचार हिन्दी में किया जाना चाहिए ताकि उसका उत्तर भी हमें हिन्दी में मिल सके ।

सरदार मंगत सिंह, उच्च श्रेणी लिपिक ने कहा कि मैंने काफी उम्र के बाद हिन्दी सीखी । प्राज्ञ परीक्षा पास की और हिन्दी में कार्य करना शुरू कर दिया । हिन्दी सीखने और लिखने में मुझे ज्यादा समय नहीं लगा क्योंकि मेरे अन्दर लग्न थी । इसलिए अगर सच्ची लगन से हम सब हिन्दी को प्रोत्साहन देना शुरू करें तो वह दिन दूर नहीं जब हिन्दी अपने उस स्थान को पा लेगी ।

श्री मनमोहन वर्मा, निदेशक, लघु उद्योग सेवा संस्थान, श्रीनगर ने कहा--हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए केन्द्र सरकार द्वारा हर वर्ष वार्षिक कार्यक्रम दिया जाता है जिसे पूरा करना हर केन्द्रीय कार्यालय का कर्त्तव्य है । हमें हिन्दी को संपर्क भाषा के रूप में बढ़ाने का हर संभव प्रयास करना है । आज के दिन मैं अपनी तथा अपने कर्मचारियों की ओर से हिन्दी को अधिक से अधिक बढ़ावा देने का संकल्प दोहराता हूं ।

संस्थान के सहायक निदेशक (प्रशासन) श्री प्रनब दास ने आभार प्रकट किया ।

नागपुर

लघु उद्योग सेवा संस्थान, नागपुर में दिनांक 14 सितम्बर, 1989 को "हिन्दी दिवस" का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि श्री ई.एस. बख्तावर, अपर पुलिस उप महानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, नागपुर ने किया । उन्होंने कहा कि हिन्दी का प्रश्न कोई आवेश का प्रश्न नहीं है । हमें आज हिन्दी दिवस पर यह निर्णय लेना होगा कि हम सब मिल कर अपना दैनिक कार्य हिन्दी में करेंगे ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्यकार श्री रज्जन त्रिवेदी ने की । उन्होंने हिन्दी भाषा की सदियों पुरानी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए बताया कि हिन्दी को राजभाषा के रूप में अधिकाधिक प्रतिष्ठित करने का दायित्व अहिन्दी भाषियों ने ही निभाया है ।

उन्होंने हिन्दी की सार्वदेशिकता का वर्णन करते हुए बताया कि आज देश के हर प्रदेश का रहने वाला भारतीय धर्म स्थलों में, रेल के डिब्बों में, मजदूरों की टोली में, भिखमंगों की खोली में अपनी बात हिन्दी में करने में समर्थ है । उन्होंने हिन्दी के विकास के लिए देश की प्रादेशिक भाषाओं के विकास पर बल दिया ।

श्री तपेन्द्र नाथ बसु, निदेशक, लघु उद्योग सेवा संस्थान, नागपुर ने कार्यक्रम के आयोजन के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए बताया कि हिन्दी अपने गुणधर्म और निष्ठा के कारण केवल राष्ट्र मंगला ही नहीं लोक मंगला बनने की शक्ति से मंडित है ।

हिन्दी सप्ताह के दौरान दिनांक 18-9-89 को कार्यालय अधिकारियों/कर्मचारियों के मध्य विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । जिनमें कार्यालय के श्री उमेश अग्रवाल, श्री बी.एस. इंगले, डा. प्रमोद कुमार सिंह राठौर, श्रीमती नीता चौहान, श्री विजय आवले, गुणानुक्रम से पुरस्कृत किये गये । दिनांक 19-9-89 को आयोजित "कवि सम्मेलन" विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा ।

बैंक

बैंक आफ बड़ौदा, तिरुअनंतपुरम

क्षेत्रीय कार्यालय (केरल) तिरुअनंतपुरम में 14 सितम्बर, 1989 को बड़े हर्षोल्लास, उत्साह एवं उमंग से 'हिन्दी दिवस' मनाया गया । श्री जे. शेषाद्री, वरिष्ठ प्रबंधक (परिचालन) ने समारोह की अध्यक्षता की और श्रीमती गायत्री राधाकृष्णन, प्रधानाचार्या, आर्य केन्द्रीय विद्यालय, मुख्य अतिथि श्री एस. एच. एस. शर्मा के प्रार्थना गीत से कार्यक्रम की शुरूआत हुई। तत्पश्चात् श्री दयाराम एन. कोडमूर, राजभाषा अधिकारी ने सभी का हार्दिक स्वागत किया ।

अध्यक्ष, श्री शेषाद्री ने कहा कि बहुभाषी देश में हर नागरिक को हिन्दी तथा जहां आवश्यक हो वहां अन्य प्रादेशिक भाषा सीखना जरूरी होगा, तभी इस देश की प्रगति संभव है,। बैंक में शाखा स्तर पर कुछ स्थानों पर ग्राहकों के साथ प्रादेशिक भाषा में पत्र व्यवहार होता है, पर एक शाखा से दूसरी शाखा में तथा शाखा से प्रधान/केन्द्रीय/अंचल/क्षेत्रीय कार्यालय के पत्र व्यवहार में हिन्दी का प्रयोग करना है ।

श्रीमती गायत्री राधाकृष्णन ने कहा कि हम भारत **सरकार की शिक्षा नीति के अनुरूप ही पाठ्यक्रम को लागू करते हैं, जिसमें त्रिभाषा का सूत्र है, हमारे विद्यालय में हिन्दी नर्सरी से ही पढ़ाई जाती है । हमारा यह अनुभव रहा है कि दसवीं कक्षा तक पढ़े हुए छात्र हिन्दी एवं**

अंग्रेजी दोनों भाषाओं में समान अधिकार प्राप्त कर लेते हैं और वे अपने विचारों की अभिव्यक्ति सहज सरल ढंग से बिना कठिनाई महसूस करते हैं। एक छात्र दसवीं कक्षा तक चार भाषाओं को सीखता है जैसे:—हिन्दी, अंग्रेजी, मलयालम एवं संस्कृत। मैं अनुभव के आधार पर कह सकती हूं कि केवल हिन्दी ही सारे भारत में सम्पर्क भाषा की सक्षम भूमिका निभा सकती है।

विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी कर्मचारियों को मुख्य अतिथि ने पुरस्कार वितरित किए। विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी कर्मचारियों की सूची निम्नानुसार है :—

1. सुन्दर लिखावट प्रतियोगिता :

श्रीमती ए. जयलक्ष्मी	क्षेत्रीय कार्यालय	प्रथम
श्री एम. पद्मनाभन्	वल्लक्काडवू शाखा	द्वितीय
श्रीमती मरियाम्मा पावू	क्षेत्रीय कार्यालय	तृतीय

2. बैंकिंग शब्दावली प्रतियोगिता :

श्रीमती वी. चित्रा	क्षेत्रीय कार्यालय	प्रथम
श्री एम. पद्मनाभन्	वल्लक्काडवू	द्वितीय
श्रीमती ए. जयलक्ष्मी	क्षेत्रीय कार्यालय	तृतीय

3. निबन्ध लेखन प्रतियोगिता :

श्रीमती वी. चित्रा	क्षेत्रीय कार्यालय	प्रथम
श्री के. वी. नायर	पालयम् शाखा	द्वितीय
श्री जे. वेणुगोपाल	पालयम् शाखा	तृतीय

4. सुगम संगीत प्रतियोगिता :

श्री जे. वेणुगोपाल	पालयम् शाखा	प्रथम
श्रीमती वी. चित्रा	क्षेत्रीय कार्यालय	द्वितीय
श्री के. वी. नायर	पालयम् शाखा	तृतीय

पुरस्कार वितरण समारोह के पश्चात् श्री एस. एच. एस. शर्मा तथा श्रीमती आर. मल्लिका ने गायन प्रस्तुत किया।

श्री डी. मुरलीधरन् प्रबंधक (कार्मिक) द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के बाद समारोह का समापन हुआ। क्षेत्रीय कार्यालय (केरल) के राजभाषा अधिकारी श्री दयाराम एन. कोडमूर ने समारोह का संचालन - संयोजन किया।

बैंक ऑफ बड़ौदा
(केन्द्रीय कार्यालय) बम्बई

बैंक ऑफ बड़ौदा के केन्द्रीय कार्यालय, बम्बई मुख्य शाखा तथा बृहद बम्बई अंचल की ओर से दिनांक 25 सितम्बर, 1989 को हिन्दी दिवस समारोह आयोजित किया गया।

बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री प्रेमजीत सिंह ने समारोह की अध्यक्षता की। भारतीय रिजर्व बैंक के मद्रास कार्यालय की प्रशासनिक प्रमुख तथा बैंक ऑफ बड़ौदा के निदेशक मंडल की सदस्य कु. विश्वनाथन् विशेष रूप से आमंत्रित थीं।

समारोह के प्रारंभ में बैंक के महाप्रबंधक (अंतर्राष्ट्रीय परिचालन) श्री जे.एन. दौलतजादा ने आमंत्रितों का स्वागत किया और राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने की अपील की। अध्यक्ष श्री प्रेमजीत सिंह ने समारोह का विधिवत उद्घाटन किया। उन्होंने बैंक की संस्था पत्रिका—"द बैंक आफ बड़ौदा न्यूज" के हिन्दी दिवस विशेषांक का विमोचन भी किया।

चिन्तन सत्र में बैंक के कार्यकारी निदेशक डा. ए. सी. शाह ने राजभाषा और राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने की संवैधानिक जिम्मेदारी तथा राष्ट्रीय दायित्व का अहसास दिलाते हुए यह चिन्ता व्यक्त की कि स्वाधीनता के चालीस वर्ष बाद भी राजभाषा प्रयोग में अपेक्षित प्रगति नहीं हो पाई है। उन्होंने वरिष्ठ अधिकारियों से आग्रह किया कि वे अपना कार्यालयीन काम काज अधिक से अधिक हिन्दी में करें।

अध्यक्षीय भाषण में श्री प्रेमजीत सिंह ने राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को राष्ट्रीय गौरव का कार्य बताते हुए यह विश्वास व्यक्त किया कि देश की सम्पर्क भाषा या "लिंग्वा फ्रांका" के रूप में हिन्दी अपना दायित्व सफलता से निभा सकती है। श्री प्रेमजीत सिंह ने यह स्पष्ट किया कि हमारी शिक्षा नीति में हिन्दी को महत्वपूर्ण ढंग से शामिल करते हुए ही राजभाषा नीति को कामयाब बनाया जा सकता है।

समारोह के अवसर पर प्रसिद्ध नाट्यकर्मी श्री चन्द्रकांत ठक्कर की ओर से "इसी का नाम नाटक" शीर्षक से एक रोचक नाटक प्रस्तुत किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में श्री जयदीप स्वामी ने भजन और गजलें प्रस्तुत कीं।

अंत में बैंक के सहायक महाप्रबंधक श्री आर. जयरामन् ने आमंत्रितों के प्रति आभार व्यक्त किया। समारोह का संचालन बैंक के राजभाषा अधिकारी श्री आर. नारायणन् तथा श्रीमती श्यामा ठाकुर ने किया।

समारोह का संयोजन मुख्य प्रबंधक डा. सोहन शर्मा का था।

बैंक आफ बड़ौदा
राजस्थान अंचल

राजस्थान अंचल की सभी शाखाओं/कार्यालयों में 11 से 16 सितम्बर तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। 14 सितम्बर का दिन सभी स्थानों पर हिन्दी दिवस

के रूप में मनाया गया। इस दिन शाखा स्तरीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें आयोजित की गईं। सप्ताह के दौरान ग्राहक सेवा समिति की बैठकें आयोजित करके, ग्राहकों को बैंक में हो रहे हिन्दी प्रयोग की जानकारी दी गई। 14 सितम्बर को ही सभी शाखाओं/कार्यालयों में अंचल के उप महाप्रबंधक श्री रसिकभाई देसाई ने स्टाफ सदस्यों को संबोधित अपील भी जारी की। अपील में उत्कृष्ट ग्राहक सेवा प्रदान करने के लिए हिन्दी प्रयोग पर बल दिया गया। ग्राहकों के साथ हिन्दी पत्राचार करने के अलावा शाखा का आन्तरिक कार्य भी हिन्दी में करने पर बल दिया गया।

अंचल स्तरीय पुरस्कार वितरण समारोह 18 सितम्बर, 1989 को जयपुर में संपन्न हुआ। राजस्थान उच्च न्यायालय के माननीय न्यायाधिपति श्री सुरेन्द्र नाथ भार्गव समारोह के मुख्य अतिथि थे तथा राजस्थान सरकार के भाषा निदेशक श्री कलानाथ शास्त्री विशिष्ट अतिथि थे। राजस्थान अंचल के उप महाप्रबंधक श्री रसिकभाई देसाई ने समारोह की अध्यक्षता की।

मुख्य अतिथि श्री भार्गव ने कहा कि मन के विचारों की सही अभिव्यक्ति हमारे मन की भाषा हिन्दी के जरिए ही संभव है। हमारा भविष्य तभी उज्जवल होगा जब कि हम हिन्दी को अपनी वास्तविक पहचान बनायेंगे। उन्होंने बैंक आफ बड़ौदा द्वारा राजस्थान में हिन्दी के प्रयोग के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों की प्रशंसा की।

विशिष्ट अतिथि श्री कलानाथ शास्त्री ने बैंकों द्वारा, ग्राहक वर्ग की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए हिन्दी में किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा की। उन्होंने बैंक ऑफ बड़ौदा द्वारा राजस्थान के स्तर पर लीड बैंक के रूप में तथा जयपुर शहर के स्तर पर नगर समिति के संयोजक के रूप में किए जा रहे प्रशंसनीय कार्य के लिए बधाई दी।

अध्यक्षीय संबोधन में उप महाप्रबंधक श्री रसिकभाई देसाई ने बैंक द्वारा राज्य स्तर पर हासिल किए गए प्रथम स्थान को बनाए रखने के लिए सघन प्रयास करने हेतु सभी स्टाफ सदस्यों से अपील की। **उन्होंने यह भी कहा कि राजस्थान की सभी शाखाओं में बचत खाते हिन्दी में ही खोले जाएंगे।**

प्रारम्भ में जोधपुर क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रबंधक श्री एस. एस. माथुर ने स्वागत किया। बाद में वरिष्ठ प्रबन्धक श्री डी० एम. जैन ने पिछले एक वर्ष के दौरान अंचल द्वारा हिन्दी प्रयोग के क्षेत्र में किए गए उल्लेखनीय कार्यों का ब्यौरा दिया। अंत में जयपुर क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रबन्धक श्री के. एन. माथुर ने धन्यवाद दिया।

इस अवसर पर राजस्थान अंचल की 37 शाखाओं, 2 क्षेत्रों, 2 क्षेत्रीय कार्यालयों, 2 लीड बैंक कार्यालयों तथा प्रशासनिक कार्यालयों के विभागों को पुरस्कृत किया गया।

कार्यक्रम का संचालन प्रबन्धक (राजभाषा) श्री उमाकान्त स्वामी तथा राजभाषा अधिकारी श्रीमती विजया श्रीवास्तव ने किया।

बैंक आफ बड़ौदा, राजस्थान अंचल,

जयपुर

वर्ष 1988-89 के लिए उत्कृष्ट हिन्दी-प्रयोग के लिए

पुरस्कृत क्षेत्र/कार्यालयों/शाखाओं की सूची

क्षेत्र—

1. कोटा
2. अजमेर

क्षेत्रीय कार्यालय—

1. अजमेर
2. कोटा

लीड बैंक कार्यालय—

1. चित्तौड़गढ़
2. अजमेर

25 सदस्यीय शाखाएं—

1. पृथ्वीराज मार्ग, अजमेर
2. स्टेशन रोड, जयपुर

शाखाएं—

कोटा क्षेत्र—

1. झिराना (जिलाटोंक)
2. बनेठा ,, ,,
3. लावा ,, ,,
4. बगडी ,, ,,
5. चिकारडा (जिला चितौड़गढ़)

अजमेर क्षेत्र—

1. पण्डेर (जिला–भीलवाडा)
2. टाडगढ़ (जिला–अजमेर)
3. रायपुर (जिला–भीलवाडा)
4. बडाखेड़ा (जिला–अजमेर)
5. सिलोरा (जिला–अजमेर)

उदयपुर क्षेत्र—

1. मोटागांव (जिला–बांसवाडा)
2. सावला (जिला–डूंगरपुर)
3. सालिया (जिला–बांसवाडा)

4. छोटी सरवा (जिला–डूंगरपुर)
5. पुंजपुर (जिला–डूंगरपुर)

जयपुर क्षेत्र––

1. शिवाड (जिला–सवाई माधोपुर)
2. महुआ (जिला–जयपुर)
3. बहरावडा खुर्द
4. मलारना चोर
5. खिलचीपुर

जोधपुर क्षेत्र––

1. बीदासर
2. अलसीसर
3. मण्ड्रेला
4. तूडसर
5. नागौर

अंचल कार्यालय के गैर चयनित विभाग––

1. राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति एवं आयोजना विभाग (संयुक्त रूप से)
2. कार्यालय प्रबन्धक विभाग

अंचल कार्यालय के चयनित विभाग––

1. ग्राहक सेवा केन्द्र

क्षेत्रीय कार्यालयों के चयनित विभाग––

1. कृषि विभाग––उदयपुर क्षेत्र

बैंक आफ बड़ौदा उत्तरी अंचल

नई दिल्ली

अंचल कार्यालय की ओर से दिनांक 16 सितम्बर, 1989 को हिमाचल भवन सभागार, नई दिल्ली में हिन्दी दिवस समारोह उल्लासपूर्वक मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री नारायणदत्त पालीवाल ने की। प्रख्यात कलाकार एवं रंगकर्मी श्री गजेन्द्र चौहान ("महाभारत" के युधिष्ठिर) इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

कार्यशाला के प्रारम्भ में अंचल के उप महाप्रबन्धक श्री नारायण सिंह खन्ना ने अध्यक्ष एवं मुख्य अतिथि का पुष्प-गुच्छ द्वारा स्वागत किया तथा अंचल स्तर पर हिन्दी के प्रयोग संबंधी प्रमुख गतिविधियों पर संक्षेप में प्रकाश डाला।

मुख्य अतिथि श्री गजेन्द्र चौहान ने अत्यंत संक्षेप में अपने विचारव्यक्त करते हुए उपस्थित जन-समुदाय को रोमांचित कर दिया। वर्ष के दौरान आयोजित निबन्ध एवं संस्मरण प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार भी प्रदान किए।

अध्यक्ष डॉ पालीवाल ने इस दिवस की पृष्ठभूमि तथा महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने राजभाषा संबंधी विभिन्न पहलुओं पर उपस्थित कर्मचारियों को व्यापक जानकारी प्रदान की तथा अपने कामकाज में हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए उन्हें प्रेरित किया।

इस अवसर पर आशुभाषा प्रतियोगिता एवं रंगारंग कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। प्रसिद्ध कवि सुरेन्द्र शर्मा ने अपनी कविताएं सुनाकर उपस्थित जन-समुदाय को आनन्दित तो किया ही, साथ ही राजभाषा के संबंध में अपने अनुभवों को व्यंग्यपूर्ण शैली में प्रस्तुत करते हुए कर्मचारियों को मंत्रमुग्ध कर दिया। स्टाफ-सदस्यों की ओर से ही इस अवसर पर एक हिन्दी नाटक "वेटिंग रूम" का भी मंचन किया गया जिसकी सभी ओर से विशेष सराहना की गई। आशुभाषण प्रतियोगिता के अन्तर्गत विभिन्न कर्मचारियों ने अपनी वक्तृत्व कला से उपस्थित जन-समुदाय को अवगत कराया। उप महाप्रबन्धक श्री खन्ना ने विजेता कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान किए। रंगारंग कार्यक्रम की उत्कृष्ट पाई गई अन्य प्रविष्टियों को भी उनके द्वारा पुरस्कृत किया गया।

सिंडिकेट बैंक : विजयवाड़ा

विजयवाड़ा नगर स्थित आंचलिक कार्यालय तथा मण्डल कार्यालय ने संयुक्त रूप से दि. 8 से 14-9-1989 तक हिन्दी सप्ताह समारोह बड़ी धूमधाम से मनाया।

14 सितम्बर, 1989 को आयोजित उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि श्री जयंत कायरकर, प्राचार्य, बी एड कॉलेज (हिन्दी माध्यम) थे। कार्यक्रम प्रारंभ होने से पहले आंचलिक कार्यालय के उप प्रभागीय प्रबन्धक श्री आर. रघुराम राव ने उपस्थित सदस्यों का स्वागत किया।

अध्यक्षीय भाषण के दौरान सहायक महाप्रबन्धक श्री के. एन. आर. उण्णि ने कहा कि भारतवासी होने के कारण हम सबको अपनी राष्ट्रभाषा में काम करना चाहिए। मण्डल प्रबन्धक, विजयवाड़ा ने कहा कि प्रत्येक भारतीय को अपनी मातृभाषा के साथ संपर्क भाषा हिन्दी सीखनी चाहिए, चूंकि भारत की एकता के लिए हिन्दी भाषा की आवश्यकता है।

विशेष आमंत्रित श्री सी. चेन्नकेशवुलु, हिन्दी प्राध्यापक, के०बी०एन० कालेज ने कहा कि मानवता की स्थापना के लिए भाषा एक महत्वपूर्ण कड़ी होती है, भारत में हिन्दी का स्थान अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

चित्र समाचार II

हिन्दी कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए केन्द्र निदेशक श्री जी.ए. परमार

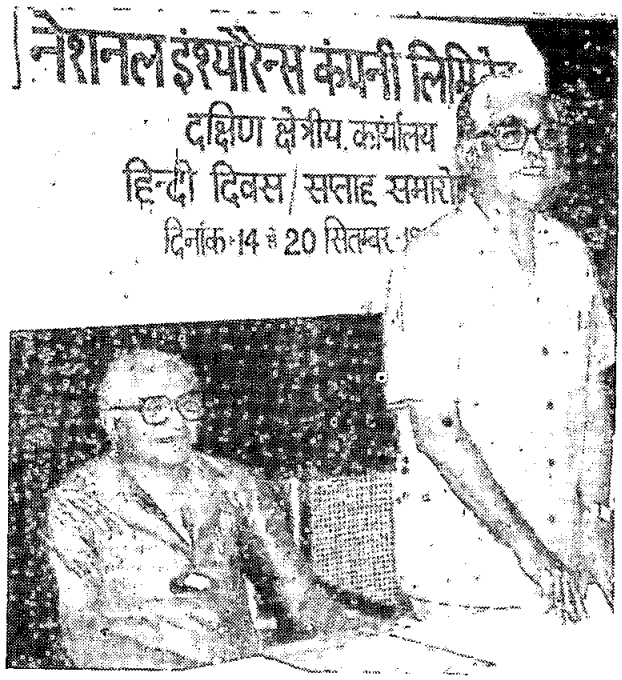

मद्रास सभा को सम्बोधित करते हुए सहायक महा प्रबन्धक श्री एन. कृष्णामूर्ति एवं साथ में बाएं से श्री ओ.पी. ग्रोवर, श्री वी.के. रामन

प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित करते हुए उस्मानियां विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. ललित कुमार पारीख

बैंक आफ बड़ौदा, उत्तरी अंचल, नई दिल्ली में कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए राजभाषा विभाग के निदेशक (नीति) श्री सर्वेश्वर झा, साथ में हैं उप महाप्रबन्धक श्री एन.एस. खन्ना

राजभाषा संगोष्ठी को संबोधित करते हुए वरिष्ठ मंडल प्रबन्धक श्री ए.आर. मेनन

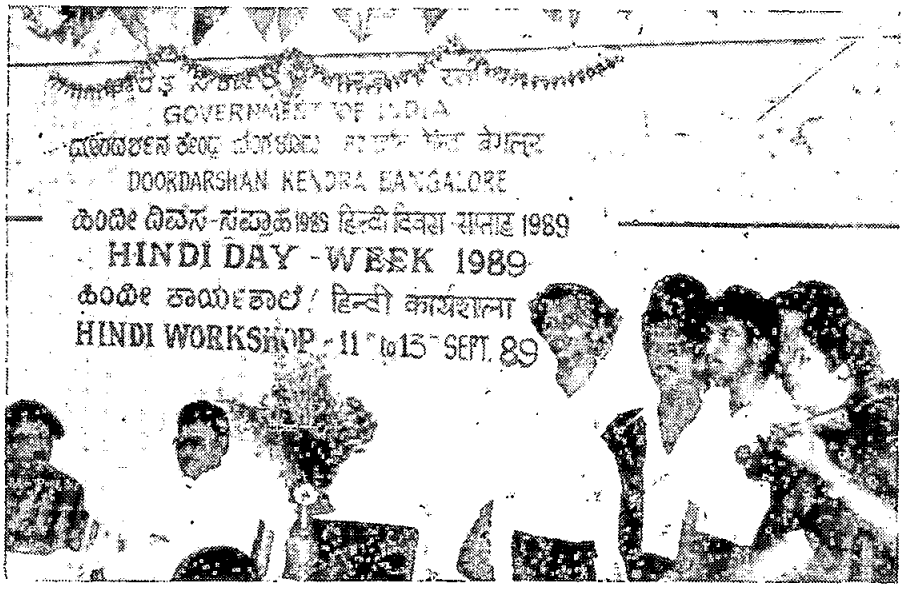

मंचासीन केन्द्र निदेशक श्री के. एम. अनीस उलहक, मुख्य अतिथि श्री अजानो ही फिरोज तथा स्वागत गीत प्रस्तुत करते हुए दूरदर्शन के कलाकार

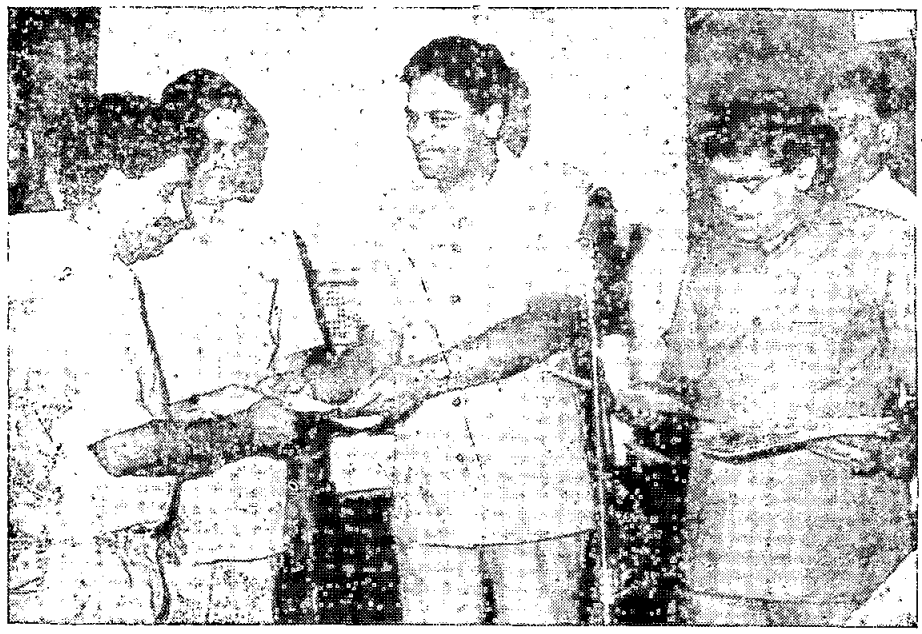

सीमेंट कारपोरेशन ऑफ इंडिया लि., नई दिल्ली में पुरस्कार वितरित करते हुए अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक तथा निदेशक (कार्मिक)

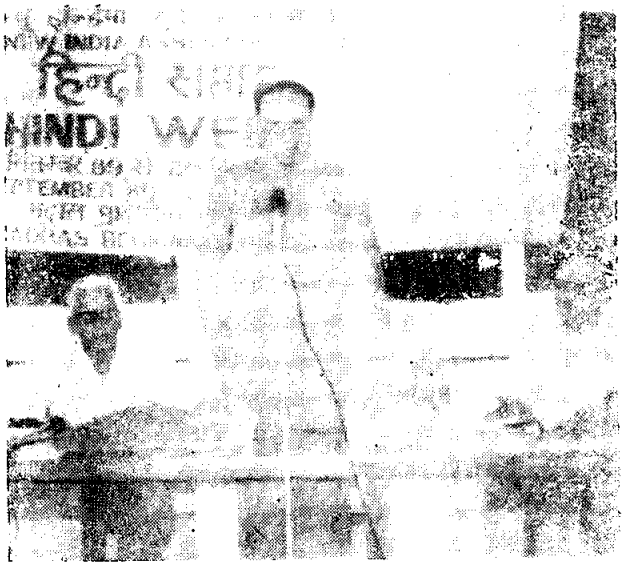

कार्यक्रम की एक झलक

उद्घाटन भाषण पढ़ते हुए डॉ. र. अ. माशलेकर

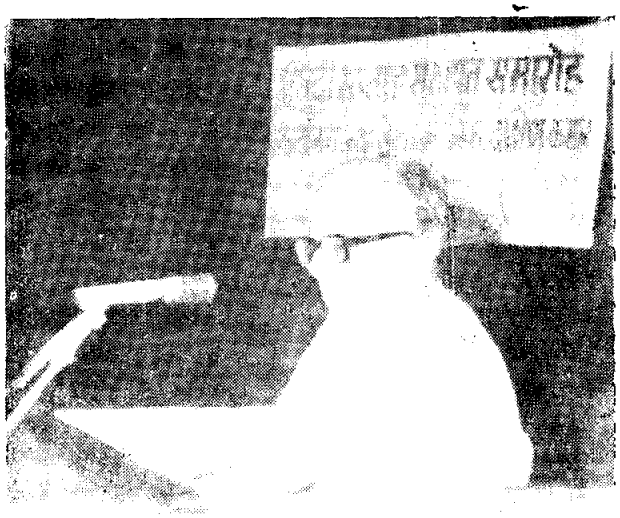

भाषण देते हुए श्री शे. अ. वेंकटरामन, भा.र.ले.से., रक्षा लेखा नियंत्रक (द.क.)

सभा को सम्बोधित करते हुए वरिष्ठ प्रबन्धक श्री जे. शेषाद्रि

दूरदर्शन केन्द्र, जालन्धर: निदेशक श्री एम.एल. पंडित कर्मचारियों को सम्बोधित करते हुए

इस्को, बर्नपुर वर्क्स में हिन्दी में कार्यलयीन कार्य प्रतियोगिता के पुरस्कार देते हुए प्रबन्ध निदेशक श्री एम. एफ. मेहता

ग्रेफ एवं अभिलेख केन्द्र, पुणे: सम्बोधित करते हुए श्री वी.के. ओबेराय साथ में खड़े हैं श्री एस०पी. सिंह

पुरस्कार वितरित करते हुए महा प्रबन्धक श्री प्रभुदयाल (आयोजना एवं विकास)

प्रशिक्षण केन्द्र में द्विभाषी कम्प्यूटर का उद्घाटन करते हुए अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक

बाद में 1988-89 के लिए हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने से दक्षिण क्षेत्र स्थित आंचलिक कार्यालयों में विजयवाड़ा को प्रथम स्थान प्राप्त होने के कारण आंचलिक कार्यालय के राजभाषा अधिकारी श्री वी वेंकटेश्वर राव को सहायक महाप्रबन्धक श्री के एन आर उण्णि ने राजभाषा शील्ड प्रदान की। वैसे ही विजयवाड़ा अंचल स्थित शाखाओं में श्रीकाकुलम् शाखा के प्रबन्धक को मण्डल प्रबन्धक श्री वी दक्षिणमूर्ति ने शाखा स्तर की राजभाषा शील्ड प्रदान की।

भाषण कार्यक्रम समाप्त होने के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रारंभ हुए। गायन, एकपात्र अभिनयन, भारतेंदु हरिश्चन्द्र का नाटक अंधेर नगरी-चौपट्ट राजा का प्रदर्शन अत्यंत रोचक ढंग से किया गया । बाद में विजेताओं को पुरस्कार दिए गए।

इस सप्ताह के दौरान 8 सितम्बर से 14 सितम्बर तक हिन्दी निबन्ध, वाक, सुंदर लेखन, पठन, टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिताओं का सफल आयोजन किया :–

इंडियन बैंक, बेंगलूर

कर्मचारी प्रशिक्षण केन्द्र, कोरमंगला में दि. 14 सितम्बर, 1989 को हिन्दी दिवस मनाया गया । हिन्दी अधिकारी श्री टी. एस. वी. प्रसाद ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए दि. 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस मनाने क उद्देश्य के बारे में अवगत कराया।

श्री एम. जी. हरिराव, मुख्य अधिकारी भी समारोह में उपस्थित थे। बैंक कर्मचारियों का "वंदना" से समारोह प्रारम्भ हुआ। समारोह का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि श्री के. आर. सेतुरामन ने हिन्दी पढ़ने की आवश्यकता और पढ़ने से लाभ के बारे में बताते हुए रोजमर्रा बैंकिंग लेनदेन में हिन्दी का आधिकारिक प्रयोग करने पर जोर दिया। विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं जैसे परीक्षा शुल्क की प्रतिपूर्ति पाठ्य-पुस्तकों की आपूर्ति जैसे विषयों पर भी ध्यान आकर्षित किया।

हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता में सफल प्रथम तीन विजेताओं को मुख्य अतिथि ने पुरस्कार प्रदान किए। विजेताओं के नाम इस प्रकार है :–

प्रथम पुरस्कार	श्रीमती रश्मि श्रीनिवास, इंडियन बैंक, राजाजी नगर, ब्रांच, बेंगलूर
द्वितीय पुरस्कार	श्री एम. कृष्णा सहायक मुख्य अधिकारी, इंडियन बैंक, सहायक महाप्रबन्धक का कार्यालय, बेंगलूर
तृतीय पुरस्कार	श्री ए. नागराज इंडियन बैंक, बसवनगुडी शाखा, बेंगलूर।

सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए गए एवं बैंक कर्मचारियों ने हिन्दी मराठी एवं कन्नड़ गीत गाए।

यूनियन बैंक आफ इंडिया
क्षेत्रीय कार्यालय, नाशिक

इस वर्ष अर्धवार्षिक लेखाबंदी को ध्यान में रखते हुए और केन्द्रीय कार्यालय के निर्देशानुसार कार्यक्रमों को 15 अगस्त "स्वतंत्रता दिवस" के साथ जोड़ा गया।

कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी निम्नानुसार है:–

हिंदी माह कार्यक्रमों के प्रथम दिन 15-8-89 को कर्मचारियों की एक बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक को श्री प्र. ना. शाह, क्षेत्रीय प्रबंधक द्वारा संबोधित किया गया। हिंदी के महत्व पर प्रकाश डलते हुए श्री शाह ने सभी कर्मचारियों से अपना काम हिंदी में ही करने की अपील की । सहायक महाप्रबंधक, अंचलीय कार्यालय, पुणे की 16 अगस्त से 14 सितम्बर 90 तक कार्य हिंदी में करने की अपील को भी दोहराया गया ।

इसके पश्चात् सभी कर्मचारियों ने अपना कार्य हिंदी में करने का संकल्प लिया ।

कहानी प्रतियोगिता का आयोजन क्षेत्रा धीन सभी कर्मचारियों के लिए किया गया था। यह प्रतियोगिता कर्मचारियों को अपने विचार हिंदी में लिखने की क्षमता को प्रोत्साहित करने हेतु आयोजित की गई थी । निम्नलिखित प्रतिभागियों की रचनाएं पुरस्कार के लिए पात्र रही :–

प्रथम	श्री दे ता. आहिरे,	मलेगांव शाखा
द्वितीय	श्री दि. ग. खैरनार श्री मु. स. जोशी,	मालेगांव शाखा एवं जालना शाखा
तृतीय	श्रीमती सुप्रिया जांभेकर श्री द. वा. पाटणेकर	क्षे. का. नासिक एवं जलगांव

व्यंग्य काव्य प्रतियोगिता

इस प्रतियोगिता में भी क्षेत्रीय कार्यालय और क्षेत्राधीन शाखाओं के कर्मचारियों से रचनाए आमंत्रित की गई थी । कर्मचारियों ने काफी अच्छे-अच्छे व्यंग्य प्रस्तुत किये। कुल पांच रचनाएं प्राप्त हुई । परिणाम निम्नानुसार है :–

प्रथम	श्री विजय मारणे	क्षे. का. नासिक
द्वितीय	श्री मु. सु. जोशी	जालना शाखा
तृतीय	श्री भ. जि. सूर्यवंशी	क्षे. का. नासिक

तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता

यह प्रतियोगिता बैंकिंग, हिंदी और सामान्य ज्ञान पर आधारित विभिन्न विषयों पर भाषण करने के लिए कर्मचारियों को आमंत्रित किया गया था। इस प्रतियोगिता में मूल्यांकन के रूप में श्री आर. के. गुप्ता, राजभाषा अधिकारी, भारत प्रतिभूति मुद्रणालय को आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री दि. दि. घाटगे, प्रबंधक (ऋण') द्वारा की गई। इस प्रतियोगिता में कर्मचारियों ने काफी दिलचस्पी एवं उत्साह से भाग लिया। कुल 14 प्रविष्टियां प्राप्त हुई। परिणाम निम्नानुसार है:—

प्रथम	श्री ए. एम. पाटील एवं श्रीमती जी. के. देसाई
द्वितीय	श्री उमेश गोखले एवं डां. श्री एस. जे. खरवडे
तृतीय	श्री डी. टी. देशपांडे एवं श्री बा. न. जोशी

हिन्दी दिवस

दिनांक 14-9-89 को हिंदी दिवस के अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालय में यह निर्णय लिया गया कि सभी कर्मचारी अपना कामकाज केवल हिंदी में ही करेंगे। शाखाओं को इस दिन बैठक का आयोजन करने और संकल्प लेने के निर्देश दिए गए थे। जिनका शाखाओं द्वारा अनुपालन किया गया।

वाद-विवाद प्रतियोगिता

हिंदी दिवस/माह से संबंधित अंतिम कार्यक्रम के रूप में क्षेत्रीय कार्यालय एवं स्थानी य शाखाओं के कर्मचारियों के लिए वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

स्टीकर्स का विमोचन एवं समापन समारोह

हिंदी दिवस के अवसर पर इस वर्ष आकर्षक "स्टिकर्स" प्रकाशित किए गए। उन पर नेहरु जन्मशताब्दी चिह्न अंकित किया गया है। इस पर लिखा गया प्रेरक वाक्य निम्नानुसार है:—

"आंतरिक काम—हिंदी में।
पत्राचार—हिंदी में॥
एक ही लक्ष्य, एक ही नारा।
हिंदी में हों, काम हमारा॥

स्टिकर्स का विमोचन श्री बी. एस. लालचंदानी, उप महा प्रबंधक, (चलार्थ पत्र मुद्रणालय, नासिक) ने किया;

श्री बी. एस. लालचंदानी ने पुरस्कार भी वितरित किए पुरस्कारों के साथ ही साथ आकर्षक प्रशस्ति-पत्र भी प्रदान किए गए।

कार्यक्रम का संचालन श्री राधेश्याम गुप्ता, राजभाषा अधिकारी ने किया और श्री भ. जि. सूर्यवंशी ने सभी आमंत्रितों एवं उपस्थितों को धन्यवाद दिया।

विजया बैंक

अहमदाबाद

श्रीयुत् मावलैंकर पूर्ण सांसद, आदर्श शिक्षक, प्रखर पत्रकार, वक्ता तथा हैराल्ड लैस्की इंस्टिट्यूट ऑफ पॉलिटिकल साइंस जैसी अंतर्राष्ट्रीय मान्यताप्राप्त संस्था के संस्थापक और निर्देशक होने के अतिरिक्त राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा के उपाध्यक्ष हैं।

हिन्दी दिवस समारोह 14 सितंबर को आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता प्रभागीय प्रबंधक श्री एस. लक्ष्मीकांत हेगड़े ने की। समारोह में प्रभागीय कार्यालय, प्रभागीय लेखा कार्यालय तथा अहमदाबाद की सभी 7 शाखाओं के शाखा प्रबंधक तथा स्टाफ सहित 150 से अधिक लोग उपस्थित थे। समारोह का आयोजन मेहदी नवाज़ जंग हौल पालड़ी में किया गया था।

"बैंकों का काम-काज हिन्दी में होने का मतलब है—जन-जन की सेवा, क्योंकि बैंक सार्वजनिक संस्थान हैं।"

—पुरुषोत्तम गणेशमावलंकार

अध्यक्ष श्री हेगड़े ने प्रभाग में हिन्दी के प्रयोग संबंधी वक्तव्य में कहा कि "हिन्दी दिवस ऐसा दर्पण है, जिसमें हम देख सकते हैं कि बैंक के कामकाज में हिन्दी का प्रयोग करने की जो जिम्मेदारी हम पर है, हम उसे कितना निभा रहे हैं।" उन्होंने जोर देकर स्पष्ट किया कि "हिन्दी के बारे में हमारे अपने विचार चाहे जो भी हों लेकिन बैंक-कर्मी होने के नाते यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम बैंक का काम-काज हिन्दी में करें और यह जिम्मेदारी हमारे कर्तव्य में सम्मिलित है।" इसी प्रसंग में उन्होंने शाखा प्रबंधकों से विशेष रूप से आग्रह कया कि वे इस जिम्मेदारी को गंभीरता से लें।

उद्घाटन वक्तव्य में श्रीयुत् मावंकर ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए निम्नलिखित बातें की ओर ध्यान दिलाया—

(1) प्रेम से और प्रोत्साहन देते हुए हिन्दी का प्रयोग किया जाए।

(2) हिन्दी भाषा में भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों का प्रयोग करने में संकोच न किया जाए।

(3) हिन्दी का प्रयोग नम्रता से और धैर्यपूर्वक बढ़ाया जाए।

उन्होंने भव्य आयोजन समय-निष्ठा और सुघड़ प्रस्तुति के लिए विजय बैंक की सराहना की।

इसके बाद बैंक-कर्मचारियों ने विविध कार्यक्रम; जैसे स्व-रंजित काव्य पाठ, नव रस-दर्शन, गीत-गायन आदि प्रस्तुत किए। मूक एवं बधिर कर्मचारी श्री मोहनलाल मालवीय द्वारा प्रस्तुत "मिमिक्री" की बहुत सराहना हुई।

प्रतियोगिताएं

हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में निम्नलिखित प्रतियोगिता आयोजित की गई–

(1) हिन्दी निबंध प्रतियोगिता

(2) हिन्दी पत्र (प्रारुप) लेखन प्रतियोगिता

दिनांक 1-8-89 से 16-8-89 तक "हिन्दी पक्ष" के दौरान आयोजित प्रतियोगिता में 215 पत्रों में से 5 प्रविष्टियां पुरस्कार के लिए चुनी गई और जिस शाखा ने इस अवधि में सर्वाधिक हिन्दी पत्र जारी किये उसे "यशस्वी शाखा" घोषित किया गया ।

पुरस्कार

हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता

इसमें निम्नलिखित प्रतियोगी पुरस्कृत हुए–

प्रथम –श्री नागेश भट्ट, प्रभागीय लेखा कार्यालय

द्वितीय –श्री शांतिलाल ठक्कर, प्रभागीय कार्यालय

सांत्वना –श्री पंकज आर शाह, सरसपुर शाखा

पत्र (प्रारूप) लेखन प्रतियोगिता

इस प्रतियोगिता में निम्नलिखित प्रतियोगी पुरस्कृत हुए—

(1) श्री कमलेश आर. वुच, लिपिक, जूनागढ़ शाखा इन्होंने हिन्दी पक्ष के दौरान सर्वाधिक 102 पत्रों के प्रारूप हिन्दी में बनाकर शाखा से जारी किये।

(2) श्री निवास भट्ट, शाखा प्रबंधक, जूनागढ़ । इन्होंने 70 पत्रों के प्रारूप हिन्दी में बनाकर शाखा से जारी किए ।

"यशस्वी शाखा" जूनागढ़ शाखा :–

पिछले वर्ष की तरह इस वर्ष भी जूनागढ़ शाखा ने "यशस्वी शाखा" होने का सम्मान प्राप्त किया । शाखा से "हिन्दी पक्ष" के दौरान 182 पत्र हिन्दी में प्रारुपित करके भेजे गये थे ।

सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में आयोजित यह समारोह, प्रभागीय लेखा कार्यालय के वरिष्ठ प्रबंधक श्री ए.सी. त्रिवेदी द्वारा आभार-ज्ञापन के साथ ही सम्पन्न हुआ । कार्यक्रम का संचालन, प्रभागीय राजभाषा अधिकारी श्री भुवनचंद्र जोशी ने किया।

सेन्ट्रल बैंक आफ इंडिया, आगरा

आंचलिक कार्यालय परिसर, आगरा क्षेत्रीय कार्यालय तथा स्थानीय शाखाओं द्वारा 16-9-89 को संयुक्त रूप से हिन्दी दिवस समारोह श्री भुवनेश मल्होत्रा मुख्य प्रबंधक की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। समारोह की मुख्य अतिथि थी सेंट जॉन्स कालेज, आगरा के हिन्दी विभाग की अध्यक्षा डा. (श्रीमती) कमला पाण्डे ।

राजभाषा अधिनियम रजत जयन्ती समारोह में मुख्य वक्ता क रूप में डा. एन.वी. राजगोपालन आमंत्रित थे जिन्होंने कर्मचारियों को हिन्दी को राजभाषा बनाए जाने के इतिहास की जानकारी के साथ-साथ राजभाषा अधिनियम की विशिष्टता तथा प्रसंगकिता के विषय में अपने विचार व्यक्त किए ।

मुख्य समारोह से पूर्व डा. राम कलम पाण्डेय वरिष्ठ प्राध्यापक, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के मुख्य अतिथ्य में तीन हिन्दी प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गई । 14-9-89 को आगरा क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा एक हिन्दी वाक्स्पर्धा का भी आयोजन किया गया ।

अंत में नौवीं अखिल भारतीय हिन्दी निबंध प्रतियोगिताओं द्वितीय आंचलिक हिन्दी निबंध प्रतियोगिता तथा हिन्दी सप्ताह के दौरान आयोजित हिन्दी प्रतियोगिताओं के पुरस्कार वितरित किए गए तथा हिन्दी श्रेष्ठ काय करने वाले कर्मचारियों को केन्द्रीय कार्यालय से प्राप्त प्रशस्ति पत्र वितरित किए गए ।

सेंट्रल बैंक आफ इंडिया,
क्षेत्रीय कार्यालय रोहतक

क्षेत्रीय कार्यालय रोहतक में 11 सितम्बर से 16 सितम्बर 89 तक हिन्दी सप्ताह मनाया गया । 14-9-89 को एक रंगारंग कार्यक्रम/पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया जिसमें क्षेत्रीय कार्यालय (मुख्यालय) दोनों स्थानीय शाखाओं तथा विस्तार पटलों में कार्यरत सभी कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया ।

राजभाषा अधिकारी श्री के.एल. पहूजा, ने रंगारंग कार्यक्रम के पश्चात पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं म विजेता कर्मचारियों को पुरस्कार दिए गए ।

सर्वप्रथम आंचलिक कार्यालय चण्डीगढ़ द्वारा आयोजित छठी आंचलिक हिन्दी निबंध प्रतियोगता में विजेता कर्मचारियों को पुरस्कार वितरण/प्रदान किए गए । ज्ञातव्य है कि छठी आंचलिक हिन्दी निबंध प्रतियोगिता में द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार रोहतक क्षेत्र के पक्ष में रहे हैं जिनका विवरण निम्न प्रकार है :–

द्वितीय पुरस्कार कुमारी आशा रानी डांग, क्षेत्रीय कार्यालय रोहतक

तृतीय पुरस्कार श्रीमती नरेश बत्तरा, क्षेत्रीय कार्यालय रोहतक ।

इसके अतिरिक्त "क" क्षेत्र में हिन्दी में प्रशंसनीय कार्य कर रही शाखाओं के लिए पुरस्कार योजना के अर्न्तगत वर्ष 1986,87 एवं 88 की सर्वश्रेष्ठ शाखाओं को सम्मानित किया गया । इन शाखाओं के शाखा प्रबंधकों को इस अवसर पर कप प्रदान किए गए । रोहतक क्षेत्र की रिण्ढ़ाणा, बडौपल एवं घसौली शाखाएं क्रमश: वर्ष 86,87 एवं 88 की सर्वश्रेष्ठ शाखाएं चुनी गई हैं ।

श्री जी.के. भुटटन, क्षेत्रीय प्रबंधक ने इस अवसर पर कर्मचारियों से बैंक के कार्यों में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करने का आग्रह किया एवं अपने बहु-मूल्य अनुभवों एवं सुझावों से अवगत कराया । उन्होंने समारोह की सफलता के लिए क्षेत्रीय कार्यालय में कार्यरत सभी सदस्यों को बधाई दी ।

अपने अध्यक्षीय भाषण में डा. हेमराज निर्मम, रीडर, हिन्दी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक ने क्षेत्रीय कार्यालय रोहतक द्वारा हिन्दी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए किए जा रहे सराहनीय प्रयासों के लिए सराहना की एवं कार्यक्रम के कुशल संचालन के लिए कर्मचारियों को बधाई दी ।

पंजाब नेशनल बैंक
प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली

पंजाब नेशनल बैंक के प्रधान कार्यालय, दिल्ली अंचल व तीनों क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा 9 से 15 सितम्बर, 1989 तक सम्मिलित रूप से हिन्दी सप्ताह मनाया गया । इस दौरान दिल्ली में कार्यरत सभी कर्मचारियों/अधिकारियों के लिए 11 सितम्बर, 1989 को अंचल प्रशिक्षण केन्द्र, नई दिल्ली में (1) "हिन्दी ज्ञान प्रतियोगिता व (2) "आशुभाषण प्रतियोगिता" आयोजित की गई । हिन्दी सप्ताह का समापन समारोह 15 सितम्बर, 1989 को आईपैक्स सभागार में श्री राशिद जीलानी, कार्यकारी निदेशक की अध्यक्षता में आयोजित किया गया । श्री आर.वी. शास्त्री, उप महाप्रबन्धक ने अपने स्वागत भाषण में बैंक द्वारा हिन्दी में किए जाने वाले कार्यों पर प्रकाश डालते हुए राजभाषा प्रयोग सम्बन्धी अपेक्षाओं के पूर्णतः अनुपालन की आवश्यकता पर बल दिया ।

श्री राशिद जीलानी, कार्यकारी निदेशक द्वारा पुरस्कार वितरित किए गए । पुरस्कार वितरण में प्रमुख पुरस्कार प्रधान कार्यालय राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता, 1988-89 के थे, जिन्हें ग्रहण करने के लिए विजेता क्षेत्रों से क्षेत्रीय प्रबंधक प्रधान कार्यालय के प्रभागों के सहायक महाप्रबन्धक मुख्य व प्रशिक्षण केन्द्रों के प्रशिक्षण प्रबन्धक व सम्बन्धित राजभाषा अधिकारी उपस्थित थे । इसी अवसर पर दिल्ली अंचल की अंचल कार्यालय राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता तथा उनकी त्रैमासिक पत्रिकाओं में प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ रचनाओं से सम्बन्धित पुरस्कार भी वितरित किए गए । पुरस्कार प्राप्त करने वाले अधिकारियों को बधाई देते हुए जीलानी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए बैंक द्वारा किए जा रहे प्रयासों का उल्लेख किया और कहा कि सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए हर सम्भव कोशिश की जानी चाहिए ।

सेंट्रल बैंक आफ इंडिया
क्षेत्रीय कार्यालय, सिकन्द्राबाद (आंध्र प्रदेश)

दिनांक 13-9-89 को सिकन्दराबाद शाखा में हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया जिसमें आंचलिक कार्यालय से मुख्य प्रबंधक श्री ए.वी.राव, मुख्य अतिथि के रूप में पधारे ।

राजभाषा अधिकारी ने वर्ष 1988-89 में क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा किए गए कार्यों का संक्षिप्त विवरण दिया श्री सैय्यद अहमद भाषा क्षेत्रीय प्रबंधक ने क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा किए जा रहे कार्यों का विस्तार से विवरण दिया ।

इस अवसर पर निम्न दो प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया ।

1. **भाषण प्रतियोगिता** (विषय—हम अपनी जमा राशि को किस प्रकार बढ़ा सकते हैं ।)

इस प्रतियोगिता में 6 कर्मचारियों ने भाग लिया । कुमारी कामेश्वरी, श्री प्रमोद वलसंगकर, श्री मधुसूदन तथा श्री चन्द्रशेखर क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ स्थान पर रहे ।

2. **गीत प्रतियोगिता** : इसमें 6 कर्मचारियों ने भाग लिया श्री सुरेश मूर्ति, श्रीमती सौजन्यवती, तथा श्रीमती सूर्यकान्तमा क्रमशः प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान पर रहीं ।

वर्ष 1988-89 में गोलकोण्डा तथा चारमीनार शाखा ने राजभाषा नीति के पालन में सबसे ज्यादा योगदान दिया ; अतः क्षेत्रीय प्रबंधक ने शाखा प्रबंधक गोलकोण्डा, शाखा प्रबंधक चारमीनार (अब शाखा प्रबंधक रामायणपेट) तथा उपलेखाकार श्री ए. बालरतनम को प्रशस्ति पत्र प्रदान किए ।

वर्ष 1988 में दो कर्मचारियों ने हिन्दी टाइपिंग प्रशिक्षण पास किया था । सरकार द्वारा भेजे गये प्रमाणपत्रों को श्रीमती टी मुकुन्दा तथा श्रीमती देवकी तारा को प्रमाण पत्र क्षेत्रीय प्रबंधक ने प्रदान किए ।

निबंध प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता तथा गीत प्रतियोगिता के पुरस्कार भी क्षेत्रीय प्रबंधक महोदय ने प्रदान किए ।

सिकन्दराबाद शाखा के प्रबंधक श्री पद्दोराजू सहाब ने धन्यवाद ज्ञापन दिया । श्री आर पी अग्रवाल, राजभाषा अधिकारी ने सभी अधिकारियों को तथा कर्मचारियों को इस कार्यक्रम के लिए धन्यवाद दिया ।

सेंट्रल बैंक आफ इंडिया, जबलपुर

क्षेत्र की सभी 56 शाखाओं एवं 4 विस्तार पटल दिनांक 14-9-89 को हिन्दी दिवस एवं दिनांक 14 से 19-9-89 तक हिन्दी सप्ताह मनाया

गया । इस दौरान क्षेत्र की सभी शाखाओं/कार्यालयों के द्वारा शतप्रतिशत कार्य हिन्दी में किया गया ।

समारोह से संबंधित निम्नलिखित शाखाओं के विवरण प्राप्त हुए हैं, जिनके द्वारा समारोह के दौरान कोई एक हिन्दी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसकी विस्तृत रिपोर्ट निम्नानुसार है ।

ग्राहक सम्मेलन

शाखा सिलाण्डी, नेनपुर, मझगवां (कटनी), सरसवाही, ढोमरखेड़ा, खटिया, पाटन, मिलोनोगंज, सिहोरा, वि र (जबलपुर), गंगईबरखेड़ा, तिवड़ी, बेलखेडा, गोकलपुर, जी.सी.एफ. स्टेट विस्तार पटल, हिरदेनगर, धोबीघाट, पिपरिया, बिलहरी (कटनी)

समारोह के साथ ग्राहक सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें तिलोण्डा ग्राम के सम्मानित नागरिकों ने भाग लिया। विचार गोष्ठी में हिन्दी प्रयोग की प्रगति की समीक्षा की गई।

2. हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता--शाखा हरदुआ

शाखा हरदुआ में हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें शाखा के प्रधान खजांची श्री आर.के. श्रीवास्तव प्रथम रहे । उल्लेखनीय है कि शाखा के शाखा प्रबंधक श्री कृष्णन हिन्दी प्रयोग-प्रचार के कार्य को विशेष गंभीरता स लेते हैं और शाखा द्वारा शतप्रतिशत कार्य हिन्दी में किया जा रहा है ।

3. तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता--क्षेत्रीय कार्यालय

क्षेत्रीय कार्यालय में अंतर शाखा तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें निम्नलिखित कर्मचारी विजेता रहे ।

(1) श्री जी.सी.गुप्ता लिपिक गढ़ शाखा प्रथम
(2) श्रीमती नीलिमा श्रीवास्तव लिपिक एम.पी.एच वी द्वितीय
(3) श्री मोहन के मेथ्यू लिपिक क्षेत्रीय कार्यालय तृतीय

4. हिन्दी प्रश्न मंच कार्यक्रम

एम.पी.हा. बोर्ड शाखा ने सभी कर्मचारियों के लिये प्रश्न मंच (हिन्दी) प्रतियोगिता आयोजन किया गया, जिसमें निम्नलिखित कर्मचारी विजेता रहे । कार्यक्रम क्षेत्रीय प्रबंधक श्री जयकृष्ण टण्डन की पत्नी श्रीमती अर्चना टण्डन के मुख्य आतिथ्य एवं सहायक क्षेत्रीय प्रबंधक को कलंबे की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। आभार प्रदर्शन श्रीमती एस. के. धनेसर, शाखा प्रबंधक ने किया ।

(1) श्री टी.के. मल्लिक	लिपिक	प्रथम
(2) सुनीता वर्मा	लिपिक	द्वितीय
(3) चिंतामणी गौतम	अधीनस्थ कर्म.	तृतीय

5. तत्कालिक भाषण प्रतियोगिता – रीवा

रीवा शाखा में तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें ग्राहकों सहित शाखा के सभी स्टाफ सदस्यों ने सक्रियता से भाग लिया ।

6. भाषण प्रतियोगिता कंटगी शाखा

शाखा में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें स्टाफ सदस्यों के साथ ग्राहकों ने बड़ी संख्या में भाग लिया । प्रतियोगिता में निम्नलिखित स्टाफ सदस्य विजेता रहे ।

(1) श्री प्रशान्त अखोरी	प्रथम
(2) श्री संजय श्रीवास्तव	द्वितीय
(3) श्री वी.पी. लोधी	तृतीय

7. राजभाषा कार्यान्वयन गोष्ठियां

उपर्युक्त शाखाओं के अलावा शेष 31 शाखाओं में हिन्दी दिवस/सप्ताह आयोजन के दौरान हिन्दी प्रयोग-प्रचार को आगे बढ़ाने की दिशा में किए जा रहे प्रयासों की समीक्षा हेतु कार्यान्वयन गोष्ठियां आयोजित की गई ।

8. अंतर बैंक हिन्दी निबंध प्रतियोगिता एवं सामूहिक हिन्दी दिवस का आयोजन

बैंकों की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के निर्णय के अनुसार संपूर्ण क्षेत्र में दिनांक 19-9-89 को सामूहिक हिन्दी दिवस एवं सप्ताह का भी आयोजन किया गया था । इसी सप्ताह के दौरान बैंक द्वारा एक अंतर बैंक हिन्दी निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें निम्नलिखित कर्मचारी विजेता रहे ।

सर्वश्री मोहन के.मेथ्यू	सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया क्षेत्रीय कार्यालय	प्रथम
कन्हैयालाल प्रसाद	पंजाब नेशनल बैंक क्षेत्रीय कार्यालय	द्वितीय
विजयकुमार वजाज	बैंक ऑफ बड़ौदा नेपियर टाउन शाखा	तृतीय
मन मोहन मुखर्जी	पंजाब नेशनल बैंक क्षेत्रीय कार्यालय	सांत्वना

सेंट्रल बैंक, रायपुर

सेन्ट्रल बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय में हिन्दी दिवस मनाने के साथ ही सेन्ट्रल बैंक के क्षेत्रीय कर्यालय में हिन्दी सप्ताह समारोह प्रारंभ हुआ। इस अवसर पर क्षेत्रीय प्रबन्धक श्री ए.पी. खांडेकर की अध्यक्षता में स्टाफ सदस्यों की एक बैठक का आयोजन किया गया ।

अध्यक्षीय उद्‌बोधन में श्री खांडेकर ने हिन्दी दिवस मनाये जाने के पीछे निहित भावना को स्पष्ट करते हुए एक स्वतंत्र एवं प्रभुता सम्पन्न राष्ट्र के लिये उसकी स्वयं की राजभाषा के महत्व को प्रतिपादित किया । राष्ट्र की एकता के लिये सम्पर्क भाषा के रूप में केवल हिन्दी की महत्ती आवश्यकता को निरूपित करते हुए श्री खांडेकर ने अपने कार्यों के सम्पादन में हिन्दी को ही प्राथमिकता देने की सलाह सभी सदस्यों को दी ।

सहायक केन्द्रीय प्रबंधक श्री एम.एल. वचानी ने भी इस अवसर पर उद्‌गार व्यक्त किए और उपस्थित सदस्यों को राजभाषा अधिनियम की जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम का संचालन राजभाषा अधिकारी श्री राजीव अग्रवाल ने किया ।

हिन्दी सप्ताह के दौरान बैंक में विभिन्न प्रतियोगिताओं, विचार गोष्ठियों का आयोजन किया जायेगा । अहिन्दी भाषी सदस्यों को हिन्दी प्रयोग के लिये प्रेरित करने के दृष्टिकोण से विशेष प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जायेगी ।

भारतीय औद्योगिक पुनर्निर्माण बैंक, कलकत्ता

प्रधान कार्यालय, कलकत्ता में 11 से 14 सितम्बर के दौरान हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। हिन्दी सप्ताह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं--हिन्दी सुलेख प्रतियोगिता, हिन्दी हस्ताक्षर प्रतियोगिता, हिन्दी शब्द ज्ञान प्रतियोगिता एवं हिंदी भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

सप्ताह के अन्तिम दिन 14 सितम्बर, 1989 को हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता श्री ए. के. चक्रवर्ती, महाप्रबन्धक ने की तथा समारोह के मुख्य अतिथि थे डा अशरफी झा। डा० अशरफी झा ने राष्ट्रीय एकता के लिए हिन्दी की आवश्यकता पर बल दिया तथा अपने दार्शनिक विचारों से उपस्थित श्रोताओं का मन-मोह लिया। उन्होंने कहा कि आज राष्ट्र भाषा के द्वारा हम देश को आगे बढ़ा सकते हैं तथा हमें अपना कार्यालय का दैनिक कामकाज भारत सरकार की राजभाषा नीति अनुसार हिन्दी में ही करना चाहिए।

हिन्दी सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं तथा हिन्दी शिक्षण योजना के अन्तर्गत पुरस्कारों का वितरण भी इस समारोह में श्री ए. के. चक्रवर्ती महाप्रबन्धक द्वारा किया गया। हिन्दी दिवस के अवसर पर हिन्दी पत्रिका "पुनर्निर्माण" का विमोचन भी इस सुअवसर पर किया गया। "पुनर्निर्माण" में बैंक में वर्ष भर के दौरान की गई हिन्दी गतिविधियों का उल्लेख है।

भारतीय औद्योगिक विकास बैंक, जयपुर

08, से 14, 1989 तक हिन्दी सप्ताह/दिवस मनाया गया। हिन्दी सप्ताह के उद्‌घाटन के अवसर पर उपस्थित बैंक के कार्यपालक निदेशक श्री एस. एच. खान ने एक विशेष बैठक में कार्यालय के सभी स्टाफ सदस्यों को बैंक की सामयिक चुनौतियों का सामना करने की प्रेरणा दी तथा राजभाषा नीति के अनुपालन के संबंध में उन्होंने अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करते हुए कहा कि हमें सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन पर भी पूरा-पूरा ध्यान देना होगा। हिन्दी के प्रयोग को अब केवल पत्राचार तथा अन्य छोटे-छोटे कार्यों तक सीमित न करके उसका अन्य आंतरिक कार्यों जैसे कि कार्यालय नोट आदि में भी अधिकाधिक प्रयोग करना होगा। इन नये आयामों की शुरूआत यदि वरिष्ठ अधिकारी स्तर से प्रारंभ होगी तो कार्यालय में हिन्दी के प्रति अन्य स्टाफ सदस्यों में अभिरुचि पैदा हो जाएगी।

"प्रत्येक कर्मचारी अपना 100 प्रतिशत पत्राचार हिन्दी में करने के अलावा अपने डैस्क के दैनिक कामकाज के किसी एक नए क्षेत्र में हिन्दी में कार्य करने की शुरूआत करें।"

--एस.एच. खान

कर्मचारियों के बीच हिन्दी के प्रति अभिरुचि पैदा करने के लिए कुल पांच प्रतियोगिताओं--राजभाषा प्रश्नावली, आशु निबंध, विकास बैंक शब्दावली, वाद-विवाद तथा काव्य पाठ का सफल आयोजन किया गया। कर्मचारियों ने इन सभी प्रतियोगिताओं में समान रुचि तथा उत्साह से भाग लिया। वस्तुतः ये प्रतियोगिताएं न केवल कर्मचारियों के हिन्दी शब्द ज्ञान तथा राजभाषा नीति संबंधी ज्ञान को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुई अपितु इनसे कर्मचारियों की सृजनात्मक शक्तियों का हिन्दी के उत्तरोत्तर प्रयोग में इस्तेमाल करने में भी सहायता मिली।

हिन्दी सप्ताह के दौरान हमारे कार्यालय के दो स्टाफ सदस्यों ने नाबार्ड, जयपुर द्वारा आयोजित अंतर-बैंक काव्य पाठ प्रतियोगिता में भी भाग लिया। इस प्रतियोगिता में औद्योगिक वित्त अधिकारी श्री के.एस. सिंहवान को तृतीय पुरस्कार मिला।

14 सितम्बर 1989 को हिन्दी सप्ताह के समापन दिवस को "हिन्दी दिवस" के रूप में मनाया गया। इस दिन एक विशेष आयोजन पर कार्यालय के स्टाफ सदस्यों को हिन्दी दिवस के महत्व की जानकारी दी गई तथा हिन्दी सप्ताह की गतिविधियों पर एक रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। प्रसिद्ध हास्य कवि, वर्ष 1988 के काका हाथरसी पुरस्कार विजेता श्री बेंकट बिहारी "पागल" जी को आमंत्रित किया गया। सभी कर्मचारियों ने उनकी हास्य कविताओं का आनन्द लिया। अंत में, पुरस्कार वितरण समारोह किया गया, इसमें प्रबन्धक श्री आई.एल. छाबड़ा द्वारा सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किये गए।

आंतरिक कामकाज के अलावा लक्ष्य के अनुरूप इस दौरान 100 प्रतिशत पत्राचार हिन्दी में ही हुआ।

भारतीय स्टेट बैंक, रायपुर

भारतीय स्टेट बैंक, आंचलिक कार्यालय के राजभाषा अधिकारी श्री के.एल.डे ने जानकारी दी है कि प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी भारतीय स्टेट बैंक के केन्द्रीय कार्यालय व स्थानीय प्रधान कार्यालयों, आंचलिक कार्यालयों एवं शाखाओं में देशव्यापी राजभाषा मास 1 से 30 सितम्बर तक मनाया जा रहा है।

हिन्दी में कार्य करने में हो रही प्रगति पर प्रकाश डालते हुए श्री डे ने बताया कि दिसम्बर 1988 में हिन्दी में पत्र लेख का प्रतिशत 60 रहा एवं तार भेजने का प्रतिशत 94 रहा जबकि जून 1989 में यह प्रतिशत बढ़कर क्रमशः 76 एवं 97 हो गया है। हिन्दी को बैंक में बढ़ावा देने के लिये "हिन्दी का प्रगामी प्रयोग" शीर्षक से बिलासपुर, रायपुर, एवं जगदलपुर में एक एक दिन की कार्यशालायें आयोजित की गई थीं जिसमें लगभग 600 कर्मचारी, अधिकारियों ने बैंक में हिन्दी के सरल प्रयोग की शिक्षा प्राप्त की। इसके अतिरिक्त प्रयोजन शील हिन्दी शिक्षण पर भी रायपुर, बिलासपुर, रायगढ़, जगदलपुर एवं भिलाई में भी 2-2 दिन, की 6 कार्यशालाएं आयोजित की गई थीं जिसमें लगभग 1000 अधिकारी/कर्मचारियों ने भाग लिया। इसी आंचलिक कार्यालय के कर्मचारी श्री शकील साजिद को मंडल स्तरीय प्रतियोगिता में प्रथम स्थान मिला।

भारतीय स्टेट बैंक

आंचलिक कार्यालय, राजभाषा अनुभाग, रायपुर : प्रगति विवरण

		भेजे गये कुल पत्र	हिन्दी में भेजे गये पत्रों की संख्या	हिन्दी पत्राचार का प्रतिशत	भेजे गये कुल तार	हिन्दी में भेजे गये तार	हिन्दी में तार का प्रतिशत
जनवरी	1986	..	..	..	..	..	..
	1987	..	..	..	..	..	..
	1988	3675	1575	43 प्रतिशत	..	..	..
फरवरी	1986	..	..	..	..	..	..
	1987	3760	1058	28 प्रतिशत	..	..	..
	1988	4782	2180	46 प्रतिशत	..	..	..
मार्च	1986	15936	3542	22.22 प्रतिशत	1134	70	6.17 प्रतिशत
	1987	3512	912	26 प्रतिशत	..	..	..
	1988	5639	2361	42 प्रतिशत	..	..	..
अप्रैल	1986	4465	1075	24 प्रतिशत	669	71	10.61 प्रतिशत
	1987	..	..	..	..	..	..
	1988	4993	2721	54 प्रतिशत	..	..	..
मई	1986	4444	1593	36 प्रतिशत	575	67	11.65 प्रतिशत
	1987	..	..	..	..	..	..
	1988	4025	2293	57 प्रतिशत	..	..	..
जून	1986	9801	3804	39 प्रतिशत	1444	224	15.51 प्रतिशत
	1987	4583	1120	24.4 प्रतिशत	..	..	..
	1988	2979	1515	51 प्रतिशत	..	..	..
जुलाई	1986	..	..	..	..	..	..
	1987	5559	1991	36 प्रतिशत	..	..	..
	1988	4561	2179	48 प्रतिशत	..	..	..
अगस्त	1986	..	..	..	..	..	..
	1987	4956	1712	35 प्रतिशत	..	..	..
	1988	5247	3110	60 प्रतिशत	481	348	72 प्रतिशत

		1	2	3	4	5	6
सितम्बर	1986	11859	2831	24 प्रतिशत	1703	221	13 प्रतिशत
	1987	..	..	..	..	..	..
	1988	6306	4136	65.5 प्रतिशत	940	839	89 प्रतिशत
अक्टूबर	1986	..	..	..	..	..	..
	1987	4138	1153	28 प्रतिशत	..	..	..
	1988	5968	3556	61 प्रतिशत	550	503	91 प्रतिशत
नवम्बर	1986	..	..	..	..	..	..
	1987	3461	1132	33 प्रतिशत	..	..	..
	1988	5041	3129	62 प्रतिशत	649	597	92 प्रतिशत
दिसम्बर	1986	..	..	..	..	..	..
	1987	4703	1946	41.3 प्रतिशत	..	..	..
	1988	4749	2840	60 प्रतिशत	521	488	94 प्रतिशत
जनवरी	1989	6084	4077	67 प्रतिशत	613	580	95 प्रतिशत
फरवरी	1989	5447	3250	60 प्रतिशत	432	408	94 प्रतिशत
मार्च	1989	4085	2511	61 प्रतिशत	559	526	94 प्रतिशत
अप्रैल	1989	3997	2559	64 प्रतिशत	432	399	92 प्रतिशत
मई	1989	4548	2977	66 प्रतिशत	248	223	90 प्रतिशत
जून	1989	4153	3141	76 प्रतिशत	663	644	97 प्रतिशत
जुलाई	1989	5447	4281	78 प्रतिशत	987	959	97 प्रतिशत
अगस्त	1989	4129	3241	79 प्रतिशत	689	630	92 प्रतिशत

केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, चंडीगढ़

दिनांक 14-09-89 को अंचल कार्यालय परिसर में हिन्दी दिवस आयोजित किया गया। 15 अगस्त 1989 से 14 सितम्बर 1989 तक 'हिन्दी मास' के रूप में मनाया गया। सभी शाखाओं को अपना अधिकाधिक काम हिन्दी में करने के लिए कुछ कार्यक्षेत्र भी निर्धारित किए गए। सभी शाखाओं के लिए निबन्ध लेखन एवं कहानी लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जिसमें कर्मचारियों ने काफी उत्साह से भाग लिया। दोनों प्रतियोगिताओं के लिये लगभग 31 प्रविष्टियां प्राप्त हुई। प्रतियोगिताओं का परिणाम निम्न प्रकार रहा :—

निबन्ध प्रतियोगिता

श्री जे.एल. डेहरा	शाखा पानीपत	प्रथम
श्री एस.के. भारद्वाज	ग्राहक सेवा अनुभाग (अं.का.)	द्वितीय
श्रीमति गुरमीत अरोड़ा	कर्मचारी अनुभाग (का) अं.का.	तृतीय

कहानीलेखन : प्रतियोगिता

श्री राजकुमार बंसल	कर्मचारी अनुभाग (अ) अं.का.	प्रथम
श्री संजय डबराल	परिसर अनुभाग (अं.का.)	द्वितीय
श्री ए. भार्गव रामा	कर्मचारी अनुभाग (अ) अं.का.	तृतीय

इसके अतिरिक्त अंचल कार्यालय एवं स्थानीय शाखाओं के लिए विभिन्न निम्नलिखित प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया :—;

1. टिप्पणी एवं प्रारूप लेखन (हिन्दी भाषी)
2. वाक्य संरचना (अहिन्दी भाषी)
3. आशुभाषण प्रतियोगिता (हिन्दी भाषी)
4. आशुभाषण प्रतियोगिता (अहिन्दी भाषी)
5. वाद-विवाद प्रतियोगिता,
6. सांस्कृतिक कार्यक्रम,
7. कविता पाठ ।

सभी प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों के अतिरिक्त अन्य कर्मचारियों ने भी काफी उत्साह से भाग लिया। सभी विजेताओं को 14 सितम्बर 1989 अंचल कार्यालय में आयोजित हिन्दी दिवस समारोह में पुरस्कृत किया गया।

विजेताओं की सूची निम्न प्रकार हैं :—

टिप्पणी एवं प्रारूप लेखन

श्री अशोक बजाज	कर्मचारी अनुभाग (क)	प्रथम
श्री राजकुमार ओबराय	कर्मचारी अनुभाग (अ)	द्वितीय
श्रीमति नीरू सरदाना	कर्मचारी अनुभाग (क)	तृतीय

वाक्य संरचना

श्रीमती कमला पार्थसारथी	35-बी, चंडीगढ़	प्रथम
श्रीमती वसुधा पी. कामत	प्र.सू.यो.वि. अनुभाग	द्वितीय
श्री वी. पार्थ सारथी	कर्मचारी अनुभाग (क)	तृतीय

आशुभाषण प्रतियोगिता (वर्ग 1)

श्री एल.एन. आर्या	35-बी, चंडीगढ़	प्रथम
श्री एस.के. जैन	17-सी, चंडीगढ़	द्वितीय
श्री ए.के. अग्रवाल	परिसर एवं संपदा अनुभाग	तृतीय

आशुभाषण] प्रतियोगिता (वर्ग 2)

श्री वी० पार्थ सारथी	कर्मचारी अनुभाग (का)	प्रथम
श्री डी. मुरलीधर राव	अनुशासनिक कार्रवाई कक्ष	द्वितीय
श्री जी. जय चन्द्रा	कृषि एवं वित्त अनुभाग	तृतीय

वाद विवाद प्रतियोगिता

श्री अशोक अग्रवाल	परिसर एवं संपदा अनुभाग	प्रथम
श्री डी. मुरलीधर राव	अनुशासनिक कार्रवाई कक्ष	द्वितीय
श्री संजय डबराल	परिसर एवं संपदा अनुभाग	तृतीय
श्री एल.एन. आर्या	35-बी, चंडीगढ़]	तृतीय

सांस्कृतिक कार्यक्रम

श्री एल.एन. आर्या	35-बी, चंडीगढ़	प्रथम
कुमारी गायत्री	आई.पी.पी. अनुभाग	द्वितीय
श्री सुरजीत सिंह	12-सी, चंडीगढ़	तृतीय

कविता पाठ

श्री वी.एस. बतरा	कपूरथला मैन	प्रथम
श्री अश्वनी कुमार टिक्कू	आ.नि. अनुभाग	द्वितीय
श्री संजय डबराल	परिसर एवं संपदा अनुभाग	तृतीय

हिन्दी दिवस समारोह का मुख्य कार्यक्रम 14 सितम्बर को अंचल कार्यालय परिसर में सहायक महाप्रबंधक श्री आर. ज. कामत की अध्यक्षता में आरम्भ हुआ। इस अवसर पर पंजाब विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डा. धर्मपाल मैनी को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। अंचल कार्यालय के समस्त एवं मंडल कार्यालय एवं स्थानीय शाखाओं के अधिकांश कर्मचारियों के अतिरिक्त अन्य बैंकों एवं संस्थाओं के अधिकारी/कर्मचारी भी समारोह में उपस्थित थे।

मुख्य अतिथि डा. धर्मपाल मैनी ने बैंक की राजभाषा अक्षय योजना के पुरस्कार विजेता मंडल कार्यालय, अनुभाग एवं शाखाओं तथा हिन्दी मास के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेता कर्मचारियों को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र वितरित करके कर्मचारियों का उत्साहवर्धन किया। इसके अतिरिक्त वर्ष में हिन्दी में सर्वाधिक कार्य करने वाल कर्मचारियों की श्रेष्ठता प्रमाण पत्र एवं गृह मंत्रालय भारत सरकार के द्वारा जून 1989 में ली गई प्रबोध परीक्षा में सफल बैंक के कर्मचारियों को भी प्रमाण पत्र प्रदान करते हुए उन्होंने कहा कि—

हिन्दी एक भाषा ही नहीं है, यह एक संस्कृति है।

—डा. धर्मपाल मैनी

हिन्दी एक भाषा ही नहीं है यह एक संस्कृति है। एक अन्तरआत्मा की आवाज है हिन्दी इस राष्ट्र की आत्मा है। यह इसलिए नहीं कि सरकार ने इस के लिए नियम अधिनियम बनाए बल्कि इसलिए है क्योंकि वास्तव में इस की जडे भारत की भूमि में फैली हुई है। उन्होंने आगे कहा कि "यह जरूरी नहीं है कि कानून के भय से ही कोई कार्य लागू किया जाए बल्कि भाषा जैसे विषय अपनी आन्तरिक आवाज के बल पर ही स्वीकार्य होता है। प्रत्येक भारतवासी यदि अपने अन्तर्मन से पूछे तो निश्चित रूप से सभी भाषाओं से उभर कर हिन्दी अग्रणी पंक्ति में खड़ी होती है।"

अध्यक्षीय भाषण के अंचल के सहायक महाप्रबंधक श्री कामत ने सर्वप्रथम 'ख' क्षेत्र के लिए चंडीगढ़ अंचल को वर्ष 1988 के लिए केनरा बैंक राजभाषा अक्षय योजना के अन्तर्गत सर्वश्रेष्ठ अंचल घोषित किये जाने पर सभी कर्मचारियों को बधाई दी तथा इसे बरकरार रखने के लिए और अधिक प्रयास एवं कार्य हिन्दी में करने की अपील की।

कार्यक्रम का संचालन राजभाषा अधिकारी श्री एस. सी. गौड़ ने किया।

केनरा बैंक, जयपुर

मंडल कार्यालय की समस्त शाखाओं और मंडल कार्यालय में हिन्दी मास (14 अगस्त से 14 सितंबर तक) मनाया गया।

(1) हिन्दी वाक् प्रतियोगिता

18 अगस्त 1989 को मंडल कार्यालय परिसर में "बैंक राष्ट्रीयकरण के दो दशक एक विश्लेषण" विषय पर वाक प्रतियोगिता आयोजित की गई,

निम्नलिखित कर्मचारी विजेता घोषित किए गए :--

प्रथम --श्री राजेन्द्र पाटनी (12475) लेखाकार
अत्यधिक बड़ी शाखा, जयपुर ।

द्वितीय --श्री एम. उन्नीकृष्णन (10041) लेखाकार
मंडल कार्यालय, जयपुर ।

तृतीय --(1) श्री विनोद शर्मा (11060) लेखाकार
अत्यधिक बड़ी शाखा, जयपुर

(2) श्री ओम प्रकाश (51309) लिपिक
एम. आई. रोड, जयपुर शाखा ।

(2) बैंकिंग विकास जागरूकता अभियान में केनरा बैंक का योगदान

राज्यस्तरीय बैंकर समिति के संयोजन में आयोजित उपयुक्त अभियान दिनांक 19 से 21 सितंबर 89 तक आयोजित किया गया । इस अभियान से संबंधित समस्त क्रिया कलापों में हिन्दी का ही प्रयोग किया गया। राज्यस्तरीय बैंकर समिति की हिन्दी में श्रेष्ठ कार्य के लिए चल वैजयन्ती योजना 1988 के अंतर्गत दिनांक 19 सितंबर को मुख्य समारोह केन्द्रीय भूतल परिवहन राज्य मंत्री श्री राजेश पायलेट की उपस्थिति में राज्य के मुख्यमंत्री श्री शिवचरण माथुर ने इस योजना के अंतर्गत हिन्दी के श्रेष्ठ कार्य के लिए उपमहाप्रबंधक श्री एन आर चिदंबरम को प्रशंसा-पत्र प्रदान किया गया ।

(3) भरतपुर शाखा में विशेष बैठक

दिनांक 9 सितम्बर 1989 को भरतपुर शाखा में मंडल प्रबन्धक की अध्यक्षता में विशेष बैठक--हिन्दी का प्रयोग विषय पर रखी गई ।

4. दूरदर्शन पर हिन्दी दिवस

जयपुर दूरदर्शन द्वारा हिन्दी दिवस की पूर्व संध्या पर मंडल प्रबन्धक श्री वी. वी. कामत का नवभारत टाइम्स के एक वरिष्ठ पत्रकार द्वारा लिया गया साक्षात्कार 'बैंकों में हिंदी'' विशेष रूप से प्रसारित किया गया।

5. जयपुर में विशेष बैठकों का आयोजन :

कर्मचारियों के मार्गदर्शन के लिए मंडल कार्यालय ( ) एम. आई. रोड (11-9-89) तथा अत्यधिक बड़ी शाखा जयपुर (13-9-89) से विशेष हिन्दी स्टाफ बैठकें आयोजित की गई ।

6. हिन्दी मास के दौरान टंककों की प्रतिनियुक्ति

उदयपुर तथा अजमेर शाखाओं के टंककों की भारत सरकार के गहन टंकण प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में भाग लेने हेतु केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, दिल्ली स्थित केन्द्रों में प्रतिनियुक्ति की गई है ।

हिन्दी दिवस :

14 सितम्बर 1989 को

केनरा बैंक, जयपुर में हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह में राजस्थान विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डा. हीरालाल माहेश्वरी मुख्य अतिथि रहे। उन्होंने बैंक कर्मचारियों का मार्गदर्शन करते हुए कहा कि देश का भविष्य राजभाषा हिन्दी पर निर्भर है। हिन्दी का प्रश्न हमारी आस्मिता का प्रश्न हैं। हमारी अस्मिता या पहचान बनाए रखने के लिए राष्ट्र की एक भाषा होनी चाहिए जिसके लिए एक मात्र राष्ट्रभाषा हिन्दी है । मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई कि इसको आगे बढ़ाने में केनरा बैंक ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है ।

राजभाषा अधिकारी रमेश चन्द ने मुख्य अतिथि का परिचय तथा बैंक द्वारा प्राप्त की गई उपलब्धियों की चर्चा की ।

केनरा बैंक मंडल कार्यालय, नई दिल्ली

हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में केनरा बैंक दिल्ली मंडल द्वारा दिल्ली में स्थित शाखाओं हेतु एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का विषय था ''राष्ट्रीय एकता में हिंदी का योगदान'' ।

प्रतियोगिता में केनरा बैंक दिल्ली अंचल के मंडल प्रबंधक श्री बी. एन. आर. पै ने अध्यक्षता की तथा उन्होंने अहिंदी भाषी क्षेत्रों में हिंदी के प्रचार व विकास की चर्चा करते हुए कहा कि हिंदी पूरे भारत वर्ष की भाषा है।

प्रतियोगिता में निम्न प्रतियोगी विजेता रहे ।

1. श्री जगदीश सेठी — मंडल कार्यालय, नई दिल्ली टी. सी. एफ. सी.
2. श्रीमती रोहिणी अखयर — मालवीय नगर, नई दिल्ली ।
3. श्री कमलेश कुसुम — चांदनी चौक बल्लीमारन शाखा।

समारोह में दिल्ली मंडल के राजभाषा अधिकारी वेदप्रकाश दुबे ने संचालन किया ।

समारोह में राजभाषा भारती (त्रैमासिकी) के उपसंपादक डा. गुरूदयाल बजाज मुख्य अतिथि व मुख्य निर्णायक के रूप में पधारे । डा. बजाज ने कहा ''हिंदी और समस्त भारतीय भाषाएं हिन्दुस्तान को एकसूत्र में बांधने की कड़ी हैं तथा प्रत्येक भारतीय को यह गर्व होना चाहिये कि राष्ट्र में एक संपर्क भाषा के माध्यम से ही देश को सुदृढ़ रखा जा सकता है ।''

समारोह में अन्य निर्णायकों के रूप में डा. किरन शुक्ला सहायक निदेशक पर्यावरण एवं वन मंत्रालय तथा श्री अशोक सेठी राजभाषा अधिकारी केनरा बैंक अंचल कार्यालय नई दिल्ली ने सहयोग दिया तथा विचार प्रकट किए।

इलाहाबाद बैंक मेरठ

दिनांक 9-9-89 से 14-9-89 तक हिन्दी सप्ताह उल्लासपूर्वक मनाया गया। हिन्दी सप्ताह के दौरान निम्नलिखित विशिष्ट कार्यक्रम आयोजित किए गए।

दिनांक 12-9-89 को क्षेत्रीय कार्यालय में अधिकारियों की एक बैठक आयोजित की गई जिसमें क्षेत्रीय प्रबन्धक ने अधिकारियों को राजभाषा कार्यान्वयन का अनुपालन करने हेतु कहा। इसके अतिरिक्त, इस अवसर पर श्री टी. पी. सिंह प्रबन्धक (स्थापना एवं विकास), श्री आर. के. अरोरा, प्रबन्धक (निरीक्षण), श्री वी. एल. खन्ना, प्रबन्धक (ऋण) एवं श्री डालचन्द, राजभाषा अधिकारी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

हिन्दी टंकण प्रतियोगिता :—दिनांक 13-9-89 को क्षेत्रीय कार्यालय में हिन्दी टंकण प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें क्षेत्रीय कार्यालय, मेरठ, मंडलीय कार्यालय मेरठ, मंडलीय निरीक्षण कार्यालय तथा स्थानीय शाखाओं के 12 कर्मचारियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में निम्नांकित कर्मचारियों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना पुरस्कारों के लिए विजेता घोषित किया गया।

प्रथम स्थान	श्री रजनीश कुमार शर्मा,
द्वितीय स्थान	श्री चन्द्र प्रकाश वाधवा
तृतीय स्थान	श्री विष्णु स्वरूप चावला,
सांत्वना	श्री अमरीश कुमार सक्सैना

हिन्दी निबंध प्रतियोगिता :—दिनांक 13-9-89 को हिन्दी निबंध प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। निबंध प्रतियोगिता में 8 कर्मचारियों एवं अधिकारियों ने भाग लिया। उक्त प्रतियोगिता में निम्नांकित अधिकारियों कर्मचारियों को सफल घोषित किया गया :—

प्रथम स्थान	श्री के. एस. राणा, अधिकारी
द्वितीय स्थान	श्री देवेन्द्र कुमार ढाका, अधिकारी,
तृतीय स्थान	श्री दिनेश कुमार शांडिल्य, लि. स. टं.,

समापन समारोह दिनांक 14-9-89 को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर हिन्दी वक्तृत्व प्रतियोगिता एवं पुरस्कार वितरण का भी आयोजन किया गया। इसकी अध्यक्षता मेरठ मंडल के माननीय सहायक महाप्रबंधक श्री पी. एन. जेतली ने की।

सर्वप्रथम श्री डालचन्द, राजभाषा अधिकारी ने सभी अभ्यागतों का हार्दिक स्वागत किया और क्षेत्रीय कार्यालय तथा क्षेत्रान्तर्गत शाखाओं में हो रहे हिन्दी प्रयोग की प्रगति से सभी को अवगत कराया। श्री टी. पी. सिंह, प्रबन्धक (विकास एवं स्थापना) ने सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग की अनिवार्यता पर बल दिया। श्री सिंह ने शाखाओं में किए जा रहे हिन्दी निरीक्षण की उपयोगिता का भी उल्लेख किया। श्री आर. के. अरोरा, प्रबन्धक (निरीक्षण) ने कहा कि हिन्दी भाषियों को हिन्दी प्रयोग करने में झिझक नहीं होनी चाहिए और हिन्दी के प्रयोग में औपचारिकता नहीं निभायी जानी चाहिए। श्री बी. एल. खन्ना (प्रबन्धक ऋण) ने कहा कि सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग करना हमारा संवैधानिक कर्तव्य है।

अपने अध्यक्षीय भाषण में माननीय सहायक महाप्रबन्धक श्री पी. एन. जेतली ने कहा कि सरल भाषा को अपनाकर ही हिन्दी भाषा समृद्ध होगी और दैनिक सरकारी कामकाज में उसका अधिकाधिक प्रयोग होगा। श्री जेतली ने कहा कि हम हिन्दी भाषियों को हिन्दी पत्राचार का निर्धारित लक्ष्य 90 प्रतिशत प्राप्त करने के साथ-साथ हमें शत-प्रतिशत हिन्दी में करना चाहिए और ग्राहकों के साथ उनकी अपनी सरल भाषा में पत्र व्यवहार करने से बैंक के समूचे कार्य पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। श्री जेतली ने हिन्दी दिवस सप्ताह तथा विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त की।

पंजाब नेशनल बैंक
क्षेत्रीय कार्यालय हिसार

14 सितम्बर, 1989 को हिसार क्षेत्र द्वारा स्थानीय सुशीला भवन हिसार में क्षेत्रीय प्रबन्धक, श्री वेद प्रकाश गौतम की अध्यक्षता में हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। हिन्दी सेवक एवंम् विद्वान श्री राजेन्द्र प्रसाद जैन समारोह के मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर हिसार शाखा के मुख्य प्रबन्धक श्री एस. के. अग्रवाल तथा हिसार-सिरसा क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक के अध्यक्ष श्री जी. के. साहनी भी उपस्थित थे।

इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताएं एवम् सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। विभिन्न प्रतियोगिताओं के परिणाम निम्नानुसार रहे :—

काव्य प्रतियोगिता

प्रथम	राजीव भाटिया	डबवाली
द्वितीय	ईश कुमार	डबवाली
द्वितीय	सुरेश सरदाना	क्षे. का. हिसार
तृतीय	ओम प्रकाश ग्रावर	फतेहाबाद

भाषण प्रतियोगिता

प्रथम	ईश कुमार	डबवाली
द्वितीय	महावीर प्रसाद हरिदेव	हांसी
तृतीय	रामकुमार	चांग

हिन्दी टंकण प्रतियोगिता

प्रथम	मोहन लाल खट्टर	क्षे. का. हिसार
द्वितीय	बलबीर सिंह	क्षे. क. हिसार
तृतीय	सरदारी लाल	क्षे. का. हिसार

हिन्दी में सर्वाधिक काम करने के उपलक्ष्य में क्षेत्र की निम्नलिखित शाखाओं अनुभागों को "हिसार क्षेत्र राजभाषा शील्ड" प्रदान की गई :--

हिसार क्षेत्र : सर्वश्रेष्ठ अनुभाग राजभाषा शील्ड 1988

प्रसाक्षियत अनुभाग — प्रथम

हिसार क्षेत्र : सर्वश्रेष्ठ शाखा राजभाषा शील्ड 1988

हिसार जिला

पावड़ा शाखा	प्रथम
खाण्डा खेड़ी शाखा	प्रथम

भिवानी जिला

देवसर शाखा	प्रथम

सिरसा जिला

मल्लेकां शाखा	प्रथम

गन्ने की खेती :--श्री कुलभूषण द्वारा प्रस्तुत "गन्ने की खेती" ने दर्शकों को हंसी से लोट-पोट कर दिया।

नन्हे-मुन्नों द्वारा प्रस्तुत गीत कविताएं :--बैंक अधिकारियों/कर्मचारियों के निम्नलिखित बच्चों द्वारा प्रस्तुत गीतों/कविताओं से दर्शक प्रफुल्लित हो उठे :--

1. श्री भारत साहनी
2. श्री बन्नी
3. कुमारी निष्ठा सरदाना
4. कुमारी निष्ठा सिंह
5. श्री रवीन्द्र धूल

क्षेत्रीय प्रबन्धक श्री वेद प्रकाश गौतम ने हिसार क्षेत्र में हिन्दी के प्रयोग के प्रति स्टाफ सदस्यों में आई जागरुकता की भूरी-भूरी प्रशंसा की।

डा. श्रीमती रमेश सागर की कविताओं की पंक्तियों से श्रोतागण आनन्दित हो उठे।

राजभाषा अधिकारी श्री महीपाल यादव ने बैंक में हुई हिन्दी प्रयोग की प्रगति पर प्रकाश डालते हुए इसके अधिकाधिक प्रयोग पर बल दिया।

मंच सचिव श्री वी. एन. जेतली ने अपनी कुशल प्रतिभा का परिचय देते हुए बीच-बीच में मधुर गजलों तथा शेरों से दर्शकों का मनोरंजन किया।

पुरस्कार वितरण

मुख्य अतिथि श्री जैन ने भाषण प्रतियोगिता के विजयी प्रतियोगियों को पुरस्कार दिए।

टंकण प्रतियोगिता के विजयी प्रतियोगियों को मुख्य प्रबन्धक श्री एस. के. अग्रवाल ने पुरस्कार दिए।

प्रतियोगिताओं में भाग लने वाले सभी प्रतियोगियों तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने वाले कलाकारों को प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

क्षेत्रीय प्रबन्धक श्री वेद प्रकाश गौतम ने विजेता प्रतियोगियों को बधाई दी तथा प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले सभी प्रतियोगियों को धन्यवाद दिया।

मंच सचिव श्री वी. एन. जेतली ने आभार व्यक्त किया।

स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर

प्रधान कार्यालय जयपुर

बैंक के प्रधान कार्यालय, जयपुर में 15 अगस्त से 14 सितम्बर 1989 तक हिन्दी मास के रूप में मनाया तथा 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। इस अवधि में निम्नलिखित प्रतियोगिताएं आयोजित की गई : --

हिन्दी टंकण प्रतियोगिता

दिनांक 23-8-1989 को हिन्दी टंकण प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें परिसर एवं जड़ संग्रह विभाग के श्री सुदीप कुमार खण्डेलवाल प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर रहे।

अन्तर-विद्यालय हिन्दी भाषण प्रतियोगिता

दिनांक 02-09-1989 को अंतर विद्यालय हिन्दी भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया जिसमें जयपुर स्थित 9 से 11 कक्षा तक छात्राओं ने भाग लिया। इसमें महारानी स्कूल की छात्रा कुमारी प्रीति प्रथम रही।

बैंकिंग शब्दावली प्रतियोगिता

बैंकिंग शब्दावली प्रतियोगिता में दिनांक 06 सितम्बर को बैंक के प्रधान कार्यालय के अधिकारी एवं लिपिकों ने भाग लिया। भविष्य निधि एवं उपदान अनुभाग की श्रीमती आशा गोयल प्रथम रहीं।

अन्तरमहाविद्यालय हिन्दी भाषण प्रतियोगिता

दिनांक 11 सितम्बर को महारानी कालेज, जयपुर में आयोजित की गई। इसमें स्थानीय आठ महाविद्यालयों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में इसी महाविद्यालय की छात्रा कुमारी अंजु शर्मा प्रथम रही।

अन्तर-आशु-भाषण प्रतियोगिता

बैंक के पांच अंचलों के मध्य अंतर-आशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 13 सितम्बर को किया गया। इसमें बीकानेर अंचल के श्री सीताराम कच्छावा प्रथम रहे।

हिन्दी दिवस

हिन्दी दिवस समारोह सदैव की भांति इस बार भी 14 सितम्बर को आयोजित किया गया। इस अवसर पर भाषा विभाग, राजस्थान सरकार के उप निदेशक श्री आत्माराम शर्मा ने हिन्दी के महत्त्व पर विचार प्रकट किए तथा डॉ. के.एल. शर्मा, भूतपूर्व प्रोफेसर राजस्थान विद्यालय ने हिन्दी की स्थिति और विकास की सम्भावनाओं पर प्रकाश डाला। बैंक के महाप्रबन्धक श्री कृष्ण लाल मग्न ने बैंक में हिन्दी के प्रयोग पर प्रकाश डाला और अधिकाधिक कार्य हिन्दी में करने के लिए प्रेरित किया।

प्रबन्ध निदेशक ने इस मास के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पारितोषिक प्रदान किए एवं हिन्दी में काम करने के लिए प्रेरणा दी तथा राजभाषा के प्रबन्धक माणक चंद कोचर ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

कवि सम्मेलन– 15-09-1989

स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एंड जयपुर के राजभाषा विभाग की ओर से शुक्रवार की शाम रवीन्द्र मंच पर हुए कवि सम्मेलन में कई स्वर उभरे। शहर के जाने-माने कवियों ने नेहरू जन्म शताब्दी के उपलक्ष में रचनाएं सुनाई। पूर्व में बैंक के महाप्रबन्धक (योजना एवं विकास) कृष्ण लाल मग्न ने स्वागत किया। बैंक के प्रबन्ध निदेशक तारा कुमार सिन्हा ने कवि सम्मेलन की अध्यक्षता की।

स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर, जोधपुर

हिन्दी में कामकाज को बढ़ावा देने के लिए राजभाषा मास के अंतर्गत निम्नलिखित कार्य किए गए।

(1) बैंकिंग शब्द अनुवाद प्रतियोगिता : 7-9-1989

अंचल कार्यालय परिसर में आयोजित प्रतियोगिता में स्थानीय शाखाओं के 15 प्रतियोगियों ने भाग लिया। परिणाम निम्नानुसार रहा एवं उन्हें पुरस्कृत किया गया।

1. श्री जगदीश कुमार व्यास	अंचल कार्यालय, जोधपुर
2. श्री राकेश व्यास	खाण्डा फलसा, जोधपुर
3. श्री एस.एम.के. शेरानी	अंचल कार्यालय, जोधपुर

(2) आशुभाषण प्रतियोगिता : 7-9-1989

इसमें अंचल कार्यालय व स्थानीय शाखाओं के 5 प्रतियोगियों ने भाग लिया। परिणाम निम्नानुसार रहा एवं उन्हें पुरस्कृत किया गया।

1. श्रीमती मंजु जैन	सरदारपुरा शाखा, जोधपुर
2. श्री लक्ष्मीनारायण जालानी	अंचल कार्यालय, जोधपुर
3. श्री आर.ए. फ्रांसिस	अंचल कार्यालय, जोधपुर

(3) श्रुतलेख प्रतियोगिता : 14-9-1989

इसमें अंचल कार्यालय व स्थानीय शाखाओं के 18 प्रतियोगियों ने भाग लिया। परिणाम निम्नानुसार रहा और उन्हें पुरस्कृत किया गया।

1. श्री राकेश व्यास	खाण्डा फलसा, जोधपुर
2. श्री देवेन्द्र कुमार भार्गव	अंचल कार्यालय, जोधपुर
3. श्री प्रदीप गट्टानी	अंचल कार्यालय, जोधपुर

दिनांक 14 सितम्बर, 1989 को अंचल कार्यालय परिसर में हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। जोधपुर विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग के उपाचार्य डॉ. मदनराज डी. मेहता को विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। उन्होंने हिन्दी का इतिहास, हिन्दी में कार्य करने की उपयोगिता पर अपने विचार व्यक्त किए। अंचल कार्यालय व स्थानीय शाखाओं के 80 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया। इस अवसर पर उपर्युक्त प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

बैंक आफ इंडिया

क्षेत्रीय कार्यालय, आगरा

15 अगस्त से 14 सितम्बर 1989 तक मनाए जा रहे राजभाषा मास के अंतिम दिन हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में लोकरूचि के कार्यक्रम का उद्घाटन आंचलिक प्रबंधक श्री प्रीतपाल सिंह जुनेजा ने किया।

आंचलिक प्रबंधक ने नारा प्रतियोगिता 1989 के दो प्रतियोगियों सर्वश्री जी०डी० रमानी, अधिकारी क्षेत्रीय कार्यालय को प्रथम पुरस्कार तथा उमेश चन्द्र शर्मा लिपिक, सह-टंकक क्षेत्रीय कार्यालय, आगरा को द्वितीय पुरस्कार तथा प्रमाणपत्र प्रदान कर सम्मानित किया। तीन पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार तथा प्रमाणपत्र प्रदान किए गए।

कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन आगरा क्षेत्र के राजभाषा अधिकारी श्री संजीव पाठक ने किया।

यूनाइटेड बैंक आफ इंडिया, दिल्ली

युनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया के दिल्ली स्थित उत्तर भारत क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा दिनांक 14-9-89 को हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया।

दिल्ली स्थित आंचलिक और क्षेत्रीय कार्यालयों के उच्च कार्यपालकों एवं उच्च अधिकारियों के लिए एक व्याख्यान का आयोजन किया गया। व्याख्यान का विषय था—"राजभाषा अधिनियम 1963, राजभाषा नियम, 1976 एवं राजभाषा संकल्प 1968". व्याख्यान केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के उप निदेशक (प्रशिक्षण) श्री कृष्ण कुमार गुप्त ने दिया।

इसी दिन "बैंकिंग शब्दावली प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया।

शाम को पिछले वर्ष के हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता के पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र सहायक महाप्रबंधक श्री मोहन लाल ने दिए।

कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन राजभाषा अधिकारी श्रीमती रीता भट्टाचार्य ने किया।

स्टेट बैंक आफ पटियाला

आंचलिक कार्यालय, नई दिल्ली

14 सितम्बर, 1989 को हिन्दी दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। आयोजित प्रदर्शनी में बैंक की द्विभाषिक लेखन सामग्री, हिन्दी में प्रेषित टेलेक्स सन्देश तथा कर्मचारियों द्वारा लिखित टिप्पण/वाक्यांश कर्मचारियों को प्रेरित करने के लिए प्रदर्शित किए गए।

14 सितम्बर, 1989 से प्रारम्भ 20-9-89 तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। सप्ताह के दौरान निम्नलिखित प्रतियोगिताएं तथा कार्यक्रम आयोजित किए गए :—

14 सितम्बर, 1989	हिन्दी हस्ताक्षर अभियान, हिन्दी प्रदर्शनी तथा सार्वजनिक बैनर का प्रदर्शन।
15 सितम्बर, 1989	हिन्दी टंकण प्रतियोगिता।
16 सितम्बर, 1989	**को सम्पूर्ण कार्य हिन्दी में करना तथा आंतरिक कामकाज में हिन्दी का अधिकतम प्रयोग**
18 सितम्बर, 1989	हिन्दी टिप्पणी एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता।
19 सितम्बर, 1989	बैंकिंग हिन्दी शब्द ज्ञान प्रतियोगिता, राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में विचार विमर्श।
20 सितम्बर, 1989	हिन्दी दिवस/सप्ताह का समापन तथा पुरस्कार वितरण।

उपरोक्त गतिविधियों का विस्तृत ब्यौरा निम्नानुसार है :—

1. हिन्दी हस्ताक्षर अभियान :

हिन्दी सप्ताह, हिन्दी हस्ताक्षर अभियान से शुरू किया गया इस दिन सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने अपने हस्ताक्षर हिन्दी में किए तथा अभ्यास किया। सप्ताह में अधिकतम कार्य हिन्दी में करने के लिए भरसक प्रयत्न किए गए।

2. हिन्दी टंकण प्रतियोगिता

15-09-1989 को हिन्दी टंकण प्रतियोगिता आयोजित की गई। आंचलिक कार्यालय, नई दिल्ली के "हिन्दी कक्ष" द्वारा प्रशिक्षित हिन्दी टंककों को प्रेरित करने तथा उनकी टाइपलेखन गति बनाये रखने के लिए यह प्रतियोगिता रखी गयी। प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रतियोगियों को प्रोत्साहन स्वरूप प्रथम तीन पुरस्कार तथा एक सांत्वना पुरस्कार निम्नानुसार घोषित किए गये :—

श्री सुरेन्द्र कुमार	क्षे.का.-3 (दि.)	प्रथम
श्रीमती लता भाग्या, लिपिक/टंकक	आं.का. (दि.)	द्वितीय
श्रीमती सुषमा चावला, लिपिक/टंकक	क्षे.का.-2 (दि.)	तृतीय
श्रीमती शुभ लता,	आं.का. (दि.)	सांत्वना

3. हिन्दी टिप्पण तथा प्रारूप लेखन प्रतियोगिता :

हिन्दी में अधिकतम मूल पत्र प्रेषित करने तथा पत्रों पर टिप्पणियां हिन्दी में लिखने के लिए यह प्रतियोगिता संचालित की गई ताकि कर्मचारी अपना नेमी कार्य में हिन्दी टिप्पण/वाक्यांश लिखने तथा पत्रों का मसौदा हिन्दी में तैयार करने में अभ्यस्त हो सकें। इस संबंध में उनकी झिझक दूर हो सके। टिप्पण प्रतियोगिता में कुल 12 कर्मचारियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता के लिए प्रथम तीन तथा एक सांत्वना पुरस्कार देने का प्रावधान किया गया। प्रतियोगिता के परिणाम निम्नानुसार घोषित किए गए :—

श्रीमती शुभ लता महाजन	आं०का०दि०	80.0%	प्रथम
श्री कुमार शामदेसानी	—वही—	78.3%	द्वितीय
श्री राजपाल सिंह	—वही—	77.0%	तृतीय
श्री श्याम सुन्दर भाटिया	—वही—	76.7%	सांत्वना

4. बैंकिंग शब्द ज्ञान प्रतियोगिता

दिनांक 19-9-89 को हिन्दी शब्द ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का उद्देश्य बैंकिंग शब्दों के हिन्दी पर्याय का ज्ञान बढ़ाना था ताकि कर्मचारी उन शब्द का चयन मूल पत्राचार बढ़ाने के लिए कर सकें। प्रतियोगिता परिणाम निम्नानुसार है :—

प्रथम	श्री एस.एस. विरदी श्रीमती सुषमा चावला श्रीमती मीना कोहली	क्षे.का.-2

द्वितीय	श्री राजपाल सिंह श्री श्याम सुन्दर भाटिया श्री कुमार शामदासानी	आंचलिक कार्यालय (दि०)
तृतीय	श्री आर०सी० शर्मा कु. सुमन जीत कौर श्री एस०सी० शर्मा	क्षेत्रीय कार्यालय-1 (दि०)

5. प्रशस्ति पत्र

आंचलिक/क्षेत्रीय कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों तथा अधिकारियों के नाम जो अपना अधिकतम कार्य हिन्दी में कर रहे हैं तथा मूल पत्र तथा टिप्पण वाक्यांश हिन्दी में लिख रहे हैं, प्रशस्ति पत्र प्रदान करने हेतु संस्तुतियां मांगी गई थीं। इस बार हमें हिन्दी में उल्लेखनीय योगदान के लिए श्री राजीव सोबती, लिपिक/टंकक आंचलिक कार्यालय (दि०) का नाम प्राप्त हुआ। श्री सोबती को आंचलिक प्रबन्धक के अनुमोदन पर हिन्दी सेवा के लिए प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया जिसे उनके सेवा पत्र में दर्ज किया जाएगा।

विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले कर्मचारियों/अधिकारियों को सहभागिता प्रमाण पत्र दिए गए।

हिन्दी दिवस/सप्ताह का समापन तथा पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 20-9-89 को आयोजित किया गया। श्री एन०सी० शर्मा, आंचलिक प्रबन्धक (दि.) के अनुरोध पर बैंक के महाप्रबन्धक (आयोजना एवं विकास) श्री प्रभु दयाल ने समारोह की अध्यक्षता की। उन्होंने प्रतियोगियों तथा सहभागियों को अपना अधिकतम कार्य हिन्दी में करने, वार्षिक कार्यान्वयन कार्यक्रम के निर्धारित लक्ष्यों को शीघ्र प्राप्त करने पर बल दिया। उन्होंने अपने कर कमलों से विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया।

उपक्रम

भारतीय कपास निगम बम्बई

हिन्दी पखवाड़ा

14 सितंबर से भारतीय कपास निगम के मुख्यालय, बंबई कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। इसके अंतर्गत निबंध, पारिभाषिक शब्दावली, आशुभाषण तथा गीत रचना आदि प्रतियोगिताएँ रखी गई। कर्मचारियों और अधिकारियों ने इन प्रतियोगिताओं में उत्साह से भाग लिया।

21 सितंबर को सांस्कृतिक कार्यक्रम रखा गया जिसकी अध्यक्षता डॉ. रत्नाकर पांडेय, सदस्य, राज्य सभा ने की। डॉ. पांडेय ने "हिंदी को अतीत, वर्तमान और भविष्य" बताते हुए निगम के कर्मचारियों और अधिकारियों को हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए प्रेरित किया। उन्होंने निगम में राजभाषा हिंदी की प्रगति और विविध प्रोत्साहन कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि शीघ्र ही भारतीय कपास निगम शतप्रतिशत कार्य हिंदी में करनेवाले कार्यालयों में अग्रणी बनकर खड़ा होगा।

निगम की ओर से श्री मा.बि. लाल, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने डॉ. पांडेय का स्वागत करते हुए कहा कि उनकी उपस्थिति हमारा उत्साह बढ़ाने के लिए पर्याप्त है। इस अवसर पर डॉ. पांडेय विविध प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत कर्मचारियों को नकद पुरस्कार प्रदान किये। डॉ. रत्नाकर पाण्डेय ने निगम द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "राजभाषा रश्मि के हिंदी दिवस विशेषांक" का विमोचन भी किया।

दि न्यू इंडिया एंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड

प्रादेशिक कार्यालय, मद्रास

14 सितम्बर, 1989 को मद्रास प्रादेशिक कार्यालय द्वारा मैकमिलन मंडल कार्यालय परिसर में हिन्दी सप्ताह का उद्घाटन श्री एच. शंकरन, सहायक महाप्रबन्धक द्वारा दीप जलाकर किया गया।

हिन्दी अधिकारी श्री झा ने प्रादेशिक कार्यालय हिन्दी विभाग द्वारा हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में किये जा रहे कार्यों की विस्तृत सूचना दी।

श्री एच. शंकरन सहायक महाप्रबन्धक ने भाषा का उद्देश्य एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक जानकारियों का आदान-प्रदान करना बताया और कहा कि हिन्दी इसमें बिल्कुल सक्षम है। उन्होंने सभी से राजभाषा का विकास करने की अपील की।

श्री के.एन.के. मेनन, उप-प्रबन्धक ने राजभाषा अधिनियम के अनुपालन की आवश्यकता पर बल दिया।

इस अवसर पर श्री पी.एस. लक्ष्मी नारायण सहायक प्रबन्धक, श्री जयन्त कुमार स.प्र.अ. ने भी अपने विचार व्यक्त किए। मैकमिलन मंडल कार्यालय की सुश्री एस. राजश्री ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

15 सितम्बर, 89 को प्रादेशिक कार्यालय में उप प्रबन्धक स्तर तक के अधिकारियों की नाम पट्टिका हिन्दी में उपलब्ध कराई गई तथा 18 सितम्बर, 89 को हिन्दी कक्षा की ओर से सभी को उनका नाम हिन्दी में उपलब्ध कराया गया ताकि कार्यालय कार्यों में हिन्दी में हस्ताक्षर करना सुलभ है।

19 सितम्बर, 89 को हिन्दी श्रुतिलिपि एवं हिन्दी गीत प्रतियोगितायें प्रा.का. मनोरंजन गृह में आयोजित की गई। हिन्दी श्रुतिलिपि प्रतियोगिता में 14 एवं हिन्दी-गीत प्रतियोगिता में 8 प्रतियोगियों ने हिस्सा लिया।

20 सितम्बर, 89 को हिन्दी टंकण प्रतियोगिता आयोजित की गई एवं हिन्दी वाक् प्रतियोगिता युनाइटेड इन्डिया के प्रशिक्षण केन्द्र में आयोजित की गई। निर्णायक श्री ईश्वरचन्द्र झा एवं श्री एलेश्वर राव, हिन्दी प्राध्यापक, हिन्दी शिक्षण योजना थे।

यूनाइटेड इंडिया एवं न्यू इन्डिया द्वारा संयुक्त रूप से यूनाइटेड इन्डिया प्रशिक्षण केन्द्र में हिन्दी सप्ताह समापन समारोह मनाया गया।

समारोह के मुख्य अतिथि श्री रवीन्द्र कुमार दीक्षित, उप-निदेशक (दक्षिण) हिन्दी प्रशिक्षण योजना एवं डॉ. किशोर वासवानी क्षेत्रीय अधिकारी, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, मद्रास, थे।

न्यू इंडिया के सहभागियों द्वारा हिन्दी में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये गये.। न्यू इन्डिया एंश्योरेन्स का प्रतिनिधित्व श्री के. के. नायक, प्रबन्धक एवं श्री ईश्वरचन्द्र झा हिन्दी अधिकारी ने किया। अपने भाषण में श्री नायक ने राजभाषा के विकास के लिए सरल हिन्दी को अपनाने एवं रोचक कार्यक्रम बनाने का सुझाव दिया।

श्री दीक्षित उप-निदेशक ने कहा कि राजभाषा हिन्दी में सभी भाषाओं के लोकप्रिय शब्दों का प्रयोग होगा तभी यह सर्वमान्य होगी।

डा. वासवानी ने बताया कि राजभाषा हिन्दी के रूप में बम्बई, दिल्ली या कलकत्ता या मद्रास में "थोड़ा-थोड़ा" बोली जाने वाली हिन्दी --- को अपनाया जाए। इस प्रकार एक समन्वित हिन्दी को विकसित कर ही उसे सर्वव्यापी बनाया जा सकता है।

अध्यक्षीय भाषण में यूनाइटेड इन्डिया के सहायक महा-प्रबन्धक ने सबों को हिन्दी सप्ताह के सफल आयोजन के लिए बधाई दी और हिन्दी सीखने के लिए प्रेरित किया। हिन्दी सीखने की अपनी प्रबल इच्छा जताते हुए उन्होंने कहा कि अगले वर्ष वे ऐसे मौके पर हिन्दी में भाषण करेंगें।

समारोह का सफल संचालन श्री वी. निवासन, प्रबन्धक द्वारा किया गया।

धन्यवाद ज्ञापन युनाइटेड इन्डिया इंश्योरेन्स की हिन्दी अधिकारी श्रीमती सत्यवती द्वारा किया गया।

हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड

अग्निगुण्डाला सीसा परियोजना
बंडल भोट्टु

14 सितम्बर, 1989 से 21 सितम्बर, 1989 तक 'हिन्दी सप्ताह" हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

14-9-1989 को "हिंदी दिवस" के दिन "व्यवसायिक प्रशिक्षण" केन्द्र में हिंदी सप्ताह का उद्घाटन इकाई प्रधान (प्रभारी) श्री सी. श्री नाथ ने किया। श्री श्रीनाथ ने कहा कि हिंदी राजभाषा ही नहीं प्रभावी सम्पर्क भाषा भी है अत: इसे हर पहलू में अपनाने में कोई झिझक नहीं होनी चाहिए। इकाई के प्रबंधक (वित्त) श्री एस. एल. चपलोत् तथा अन्य उपस्थित कर्मचारिगण ने भी सभा को संबोधित किया। उसी दिन 10 कर्मचारियों हेतु एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला भी आरम्भ की गई। उक्त कार्यशाला में प्रशासनिक, वित्त व लेखा एवं भण्डार व क्रय विभागों में प्रयुक्त होने वाले वाक्यांशों एवं टिप्पणियों का अभ्यास करवाया गया। कार्यशाला में इकाई के प्रबंधक (वित्त) श्री चपलोत, वरिष्ठ माल अधिकारी श्री हरि प्रसाद शर्मा तथा कनिष्ठ राजभाषा अधिकारी ने व्याख्यान दिए। 14-9-1989 सायंकाल जिंक मनोविनोद क्लब में निबंध एवं अनुवाद प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।

15-9-1989 को इकाई की समस्त रिपोर्टों, छुट्टी, पत्र तथा अन्य प्रपत्र हिंदी में भर कर हस्ताक्षर करने का अभ्यास करवाया गया। राजभाषा संगोष्ठी हिन्दी सप्ताह के उपलक्ष्य में इकाई प्रधान (प्रभारी) श्री सी. नाथ की अध्यक्षता में 15-9-1989 को राजभाषा संगोष्ठी भी की गई। संगोष्ठी का विषय था---"राष्ट्रीय एकता एवं धार्मिक समन्वय" संगोष्ठी में उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारीवृन्द ने अपने-अपने विचार हिंदी में प्रकट किए।

16-9-1989 को कम्पनी की राजभाषा निरीक्षण समिति ने रखे जा रहे विभिन्न अभिलेखों तथा विभागवार हिन्दी में किए जा रहे विभिन्न कार्य का निरीक्षण भी किया। निरीक्षण उप-समिति ने पाया कि इकाई में दैनिक उत्पादन रिपोर्ट, प्रयोगशाला रिपोर्ट, मिल रिपोर्ट आदि हिंदी में भी जारी की जाती हैं, समिति विशेषकर हिन्दी में जारी किए जा रहे चैकों, रसीदों, वाउचरों, परिपत्रों आदि से प्रभावित हुई।

17-9-1989 को लिपिक वर्गीय कर्मचारियों से छोटी-छोटी टिप्पणियों एवं पत्र लेखन का अभ्यास करवाया गया। उसी दिन सुवाच्य, सुलेख एवं श्रुतिलेख प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।

18-9-1989 को बंडलमोट्ट स्थित स्कूलों के बच्चों के लिए देशभक्ति गीत एवं सुवाच्य प्रतियोगिता आयोजित की गई इसमें 47 बच्चों ने भाग लिया।

19-9-1989 को व्यक्तिगत रूप से राजभाषा नीति एवं नियमों से लिपिकीय वर्ग को विभागवार अवगत कराया गया। हिन्दी प्रशिक्षणरत कर्मचारियों से इकाई के परिचालन पुस्तकालय की पुस्तकों एवं विभिन्न पत्रिकाओं पर चर्चा की गई।

20-9-1989 को इकाई के विभिन्न विभागों के फाइलों व रजिस्टरों पर शीर्षक, विषय संख्या आदि हिन्दी में लिखे गए।

सांस्कृतिक कार्यक्रम :—20-9-1989 को कला मंदिर में स्कूली बच्चों ने एक सांस्कृतिक संध्या प्रस्तुत की। उस दिन की सांस्कृतिक संध्या के मुख्य अतिथि राजभाषा निरीक्षण उपसमितियों के अध्यक्ष श्री नरेश चन्द्र बंसल थे। बच्चों ने हिंदी में विभिन्न देशभक्ति गीतों का समूह गान प्रस्तुत किया। हिन्दी में नृत्य रूपक भी प्रस्तुत किए गए। साथ ही एल. ई. एम. स्कूल के विद्यार्थियों ने हिंदी में पाठशाला व तेलगू में "निन्नुनीव द्रिदुकों नामक एकांकी तथा जिला परिषद् स्कूल के विद्यार्थियों ने हिंदी में "शादी" तथा "फ्री स्टाइल गवाही" नामक हस्य-व्यग्य एकांकी प्रस्तुत की।

पारादीप पत्तन न्यास

दिनांक 21 सितम्बर, 1989 को पारादीप पत्तन न्यास में हिन्दी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं में पत्तन न्यास के कर्मचारियों, स्थानीय स्कलों के विद्यार्थियों और महिलाओं ने बड़े उत्साह से भाग लिया। विजेताओं को नकद पुरस्कार और प्रमाण पत्र प्रदान किए गए।

संध्या में पत्तन न्यास के सामुदायिक केन्द्र में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया। केन्द्रीय विद्यालय, बेथानी कांवेन्ट स्कूल "बी" पाइंट के. जी. स्कूल, उर्मिश्री महिला क्लब और महिला विकास केन्द्र के द्वारा रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।

श्री बी. राजू हिन्दी अधिकारी ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। पत्तन न्यास के अध्यक्ष श्री प्रसन्न कुमार मिश्र आई. ए. एस. मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। श्री मिश्र ने पत्तन न्यास में हिन्दी प्रयोग की प्रगति को देखते हुए सभी अधिकारियों और कर्मचारियों की काफी सराहना की। उन्होंने कहा कि सभी कर्मचारियों को हिन्दी प्रयोग की प्रगति के लिए पूरा प्रयास करना होगा।

हिन्दी दिवस के अवसर पर श्री बिष्ट, सहायक निदेशक, राजभाषा विभाग, भुवनेश्वर सम्मानित अतिथि के रूप में आमंत्रित थे।

हिन्दी दिवस समारोह को सफलतापूर्वक संपन्न करने म पत्तन न्यास के सचिव एवं राजभाषा अधिकारी श्री शोभन कुमार पट्टनायक आई० ए० एस. ने निष्ठापूर्वक अपना कर्तव्य निभाया।

श्री प्रभात कुमार नन्द संपदा एवं जन संपर्क अधिकारी ने धन्यवाद दिया।

विशाखापत्तनम इस्पात परियोजना

विशाखपत्तनम इस्पात परियोजना में दिनांक 14 सितम्बर, 1989 को हिन्दी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर आयोजित प्रतियोगिताओं में निम्नलिखित कर्मचारी विजेता रहे।

हिन्दी टिप्पण प्रतियोगिता

नीरज हंस —प्रथम
जी. विजया —द्वितीय
एस. राधाकृष्ण —तृतीय

हिन्दी वाक् प्रतियोगिता

जी श्री निवासराव—प्रथम
नीरज हंस —द्वितीय
हनुमंत रेड्डी —तृतीय

हिन्दी टंकण प्रतियोगिता

पी. रामकृष्ण —प्रथम
ए. एन. वी. वी. एल. कुमारी —द्वितीय
के. एन. वी. आंजनेयुलु —तृतीय

हिन्दी आशुलिपि प्रतियोगिता

एस. आर. एस आर शर्मा—प्रथम
एस. वासुदेवराव —द्वितीय

हिन्दी स्लोगन प्रतियोगिता

अशोक फणिक्कर —प्रथम
डी. एन. पॉल —द्वितीय
एम. जगदीश प्रसाद —तृतीय

हिन्दी गायन प्रतियोगिता : कर्मचारियों के बच्चों के लिए

(कनिष्ठ)

टी. रजनी —प्रथम
शिल्पा रानी रथ—द्वितीय
पल्लवी चौधरी—तृतीय

(वरिष्ठ)

सीना मेरी वर्गीस —प्रथम
इशिता चटर्जी —द्वितीय
एन. श्रीनिवासराव—द्वितीय
वी माधवी —तृतीय

हिन्दी सप्ताह के अवसर पर ट्रैफिक विभाग के कर्मचारियों ने "जागृति" नामक एकांकी का प्रदर्शन किया। श्री आर. पी. साहू, सहायक प्रबन्धक (ट्रैफिक) इस एकांकी के निर्देशक रहे।

सभी विजेताओं को हिन्दी दिवस समारोह के अवसर पर आयोजित राजभाषा संगोष्ठी के समापन समारोह में मुख्य अतिथि एवं इस्पात मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति के माननीय सदस्य श्री ऋषि मानचन्द्र कौशिक द्वारा पुरस्कार वितरण किया गया ।

हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड , विशाखापट्टणम

राजभाषा अनुभाग की ओर से दिनांक 14 सितम्बर से 20 सितम्बर, 1989 तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन अत्यन्त उत्साह के साथ किया गया । सप्ताह भर चलने वाले इस आयोजन में अनेक प्रतियोगिताएं की गई ।

उल्लेखनीय है कि महीने भर राजभाषा में कार्य करने के लिए चलाए गए अभियान के फलस्वरूप आशातीत प्रगति हुई तथा हिन्दी पत्राचार 30 प्रतिशत तक जा पहुंचा जो कि एक कीर्तिमान है ।

हिन्दी दिवस समारोह के अवसर पर दिनांक 14 सितम्बर, 1989 को एक राजभाषा गोष्ठी का आयोजन किया गया । गोष्ठी में आन्ध्र विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डा. इकबाल ने मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए कहा कि हिन्दी हमारी संविधान सम्मत राजभाषा है तथा इसे अपनाना प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है ।

मुख्य प्रबंधक (अनुरक्षण) श्री पी. एल. जैन ने कहा कि हमारे पूर्वजों द्वारा भाषा के सम्बन्ध में में स्वीकार किए गए निर्णयों का हमें सम्मान करना चाहिए, क्योंकि ऐसे निर्णय बहुत ही समझ-बूझ और पर्याप्त विचार-विमर्श के उपरान्त लिए गये थे ।

अन्त में हिन्दी सुलेख प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि ने पुरस्कार प्रदान किए तथा श्री एन. ए. प्रसाद, प्रबंधक (कार्मिक ने धन्यवाद) ज्ञापन किया ।

हिन्दी हमारी संविधान सम्मत राजभाषा है, इसे अपना प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है

डॉ. इकबाल

दिनांक 20 सितम्बर, 1989 को हिन्दी सप्ताह के समापन समारोह के मुख्य अतिथि मण्डल रेल प्रबंधक द. पू. रे.) श्री जी.के. खरे ने कहा कि भाषा के मामले में हमें कहीं भी अटकने की आवश्यकता नहीं है। मिश्रित हिन्दी बोल कर भी हम हिन्दी की शुरूआत कर सकते हैं ।

अध्यक्षीय भाषण में महाप्रबंधक श्री ए. पी. मुखर्जी ने कहा कि हिन्दी का कार्य इस समारोह के साथ ही समाप्त नहीं हो जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि हिन्दी के प्रति सबमें प्रेम तथा सम्मान की भावना होना जरूरी है साथ ही सबको समझ में आने वाली हिन्दी का ही प्रयोग हमें करना चाहिए ।

उन्होंने हिन्दी को उत्पादकता से जोड़ते हुए बताया कि कारखाने के उत्पादन के अन्य लक्ष्यों की तरह ही हमें हिन्दी में काम करने की जिम्मेदारी निर्धारित करनी पड़ेगी ।

इससे पूर्व क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय बंगलौर के अनुसंधान अधिकारी श्री ओ. आर. के. मूर्ति ने भी सभा को सम्बोधित किया ।

मुख्य अतिथि ने सप्ताह भर में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए ।

हिन्दी सुलेख प्रतियोगिता

दिनांक 10 अगस्त 1989 को हिन्दी सुलेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसके विजेता थे--

वर्ग--I

प्रथम : श्री शाबशिव राव

द्वितीय : श्री बगी सूर्यनारायण

तृतीय : श्री के अप्पन राजू

वर्ग–II

प्रथम : श्री वी एल. नन्दावत

द्वितीय : श्री निदेश कुमार भाटे

तृतीय : श्री मोहम्मद शरीफ

हिन्दी निबंध प्रतियोगिता

वर्ग --I

प्रथम : श्री एस. सी. कोटी

द्वितीय : श्री पी आर. कुमार

तृतीय : श्री के. अपलराजू

वर्ग --II

प्रथम : श्री कृष्ण कुमार कुलश्रेष्ठ

द्वितीय : श्री बी एल. नन्दावत

तृतीय : श्री दिलमुख्यार खान

प्रोत्साहन : श्री संजय कुमार कर्ण

भारत ज्ञान प्रतियोगिता

द्वितीय : श्री के अप्पलराजू

तृतीय : श्री वी० आर० कुमार

वर्ग—I

प्रथम : प्रो. कृष्णकुमार कुल श्रेष्ठ
द्वितीय : श्री संजय कुमार कण
तृतीय : श्री दिल मुख्त्यार खान (मुख्त्यार)

हिन्दी टाइपिंग प्रतियोगिता : 19-9-89

प्रथम : श्री पी. चन्दर राव
द्वितीय : श्रीमती एस. विजयलक्ष्मी
तृतीय : श्री पी. आजनेलू
प्रोत्साहन : श्री के अप्पलराज

आशुभाषण प्रतियोगिता : 20-9-89

वर्ग—I

प्रथम : श्री एम. आर. पराचा
द्वितीय : श्री ए. के. सुब्रमण्यम
तृतीय : श्री अनन्तराम
प्रोत्साहन : के. अपलराजू

वर्ग—II

प्रथम : श्री कृष्णकुमार कुलश्रेष्ठ
द्वितीय : श्री बी. एल. नन्दावत

राजभाषा निरीक्षण समिति को दौरा

जिंक स्मेल्टर, विशाखापट्टणम् में दिनांक 14 सितम्बर, 1989 से 20 सितम्बर 1989 तक मनाये गये हिन्दी सप्ताह के दौरान प्रधान कार्यालय की राजभाषा निरीक्षण समिति ने अपना दौरा किया। समिति की अध्यक्षता श्री एन. सी. बन्सल ने की तथा श्री पी. के. विद्यार्थी एव. डॉ० पुरुषोत्तम छगाणी समिति के सदस्य थे।

भारत डायनामिक्स लिमिटेड, हैदराबाद

हैदराबाद स्थित "भारत आयनामिक्स" में दिनांक 15-9-89 को **हिन्दी दिवस** बड़े उत्साह के साथ मनाया गया.

"हिन्दी सप्ताह" के दौरान निबंध लेखन, तकनीकी शब्दावली, श्रुतलेख, कथा-कथन, वक्तृत्व, टंकण और हिन्दी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जिनम 200 से अधिक लोगों ने भाग लिया और 65 सफल प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

हिन्दी दिवस कार्यक्रम के आरम्भ में कार्यक्रम के अध्यक्ष तथा कम्पनी के प्रबन्ध निदेशक एअर कमांडोर आर. गोपालस्वामी, महाकवी स्व. जयशंकर प्रसाद की प्रतिमा को पुष्पहार अर्पित किया।

श्रीमती वी. एल. जयलक्ष्मी ने प्रार्थना-गीत प्रस्तुत किया। कम्पनी के अपर महाप्रबन्धक (कार्मिक एवं प्रशासन) श्री एन. साम्बमूर्तीजी ने उपस्थितो का हार्दिक स्वागत किया तदुपरान्त श्री नरहर देव ने कपनी में हो रहे हिन्दी सम्बन्धी कार्य कलापों का विवरण प्रस्तुत किया।

समारोह की विशिष्ट अतिथि श्रीमती लक्ष्मी गोपालस्वामी ने सफल प्रतिभागियों को निम्नांकित पुरस्कार प्रदान किए।

निबन्ध प्रतियोगिता—

1. जी. श्रीनिवास राव, प्रबन्धक	प्रथम पुरस्कार
2. के. एस. एस. सुब्रह्मण्यम, एमटीए,	द्वितीय. पुरस्कार
3. श्री निवास आचार्य, अवर प्रबन्धक,	तृतीय' पुरस्कार
4. विष्णुचन्द्र झा, अवर प्रबन्धक,	प्रोत्साहन' पुरस्कार
5. शेख मीराम, सहायक प्रबन्धक,	प्रोत्सा, पुरस्कार
6. ई. अशोक कुमार, एस. एस. ए,	प्रोत्साहन पुरस्कार
7. एस.. अश्वत्थामाराव, एस. ए,	प्रोत्साहन पुरस्कार

तकनीकी शब्दावली प्रतियोगिता—

1. जी. श्रीनिवास राव, प्रबन्धक,	प्रथम पुरस्कार
2. विष्णु चन्द्र झा, अवर प्रबन्धक,	द्वितीय पुरस्कार
3. संवत्सर, अवर प्रबन्धक,	तृतीय पुरस्कार
4. पी. सरोज, ओ. एस,.	प्रोत्साहन पुरस्कार
5. शेख मीरान, सहायक प्रबन्धक	प्रोत्साहन पुरस्कार
6. के. नरसिंहा राव, ओ. एस,.	प्रोत्साहन पुरस्कार
7. ए. रवीन्द्र कुमार आर एम,	प्रोत्साहन पुरस्कार

श्रुतलेख प्रतियोगिता

1. बी. एल. संपूर्णम्, सहायिका,	प्रथम पुरस्कार
2. एम. वी. आजाद, अवर प्रबन्धक,	द्वितीय पुरस्कार
3. ए. रवीन्द्र कुमार, आर एम,	तृतीय पुरस्कार
4. वी. क. राजपूत, अवर प्रबन्धक,	प्रोत्साहन पुरस्कार
5. वाई. सुभद्रा व. सहायिका, प्रो.	प्रोत्साहन पुरस्कार
6. पी. सरोज, ओ एस,	प्रोत्साहन पुरस्कार
7. जे वी एस के. शर्मा, ओ एस,	प्रोत्साहन पुरस्कार

कथा-कथन प्रतियोगिता

1. जी. श्रीनिवासन राव, प्रबन्धक,	प्रथम पुरस्कार
2. पी. टी. जी. कुट्टी, अवर प्रबन्धक,	द्वितीय पुरस्कार
3. सी रंगानाथन, एम टेक,	तृतीय पुरस्कार
4. विष्णुचन्द्र झा, अवर प्रबन्धक,	प्रोत्साहन पुरस्कार
5. श्रीनिवास आचार्य, अवर प्रबन्धक,	प्रोत्साहन पुरस्कार
6. नरसैय्या, अवर प्रबन्धक,	प्रोत्साहन पुरस्कार
7. एन. राज्यलक्ष्मी, अवर प्रबन्धक,	प्रोत्साहन पुरस्कार

हिन्दी वक्तृत्व प्रतियोगिता

1. संजय सिंघल, अवर प्रबन्धक,	प्रथम पुरस्कार
2. के. रविकांत, अवर प्रबन्धक,	द्वितीय पुरस्कार
3. श्री निवास आचार्य, अवर प्रबन्धक,	तृतीय पुरस्कार
4. ए. विष्णुकुमार, एस. ए.,	प्रोत्साहन पुरस्कार
5. आर. के. मानकर, एस. ए.	प्रोत्साहन पुरस्कार
6. शेख मीरान, सहायक प्रबन्धक,	प्रोत्साहन पुरस्कार
7. विद्या देवी सहायिका,	प्रोत्साहन पुरस्कार

हिन्दी टंकण प्रतियोगिता

1. वाई. सुभद्रा, व. सहायिका,	प्रथम पुरस्कार
2. एन. राज्य लक्ष्मी, अवर प्रबन्धक,	द्वितीय पुरस्कार
3. वी. एल. जयलक्ष्मी, ओ एस,	तृतीय पुरस्कार
4. विद्या देवी, सहायिका	प्रोत्साहन पुरस्कार
5. पी. सरोज, ओ एस,	प्रोत्साहन पुरस्कार

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में भी 24 पुरस्कार दिए गए

अध्यक्षीय भाषण में एअर कमाडोर आर. गोपालस्वामी ने इस बात पर हार्दिक संतोष व्यक्त किया कि चन्द मिनट पहले ही तेलुगु के साहित्यकार पद्मश्री कलाप्रपूर्ण डां. सी. नारायण रेड्डी को भारत का सर्व श्रेष्ठ साहत्यिक सम्मान "ज्ञानपीठ" पुरस्कार दिए जाने की घोषणा हुई है और इसी कारण से डां. सी. नारायण रेड्डी, जो कि समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में आने वाले थे, नहीं आ पाये। अध्यक्ष महोदय ने कहा कि बी. डी. एल. में हिन्दी का जो कार्य हो रहा है वह काफी सराहनीय है। लोगों की हिन्दी के प्रति रुचि विभिन्न प्रतियोगिताओं में लिए जाने वाले प्रतिभाग से अपने-आप ज़ाहिर होती है। सर्वाधिक पुरस्कार पाने वाले श्री जी. श्रीनिवास राव, प्रबन्धक (डी आरडी ओ."मेथड्स") ने हिन्दी के कार्य में अपनी निष्ठा व्यक्त की और हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित इस भव्य समारोह से प्रभावित होने की बात कही।

इलैक्ट्रानिक्स कार्पोरेशन आफ इंडिया
हैदराबाद

इलैक्ट्रानिक कार्पोरेशन आंफ इंडिया लिमिटेड में 15 सितम्बर से प्रारम्भ हिन्दी समारोह ने पूरे एक सप्ताह की चहल पहल के बाद 21 सितम्बर को जाकर अपनी इतिश्री प्राप्त की।

प्रशिक्षण कक्ष में 15 सितम्बर को सम्पन्न उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि थे हैदराबाद विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के प्रोफ़ेसर तथा अध्यक्ष डॉ. वाई. वेंकट-रमणराव। उनके कर कमलों से दीप प्रज्वलित किए जाने के बाद सरस्वती वन्दना हुई और समारोह के कार्यक्रम को विधि प्रबन्धक तथा प्रभारी : हिन्दी अनुभाग के श्री ए. महादेव ने स्वागत भाषण से प्रारंभ किया। समारोह की अध्यक्षता वरिष्ठ प्रबन्धक और राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री जी. सी. सक्सेना ने की।

मुख्य अतिथि डॉ. वाई. वेंकटरमण राव ने हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली को बढ़ती मांग के अनुसार और अधिक समृद्ध करते जाने की आवश्यकता पर बल दिया और शब्दावली की बहुमुखी अभिव्यक्ति क्षमता बढ़ाने के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण किया। अर्थ विज्ञान, समाज विज्ञान, प्रौद्योगिकी इत्यादि अन्यानेक विषयों का बोध कराने में प्रयुक्त शब्दों की अभिव्यक्ति समृद्ध करने का जिम्मा सम्बन्धित क्षेत्रों तथा सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों व निगमों पर होना चाहिए। उदाहरणार्थ, इलैक्ट्रानिकी से सम्बन्धित समस्त बारीक कार्यों का बोध करानेवाली शब्दावली अन्य उपक्रमों, विश्वविद्यालयों या निगमों की अपेक्षा ईसीआईएल बेहतर ढंग से तैयार करने की स्थिति में है। यही हाल अन्य विषयों के सम्बन्ध में अन्यान्य निगम विशेषों का होना चाहिए। जब इन जटिल विषयों के कार्यों में रमे रहने वाले अनुसंधान केन्द्र, निगम या उद्यम इस जिम्मेदारी को अपने ऊपर लेंगे वे अपने अनुभव को सिद्धान्त के साथ सुन्दर मेल कराने द्वारा एक सर्वांगपूर्ण अभिव्यक्ति देनेवाले सही अर्थोंयुक्त शब्दावली की सूचियां बना सकेंगे जिससे हिन्दी की बहुमुखी व्यंजना शक्ति को अनन्य बल मिलेगा।

तदुपरान्त हिन्दी कविता पाठ हुआ। सर्वश्री बालकृष्ण रोहिताश्व, अज़ीज़ भारती, जॉ. शीलम वेंकटेश्वर राव एवम् श्रीमती अहिल्या मिश्र ने अपनी रचनाओं से वातावरण की गंभीरता को सरस बना दिया। उद्घाटन समारोह के अन्त में ईसीआईएल के हिन्दी अधिकारी श्री एन. नागेश्वर-राव ने आभार प्रदर्शित किया।

आभार प्रदर्शन के तुरन्त बाद हिन्दी संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसका विषय था —"नगरद्वय के केन्द्रीय सरकारी कार्यालयों एवम् सार्वजनिक उपक्रमों में हिन्दी तथा प्रादेशिक भाषाओं का प्रयोग।" संगोष्ठी में नगरद्वय के गिने-चुने हिन्दी अधिकारी तथा हिन्दी अनुवादकों ने भाग लिया।

16 सितम्बर से 20 सितम्बर तक के पूरे पांचों दिन प्रतियोगिताओं के लिए समर्पित थे।

16 सितम्बर को ईसीआईएल ने अपने कर्मचारियों के लिए निबन्ध लेखन प्रतियोगिता रखी। विषय था—'मानव जीवन में अनुशासन का महत्व'। 18 सितम्बर को 'पारि-भाषिक शब्दावली को लेकर प्रतियोगिता आयोजित की गयी। फिर उसके बाद 19 सितम्बर को "हिन्दी टंकण प्रतियोगिता" और 20 सितम्बर को "वाद-विवाद प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया।

16 सितम्बर से 20 सितम्बर तक के पांच दिन ईसीआई-एल ने अपने कर्मचारियों के अलावा परमाणु ऊर्जा विभाग के तत्वाधान में चल रहे दो केन्द्रीय विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के लिए भी उनके प्राचार्यों की देखरेख में,

हिन्दी में निबन्ध लेखन, कहानी वाचन और कविता पाठ की प्रतियोगिताएं रखवायीं और इस प्रकार हिन्दी सप्ताह के कार्यक्रमों में विद्यालयीन बच्चों को भी भागीदार बनाया।

दिनांक 21 सितम्बर को सरस्वती वन्दना से यथा-विधि प्रारंभ समापन समारोह का स्वागत किया कंपनी के वरिष्ठ प्रबन्धक तथा राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री जी. सी. सक्सेना ने। इस समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में तेलुगु एवम् हिन्दी साहित्य के लब्ध प्रतिष्ठित कवि श्री गुण्टूरु शेषेन्द्र शर्मा को आमन्त्रित किया गया। शेषेन के नाम से विख्यात शर्माजी संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान होने के अलावा तेलुगु के भी गिने-चुने चोटी के कवि हैं। शर्माजी ने अपने भाषण का अधिकांश भाग हिन्दी को संपर्क भाषा के रूप में अपनाने द्वारा भाषाई दीवारों तथा पिंजरों को तोड़कर भारत के रंगीन भाषाई फूलों को एकता के सूत्र में गूंथकर भारत मां के कंठहार के रूप में शोभा बढ़ाने पर केन्द्रित किया। हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग पर उन्होंने जोर देकर कहा कि देश को इस समय हिन्दी की घोर आवश्यकता है। शर्मा जी ने इसी अवसर पर ईसीआईएल द्वारा उनके कर्मचारियों व अधिकारियों की सूचना हेतु उसी के द्वारा प्रकाशित 'राज-भाषा सहायिका' पुस्तक का विमोचन किया। समापन समारोह की अध्यक्षता कंपनी के निदेशक (टेक्नीकल) श्री एस. एन. तेलंग ने की। श्री तेलंग ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा **कि हिन्दी किसी एक जन-किसी एक प्रांत की भाषा नहीं है अपितु वह जन-जन की भाषा है, देश के हर प्रान्त की मातृभाषा है। उनका कहना था कि ऐसी हिन्दी को जिसे भारतीय संविधान राजभाषा के रूप में घोषित कर चुका है, हमें बड़े गर्व के साथ सीखना चाहिए।**

इसी कार्यक्रम में कंपनी के राजभाषा कार्यान्वयन समिति की ओर से नवम्बर 1988 में सम्पन्न प्रबोध परीक्षा में सर्वश्रेष्ठ स्थान लेनेवाले ईसीआई एल के कर्मचारी श्री वी. के. देशमुख को भी पुरस्कृत किया गया।

समापन समारोह के कार्यक्रमों की अन्तिम कड़ी थी केन्द्रीय विद्यालय की छात्राओं द्वारा प्रस्तुत सामूहिक गान तथा भरतनाट्यम का कलात्मक प्रदर्शन। छात्राओं के गायन तथा नृत्य प्रादर्शन स अभिभूत होकर आंध्र प्रदेश हिंदी अकादमी की पूर्व अध्यक्ष श्रीमती इन्दिरादेवी ने बालिकाओं को उनके उत्तम प्रस्तुतीकरण के लिए चार सौ रुपये का नगद पुरस्कार अपनी ओर से भेंट किया।

समारोह के अध्यक्ष श्री एस. एन. तेलंग ने मुख्य अतिथि श्री शेषेन्द्र शर्मा तथा राजकुमारी श्रीमती इन्दिरादेवी धनराजगिर को मेमेंटों भेंट करके उनका सम्मान किया। ईसीआईएल के कर्मचारियों ने भी एक और सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जो बहुत सराहनीय रहा।

इस्को, बर्नपुर

इस्को, बर्नपुर में 14 सितम्बर, 89 से 20 सितम्बर, 89 तक राजभाषा सप्ताह मनाया गया। 14 सितम्बर, 89 को स्थानीय स्टाफ प्रशिक्षण केन्द्र में राजभाषा सप्ताह का उद्घाटन करते हुए महाप्रबन्धक (वर्क्स) श्री एम.एस. चावला ने कहा कि शुरू में संकोच होना स्वाभाविक है किन्तु हमने इस्को में अपने अनुभव से यही जाना है कि एक बार शुरू कर देने के बाद हिन्दी में काम करना बड़ा आसान हो जाता है। हमारी सभी इकाइयों में काम बढ़ रहा है और यह आशा है कि हिन्दी में तकनीकी लेखन सम्बन्धी इस तरह की विचार गोष्ठियों और कार्यशालाओं के आयोजन से उत्तरोत्तर प्रगति होगी।

हिन्दी में तकनीकी लेखन पर हुई विचार गोष्ठी की अध्यक्षता श्री एस.के. अहूजा, उप महाप्रबन्धक (सेवा) ने की। इस विचार गोष्ठी में 'तकनीकी परिवर्तन एवं मानव संसाधन: संदर्भ इस्को' और "तकनीकी उपलब्धियों में कार्य-संस्कृति का योगदान" शीर्षक दो निबन्ध पढ़े गए। पहला निबन्ध प्रस्तुत किया--श्री तपन कुमार मुखर्जी, प्रबन्धक (विद्युत) ने और दूसरा निबन्ध प्रस्तुत किया श्री हृदयेश सिंह, सहायक प्रबन्धक (यांत्रिक) ने। प्रत्येक निबन्ध पाठ के बाद विचार-विमर्श हुआ। श्री अहूजा ने अपने अध्यक्षीय भाषण में विषयों के चुनाव और इस सफल गोष्ठी के आ-योजन के लिए सभी सम्बद्ध लोगों को बधाई दी और कहा कि इस गोष्ठी ने यह साबित कर दिया है कि कोई भी काम ऐसा नहीं जिसे हम हिन्दी में नहीं कर सकते। उन्होंने तकनीकी कार्यों से जुड़े सभी लोगों का आह्वान करते हुए कहा कि वे अपने तकनीकी कार्यों को ज्यादा से ज्यादा हिन्दी में करें।

इस सप्ताह के दौरान--निम्नलिखित प्रतियोगिताओं के आयोजन हुए:--

(क) टिप्पण व प्रारूप लेखन (ख) कर्मियों के बच्चों के लिए कविता पाठ (ग) हिन्दीतर भाषी कर्मियों के लिए अंतर इकाई हिन्दी नाटक प्रतियोगिता।

1 सितम्बर, से 14 सितम्बर तक के लिए हिन्दी में सर्वाधिक कार्य प्रतियोगिता भी हुई। 20 सितम्बर, 89 को पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन हुआ। जिसमें सभी पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर वर्ष भर में सबसे अधिक हिन्दी मूल पत्र लेखन के लिए कुल्टी वर्क्स को "प्रबन्ध निदेशक राजभाषा चल वैजयन्ती" प्रदान की गई। राजभाषा क्लब के वार्षिकोत्सव के रूप में कवि सम्मेलन का भी आयोजन हुआ।

पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित इस्को के प्रबन्ध निदेशक श्री एम.एफ. मेहता ने सभी पुरस्कार दिए। विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित इस्को के कार्य. निदेशक (परियोजना व आधुनिकीकरण) श्री जयदेव

गांगुली ने कर्मियों के उत्साह व प्रयास की सराहना करते हुए हिन्दी के प्रचार प्रसार में हिन्दीतर भाषियों, खासकर बंगभूमि के मनीषियों, के योगदान का उल्लेख किया तथा यह विश्वास व्यक्त किया कि हमारे कर्मी इस परम्परा को और आगे बढ़ाएंगे।

श्री मेहता ने हिन्दी के काम को एक राष्ट्रीय काम बताया क्योंकि यह पूरे देश को जोड़ने में एक कड़ी का काम करती है।

पुरस्कार वितरण समारोह के बाद कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसमें हिन्दी के साथ-साथ उर्दू व बंगला की भी कविताएं पढ़ी गई। कवि सम्मेलन की अध्यक्षता की जनाव साहिल मुंगेरी ने।

प्रोजैक्टस एंड डेवलपमेंट इंडिया लिमिटेड : सिंदरी

उपक्रम 1961 से उर्वरक एवं रसायन के क्षेत्र में अभियंत्रण सलाहकार के रूप में, साथ ही शोध एवं विकास तथा कैटलिस्ट उत्पादन क्षेत्रों में अपनी सेवाएं प्रदान करता है। 14 सितम्बर से 20 सितम्बर '89 तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। समारोह के अन्तर्गत विभिन्न कार्यक्रम किए गए।

14 सितम्बर, '89 को हिन्दी कार्यशाला का शुभारम्भ हुआ जिसका उद्घाटन करते हुए महाप्रबन्धक श्री के. मुखर्जी ने हिन्दी की प्रगति पर जोर देते हुए कहा कि इस प्रकार के आयोजन से ही हिन्दी का विकास एवं इसके प्रति चेतना जागृत होगी। कार्यशाला में संस्थान के कुछ वरिष्ठ अधिकारियों को संबोधित करते हुए प्रबन्धक (प्रशिक्षण) श्री प्रभुनाथ पंडित ने राजभाषा संबंधी संवैधानिक उपबन्धों, अधिनियम, संकल्प एवं उसके नियमों से संबंधित जानकारी से सबको अवगत कराया।

समारोह के पहले चरण में निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें हिन्दी भाषियों एवं अहिन्दी भाषियों, दोनों वर्गों के लिए अलग-अलग विषय रखे गये थे। हिन्दी भाषा-भाषियों के लिए निबन्ध का विषय था—**"राष्ट्रीय विकास में अनुशासन की महत्ता'** तथा अहिन्दी भाषा भाषियों के लिए निबन्ध का विषय था— **"पंडित नेहरू : उनकी परिकल्पना और उनके मूल्य"**।

हिन्दी भाषी वर्ग म प्रतियोगियों की संख्या 18 रही जबकि अहिन्दी वर्ग में 8 प्रतियोगियों ने भाग लिया। हिन्दी भाषी वर्ग के निम्नलिखित चार निबन्धों को पुरस्कार हेतु चुना गया:

प्रथम — श्री अर्जुन प्रसाद सिंह
द्वितीय — श्री मिथिलेश कुमार सिन्हा
तृतीय — श्री अरुण कुमार पंडित एवं श्री विनोद बिहारी शरण।

अहिन्दी भाषी वर्ग के निम्नलिखित प्रतियोगियों को पुरस्कार प्रदान किया गया:

प्रथम — श्री प्रजय कुमार चक्रवर्ती
द्वितीय — श्री सी.ए. गोविन्दन
तृतीय — श्री मानिक लाल भाया

अगले चरण में हिन्दी में टिप्पणी एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसमें भाग लेने वालों की संख्या 11 थी, जिनमें निम्नलिखित प्रतियोगियों को पुरस्कार हेतु चुना गया:—

प्रथम — श्री दयाशंकर तिवारी
द्वितीय — श्री वशिष्ठ नारायण सिंह
तृतीय — श्री विनय कुमार गौड़।

हिन्दी सप्ताह समारोह के तृतीय चरण में महत्वपूर्ण एवं आकर्षक प्रतियोगिता "व्याख्यान प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया जिसमें 11 वक्ताओं ने व्याख्यान दिए। व्याख्यान का विषय था:—

"औद्योगिक क्षेत्र में भारत की उपलब्धियां"

कार्यक्रम की अध्यक्षता महाप्रबन्धक श्री एन.एन. तांगड़ी ने की और उन्होंने इस आयोजन की प्रशंसा करते हुए वक्ताओं को धन्यवाद दिया एवं हर वर्ष अपने संस्थान में इस प्रकार के आयोजन पर बल दिया।

अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक श्री वी.आर. जोहरापुरकर ने प्रशिक्षण केन्द्र में स्थापित एक द्विभाषीय कम्प्यूटर का उद्घाटन किया।

कार्यक्रम के उपरान्त अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक ने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार तथा प्रमाण पत्र प्रदान किये। उन्होंने इस आयोजन की भूरि-भूरि प्रशंसा की एवं धन्यवाद दिया।

आई आई सी बी, कलकत्ता

आई. आई. सी. बी., कलकत्ता—700032 में 14 सितम्बर, 1989 को संस्थान के कार्यकारी निदेशक डॉ. अमर नाथ भादुड़ी की अध्यक्षता में हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि राजभाषा विभाग (कार्यान्वयन), पूर्व क्षेत्र, कलकत्ता के उप निदेशक श्री सिद्धि नाथ झा। डॉ. भादुड़ी ने कहा कि हिन्दी भारत सरकार की राजभाषा है। अन्य भारतीय भाषाओं के विकास में ही हिन्दी भाषा का विकास अर्न्तनिहित है तथा समस्त भारतीय भाषाओं का विकास करना हम सबका परम कर्तव्य है।

मुख्य अतिथि श्री झा ने भारतीय संविधान का हवाला देते हुए कहा कि भारतीय संविधान में विभिन्न धाराओं के तहत यह व्यवस्था प्रदान की गई है कि संपूर्ण भारतीय

भाषाओं का सर्वांगीण विकास हो किन्तु संघ की राजभाषा के रूप में हिन्दी भाषा को ही स्वीकृत किया गया है। उन्होंने राजा राम मोहन राय तथा डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी इत्यादि के योगदान का उल्लेख किया

इस अवसर पर संस्थान में राजभाषा से संबंधित एक प्रदर्शनी लगाई। अहिन्दी भाषाभाषी कर्मचारियों के मन में हिन्दी भाषा के प्रति अभिरूचि उत्पन्न करने हेतु निबंध लेखन प्रतियोगिता, टिप्पणी एवं मसौदा लेखन प्रतियोगिता तथा वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई। वाद-विवाद प्रतियोगिता का मूल्यांकन संस्थान के वैज्ञानिक ई-II डॉ. आर. के. बनर्जी ने किया। वाद-विवाद प्रतियोगिता का विषय था "विज्ञान वरदान है"। निबंध लेखन प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार–कुमारी चयनिका बसु, द्वितीय पुरस्कार––डॉ. आर. के. महाजन, तृतीय पुरस्कार––श्री प्रशान्त कुमार दास को प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त 6 सांत्वना पुरस्कार प्रदान किये गए। टिप्पणी तथा मसौदा लेखन प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार––श्री अशोक पुतुण्ड, द्वितीय पुरस्कार––कुमारी चयनिका बसु, तृतीय पुरस्कार––श्रीमती रत्नावली अधिकारी तथा श्री प्रशान्त कुमार दास को अलग-अलग प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त 6 सांत्वना पुरस्कार प्रदान किये गए। वाद-विवाद प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार––श्रीमती दिप्ति भट्टाचार्या (माथुर), द्वितीय पुरस्कार––कुमारी सास्वती चक्रवर्ती, तृतीय पुरस्कार––श्री सप्तर्षि पाल को प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त 11 सांत्वना पुरस्कार प्रदान किये गए। पुरस्कार विजेताओं को डॉ. अमर नाथ भादुड़ी, कार्यकारी निदेशक, डॉ. आर. के. बनर्जी, वैज्ञानिक ई-II तथा श्री अशोक चौधरी, वरिष्ठ वित्त तथा लेखा अधिकारी के द्वारा उपर्युक्त मदों के पुरस्कार क्रमशः प्रदान किये गए। कार्यक्रम का संचालन डॉ. (श्रीमती) मृदुला मिश्र एवं संचालन श्री श्याम बहादुर सिंह ने किया।

संस्थान के कर्मचारियों के सहयोग से श्री चिरंजीत के हास्य व्यंग्य एकांकी "चक्रव्यूह" का मंचन किया गया जिसे अत्यधिक सराहा गया। अहिन्दी भाषा-भाषी कर्मचारियों की सहायता से हिन्दी एकांकी मंचन करने का यह संस्थान का प्रथम सफल प्रयास था। अन्त में श्री मृणाल कान्ति घोष के द्वारा एकल अभिनय एकांकी "मदन हाजिर" के मंचन के साथ समारोह समाप्त हुआ।

वैस्टर्न कोलफील्ड्स, नागपुर

29 से 5-10-89 तक हिन्दी सप्ताह विविध कार्यक्रमों के साथ मनाया गया। 29-9-89 को उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि डॉ. वेद प्रकाश मिश्र ने कहा कि हिन्दी को सही अर्थों में राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने की सर्वाधिक जिम्मेदारी बुद्धिजीवियों की है। समारोह के अध्यक्ष भी श्री गौतमराज भंडारी, निदेशक (कार्मिक) ने अपने अध्यक्षीय संशोधन में कहा कि यद्यपि कंपनी में काफी कामकाज हिन्दी में हो रहा है परन्तु इतने से ही हमें संतुष्ट नहीं होना है बल्कि हिन्दी की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हम सभी को संयुक्त रूप से और अधिक प्रयास करना है। समारोह का सफल संचालन श्री राजेन्द्र पटोरिया, संपादक ने किया तथा श्री जनार्दन पाण्डेय, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी ने कंपनी में हो रहे हिन्दी कामकाज का ब्यौरा प्रस्तुत करते हुए आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर श्री पी. के. सिन्हा, निदेशक (तकनीकी), महाप्रबंधक/राजभाषा प्रमुख, विभागाध्यक्षगण तथा अच्छी संख्या में अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित थे।

सप्ताह के दौरान, राजभाषा पर विचार अभियान, हिन्दी निबंध प्रतियोगिता, कवि सम्मेलन, हिन्दी की दौड़, "मतदान की आयु 18 वर्ष कितनी सार्थक" विषय पर रोचक वाद-विवाद प्रतियोगिता तथा कर्मचारियों के बच्चों के लिए हिन्दी कविता पाठ प्रतियोगिता एवं एकल-अभिनय प्रतियोगिता आदि कार्यक्रम आयोजित किये गए।

हिन्दी की दौड़ यशवंत स्टेडियम से कोल इस्टेट तक हुई जिसमें बाहर के खेल के प्रमुख व्यक्ति तथा कंपनी के कर्मचारियों अधिकारियों ने भाग लिया। श्री एस. एम. पठानिया, पुलिस आयुक्त, नागपुर ने यशवंत स्टेडियम में हिन्दी दौड़ की मशाल श्री गौतम राज भंडारी, निदेशक (कार्मिक) के हाथों में सौंप कर दौड़ का शुभारंभ कराया।

हिन्दी निबंध प्रतियोगिता में सर्वश्री एम. एन. गडकरी, डी. एच. लालवानी, एम. यू. उन्नीकृष्णन तथा श्री जितेन्द्र काकू को क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ स्थान प्राप्त हुए। वाद-विवाद प्रतियोगिता में सर्वश्री के. के. घोष, मारोती राव पिचकाटे, एम. यू. उन्नीकृष्णन क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे। "राजभाषा पर विचार अभियान में सर्वोत्तम विचारों के लिए श्रीमती स्वाती नंदगिरिकर, श्री सतीश जैन तथा श्री शरद नासेरी को क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त हुए।

दिनांक 5-10-89 को समापन समारोह में सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को श्री गौतम राज भंडारी, निदेशक (कार्मिक) ने नकद राशि दे कर पुरस्कृत किया।

भारतीय कपास निगम लि. इन्दौर

दिनांक 14 सितम्बर, 1989 को निगम के शाखा कार्यालय, इंदौर में आयोजित "हिन्दी दिवस समारोह" की श्री सी० एस. तेवतिया, शाखा प्रबंधक ने अध्यक्षता की।

हिन्दी भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। भाषण का विषय था––"भारतीय कपास निगम में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग कैसे बढ़ाया जाए।"

अध्यक्ष महोदय द्वारा इस अवसर पर निम्नलिखित कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया और प्रशंसा पत्र वितरित किये गए :––

"हिन्दी भाषण प्रतियोगिता के पुरस्कार

श्री श्यामबाबू चौहान, सहायक (सामान्य)—प्रथम

श्री प्रकाश भास्करराव देशमुख, व.स. (लेखा)—द्वितीय

श्री दिवाकर प्रभाकर तेलंग, व.स. (लेखा)—तृतीय

शाखा कार्यालय स्तर पर हिन्दी नोटिंग/ड्राफ्टिंग पुरस्कार

प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस पर शाखा कार्यालय के 4 कर्मचारियों को हिन्दी में नोटिंग/ड्राफ्टिंग करने को प्रोत्साहन देने हेतु पुरस्कृत किया जाता है । निम्नलिखित कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया :—

1. श्री जी.वी. बर्नी, कार्यालय प्रबंधक (लेखा)—11 रुपये
2. श्री विजयकुमार उपाध्याय, वरिष्ठ सहा. (लेखा)—11रुपये
3. श्री वी.एस.लुईस, सहायक (लेखा) —11 रुपये
4. श्री श्रीकांत देशपांडे, सहायक (लेखा) —11 रुपये

अध्यक्ष महोदय ने पुरस्कार प्राप्त कर्ताओं तथा समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपना अधिकांश कार्य राजभाषा हिन्दी में करने के लिये आह्वान किया।

हिन्दुस्तान पैट्रोलियम कार्पोरेशन, भोपाल

हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन, क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल द्वारा हिन्दी सप्ताह समारोह दिनांक 8-9-1989 से लेकर 14-9-89 तक मनाया गया। इस दौरान कार्यालय द्वारा अनेक आंतरिक प्रतियोगिताओं का निम्नानुसार आयोजन किया गया ।

1. शुद्ध लेखन प्रतियोगिता
2. अनुवाद प्रतियोगिता
3. टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता
4. निबन्ध प्रतियोगिता
5. वाद-विवाद प्रतियोगिता ।

इन सभी प्रतियोगिताओं में समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बड़ी सक्रियता से भाग लिया ।

पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 20-9-89 को आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता श्री एस.के. माथुर, प्रबन्धक परिचालन ने की । सभी विजेताओं को पुरस्कार श्री सुदीप घोष, नये वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबन्धक ने दिए। उपस्थित सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों ने भविष्य में अधिकतम कार्य हिन्दी में ही करने का तथा हिन्दी के आगामी प्रयोग पर अधिक बल देने का निर्णय लिया। उक्त कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री विकास मेश्राम एवं सुधीर रायकवार, ने अमूल्य सहयोग दिया ।

हिंदुस्तान पैट्रोलियम कार्पोरेशन लि. रायपुर

हिन्दुस्तान पैट्रोलियम कारपोरेशन लि०, रायपुर-मंदिरहसौद-एल.पी.जी. भराई संयंत्र में दिनांक 20-9-89 को विशाख क्षेत्रीय द्वारा हिन्दी सप्ताह समारोह का आयोजन किया गया। समारोह श्री एस. चक्रवर्ती, संयंत्र प्रबंधक के स्वागत वचनों से श्रीगणेश हुआ। श्री एस.एम. अजवाणी, उप-प्रबंधक ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कर्मचारियों से हिन्दी कार्यान्वयन के प्रगामी प्रयोग के लिए आवश्यक कदम उठाने तथा वार्षिक कार्यक्रम के अनुपालन के लिए जोर दिया। मुख्य अतिथि प्रधानाचार्य श्री आर. डी. वजारे ने कहा कि "हिन्दी केवल भारत देश की राजभाषा व राष्ट्रभाषा ही नहीं बल्कि एक मधुर एवं जीवंत भाषा है।" राष्ट्रीय एकता की लाज को कायम रखने के लिए हमें हिन्दी सीखनी है। हिन्दी सप्ताह के अवसर पर आयोजित निबंध, टिप्पण व आलेखन तथा भाषण प्रतियोगिता में भाग लिए विजेताओं को नकद पुरस्कार दिए गए ।

अंत में डा. एस. वशीर, हिन्दी अधिकारी ने धन्यवाद समर्पण किया ।

सीमेंट कार्पोरेशन आफ इंडिया लि., नई दिल्ली

निगम में 14 से 20 सितम्बर, 1989 तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया ।

हिन्दी सप्ताह का उद्घाटन डाक्टर के.डी. गुप्ता, निदेशक (कार्मिक) की अध्यक्षता में 14 सितम्बर को किया गया। उन्होंने कहा कि हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है, हमें हिन्दी में काम करने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिये। उन्होंने बताया कि हमारा निगम सीमेंट जैसे तकनीकी विषय पर हिन्दी में तकनीकी साहित्य की कमी को पूरा करने का काफी प्रयास कर रहा है। निगम के दो कार्यपालकों ने हिन्दी भाषा में "सीमेंट प्रारंभिका" नामक एक पुस्तक लिखी ।

निदेशक (कार्मिक) ने यह भी उल्लेख किया कि इस उद्योग में मैनुअल समझी जाने वाली "सीमेंट डाटा बुक" पुस्तक का हिन्दी अनुवाद किया जा रहा है। यह पुस्तक अभी तक केवल जर्मन तथा अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध है। उन्होंने उपस्थित कर्मचारी समूह से नोटिंग/ड्राफ्टिंग, पत्राचार, चैकों, फार्मों, व रजिस्टरों इत्यादि में हिन्दी में पर्याप्त मात्रा में कार्रवाई करने पर बल दिया।

हिन्दी सप्ताह का समापन निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री आनन्द दरबारी की अध्यक्षता में 20 सितम्बर को किया गया। इस अवसर पर निगम के हिन्दी अधिकारी ने सी० सी० आई० में हिन्दी कार्यान्वयन के संबंध में संक्षिप्त जानकारी दी। तदनन्तर श्री आनन्द दरबारी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने हिन्दी सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में सफल प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान

किये। उन्होंने हिन्दी सप्ताह के दौरान कर्मचारियों के उत्साह की सराहना की और उपस्थित कर्मचारी वर्ग से निगम के कामकाज में हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग पर जोर दिया।

समारोह के समापन पर मुख्य प्रबंधक (कार्मिक एवं प्रशासन) ने अध्यक्ष महोदय, निदेशक गण एवं सभी कर्मचारियों को धन्यवाद दिया, जिन्होंने इन कार्यक्रमों में काफी दिलचस्पी ली तथा इसके आयोजन को सफल बनाया।

नेशनल टैक्सटाइल कारपोरेशन लि., दिल्ली

11 से 15 सितम्बर, 1989 तक हिन्दी सप्ताह समारोह का आयोजन किया गया। इस सप्ताह के दौरान आयोजित किए गए विभिन्न कार्यक्रमों और प्रतियोगिताओं का विवरण निम्नानुसार है :—

1. हिन्दी कार्यशाला : 11 सितम्बर तथा 13 सितम्बर, 1989

सप्ताह के दौरान 2 हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिसमें मुख्यालय के सभी वर्गों के अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

2. निबन्ध प्रतियोगिता

निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसका विषय था : "औद्योगिक संबंध कैसे मधुर हों"

प्रतियोगिता में निगम के मुख्यालय, इसकी 9 इकाइयों तथा क्षेत्रीय कार्यालयों (शोरूमों सहित) के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

3. वाद-विवाद प्रतियोगिता : 12 सितम्बर, 1989

वाद-विवाद प्रतियोगिता का विषय था : "स्त्री प्रेरणा का स्त्रोत है—ईर्ष्या का नहीं"

4. हिन्दी टाइपिंग प्रतियोगिता : 14 सितम्बर, 1989

इस प्रतियोगिता में निगम के उन लिपिकों ने भाग लिया जिन्हें हिन्दी टाइपिंग का ज्ञान है।

सांस्कृतिक कार्यक्रम : 15 सितम्बर, 1989

15 सितम्बर, 1989 को "हिमाचल भवन" आडिटोरियम में पुरस्कार वितरण तथा सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि थे—श्री इन्दु गोपाल झिंगरन, अपर सचिव, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार। कार्यक्रम की अध्यक्षता निगम के अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक, श्री राज सिंह निर्वाण ने की।

इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले कर्मचारियों को पुरस्कार और प्रमाणपत्र प्रदान किए गए। साथ ही, उन कर्मचारियों को भी पुरस्कृत किया गया जिन्होंने जुलाई, 1988 से सितम्बर, 1988 और जनवरी, 1989 से जून, 1989 के दौरान छःमाही नकद पुरस्कार योजना के अन्तर्गत हिन्दी में नोटिंग और प्रारूप लेखन का कार्य किया।

भारत सरकार के "गीत एवं नाटक प्रभाग" के सौजन्य से एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया जिससे उपस्थित सभी श्रोताओं का मनोरंजन हुआ। साथ ही, निगम के मुख्यालय के कर्मचारियों ने भी मनोरंजक कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

"प्रेरणा" नामक पत्रिका का विमोचन

अर्धवार्षिक पत्रिका "प्रेरणा" के पहले अंक का विमोचन मुख्य अतिथि के कर-कमलों द्वारा किया गया, जिसमें निगम के मुख्यालय, मिलों तथा क्षेत्रीय कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनाएं प्रकाशित की गई हैं।

राजभाषा के प्रयोग को प्रोत्साहित करने और कर्मचारियों की रुचि हिन्दी के प्रति जागृत करने के उद्देश्य से वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए हिन्दी सप्ताह के अवसर पर निगम के पुस्तकालय में लगभग 1500 रुपये की हिन्दी की पुस्तकें खरीदी गईं। ये पुस्तकें सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को पढ़ने के लिए उपलब्ध हैं।

वायुदूत, नई दिल्ली

14 सितम्बर 1989 को वायुदूत के प्रबन्ध निदेशक श्री हर्षवर्धन ने हिन्दी सप्ताह का शुभारम्भ किया। उन्होंने कहा कि हिन्दी सप्ताह मनाना ही हिन्दी को सही सम्मान देना नहीं है। हिन्दी का सही मान तब होगा, जब हम अपने दैनिक कामकाज में इसे व्यवहार में लाएं। इस अवसर पर "क्षितिज" नाम से एक स्मारिका भी निकाली गई। इसके पश्चात् "हिन्दी प्रदर्शनी" का उद्घाटन किया गया।

15 सितम्बर 1989 को वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विषय था —"आधुनिकता की दौड़ में हमारी स-स्कृति सुरक्षित है"।

18 सितम्बर 1989 को टिप्पण व आलेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें 17 कर्मचारियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता के निर्णायक डा. सूरजभान सिंह, अध्यक्ष—वैज्ञानिक व तकनीकी शब्दावली आयोग थे। उन्होंने टिप्पण व आलेखन विषय में अपने विचारों से ज्ञानवर्धन किया।

इसी दिन एक विचार-गोष्ठी "हिन्दी को सरकारी कामकाज में कैसे बढ़ावा दिया जाए" रखी गई। विचार गोष्ठी में 10 कर्मचारियों ने भाग लिया।

19 सितम्बर 1939 को उपयुक्त शब्द चयन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया : इस प्रतियोगिता में कर्मचारियों ने विशेष उत्साह दिखाया ? इसमें 22 कर्मचारियों ने भाग लिया।

21 सितम्बर 1989 को हिन्दी सप्ताह का समापन समारोह व पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किए गए। इस अवसर पर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किया

गया, जिसमें नाटक, गीत, संगीत, मूक अभिनय व अन्य कई कार्यक्रम रखे गये। पुरस्कार वितरण वायुदूत के माननीय अध्यक्ष श्री जेरी पॉयस द्वारा किया गया। इस अवसर पर प्रबन्ध निदेशक ने कहा कि हिन्दी सम्बन्धी कार्यक्रमों में कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया, इससे मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हुई। मुझे आशा है कि इनका उत्साह और हिन्दी के प्रति लगाव इसी तरह बना रहेगा।

अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण संस्थान

केन्द्रीय रेशम उत्पादन एवं अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान बहरमपुर पश्चिम बंगाल

दिनांक 14 सितम्बर, 1989 से दिनांक 20 सितम्बर, 1989 तक हिन्दी सप्ताह मनाया गया।

14 सितम्बर, 1989 को संस्थान के अनुसंधान निदेशक डॉ. जी. सुब्बाराव ने अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपना अधिक से अधिक सरकारी कामकाज हिन्दी में करने तथा इस दिन की शुरुआत हिन्दी में हस्ताक्षर करते हुए करने को प्रेरित करते हुए एक अपील जारी की। दिनांक 15 से 20-9-89 तक हिन्दी वाक्, टिप्पण व आलेखन, निबंध तथा कविता-पाठ प्रतियोगिताएं हिन्दी और हिन्दीतर भाषियों के लिए अलग-अलग दो समूहों में आयोजित की गई। वाक् व निबंध प्रतियोगिता के विषय क्रमशः "हिन्दी राजभाषा के रूप में कितनी सफल हैं" और "हिन्दी के प्रचार-प्रसार में दूरदर्शन की भूमिका" रखे गए थे। इन प्रतियोगिताओं में कर्मचारियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

हिन्दी सप्ताह के अंतिम दिन को हिन्दी दिवस के रूप में बड़े धूम-धाम से मनाते हुए एक भव्य समारोह आयोजित किया गया, जिसका शुभारंभ अनुसंधान निदेशक, डॉ. जी. सुब्बाराव ने दीप प्रज्वलित करके किया। हिन्दी अधिकारी, श्री सुदर्शन तराई ने पिछले एक वर्ष में हुई विशेष प्रगति पर प्रकाश डालते हुए वार्षिक रिपोर्ट पेश की। इस अवसर पर बोलते हुए संस्थान के संयुक्त निदेशक, श्री सेन ने राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति पर संतोष प्रकट किया और अधिकारियों एवं कर्मचारियों से हिन्दी में काम करने का अनुरोध किया।

इस अवसर पर उपनिदेशक, श्री देवव्रत राय एवं वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी, श्री काली प्रसाद जायसवाल ने भी विचार व्यक्त किए।

अध्यक्षीय भाषण में डॉ. जी. सुब्बाराव ने कहा— "संस्थान में हिन्दी का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है और पिछले चार वर्षों की तुलना में स्थिति काफी अच्छी है तथा हिन्दी में काम निर्धारित लक्ष्य से अधिक हो रहा है।" उन्होंने आगे कहा "हिन्दी सीख कर ही हम प्रादेशिकता की दीवार को लांघ सकते हैं और देश की एकता को मजबूत कर सकते हैं।" तत्पश्चात् उन्होंने प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए।

संस्थान के हिन्दी अनुवादक श्री अभिमन्यु वनसोडे ने समारोह को सफल बनाने में सहयोग हेतु संस्थान के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों तथा अन्य उपस्थित अतिथियों के प्रति आभार प्रकट किया। अन्त में मनोरंजन कार्यक्रम के अन्तर्गत हिन्दी चलचित्र का प्रदर्शन किया गया।

रेलवे स्टाफ कालेज, वडोदरा

रेलवे स्टाफ कालेज एशिया का एक विशिष्ट प्रशिक्षण संस्थान है। सेवाधीन रेलवे अधिकारियों तथा प्रबन्धकों को नित-नूतन तकनीकों एवं प्रबंधकीय पहलुओं से परिचित कराने के लिए यहां विशेष प्रशिक्षण पाठ्यक्रम/सेमिनार आयोजित किए जाते हैं।

प्रशिक्षण अवधि में छात्राधिकारियों को सरकार की राजभाषा नीति की नियमित कक्षाओं में जानकारी दी जाती है जिसके लिए फाउण्डेशन व इण्डक्शन पाठ्यक्रमों में राजभाषा के पीरियड नियत किए गए हैं तथा इस विषय में परीक्षा ली जाती है जिसे पास करना छात्राधिकारियों के लिए अनिवार्य है। हिन्दी में प्रशिक्षित कर्मचारियों/अधिकारियों तथा छात्राधिकारियों को हिन्दी का सोत्साह प्रयोग करने का अवसर प्रदान करने तथा इस मामले में उनके आत्मविश्वास को दृढ़ बनाने के उद्देश्य से रेलवे स्टाफ कालेज, वडोदरा में दिनांक 11-9-89 से 18-9-89 तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। इस सप्ताह की गतिविधियां निम्नानुसार रहीं :—

हिन्दी टंकण एवं हिन्दी आशुलिपि प्रतियोगिता

दिनांक 11-9-89 को कालेज के कर्मचारियों के लिए हिन्दी टाइपिंग व हिन्दी आशुलिपि प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। हिन्दी टाइपिंग प्रतियोगिता में सर्वश्री आर. डी. राजपाल, वी. एन. जाधव तथा वी. पी. मदनानी ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय नकद पुरस्कार प्राप्त किए। इसी प्रकार हिन्दी आशुलिपि प्रतियोगिता में सर्वश्री वी पी मदनानी, वी. के. स्वामी तथा बी. वी. रमणी ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया।

हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता

दिनांक 12-9-89 को हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस अवसर पर रेल हिन्दी सलाहकार समिति के माननीय सदस्य श्री रतनचन्द धीर उपस्थित थे। उन्होंने उपस्थित छात्राधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए हिन्दी निबन्ध की परिभाषा से अवगत कराया तथा प्रतियोगिता में अधिकारियों/कर्मचारियों की भारी संख्या में सहभागिता के लिए उन्हें बधाई दी। इस प्रतियोगिता में 33 प्रतियोगी सम्मिलित हुए।

प्रतियोगिता के विषय थे (1) राष्ट्र के विकास में रेलों की भूमिका (2) अनुशासन का महत्त्व (3) कम्प्यूटर, अभिशाप या वरदान। छात्राधिकारी समूह में श्रीमती शोभना

बंदोपाध्याय, श्री आर. के. शर्मा व श्री कुलवेन्द्र सिंह कपूर ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया। जबकि अहिन्दी भाषी श्री आकेल्ल पूर्णेन्दु शर्मा को विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कर्मचारी समूह में सर्वश्री जे. एम. बोवलेकर, प्रकाश गवरे तथा एस. बी. कानेटकर ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार प्राप्त किए। अहिन्दी भाषी कर्मचारी श्री डी. सी. सिन्हा को विशेष पुरस्कार प्रदान किया गया।

हिन्दी वाक् प्रतियोगिता

दिनांक 13-9-89 को कालेज में प्रशिक्षणाधीन सभी छात्राधिकारियों तथा कालेज में कार्यरत कर्मचारियों के लिए वाक् प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस अवसर पर रेल हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य श्री रतनचन्द धीर ने अध्यक्ष की भूमिका निभाई और कालेज के वरिष्ठ प्रोफेसर (सि. इंजी.) एवं वाइस प्रिंसिपल (पी सी) श्री टी. के. सिंह तथा श्री जे. के. डी. दैजल, प्रो. (संरक्षा) एवं संस्थान के वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी श्री रा. ना. कुलश्रेष्ठ ने निर्णायकों की भूमिका निभाई। अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री रतनचन्द धीर ने कहा कि वाक् प्रतियोगिता में भाषा, शैली और विचार को प्रस्तुत करना एक कौशल है। उन्होंने आयोजकों को बधाई दी कि इस प्रतियोगिता के लिए विषयों का चयन हिन्दी सप्ताह के लक्ष्य को ध्यान में रखकर किया गया है। हिन्दी वाक् प्रतियोगिता में अधिकारी वर्ग में सर्वश्री एस. एन. पाण्डे, ओमप्रकाश व एस. के. सिंह ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार प्राप्त किए। श्री संजीव पटजोशी को विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कर्मचारी वर्ग में सर्वश्री एस. बी. कानेटकर, डी. जी. मकवाना तथा जे एम बोवलेकर ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया और श्री प्रकाश गवरे को विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

समापन समारोह

दिनांक 18-9-89 को समापन समारोह आयोजित किया गया जिसमें सत्र में चल रहे सभी पाठ्यक्रमों के छात्राधिकारी, संकाय अधिकारी तथा कालेज के कर्मचारी उपस्थित रहे। समारोह की अध्यक्षता संस्थान के प्रिंसिपल श्री बी. वी. रामराव ने की। कालेज के मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं प्रो. (सी ए) श्री सुभाष कुलकर्णी ने बताया कि कालेज ने फाउण्डेशन पाठ्यक्रम के लिए हिन्दी में करीब 600 पृष्ठों की सामग्री तैयार कर ली है।

हिन्दी सप्ताह एवं हिन्दी दिवस की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए संस्थान के वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी श्री रा.ना. कुलश्रेष्ठ ने कहा कि रेलवे स्टाफ कालेज हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग बढ़ाने की दिशा में सतत् प्रयत्नशील है। भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुसरण में यहां के फाउण्डेशन, इण्डक्शन तथा ओरिएन्टेशन पाठ्यक्रमों में मिली-जुली भाषा में प्रशिक्षण प्रारंभ किया जा चुका है और काफी छात्राधिकारी हिन्दी माध्यम से परीक्षाएं भी दे रहे हैं। इसे प्रोत्साहित करने के लिए फाउण्डेशन तथा इण्डक्शन पाठ्यक्रमों में हिन्दी माध्यम से उत्तर देने वालों के लिए 500, 350 तथा 250 रुपये के पुरस्कार रखे गए हैं तथा एक विशेष पुरस्कार केवल अहिन्दी भाषियों के लिए है। उन्होंने यह भी कहा कि हिन्दी प्रयोग की संभावनाएं तथा भविष्य उज्जवल है।

कालेज के प्रिंसिपल श्री रामराव ने कहा कि हिन्दी सीखना तथा हिन्दी में काम करना सभी के लिए अपरिहार्य एवं आवश्यक है।

उन्होंने यह भी बतलाया कि गत वर्ष ऐसे 2 विशिष्ट पाठ्यक्रम आयोजित किए गए जिनमें हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले विभिन्न रेलों के ऐसे अधिकारियों को, जिनकी मातृभाषा हिंदी नहीं थी केवल हिन्दी माध्यम से काम करने का प्रशिक्षण दिया गया। उन्होंने कहा कि जब हम अंग्रेजी जैसी कठिन विदेशी भाषा सीख सकते हैं तो हिन्दी जैसी सरल भाषा को क्यों नहीं अपना सकते। ऐसा करना निश्चित ही समाज और राष्ट्र के हित में है। इसके उपरांत उन्होंने विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी अधिकारियों व कर्मचारियों को नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

संस्थान के मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री सुभाष कुलकर्णी ने आभार प्रकट किया।

राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे

दिनांक 11 सितम्बर से 18 सितम्बर 1989 तक "हिन्दी सप्ताह" मनाया गया। 11 सितम्बर को हिन्दी निबन्ध तथा हिन्दी नोटिंग/ड्राफ्टिंग प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं जिनमें 23 कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। हिन्दी निबन्ध का विषय था—"भारत में विज्ञान की प्रगति में पं. जवाहरलाल नेहरू का योगदान"। 12 सितम्बर को हिन्दी वाक् प्रतियोगिता और अन्त्याक्षरी का आयोजन किया गया। हिन्दी वाक् प्रतियोगिता का विषय था—"भारत के लिए एक सामान्य सम्पर्क भाषा की आवश्यकता"। इसमें 15 कर्मचारियों ने भाग लिया। अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता 2 वर्गों के मध्य सम्पन्न हुई। प्रत्येक वर्ग में दस-दस कर्मचारी शामिल थे।

हिन्दी में शोध पत्र लेखन से विज्ञान की लोकप्रियता बढ़ेगी।

"हिन्दी दिवस" के उपलक्ष में दि. 14 सितम्बर, 1989 को प्रयोगशाला के निदेशक, डा. र.अ. माशेलकर की अध्यक्षता में मुख्य समारोह आयोजित किया गया। समारोह में पुणे विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष, प्रोफेसर आनन्द प्रकाश दीक्षित मुख्य अतिथि थे। डा. माशेलकर ने

वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों को विभिन्न पुरस्कार प्रदान किए – अध्यक्षीय भाषण में डा. माशेलकर ने रा.रा.प्र. में हिन्दी के बढ़ते हुए प्रयोग पर सन्तोष प्रकट किया। उन्होंने वैज्ञानिकों और कर्मचारियों से अपील की कि वे अपना अधिकाधिक काम हिन्दी में करने का प्रयत्न करें। प्रो. दीक्षित ने कहा कि हमें कम से कम नई पीढ़ी को हिन्दी के ज्ञान से वंचित नहीं करना चाहिए। उन्होंने वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों का आह्वान किया कि वे हिन्दी को अपनाने हेतु अपना संकल्प पक्का करके इस दिशा में स्वयं आगे बढ़ें। समारोह का संचालन डा. रमाशंकर व्यास, हिन्दी अधिकारी ने किया।

वैज्ञानिक संगोष्ठी

हिन्दी सप्ताह के समापन के अवसर पर 18 सितम्बर, 1989 को रा.रा. प्रयोगशाला, के जीवरसायन प्रभाग में क्षेत्रीय स्तर की एक वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का विषय था—"पादप कोशिका तथा ऊतक संवर्धन।" संगोष्ठी की सम्पूर्ण कार्यवाही का संचालन हिन्दी माध्यम से हुआ। निदेशक, डॉ. र.अ. माशेलकर ने संगोष्ठी का विधिवत् उद्घाटन किया। संगोष्ठी में "पादप कोशिका तथा ऊतक संवर्धन" से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं पर कुल 9 वैज्ञानिक शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। पुणे के विभिन्न संस्थानों तथा बम्बई से हिन्दुस्तान लीवर अनुसंधान केंद्र के प्रतिभागियों ने संगोष्ठी में भाग लिया। संगोष्ठी की कार्यवाही के दौरान सत्रों की अध्यक्षता वसंतदादा शुगर इन्स्टीट्यूट के निदेशक, डा. डी.जी. हापसे तथा महाराष्ट्र एसोसिएशन फॉर कल्टीवेशन ऑफ साइंसेज के वरिष्ठ वैज्ञानिक, डा. वी. सूर्यप्रकाश राव ने की।

राजभाषा के माध्यम से वैज्ञानिक संगोष्ठी
एक अनुकरणीय प्रयास

18 सितम्बर, 1989 को हिन्दी सप्ताह के उपलक्ष्य में क्षेत्रीय स्तर की एक वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। प्रयोगशाला के जीवरसायन विज्ञान प्रभाग तथा हिंदी अनुभाग के सहयोग से यह संगोष्ठी आयोजित की गई। संगोष्ठी का विषय था—"पादक कोशिका तथा ऊतक संवर्धन"। संगोष्ठी की संपूर्ण कार्यवाही का संचालन हिंदी माध्यम से हुआ। इस संगोष्ठी में "पादप कोशिका तथा ऊतक संवर्धन" से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर कुल 9 वैज्ञानिक शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। पुणे विश्वविद्यालय सहित पुणे के विभिन्न संस्थानों तथा बम्बई से हिंदुस्तान लीवर अनुसंधान केन्द्र के प्रतिभागियों ने संगोष्ठी में भाग लिया। इसका उद्घाटन राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला के निदेशक, डा. रघुनाथ अनन्त माशेलकर ने किया। सत्रों की अध्यक्षता वसंतदादा शुगर इंस्टीट्यूट के निदेशक, डॉ. डी. जी. हापसे तथा महाराष्ट्र एसोसिएशन फॉर कल्टीवेशन ऑफ साइंसेज के वरिष्ठ वैज्ञानिक, डा. वी. सूर्यप्रकाश राव ने की।

केन्द्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला, पुणे

14 सितंबर, 1989 को हिंदी दिवस मनाया गया। समारोह में राष्ट्रीय रक्षा अकादमी के कमांडेंट एअर मार्शल दीदार सिंह सभिखी तथा अध्यक्ष श्री बा. न. राजहंस, केन्द्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला कामगार सभा प्रमुख अतिथि थे।

निदेशक, डॉ. जा. सो. तारोपोर ने कार्यालय में हिंदी के कार्य की जानकारी दी। इसके पश्चात् हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं–निबंध, तकनीकी लेख, भाषण एवं टंकण प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेता कर्मचारियों को श्रीमती सभिखी ने पुरस्कार दिए। टिप्पण एवं आलेखन की पुरस्कार योजना 1 अप्रैल, 1988 से 31 मार्च, 1989 तक लागू की गई थी, इसके नकद पुरस्कार भी दिए गए।

श्री राजहंस ने अध्यक्षीय भाषण में बताया कि हिंदी दिवस सिर्फ एक दिन मनाने का और बाकी दिवस हिंदी को भूल जाना, यह बात गलत है। सभी को हिंदी भाषा में काम करना चाहिए। अधिकांश लोग हिंदी को जानते हैं, अतः हिंदी में बातचीत तथा कार्य करने में हमें झिझक महसूस नहीं करनी चाहिए।

हिंदी दिवस सिर्फ एक दिन मनाने का और बाकी दिवस हिंदी को भूल जाना यह बात गलत है।

बा० ना० राजहंस

कार्यालय के निदेशक, डॉ. जा. सो. तारापोर ने अध्यक्ष और प्रमुख अतिथि एवं श्रीमती सभिखी को पुष्पगुच्छ दिए। अंत में श्री अझर अंसारी, राजभाषा अधिकारी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

केन्द्रीय कपास अनुसंधान नागपुर

संस्थान में हिंदी सप्ताह का भव्य आयोजन किया गया। यह समारोह 8 सितम्बर 1989 से आरम्भ हुआ और 14 सितंबर, 1989 तक सफलतापूर्वक चला।

14 सितंबर को "हिंदी दिवस" को समापन समारोह हुआ। इस अवसर पर श्री तपेन्द्रनाथ बसु, निदेशक, लघु उद्योग सेवा संस्थान, नागपुर मुख्य अतिथि ने देश की एकता और अखंडता को मज़बूत करने में हिन्दी की भूमिका को सराहा और सरकारी कार्य में हिन्दी के प्रयोग की अनिवार्यता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि मात्र संवैधानिक नियमों की पूर्णता के लिए नहीं, बल्कि दिल से हिंदी के प्रति सम्मान और प्रेम होना चाहिए तभी हिंदी सच्चे अर्थों में राजभाषा कहलाएगी।

कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डा. ए. के. बसु ने की। उन्होंने हिंदी की महत्ता का वर्णन करते हुए कर्मचारियों से हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करने का आह्वान किया। उनके इस वक्तव्य से अधिकारी व कर्मचारीगण प्रेरित हुए।

कार्यक्रमों का मुख्य आकर्षण "वादविवाद प्रतियोगिता" का आयोजन था, जिसमें काफी कर्मचारियों ने भाग लिया। प्रतियोगियों के जोशीले व्याख्यान और उन्मुक्त विचारों को सुनकर जनसमूह प्रभावित हो उठा। उक्त वाद-विवाद प्रतियोगिता के अतिरिक्त इस अवधि में अन्य पांच प्रतियोगिताएं आयोजित की गई तथा हिंदी लेख प्रतियोगिता, टिप्पण/प्रारूपण प्रतियोगिता, हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने की प्रतियोगिता, हिंदी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता और नारा प्रतियोगिता। इन सभी प्रतियोगिताओं में बड़ी संख्या में कर्मचारियों ने अपार उत्साह के साथ भाग लिया।

डॉ. शिवराज, विभागाध्यक्ष, पौध रोग विज्ञान व सदस्य सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने मंच का संचालन करते हुए इन प्रतियोगिताओं के विजेताओं के नाम घोषित किए। 'नारा' प्रतियोगिता के लिए संस्थान की लायब्रेरी सहायक श्रीमती इंद्रायणी शेम्बेकर के निम्नलिखित स्लोगन को प्रथम पुरस्कार हेतु चुना गया :

"राष्ट्र का श्रृंगार यह, मणिमाल सी हिंदी हमारी।
भारत के कंठ की सुर-ताल सी हिंदी हमारी"।

केन्द्रीय कृषि मशीनरी प्रशिक्षण एवं परीक्षण संस्थान, बुदनी

संस्थान में हिन्दी सप्ताह दिनांक 14 से 20-9-89 के दौरान संस्थान के हिन्दी अनुभाग तथा केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद् (शाखा) के तत्वाधान में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

(1) 14-9-89 को केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद् की शाखा ने संस्थान के उच्चतर माध्यमिक और महाविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों के लिये "राष्ट्रभाषा के प्रसार में विद्यार्थियों का योगदान" विषय पर हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया जिसमें 14 विद्यार्थियों ने भाग लिया। उनमें से निम्नलिखित विद्यार्थियों के निबंध उच्च कोटि के पाए गए और उन्हें प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान मिले :—

1. कुमारी सिमता तिवारी } प्रथम
2. श्री पुष्पेन्द्र यादव }
3. कुमारी पुष्पलता यादव — द्वितीय
4. कु. मनिता राय और } तृतीय
5. श्री असीम भारद्वाज }

शेष प्रतियोगियों के निबंधों को उत्तम तथा सराहनीय श्रेणी में रखा गया।

(2) दिनांक 18-9-89 को संस्थान के सभी अधिकारियों कर्मचारियों और संस्थान के परिसर में रहने वालों के लिये "पर्यावरण और विकास" विषय पर हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 19 कर्मचारियों ने भाग लिया। निम्नलिखित निबंध लेखकों को अति उत्तम श्रेणी में रखा गया—

1. श्री एम. जे. के. नायडू
2. श्री राजेंद्र कुमार सिंघई और
3. श्री प्रशांत कुमार पांडे

(3) दिनांक 20-9-89 को समापन समारोह हुआ। इसकी अध्यक्षता मध्यप्रदेश के सुप्रसिद्ध कवि श्री विनोद निगम ने की। कार्यक्रम में संस्थान के अधिकारियों, कर्मचारियों और प्रशिक्षणार्थियों के साथ-साथ संस्थाओं के प्रतिनिधि, प्रतिष्ठित नागरिक और पत्रकारों ने भी भाग लिया। मुख्य वक्ता सैंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय होशंगाबाद के राजभाषा अधिकारी श्री सुभाष चन्द्र श्रीवास्तव थे।

(1) सहायक निदेशक (हिंदी) ने संस्थान में राजभाषा हिंदी के प्रयोग की स्थिति का विवरण प्रस्तुत किया और सूचित किया कि तकनीकी साहित्य के निर्माण की रचनात्मक भूमिका भी अदा कर रहा है। इस भूमिका के तहत संस्थान में दो बड़ी पुस्तकें तथा 9 छोटी पुस्तिकाएं/आलेख अभी तक हिंदी में प्रकाशित किए हैं और एक पुस्तक की तैयारी भी लगभग पूर्ण हो चुकी हैं।

(2) पुरस्कार/प्रमाण-पत्र वितरण—दोनों निबंध प्रतियोगिताओं में से प्रथम निबंध प्रतियोगिता के प्रथम, द्वितीय और तृतीय प्रतियोगियों को पुरस्कार तथा शेष को प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए तथा द्वितीय निबंध प्रतियोगता के भी प्रतियोगियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए। पुरस्कार/प्रमाण-पत्र श्री विनोद निगम ने दिए। निबंध प्रतियोगिताओं के आयोजन तथा उपलब्धियों के संबंध में परिषद् शाखा के उपाध्यक्ष श्री एम. जे. के. नायडू ने महत्वपूर्ण वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि हमें हिंदी के प्रचार प्रसार के कार्यक्रमों को हिंदी दिवस या हिंदी सप्ताह तक ही सीमित न रखकर पूरे वर्ष तक चलाना चाहिए। उन्होंने कहा कि संस्थान के अधिकारियों, कर्मचारियों के साथ-साथ महिलाओं और उच्च कक्षाओं के छात्रों ने जिस उत्साह के साथ हमारे आयोजनों में भाग लिया है उसको देखते हुए यह आशा करना व्यर्थ नहीं है कि वे इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने के लिये तत्पर और सजग हैं।

(3) "सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग में आने वाली कठिनाइयां तथा संभावनाएं विषय पर खुली चर्चा का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के श्री राजेंद्र कुमार सिंघई, सहायक इंजीनियर, प्रशांत कुमार पांडे प्रशिक्षण सहायक, डॉ. एच. एल. यादव सस्य विज्ञानी, सेवानिवृत्त प्रशासन अधिकारी पु. कृ. वस्वापट्टकर और श्री महिपाल सिंह ने अपने विचार व्यक्त किए।

अतिथि वक्ता श्री सुभाषचन्द्र श्रीवास्तव ने कहा कि उनका बैंक एक व्यावसायिक संगठन है और वहां हमें कठिनाइयों के रहते हुए भी ऐसी भाषा का प्रयोग करना होता है जो बैंक के ग्राहकों के साथ संपर्क और संवाद का उपयुक्त माध्यम बन सकें।

संस्थान के निदेशक श्री शिखर चंद जैन ने अपने समाहारात्मक भाषण में सभी वक्ताओं के विचारों की प्रशंसा करते हुए कहा कि हमें राजभाषा और राष्ट्रभाषा के अन्तर को समझना चाहिये।

अध्यक्षीय भाषण में श्री विनोद निगम ने कहा कि हिंदी एक जीवंत भाषा है और वह देश-विदेश की अनेक भाषाओं के शब्दों को पचा कर एक समृद्ध भाषा बनी है जो कि जीवन के हर क्षेत्र में प्रयोग के लिये उपयुक्त है।

कार्यक्रम के अंत में संस्थान के सहायक निदेशक (हिंदी) ने हिंदी सप्ताह के कार्यक्रमों में भाग लेने वाले लोगों को धन्यवाद दिया।

केन्द्रीय उत्तर मैदानी उद्यान संस्थान इन्दिरानगर, लखनऊ

लखनऊ के केन्द्रीय उत्तर मैदानी उद्यान संस्थान (भा. कृ. अनु. परि.) वैज्ञानिक संस्थानों में एक ऐसा संस्थान है जहां वैज्ञानिकों में हिन्दी के प्रति गहरी अभिरुचि है। 21 सितम्बर, 1989 को संस्थान के तत्वावधान में हिन्दी दिवस का सफल आयोजन किया गया। इससे पहले हिन्दी सप्ताह भी मनाया गया। हिन्दी दिवस के अवसर पर संस्थान के सभी वैज्ञानिकों और कर्मचारियों ने उत्साह से भाग लिया। इस अवसर पर हिन्दी में वाद-विवाद एवं हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। वाद-विवाद का विषय था 'देश की प्रगति में कृषि का योगदान' और निबन्ध का विषय था 'हिन्दी की कार्य-नीति लागू करने में सख्ती होनी चाहिए अथवा नहीं' सभी वैज्ञानिकों ने दोनों प्रतियोगिताओं में भाग लिया और पुरस्कार जीते।

प्रतियोगिताओं के पश्चात् वैज्ञानिकों, तकनीशियनों एवं कर्मचारियों के लिए हिन्दी कार्यशाला का आयोजन भी किया गया जिसमें विशेषज्ञों ने हिन्दी में कार्य करने में आने वाली कठिनाइयों से संबंधी समस्याओं का समाधान प्रश्नोत्तर पद्धति के आधार पर प्रशिक्षण दिया। मुख्य अतिथि भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के हिन्दी अधिकारी श्री चौरसिया थे। वैज्ञानिकों ने हिन्दी में कार्य करने का पक्ष लेते हुए व्याख्यान दिए जिसमें कार्यभारी निदेशक डॉ. ओम प्रकाश पांडे, डा. डी.के. टण्डन, डा. खादर, डॉ. जी.सी. सिन्हा, डा. अजय वर्मा, डा. अमर नाथ वर्मा, डॉ. जोशी आदि वैज्ञानिक शामिल हैं। डॉ. टण्डन, जो हिन्दी समिति के उपाध्यक्ष भी हैं, ने कहा कि वैज्ञानिक संस्थान होने के बावजूद भी तकनीकी और प्रशासन प्रभागों में साठ प्रतिशत कार्य हिन्दी में ही हो रहा है। कई वैज्ञानिक हिन्दी में कार्य कर रहे हैं, यह प्रसन्नता का विषय है। संयोजक श्री सुरेन्द्र प्रसाद उनियाल, हिन्दी अधिकारी थे। उन्होंने संस्थान में हो रही हिन्दी की प्रगति का ब्यौरा दिया।

समारोह में 1988-89 में हिन्दी में सबसे अधिक कार्य करने वाले 3 कर्मचारियों, श्री अशोक कुमार सिंह, श्री श्याम सुन्दर अरोड़ा, और श्री वी.पी. कपूर को क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय नकद पुरस्कार दिए गए।

समारोह की अध्यक्षता डॉ. ओम प्रकाश पांडे ने की। उन्होंने कहा कि जब हिन्दी को संविधान में राजभाषा का स्थान दिया गया है तो हम सभी का कर्तव्य हो जाता है कि हम कर्म और वचन से राष्ट्रभाषा को सम्मान देकर राष्ट्रीय कर्तव्य का निर्वाह करें। जो इस कर्तव्य का पालन नहीं करता उसके ऊपर अंकुश तो आवश्यक है। उन्होंने रूस, चीन, जापान, जर्मनी आदि देशों का उदाहरण देते हुए कहा कि वहां विज्ञान और तकनीकी का भी सारा कार्य उनकी अपनी भाषा में होता है तो यह कहना कदाचित उचित नहीं कि हमारे यहां वैज्ञानिक कार्य हिन्दी में नहीं हो सकता।

डाक-तार प्रशिक्षण केन्द्र सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)

दिनांक 14 सितम्बर, 1989 को हिन्दी दिवस मनाया गया। संस्थान के पुस्तकालय में "हिन्दी पुस्तकों की प्रदर्शनी" कार्यालयीन विषयों, शब्दावलियों, हिन्दी पत्रिकाओं एवं हिन्दी में उपलब्ध प्रबन्ध शास्त्रों पर आधारित लगाई गई। इसी दिन सायंकाल केन्द्र के प्रेक्षागृह में एक सभा का आयोजन किया गया तथा केन्द्र प्रधानाचार्य डा. के. बी.एच. नायर ने दीप प्रज्ज्वलित करके हिन्दी सप्ताह का उद्घाटन किया। वक्ताओं ने हिन्दी के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम को विस्तार से समझाया गया।

दिनांक 15 9-89 को स्टाफ मेम्बर एवं प्रशिक्षार्थियों के लिए निबन्ध प्रतियोगिता कराई गई। विषय था "भर्ती परीक्षाओं में हिन्दी के विकल्प की आवश्यकता।" श्री दीपक शर्मा, कार्यालय सहायक ने स्टाफ साइड से प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा प्रशिक्षार्थी श्री चारू मित्र प्रथम रहे।

दिनांक 16-9-89 को भाषण (वाक्) प्रतियोगिता का आयोजन हुआ, विषय था—"विश्व शान्ति हेतु निरस्त्रीकरण की आवश्यकता"। प्रशिक्षार्थी श्री आर.डी. चारण प्रथम रहे। 18-9-89 को समिति कक्ष में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस आयोजन में केन्द्र के प्रशासनिक अधिकारी श्री राधेश्याम कौशिक ने प्रधानाचार्य डॉ. के.बी.एच. नायर की पुस्तिका "फाइल रख-रखाव" पर प्रकाश डाला तथा पत्रावलियों को किस प्रकार बनाया जाए एवं प्रयोग किया जाए विस्तृत रूप में ओवर हैड प्रोजेक्टर की सहायता से समझाया।

दिनांक 20-9-89 को केन्द्र स्थित "केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद" की शाखा के सौजन्य से केन्द्र परिसर में स्थित समस्त केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के कर्मचारियों/अधिकारियों के बच्चों के लिए निबन्ध प्रतियोगिता/सुलेख प्रतियोगिता एवं पाठन (रिसाइटिंग) प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। निबन्ध में प्रथम स्थान पाया श्री रणबीर सिंह ने, सुलेख में प्रथम रहीं कुमारी रेणु चौहान और रिसाईटिंग प्रतियोगिता में कुमारी दीप्ति बजाज ने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। इसी संस्था के सौजन्य से हिन्दी सप्ताह समारोह के अवसर पर हिन्दी पोस्टर जारी किए गए।

दिनांक 21-9-89 को सभागार में हिन्दी-सप्ताह का समापन कार्यक्रम हुआ। सप्ताह के दौरान सफल हुए प्रतियोगियों को प्रधानाचार्य ने पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए। अन्त में अध्यक्ष ने समापन भाषण में हिन्दी सप्ताह के हर्षोल्लास एवं सफलतापूर्वक मनाए जाने पर समस्त संचालकों/आयोजकों की सराहना की। अपने सरकारी कार्य को हिन्दी में जारी रखने की पुनः अपील की।

न्यू इंडिया इंश्योरेन्स कार्पोरेशन, मद्रास

तमिलनाडु राज्य स्थित क्षेत्रीय सभी मंडल एवं शाखा कार्यालयों में दिनांक 14 सितम्बर, 1989 को हिन्दी दिवस धूमधाम से मनाया गया। अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक द्वारा जारी 'संदेश' सभी वर्ग के कर्मचारियों में इसके अंग्रेजी अनुवाद सहित वितरित किया गया।

दिनांक 14 सितम्बर को क्षेत्रीय सभी मंडल एवं शाखा कार्यालयों में बैठकों का आयोजन किया गया।

दक्षिण क्षेत्रीय कार्यालय में आयोजित बैठक में प्रबंधक श्री ओ.पी. ग्रोवर ने राजभाषा नीति अधिनियम एवं नियमों के विभिन्न प्रावधानों और राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अनुपालन के लिए सभी के सहयोग की आवश्यकता पर बल दिया और हिन्दी प्रशिक्षण योजनाओं के संबंध में बतलाया। हिन्दी सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़ कर भाग लेने का भी अनुरोध किया।

सहायक महाप्रबंधक श्री कृष्णमूर्ति ने भी बैठक को सम्बोधित किया और हिन्दी दिवस मनाने का उद्देश्य एवं हिन्दी सीखने और कार्य करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

अंत में हिन्दी अधिकारी श्री दिनेश चन्द्र बाहेती ने राजभाषा कार्यान्वयन के लिए सभी का सहयोग मांगा।

दिनांक 15-9-89 को मद्रास शहर एवं राज्य के सभी मंडल एवं शाखा कार्यालयों में हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गई।

प्रतियोगिता के विषय थे :—1. विज्ञान से लाभ एवं हानि 2. नारी एवं रोजगार 3. खेलकूद एवं स्वास्थ्य मद्रास शहर के 14 कर्मचारियों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया।

दिनांक 18-9-89 को मद्रास शहर में स्थित सभी कार्यालयों एवं सभी वर्ग के कर्मचारियों के लिए दक्षिण क्षेत्रीय कार्यालय सभा-कक्ष में हिन्दी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

दिनांक 19-9-89 को मद्रास शहर के सभी वर्ग के कर्मचारियों के लिए हिन्दी भाषण प्रतियोगिता दक्षिण क्षेत्रीय कार्यालय में आयोजित की गई जिसका विषय था: 'आधुनिक भारत के निर्माता पंडित नेहरू'।

प्रबंधक श्री ग्रोवरजी ने प्रतियोगिता के प्रारंभ में सभी का स्वागत किया। इस प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल के लिए डॉ. रामानायडू, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास, श्री आर.के. दीक्षित, उपनिदेशक (दक्षिण) राजभाषा विभाग, हिन्दी शिक्षण योजना, मद्रास एवं श्री किशोर वासवानी, क्षेत्रीय अधिकारी (दक्षिण) केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, भारत सरकार शिक्षा विभाग, मद्रास को आमंत्रित किया गया था। 13 प्रतिभागियों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया।

निम्नलिखित पुरस्कार पाने वाले कंपनी के सदस्यों को पुरस्कार प्रदान किया गया :—

श्री शांतिलाल जैन, विकास अधिकारी, साहूकारपट शाखा —प्रथम पुरस्कार

श्री एस. राजगोपालन, प्रशासनिक अधिकारी, दक्षिण क्षेत्रीय कार्यालय —द्वितीय पुरस्कार

श्री बी. कुप्पू राव, सहायक, मंडल-6, मद्रास —तृतीय पुरस्कार

सुश्री प्रसन्ना कुमारी, सहायक प्रशासनिक अधिकारी, द.क्षे.का. —सांत्वना पुरस्कार

श्रीमती मैत्रेयी राघवन, टे. आपरेटर, मंडल-6, मद्रास —सांत्वना पुरस्कार

कार्यक्रम के अंत में हिन्दी अधिकारी श्री दिनेश चंद्र बाहेती ने सहायक महाप्रबंधक, सभी निर्णायकों एवं अन्य सभी की उपस्थिति एवं कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने के लिए आभार व्यक्त किया।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

पुणे

उप क्षेत्रीय कार्यालय, पुणे में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आरंभ श्री ए. आर. शिंदे तथा उनके साथियों द्वारा प्रस्तुत राष्ट्रभक्ति गीत "भारत देश महान" के साथ हुआ। निगम के हिंदी अधिकारी श्री एच. एन. यादवाड ने मुख्य अतिथि का परिचय देते हुए

सभी आमंत्रितों का स्वागत किया। कार्यालय द्वारा संपादित वार्षिक हिंदी पत्रिका "राजभाषा सरिता 89" का विमोचन करते हुए मुख्य अतिथि श्री डी. के. कुलकर्णी, ने कहा कि हिंदी हमारी भाषा है। इसको अपनाना हम सब का कर्तव्य है। कौमी एकता स्थापित करने के लिए हिंदी सीखना बहुत जरूरी है।

समारोह के अध्यक्ष, निगम के निदेशक, श्री अशोक ज. पवार ने कहा कि इस कार्यालय के सारे कर्मचारी हिंदी में काम करने के प्रति जो रुचि दिखा रहे हैं तथा विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कार पा रहे हैं, उसके लिए मैं गर्व महसूस करता हूं। उन्होंने हिंदी प्रयोग को उत्तरोत्तर बढ़ावा देने के उद्देश्य से "राजभाषा सरिता 89" के सफल संपादन एवं प्रकाशन हेतु संपादकीय मंडल के प्रयासों को सराहा।

समारोह की विशेषता यह रही कि मनोरंजन क्लब के सदस्यों ने इस अवसर पर मनोरंजन के कई कार्यक्रम प्रस्तुत किए, जिनमें श्री फुले द्वारा निर्देशित एकांकी नाटक "छू मंतर" दर्शकों के लिए एक आकर्षण रहा। इसके अलावा कार्यालय की महिलाओं ने गरबा नृत्य प्रस्तुत करके आमंत्रितों का दिल बहलाया। अंत में श्री लक्ष्मीकांत हेजीब के वंदनार्पण के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

नागपुर

नागपुर मंडल में 14 से 20 सितंबर, 1989 तक हिन्दी सप्ताह मनाया गया जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताएं, कवि सम्मेलन आदि कार्यक्रम रखे गए।

एक से 20 सितंबर तक सहायकों की हिन्दी कार्यशाला भी रखी गई। समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में नागपुर के संसद सदस्य श्री बनवारीलाल पुरोहित उपस्थित थे तथा अध्यक्ष थे जीवन बीमा निगम के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री ज. रा. जोशी।

सांसद श्री पुरोहित ने अपने सारगर्भित भाषण में कहा कि बीमाधारकों से उनकी भाषा में पत्र व्यवहार आवश्यक है। उन्होंने विभिन्न प्रतियोगियों तथा कार्यशाला के प्रशिक्षणार्थियों को नकद पुरस्कार व प्रमाण पत्र बांटे।

अध्यक्षता करते हुए निगम के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री ज. रा. जोशी ने इस बात पर हर्ष व्यक्त किया कि नागपुर मंडल में हिन्दी का अच्छा कार्य हो रहा है जिसके कारण ही उसे गृह मंत्रालय, भारत सरकार की राजभाषा ट्राफी लगातार 2 वर्षों से प्राप्त हो रही है। हिन्दी में काम करने पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि हमारे लिए व्यवसायिक दृष्टि से भी जनता की भाषा में कार्य करना आवश्यक है।

श्री राम नारायण निखर, सचिव, नागपुर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने हिन्दी सप्ताह के कार्यक्रमों का जिक्र करते हुए कहा कि जीवन बीमा निगम के समान हिन्दी सप्ताह शायद नागपुर के किसी और कार्यालय में नहीं मनाया जाता। आगे उन्होंने कहा कि लगता है कि लोगों का बीमा करने के साथ-साथ आप लोगों ने हिन्दी का भी बीमा कराकर उसके प्रयोग को सुरक्षितता प्रदान की है।

श्री अलेक्जेंडर सेमुअल, वरिष्ठ मंडल प्रबंधक, नागपुर ने कर्मचारियों/प्रतियोगियों को उनकी सफलता पर बधाई दी।

हिन्दी अनुभाग के श्री गिरीश व्यास ने हिन्दी सप्ताह के दौरान चले कार्यक्रमों व प्रतियोगिताओं की जानकारी दी जो इस प्रकार थी :—

(1) दिनांक 14 सितम्बर, 1989 को हिन्दी सप्ताह का उद्घाटन नागपुर मंडल के वरिष्ठ मंडल प्रबंधक श्री अ० सेमुअल ने किया। श्री सेमुअल ने सभी कर्मचारियों को हिन्दी सप्ताह की विभिन्न प्रतियोगिताओं व कार्यक्रमों में भाग लेकर उसे सफल बनाने का आग्रह किया।

(अ) उसी दिन वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका विषय था—"दहेज समस्या का समाधान अंतर्जातीय विवाह है।" इसके परीक्षा के रूप में प्रबंधक (पा. से.) श्री शि. ल. तिवारी, सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री रा. ना. निखार व हिन्दी शिक्षण योजना के प्राध्यापक श्री राजेश कुमार थे। प्रतियोगिता बड़ी रोचक रही जिसके प्रथम पांच पुरस्कार इस प्रकार थे :—

(1) श्रीमती शेफाली बनर्जी — प्रमाणपत्र व नकद पुरस्कार
(2) श्री पी. एम. सूयवंशी — —वही—
(3) श्रीमती नीलम पागे — —वही—
(4) श्री के. एल. पुराणिक — प्रमाण पत्र
(5) श्री एन. एच. देशपांडे — —वही—

(ब) इसी दिन शाम को श्री एस. एस. जोशी, अनुभाग प्रमुख (टाईपिंग पूल) के मार्गदर्शन में हिन्दी टाईपिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था जिसके प्रथम पांच पुरस्कार इस प्रकार थे :—

(1) श्री वी. वी. नगरकर — प्रमाण पत्र व नकद पुरस्कार
(2) श्रीमती हीरा शीड — —वही—
(3) श्री पी. एम. विधानी — —वही—
(4) श्रीमती अनुश्री सप्रे — प्रमाण पत्र
(5) श्री एन. एम. मासुरकर — —वही—

(2) दिनांक 15 सितम्बर, 1989 को हिन्दी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसके विषय थे :—

1. जीवन बीमा का पर्याय नहीं है
2. राष्ट्रीय एकता और हिन्दी
3. आधुनिक भारत के निर्माता—पं. जवाहरलाल नेहरू
4. राष्ट्र निर्माण म युवापीढ़ा का योगदान

प्रतियोगिता में प्रथम 5 लोगों को नकद पुरस्कार व प्रमाण पत्र दिए गए जो इस प्रकार थे :—

(1) श्री अ.स. गिजरे — प्रमाण पत्र व नकद पुरस्कार
(2) श्रीमती ए. जे. वर्तक — —वही—
(3) श्रीमती एन.एच. भावे — —वही—
(4) श्रीमती मंगला महाकालकर — प्रमाण पत्र
(5) श्री एन. एम. मासुरकर — प्रमाण पत्र

(3) दिनांक 16 सितंबर, 1989 को टिप्पणी, प्रारूप लेखन और अनुवाद प्रतियोगिता हुई जिसमें निम्नलिखित लोगों को पुरस्कार प्रमाण पत्र दिए गए :—

(1) श्री अ.स. गिजरे — प्रमाण पत्र व नकद पुरस्कार
(2) श्रीमती मंगला महाकालकर — —वही—
(5) श्री चंद्रशेखर फडणवीस — —वही—
(4) श्रीमती प्राजक्ता कुलकर्णी — प्रमाण पत्र
(5) श्रीमती नीलांबरी जोशी — —वही—

20 सितंबर को हिन्दी सप्ताह व कार्यशाला का समापन समारोह किया गया जिसमें नागपुर मंडल के विपणन प्रबंधक श्री सी.एम. भार्गव सभी वरिष्ठ अधिकारी, शाखा प्रबंधक व कर्मचारीगण विशेष रूप से उपस्थित थे ।

कार्यक्रम के अंत में वरिष्ठ मंडल प्रबंधक श्री सैमुअल ने स्वयं सभी को धन्यवाद दिया । सप्ताह के आरंभ में दिनांक 14 सितंबर को एक विशेष परिपत्र निकालकर सभी से अपना पूरा पूरा काम हिन्दी में ही करने का आग्रह किया गया ।

चण्डीगढ़

क्षेत्रीय कार्यालय पंजाब की ओर से 15 सितम्बर को समारोह आयोजित किया गया । समारोह की अध्यक्षता निगम मुख्यालय के संयुक्त मुख्य लेखाधिकारी श्री मदनगोपाल पुरी ने की । निगम कर्मचारियों के परिजन भी बड़ी संख्या में समारोह स्थल पर उपस्थित थे । सर्वप्रथम क्षेत्रीय निदेशक श्री एस. एस. अबरोल ने माल्यार्पण कर श्री पुरी का स्वागत किया ।

श्री एस. एस. अबरोल क्षेत्रीय निदेशक ने यह स्पष्ट किया कि हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं का तो वही रिश्ता है जो बड़ी बहन और छोटी बहनों का हुआ करता है । उन्होंने कहा कि राजभाषा हिन्दी के प्रयोग व प्रसार के प्रसंग में हमारी उपलब्धियां इस बात का सबूत हैं कि निगम का यह क्षेत्र सरकार की राजभाषा नीति के प्रति पूरी तरह सजग है ।

निगम मुख्यालय के प्रतिनिधि संयुक्त मुख्य लेखाधिकारी श्री मदन गोपाल पुरी ने क्षेत्रीय निदेशक श्री एस. एस. अबरोल को राजभाषा ट्राफी प्रदान की । इसी प्रसंग में उन्होंने अन्तर्शाखीय शील्ड प्रतियोगिता के अन्तर्गत क्षेत्रीय कार्यालय की बीमा शाखा-2 को दी जाने वाली राजभाषा शील्ड शाखाधिकारी श्री आर. के. नागपाल तथा मुख्य लिपिक श्री सतपाल मेहता ने प्राप्त की । उन्होंने विभिन्न प्रतियोगिताओं में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों को नकद पुरस्कार तथा प्रशस्ति-पत्र भी दिए ।

हिन्दी के उत्तरोत्तर प्रयोग संबंधी वार्षिक रिपोर्ट पढ़ते हुए श्रीमती स्वर्णजीत कौर कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक ने क्षेत्रीय कार्यालय पंजाब में हिन्दी के प्रयोग की स्थिति की विस्तारपूर्वक जानकारी दी । उनका कहना था कि पिछले कई सालों से निगम मुख्यालय द्वारा तो सम्मानित होते ही रहे हैं, पिछले 2 सालों से हमें लगातार भारत सरकार के गृह-मन्त्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा भी राजभाषा ट्राफी मिल रही है । स्पष्ट है कि राजभाषा के क्षेत्र में हमारी उपलब्धियां महत्वपूर्ण हैं । इसके लिए उन्होंने समारोह मंच से भी निगम के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को बधाई दी । उन्होंने संयुक्त मुख्य लेखाधिकारी का ध्यान इस बात की ओर भी दिलाया कि क्षेत्रीय कार्यालय में हिन्दी टाइपराइटरों तथा हिन्दी टाइपिस्टों का अभाव है और इस दृष्टि से क्षेत्रीय कार्यालय को साधन सम्पन्न बनाया जाना बहुत ही आवश्यक है

हिन्दी अधिकारी श्री टीकन लाल शर्मा हैं ने कहा कि लोकतन्त्र की एक सर्वमान्य परिभाषा है, "जनता की, जनता के द्वारा और जनता के लिए चलने वाली सरकार ।"

उन्होंने कहा कि यह कहना भी ग़लत है कि अंग्रेज़ी के बिना गुज़ारा नहीं है और अंग्रेज़ी का सहारा लिए बिना विज्ञापन और तकनीकी के क्षेत्र में तरक्की सम्भव ही नहीं है । रूस, जापान, जर्मनी, फ्रांस और चीन आदि देशों में अंग्रेज़ी नहीं है लेकिन फिर भी आज इन राष्ट्रों की गिनती दुनिया के प्रथम श्रेणी के राष्ट्रों में होती है ।

भारत सरकार के गीत तथा नाटक प्रभाग के कलाकारों ने भी अपने मनोरंजक कार्यक्रम से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया ।

श्री मदन गोपाल पुरी संयुक्त मुख्य लेखा-अधिकारी ने निगम के पंजाब क्षेत्र के अधिकारियों और कर्मचारियों को इस बात पर बधाई दी कि सरकार की राजभाषा नीति के क्षेत्र में वे निरन्तर प्रगतिपथ पर अग्रसर हैं । उन्होंने आशा प्रकट की कि समाज के अपेक्षाकृत कमजोर वर्ग बीमाकृत व्यक्तियों को बेहतरीन सेवाएं उपलब्ध कराने के साथ-साथ निगम का पंजाब क्षेत्र सरकार की राजभाषा नीति के प्रसंग में भी अपनी मंजिल की ओर लगातार आगे बढ़ता रहेगा।

समारोह समिति के अध्यक्ष श्री बख्शीश सिंह ने संयुक्त मुख्य लेखाधिकारी, गीत तथा नाटक प्रभाग के कलाकारों और उपस्थित कर्मचारियों तथा अन्य श्रोताओं का धन्यवाद किया।

फरीदाबाद

क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, सैक्टर-16, फरीदाबाद में 14 सितम्बर, 1989 को हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया ।

मुख्य अतिथि श्रीयुत नरोत्तम व्यास, वित्तीय सलाहकार एवं मुख्य लेखा अधिकारी ने अधिकारीगण ही प्रवेश पा रही थी रजत शील्ड जो कि हरियाणा क्षेत्र को सर्वाधिक काम हिन्दी में करने निमित्त मुख्यालय द्वारा प्रदान की जानी थी । उनके प्रवेश करते ही करतल ध्वनि ने प्रतीती कराई कि सभागार समारोहिकता का वरण कर चुका है । मुख्य अतिथि, अध्यक्ष व अधिकारीगण व सहयोगियों का अभिनन्दन करते हुए श्री विनोद कुमार महाजन, हिन्दी अधिकारी ने समारोह का श्रीगणेश किया ।

श्री गोपाल प्रसाद द्वारा मुख्य अतिथि श्री नरोत्तम व्यास को माल्यार्पण किया गया। श्री विनोद कुमार महाजन, हिन्दी अधिकारी ने हिन्दी दिवस की महत्ता पर प्रकाश डाला ।

प्रथम सितम्बर से प्रारम्भ राजभाषा पखवाड़े की अंतिम कड़ी के रूप में इस समारोह का पहला चरण हिन्दी वाक् प्रतियोगिता था जिसमें विषय था—"राजभाषा कार्यान्वयन में प्रचार का औचित्य" ।

अगले चरण में कर्मचारियों द्वारा एक संक्षिप्त सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया जिसमें श्री बृजपाल ने अंग्रेजी की विलासिता और अर्थ भ्रम के पक्ष को उभारते हुए हरियाणवी में एक हास्य गीत प्रस्तुत किया । श्री के. सी. नारद ने गजल माधुर्य का प्रदर्शन किया जिसमें जीवन की श्रृंगारिकता और वेदना मुखरित हुई । एकता के सूत्र की महत्ता को उजागर किया श्री रामभेज ने एक ओजस्वी गीत की स्वर लहरी से । इसका अनुसरण किया श्री सुनील कुमार अनेजा ने कविता पाठ से जिसमें उन्होंने तथाकथित अंग्रेजी प्रेमियों की दशा उभारते हुए इंगित किया कि हिन्दी ही श्रेयस्कर संबल है ।

हिन्दी अधिकारी ने हरियाणा में हिन्दी प्रयोग की स्थिति की एक संक्षिप्त रिपोर्ट पढ़ी जिसमें हरियाणा क्षेत्र में हिन्दी प्रयोग को बढ़ाने के लिए किए गए विभिन्न प्रयासों, लक्ष्यों व उपलब्धियों का उल्लेख था और कहा कि यह हमारे लिए हर्ष की बात है कि हरियाणा क्षेत्र को हिन्दी भाषी क्षेत्रों में सर्वाधिक कार्य हिन्दी में निष्पादित करने के फलस्वरूप मुख्य अतिथि शील्ड प्रदान करने पधारे हैं ।

श्री व्यास ने अध्यक्ष श्री गोपाल प्रसाद को राजभाषा शील्ड प्रदान की । उन्होंने अपने सशक्त एवं सारगर्भित उद्बोधन में इस गति को बनाए रखने के लिए सतत प्रयास करने के लिए कहा । हिन्दी प्रयोग का आह्वान करते हुए हिन्दी में ही हस्ताक्षर करने, रोचक पुस्तकों के पठन-पाठन व हिन्दी भाषी क्षेत्र होने के नाते अपना सारे-का-सारा काम हिन्दी में ही करने का आग्रह किया ।

पुरस्कार वितरण में सर्वप्रथम सर्वाधिक कार्य हिन्दी में निष्पादित करने निमित्त मुख्य अतिथि ने क्षेत्र की अन्तः अनुभागीय राजभाषा चल शील्ड बीमा-2 शाखा को प्रदान की । वार्षिक प्रतियोगिता में बीमा-2 शाखा गत वर्ष की भांति पुनः शील्ड अर्जित करने में सफल रही । शाखा के अधीक्षक व मुख्य लिपिक ने मुख्य अतिथि से शील्ड ग्रहण की ।

हिन्दी वाक् प्रतियोगिता का परिणाम घोषित करने के साथ ही मुख्य अतिथि ने प्रथम तीन स्थान पाने वालों को नकद पुरस्कार, प्रशस्ति-पत्र व पुरस्कार वितरित किए । राजभाषा पखवाड़े के दौरान आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता, टिप्पण आलेखन प्रतियोगिता व चार्ट/पोस्टर प्रतियोगिता में प्रथम तीन स्थान पाने वालों को नकदी, प्रशस्ति-पत्र व हिन्दी कार्यान्वयन से सम्बद्ध पुस्तकें पुरस्कार के रूप में प्रदान की गई ।

इसी तरह केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद व निगम की 5 अन्य प्रोत्साहन योजनाओं व प्रतियोगिताओं में भाग लेने वालों को भी प्रशास्ति-पत्र/पुरस्कार प्रदान किए गए।

अध्यक्ष के रूप में श्री गोपाल प्रसाद, उप क्षेत्रीय निदेशक ने मुख्य अतिथि के प्रति आभार प्रकट किया ।

भारतीय जीवन बीमा निगम वाराणसी

मण्डल कार्यालय, में 14 सितम्बर, 89 को "हिन्दी दिवस" एवं 14 से 21 सितम्बर, 89 तक "हिन्दी सप्ताह" का आयोजन किया गया । 14 सितम्बर, 89 को व. मण्डल प्रबन्धक, श्री ए. आर. मेनन ने विशेष अपील जारी करके कार्यालय कामकाज में हिन्दी का शत प्रतिशत प्रयोग करने के लिए अधिकारियों एवं कमचारियों का आह्वान किया । "हिन्दी सप्ताह" के दौरान 16-9-89 को हिन्दी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें कमचारियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया । 18-9-89 को मण्डल कार्यालय में कार्यरत निगम कमचारियों के हिन्दी सेवा संगठन "केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद" एवं जीवन बीमा निगम के संयुक्त तत्वावधान में काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में वाराणसी के जाने-माने शायर एवं कवि श्री नजीर बनारसी उपस्थित थे ।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के भूतपूर्व भौतिकी विभागाध्यक्ष डा. महराज नारायण महरोत्रा ने विज्ञान सहित सभी क्षेत्रों में हिन्दी भाषा के बढ़ते प्रयोग पर प्रकाश डाला एवं बताया कि आज हिन्दी जीवन के सामान्य क्षेत्रों में ही नहीं वैज्ञानिक शोधों एवं तकनीकी के प्रयोग की भी भाषा बन चुकी है एवं उनके निर्देशन में कई छात्रों ने हिन्दी भाषा में शोध कार्य सम्पन्न करके पी.एच.डी. की उपाधि ली है । अध्यक्षीय उद्बोधन में श्री ए. आर. मेनन ने यह संकल्प दुहराया कि उनके

हिन्दी के अल्पज्ञान के कारण मण्डल में हिन्दी के प्रयोग पर कोई प्रतिकूल असर नहीं पड़ेगा । उन्होंने बताया कि व हिन्दी टिप्पणियों एवं पत्रों का स्वागत करते हैं और यथा-संभव अपने आदेश हिन्दी में ही लिखते हैं । इस कार्यक्रम का संचालन परिषद के उप-प्रधान श्री जगदीश नारायण राय ने किया ।

दिनांक 20-9-89 को हिन्दी वाक् प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें "राजभाषा हिन्दी की स्थिति और हमारा दायित्व" विषय पर अनेक वक्ताओं ने अपने विचार प्रस्तुत किये ।

दिनांक 21 सितम्बर, 89 को हिन्दी सप्ताह का समापन समारोह संपन्न हुआ जिसमें विशिष्ट अतिथि के रूप में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय हिन्दी प्रकाशन समिति के उप निदेशक डॉ. धनवन्त किशोर गुप्त तथा चिकित्सा विभाग में रीडर डॉ. पी. वी. बेहरे उपस्थित थे । डॉ. बेहरे ने कहा कि हिन्दी भाषा इस देश में सब जगह बोली और समझी जाती है इसलिए हिन्दी का प्रयोग करने में कोई झिझक नहीं होनी चाहिए ।

मण्डल प्रबन्धक (का. सं.) श्री पी. एन. द्विवेदी ने कहा कि मण्डल ने हिन्दी के प्रयोग में जो गौरव अर्जित किया है उसका श्रेय यहां के कर्मचारियों को ही है । उन्होंने आग्रह किया कि कुछ विभागों में जो कमियां रह गई हैं, उनको दूर कर हम हिन्दी में शत-प्रतिशत प्रयोग की दिशा में आगे बढ़ें ।

श्री मनन ने मण्डल की 15 शाखाओं एवं विभागों को हिन्दी में सर्वाधिक कार्य के लिये पुरस्कार व प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया । हिन्दी सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता कर्मचारियों को भी पुरस्कृत किया गया। इसके पूर्व श्री राम उजागर तिवारी, प्रशासनिक अधिकारी (का. ओ. सं.) ने हिन्दी के प्रयोग में आने वाली विभिन्न कठिनाइयों एवं समस्याओं को दूर करने हेतु सुझाव प्रस्तुत किए । राजभाषा अधिकारी श्री रामजी प्रसाद ने मण्डल कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग की स्थिति को प्रस्तुत करते हुए बताया कि मण्डल के 14 विभागों में से 11 विभाग हिन्दी में ही पूरा कार्य कर रहे हैं ।

क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त, फरीदाबाद

क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त का कार्यालय हरियाणा फरीदाबाद में हिन्दी सप्ताह समापन समारोह वर्ष 1989 माननीय क्षेत्रीय आयुक्त श्री कृष्ण लाल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ । समारोह में मुख्य अतिथि श्रम अधिकरण फरीदाबाद के पीठासीन अधिकारी श्री ए. एस. चालिया थे ।

सूचना तथा प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार के गीत तथा नाटक प्रभाग के कलाकारों ने मंगलाचार, देशभक्ति गीत, हरियाणवी तथा राजस्थानी लोक कला परक परिसंवादात्मक गीतों की प्रस्तुति से दर्शकों को मंत्र मुग्ध कर दिया ।

मुख्य अतिथि श्री चालिया ने कानून के क्षेत्र में हिन्दी के बढ़ते चरण तथा संघ लोक सेवा आयोग की हिन्दी नीति को सोदाहरण सरल रूप में रूपायित किया । माननीय अध्यक्ष श्री कृष्ण लाल ने अपने विचारों में आत्मप्रेरणा को बल दिया ।

कार्यालय के हिन्दी अधिकारी डा. नारायण दत्त पन्त ने बताया कि हिन्दी का विकास देश की भावात्मक एकता हेतु जरूरी है ।

समारोह में "राजभाषा : समस्याएं और समाधान" विषय पर एक विचार गोष्ठी भी आयोजित की गई । जिसमें 6 कर्मचारियों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए । सफल प्रतियोगियों को विभिन्न मूल्य वर्ग के शब्द कोश तथा प्रमाण-पत्र प्रदान कर पुरस्कृत किया गया ।

इसी तरह 1 अप्रैल, 1988 से 31 मार्च 1989 तक मूल टिप्पण आलेखन प्रतियोगिता में भाग लेने वाले 8 कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया ।

दिनांक 14-9-89 तथा 15-9-89 को क्रमशः टिप्पण आलेखन प्रतियोगिता तथा निबन्धन लेखन प्रतियोगिता आयोजित हुई । जिसमें हिन्दी भाषी तथा अहिन्दी भाषी वर्ग के क्रमशः 27 तथा 12 प्रतियोगियों ने भाग लिया ।

सरकारी कार्यालय

महालेखाकार (ले. एवं हक.) तमिलनाडु, मद्रास

कार्यालय महालेखाकार (ले. एवं हक) तमिलनाडु, मद्रास-18 में हिन्दी सप्ताह समारोह दिनांक 14-9-89 से 29-9-89 तक मनाया गया ।

14-9-89 को समारोह का उदघाटन श्रीमती ऊषा शंकर, वरिष्ठ उपमहालेखाकार (निधि) के हाथों सम्पन्न हुआ । उसके बाद उन्होंने मई 89 में प्रबोध, प्रवीण और प्राज्ञ परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त किये । कर्मचारियों को नकद और विशेष पुरस्कार दिया । उसी दिन निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । श्री किशोर बासवानी क्षेत्रीय अधिकारी, केन्द्रीय हिन्दी निदेशक ने प्रतियोगिता के विजेताओं का निर्णय किया ।

15-9-89 को सुगम संगीत प्रतियोगिता चलाई गई । श्री सी. जी. सत्यनारायणन, श्री परसुराम और हिन्दी प्राध्यापिका श्रीमती चन्द्रा रमणन इसकी निर्णायक थी । 18-9-89 को हिन्दी टिप्पण और आलेखन प्रतियोगिता चलाई गई । नौ कर्मचारियों ने इसमें भाग लिया । हिन्दी प्राध्यापिका ने इस प्रतियोगिता का परिणाम दिया ।

19-9-89 को हिन्दी भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। श्रीमती एच.एस.शकुन्तला और श्रीमती पूर्णिमा जोशी, हिन्दी प्राध्यापिका इस प्रतियोगिता के निर्णायक थीं।

20-9-89 को समापन समारोह श्री संपत नारायणन, प्रधान महालेखाकार (ले. एव. हक) के भाषण के साथ आरम्भ हुआ। उन्होंने हिन्दी सीखने के महत्व पर जोर दिया। प्रतियोगिताओं के विजेताओं को महालेखाकार द्वारा पुरस्कार दिए गए। पुरस्कार वितरण के बाद हिन्दी सुगम संगीत कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यालय के सहायक लेखा अधिकारी श्री सी.जी.सत्यनारायणन और श्रीमती एच. एस.कुसुमा, वरिष्ठ लेखाकार और उनके साथियों ने सुगम संगीत पेश किया। राष्ट्रीय गीत के साथ समारोह समाप्त हुआ।

पत्र सूचना कार्यालय इम्फाल, मणिपुर

28 सितम्बर, 89 को हिन्दी दिवस मनाया गया। इस दिन कार्यालय के सभी कर्मचारियों ने आपस में बोलचाल के लिए केवल हिन्दी भाषा का ही प्रयोग किया।

सायंकाल हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। श्री आचार्य बदरी यादव, हिन्दी प्राध्यापक, हिन्दी शिक्षण योजना समारोह के मुख्य अतिथि थे। श्री एल. श्यामजाई सिंह, सहायक सूचना अधिकारी ने समारोह की अध्यक्षता की। श्री आचार्य बदरी यादव, हिन्दी प्राध्यापक ने बताया कि राजभाषा हिन्दी की दो तरह की विशेषताए हैं – एक तो यह हमारे सरकारी कार्यालयों में प्रयोग की जाने वाली कार्यालीन भाषा है, जिसे राजभाषा कहते हैं। दूसरे, यह सम्पूर्ण भारत के देशवासियों की आपस में विचार विनिमय की संपर्क भाषा है, जिसे राष्ट्र भाषा कहते हैं। इन तमाम विशेषताओं वाली हमारी हिन्दी भाषा विश्व में भी अपनी अद्भुत स्थान बनाई हुई, अतः वह दिन दूर नहीं, जब यह विश्वभाषा बनेगी, हिन्दी विश्व भाषा बन रही है, इसमें संदेह नहीं है। हिन्दी हमारी राजभाषा एवं राष्ट्र भाषा है, जिसमें अपने देश के सभी राज्यों की क्षेत्रीय भाषाओं के भी शब्द हैं। आगे उन्होंने अपने देश की मान्यताप्राप्त क्षेत्रीय भाषाओं का हिन्दी के साथ उदाहरण देते हुए स्पष्ट व्याख्या की, इसके साथ ही मणिपुरी राज्य की क्षेत्रीय भाषा मणिपुरी का भी उदाहरण प्रस्तुत किए, जिसके अधिकांश शब्द हिन्दी में समाहित हैं – जैसे मणिपुरी के निम्न शब्द हिन्दी भाषा में भी मौजूद हैं – यथा – चलो, लाओ, तनख्वाह, पुखरी, चलेगें, क्या, कदाय आदि। उन्होंने आगे बताया कि हमारे देश की क्षेत्रीय भाषाएं हमारी अपनी भाषाएं हैं। इनका आदर करके हमें राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाना चाहिए, जिसमें हमारे देश की भाषाई एकता बनी रहे। हिन्दी में कार्य करने में गलतियां जरूर होती हैं। लेकिन इसकी ओर ध्यान नहीं देना चाहिए, हमारे विचार यदि सही एवं शुद्ध हैं, तो निश्चित रूप से हमारा कार्य उत्तम होगा।

इसके बाद कार्यालयाध्यक्ष श्री एल. श्यामजाई सिंह ने बताया कि हमें यह कहते हुए गर्व महसूस हो रहा है कि मणिपुर हिन्दी प्रयोग में अपना स्थान बनाए हुए हैं। आशा है, भविष्य में हम शीघ्र अपने निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त कर लेगें। हमारे कार्यालय में हिन्दी में कार्य शुरू हो गया है, इस कार्यालय के कर्मचारियों को हिन्दी दिवस को कार्य दिवस के रूप में मनाने के लिए धन्यवाद दिया।

दूरसंचार परिमंडल, श्रीनगर

दिनांक 14-9-1989 को "हिन्दी दिवस" मनाया गया तथा 20 सितम्बर 89 तक हिन्दी सप्ताह का भी आयोजन किया गया। दिनांक 14-9-89 को "हिन्दी सप्ताह" का उद्घाटन जम्मू-कश्मीर परिमंडल के महाप्रबंधक श्री म. च. लेहन ने किया। महाप्रबंधक श्री लेहन ने कहा कि हमारे संविधान में देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया जा चुका है। अतः संविधान के प्रति हमारी सच्ची निष्ठा एवं देश सेवा यहीं होगी कि हम सभी लोग अपना दैनिक कार्यालयी कामकाज हिन्दी में करें। राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी प्रगति का विवरण हिन्दी अनुवादक श्रीमती गिरिजा काक ने प्रस्तुत किया।

हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता

दिनांक 14-9-89 को कार्यालय में हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में निम्नांकित विषयों में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखना था :

(क) आधुनिक युग में नारी का स्थान

(ख) संचार तब और अब

(ग) पर्यावरण और प्रदूषण

(घ) वेतन और बढ़ते मूल्य

इस प्रतियोगिता में निम्नांकित कर्मचारी विजेता घोषित हुए––

प्रथम–	श्री उमेश चन्द्र जखमोला
द्वितीय–	श्री रामसिंह दोरा
तृतीय–	श्रीमती संतोष पण्डिता
सांत्वना–	श्री चांदराज सिंह

हिन्दी प्रोत्साहन योजना

हिन्दी प्रोत्साहन योजना में कार्यालय के अनेक कर्मचारियों ने भाग लिया तथा वर्ष भर अपना अधिकाधिक काम हिन्दी में किया। हिन्दी सप्ताह के दौरान "मूल्यांकन-समिति" ने कर्मचारियों के कार्य का निरीक्षण तथा मूल्यांकन किया। निम्नलिखित कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया –

प्रथम–श्रीमती संतोष पण्डिता	500/– रु.
द्वितीय–श्री अशोक कुमार भट्ट श्री उमेश-चन्द्र जखमोला	300/– रु.
तृतीय–श्रीमती दुर्गा कौल	150/– रु.

शेष पृष्ठ 121 पर

उप क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त कार्यालय औरंगाबाद

दिनांक 14 से 20-9-1989 तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। दिनांक 14-9-1989 को "हिन्दी दिवस" मनाया गया तथा हिन्दी सप्ताह का उद्घाटन श्री मा. पा. वलवी, प्रभारी अधिकारी, उप क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त कार्यालय, औरंगाबाद ने किया। हिन्दी सप्ताह के दौरान हिन्दी से संबंधित अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए। दिनांक 18-9-1989 को कार्यालय में हिन्दी सप्ताह के उपलक्ष में हिन्दी टिप्पण, आलेखन तथा निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई। इनमें कुल 20 कर्मचारियों ने भाग लिया। और दिनांक 20-9-1989 को हिन्दी समापन समारोह में प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले कर्मचारियों को श्री मा. पा. वलवी, प्रभारी अधिकारी ने पुरस्कार दिए।

आठ कर्मचारियों को हर एक को 21 रुपये

पांच कर्मचारियों को हर एक को 11 रुपये

तथा सात कर्मचारियों को प्रोत्साहन पर एक एक बालपेन दिया गया।

अध्यक्षीय भाषण में श्री मा० पा० वलवी ने कहा कि ज्यादा से ज्यादा कर्मचारी अपना कार्यालयीन कामकाज हिन्दी में ही करें।

भारत सरकार टकसाल बम्बई

टकसाल, में 15 सितम्बर, 1989 को "हिन्दी दिवस" का आयोजन किया गया। इस अवसर पर हिन्दी प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन बम्बई टकसाल के उप महाप्रबधक, श्री एल आर. प्रसादराव ने किया। प्रदर्शनी में सिक्कों में हिन्दी भाषा का प्रयोग किस तरह शुरू हुआ, इसको विभिन्न स्थिति दर्शाने वाले 14 चार्टों प्रदर्शनी में रखे गए। इसके अलावा हिन्दी पुस्तकालय में उपलब्ध विभिन्न विषयों जैसे सरकारी काम-काज में प्रयोग हिन्दी टिप्पण आलेखन, हिन्दी व्यावहारिक व्याकरण, विविध विषयों पर उपलब्ध शब्द कोशों, सुप्रसिद्ध लेखकों के उपन्यासों और हिन्दी में पुरस्कृत कहानी, नाटकों आदि की पुस्तक भी प्रदर्शनी में रखी गई थी।

इस अवसर पर भारत सरकार टकसाल, बम्बई, द्वारा प्रकाशित एक संदर्भ साहित्य पत्रिका का विमोचन श्री एल. आर. प्रसादराव, उप महाप्रबंधक ने किया।

प्रारंभ में ललित कुमार वकील, हिन्दी अधिकारी ने सभी का स्वागत किया।

श्री एल. आर. प्रसाद राव, उप महाप्रबंधक ने अध्यक्ष पद से अपने भाषण में सभी का ध्यान हाल में निरीक्षण हेतु पधारी संसदीय राजभाषा की तीसरी उप समिति के साथ हुई चर्चा की ओर ध्यान दिलाया तथा वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने का आहवान किया।

श्री एम. एम. रमाली, राजभाषा अधिकारी ने आभार प्रकट किया और आशा व्यक्त की कि सभी अधिकारी, कर्मचारी अपना सरकारी काम-काज में अधिक से अधिक हिन्दी का प्रयोग करेंगे।

रत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे

मौसम विज्ञान के अपर महानिदेशक (अनुसंधान) के कार्यालय में दिनांक 12 से 19 सितम्बर 1989 तक हिन्दी सप्ताह समारोह मनाया गया। जिसमें हिन्दी निबंध, वादविवाद कविता/लोकगीत और हिन्दी अंताक्षरी, प्रतियोगिताएं रखी गई। 19 सितम्बर, 1989 को हिन्दी सप्ताह समापन समारोह मनाया गया। जिसमें एक हिन्दी लघु नाटक "शादी का इन्टरव्यू" का भी मंचन किया गया।

हिन्दी सप्ताह समापन समारोह वंदना के साथ प्रारम्भ हुआ। उपर्युक्त विविध प्रतियोगिताएं रखी गई। इस समारोह के मुख्य अतिथि श्री के. शैलेन्द्र कार्यक्रम अधिकारी आकाशवाणी पुणे थे। समारोह की अध्यक्षता श्री नूतनदास उप महानिदेशक मौसम विज्ञान ने किया। मुख्य अतिथि प्रतियोगिताओं को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। स्वरचित कविता में को अनुसंधान कार्यालय के श्री व्ही. वी. पासरणीकर और पूर्वानुमान कार्यालय के श्री एस. जे. प्रसाद ने लोगों को मुग्ध कर दिया।

हिन्दी परिषद पुणे शाखा के अध्यक्ष डा. पी. एन. सेन ने सबका हार्दिक स्वागत किया। हिन्दी परिषद के मंत्री श्री बंशराज मिश्र ने हिन्दी परिषद के गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए हिन्दी समारोह के महत्व को बताया। सभाध्यक्ष श्री नूतनदास ने समारोह की सराहना करते हुए कहा कि अधिक संख्या में अहिन्दी भाषी कर्मचारियों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं और समारोह में भाग लेकर हिन्दी के प्रति निष्ठा दिखाई है और समारोह को सफल बनाया है। मुख्य अतिथि के. शैलेन्द्र ने समारोह की प्रशंसा करते हुए कहा कि हमें मौसम कार्यालय में वास्तव में हिन्दी प्रयोग की झलक देखने को मिली है। अन्त में डॉ. एस. के. दीक्षित ने सभी को हार्दिक धन्यवाद दिया।

राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र (प.क्षे.) पुणे

दिनांक 14 सितम्बर, 1989 को पहली बार, "हिन्दी दिवस" मनाया गया। 12 व 13 सितम्बर को निबन्ध वादविवाद व काव्य पाठ प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। निबन्ध प्रतियोगिता का विषय – "विज्ञान और हिन्दी" था। वाद-विवाद प्रतियोगिता का विषय "एक प्रभुसत्ता सम्पन्न राष्ट्र के लिए अपनी एक भाषा का होना नितांत आवश्यक है" था। इसमें प्रथम रहीः सुश्री सुकीर्ति शेटे (विशेष अनु-

प्रयोग), द्वितीय रहे: एल. एन. राजू (क्रय भंडार अधिकारी) और तृतीय रहे श्री शिशिर दाणी (जिला सू.वि.सहायक)।

मुख्य समारोह 14 सितम्बर, 1989 को हुआ जिसमें पुणे विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के इमेरिटस प्रोफेसर डॉ. आनन्द प्रकाश दीक्षित, मुख्य अतिथि रहे। पुरस्कार वितरण के बाद डॉ. दीक्षित ने हिन्दी के प्रयोग हेतु कम्प्यूटर सुविधाओं को बढ़ाने की बात कही। डॉ. दीक्षित ने हिन्दी का मार्ग रोकने वाली अंग्रेजी मानसिकता पर प्रहार किया और कहा कि भाषा ही संस्कार बनाती व बदलती है। उन्होंने कहा कि यह राजनीतिक मिथ्य प्रचार ही है कि दक्षिण भारत, विशेषकर तमिलनाडु में हिन्दी का विरोध है। उन्होंने कहा कि उनका अनुभव इसके विपरीत है। उन्होंने हिन्दी दिवस को उत्साह से अधिक विचार का दिन बताया। उन्होंने कहा कि अपनी अस्मिता पहचानने के लिए यह आवश्यक है कि हम भारतीय अपनी अंग्रेजी मोह को छोड़ें।

रक्षा लेखा नियंत्रक (दक्षिण कमान) पुणे

13 से 20 सितम्बर, 1989 तक हिन्दी सप्ताह मनाया गया और निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए गए।

दिनांक 13 सितम्बर, 1989 को रक्षा लेखा नियंत्रक ने दीप प्रज्वलित करके हिन्दी सप्ताह का उद्घाटन किया। रक्षा लेखा नियंत्रक के उद्घाटन भाषण के उपरांत गीत एवं नाटक प्रभाग पुणे द्वारा मनोरंजक एवं संदेशप्रधान मंचीय कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

दिनांक 14 सितम्बर, 1989 को मुख्य कार्यालय के सभी अनुभागों द्वारा अधिकाधिक कार्य हिन्दी में किया गया। भंडार अनुभाग को सर्वाधिक अनुपातिक कार्य 91.5 प्रतिशत हिन्दी में करने के उपलक्ष्य में रक्षा लेखा नियंत्रक द्वारा हिन्दी सप्ताह समापन समारोह दिनांक 20-9-89 के अवसर पर चल राजभाषा शील्ड प्रदान किया गया। इस दिन प्रशासन अनुभाग में अत्याधिक लगभग 90 प्रतिशत कार्य हिन्दी में किया गया।

दिनांक 15 सितम्बर, 1989 को हिन्दी टिप्पण/प्रारूप लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में 12 प्रतियोगियों ने हिस्सा लिया। निम्नलिखित 5 सफल प्रतियोगियों को उनके सामने उल्लिखित पुरस्कार रक्षा लेखा नियंत्रक ने हिन्दी सप्ताह समापन समारोह (20-9-89) के अवसर पर प्रदान किए :--

तीन प्रथम पुरस्कार 50-50 रुपये मूल्य की फादर कामिल बुल्के का शब्दकोश दिए गए :--

1. श्रीमती आरती भंडारे, ले. प., प्रशा/वेतन
2. श्री चंद्रकान्त भालेराव, व ले. प., प्रशासन अनुभाग
3. श्री अशोक काले, व. ले. प., भंडार अनुभाग

दो द्वितीय पुरस्कार 30 रुपये मूल्य की प्रेमचंद की कर्मभूमि एवं प्रायोगिक हिन्दी की पुस्तकें।

4. श्री चन्द्रकांत खुन्याकारी, ले. प., वेतन/2 अनुभाग।
5. श्रीमती संजीवनी विल्डिकर, क० ले० य० प्रकीर्ण अनुभाग

दिनांक 18 सितम्बर, 1989 को हिन्दी निबंध, प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में 15 कर्मचारियों ने हिस्सा लिया। प्रतियोगियों द्वारा निम्नलिखित 3 विषयों में से एक विषय पर निबंध लिखा गया।

1. आधुनिक भारत के निर्माण में पं. जवाहरलाल नेहरू का योगदान।
2. भारत सरकार की राजभाषा नीति।
3. रक्षा लेखा नियंत्रक कार्यालय में कर्मचारियों की कार्यकुशलता और कैसे बढ़ाई जाए। निम्नलिखित 5 सफल प्रतियोगियों को निम्नलिखित पुरस्कार रक्षा लेखा नियंत्रक ने हिन्दी सप्ताह समापन समारोह के अवसर पर प्रदान किए।

तीन प्रथम पुरस्कार फादर कामिल बुल्के का शब्दकोश

1. श्रीमती उर्मिला शेजवलकर, व. ले. प., प्रकीर्ण अनुभाग
2. श्री अविनाश निजसुरे, व. ले. प., प्रशासन अनुभाग
3. श्री प्रदीप नाईक, व. ले. प., वे. ले. का. ग्रेफ

दो द्वितीय पुरस्कार प्रेमचंद की कार्यभूमि एवं प्रायोगिक हिन्दी पुस्तकें।

4. श्री एस. बी. कांबले, व. ले. प., प्रशासन अनुभाग
5. श्रीमती चंदा अरिफुद्दीन, ले. प., वेतन/ 1 अनुभाग

दिनांक 19 सितम्बर, 1989

"लेखा एवं लेखापरीक्षा संबंधी कार्यों में हिन्दी का प्रयोग" विषय पर वाद-विवाद (डिबेट) प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें 10 कर्मचारियों ने भाग लिया। निम्नलिखित पांच सफल प्रतियोगियों को रक्षा लेखा नियंत्रक ने हिन्दी सप्ताह समापन समारोह के अवसर पर पुरस्कार प्रदान किए)

तीन प्रथम पुरस्कार:--रुपये 50 मूल्य का फादर कामिल बुल्के का शब्दकोश

1. श्री प्रदीप नाईक, व. ले. प., वे. ले. का. ग्रेफ अनुभाग (हिन्दी - मराठी कोश)।
2. श्री द. वा. वर्तक, सहायक लेखा अधिकारी, प्रशासन
3. श्री अ. ग. थत्ते, व. ले. प., प्रशा/वेतन अनुभाग

दो द्वितीय पुरस्कार प्रेमचंद की "कर्मभूमि" एवं प्रायोगिक हिन्दी संबंधी पुस्तकें।

4. श्री भि. शि. शिंदे, व . ले. प., वित्तीय सलाह अनुभाग

5. श्री आर. ईश्वरन, सहायक लेखा अधिकारी, वित्तीय सलाह अनुभाग

20 सितं. 89 को हिन्दी सप्ताह का समापन रक्षा लेखा नियंत्रक की अध्यक्षता में सायं 4 सेबेस्टियन हाल में संपन्न हुआ।

रक्षा लेखा नियंत्रक ने उपर्युक्त प्रतियोगिताओं में सफल प्रतियोगियों को पुरस्कार/प्रशस्तिपत्र तथा हिन्दी शिक्षण परीक्षाओं के प्रमाणपत्र एवं भंडार अनुभाग को राजभाषा शील्ड प्रदान किए । उपर्युक्त सभी प्रतियोगिताओं के संबंध में रक्षा लेखा नियंत्रक ने एक निर्णायक समिति गठित की थी जिसमें डा. ग. दौ. पुंगले, रक्षा लेखा सहायक नियंत्रक, श्री मा. प्र. थिटे, लेखा अधिकारी एवं श्री गोपाल ना. गोडसे, लेखा अधिकारी, सहयोजित किए गए थे। निर्णायक समिति की ओर से श्री गो. न. गोडसे, लेखा अधिकारी ने प्रतियोगिताओं के संबंध में अपने अनुभव व्यक्त किए।

सीमा सड़क महानिदेशालय, पुणे

ग्रेफ सेन्टर और ग्रेफ अभिलेख कार्यालय, दिघी कैम्प, पूणे में संयुक्त रूप से 14 सितम्बर, 89 को हिन्दी दिवस तथा 14 सितम्बर से 20 सितम्बर, 89 तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। हिन्दी सप्ताह का शुभारम्भ कर्नल बी. के. ओबेराय, कमांडर, ग्रेफ सेन्टर ने किया। उन्होंने उद्घाटन भाषण में हिन्दी प्रयोग के बढ़ाने पर जोर दिया और कहा कि हमारे देश में हिन्दी लगभग हर क्षेत्र में बोली व समझी जाती है। परन्तु इसका जितना विकास होना चाहिए था वह नहीं हुआ। हिन्दी के विकास के लिए यह आवश्यक है कि हम अपने अंदर हिन्दी के प्रति हीन भावना को समाप्त करें और हिन्दी के प्रति अपनी झिझक भी दूर करें।

हिन्दी सप्ताह के दौरान ग्रेफ सेन्टर, पुणे में विभिन्न प्रतियोगिताएं—जैसे हिन्दी निबंध, हिन्दी भाषण, और हिन्दी नोटिंग-ड्राफ्टिंग प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। इन प्रतियोगिताओं में सभी अधिकारियों और कर्मचारियों ने भाग लिया।

हिन्दी सप्ताह के दौरान ग्रेफ सेन्टर और अभिलेख कार्यालय में एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन भी किया गया। कार्यशाला में हिन्दी शिक्षण योजना केन्द्र पुणे के प्रतिनिधि श्री आर. पी. गौतम ने अधिकारियों/कर्मचारियों को राजभाषा नीतियों से अवगत कराया।

20 सितम्बर, 89 को हिन्दी सप्ताह के समापन में ग्रेफ सेन्टर के द्वितीय कमान अधिकारी ले. कर्नल जी. के. मलिक ने कहा कि हिन्दी के विकास के लिए हमें प्रयास जारी रखने हैं। उन्होंने सभी प्रतियोगियों को शुभकामनाएं देते हुए समारोह का समापन किया ।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, लुधियाना

लुधियाना नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं आयकर विभाग द्वारा 14 सितम्बर 1989 को "आर्य महिला कालेज" के हाल में एक समारोह का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता आयकर आयुक्त (केन्द्रीय) श्री आर. के. मल्होत्रा ने की। समारोह में आयकर विभाग के स्टाफ के अतिरिक्त नगर स्थित विभिन्न केन्द्रीय सरकारी कार्यालयों/बैंकों/निगमों/उपक्रमों इत्यादि के कर्मचारियों/अधिकारियों ने भाग लिया। इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं के अतिरिक्त सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। श्री मल्होत्रा ने दीप जलाकर समारोह शुभारंभ किया। तत्पश्चात आयकर विभाग के कर्मचारियों ने "सरस्वती वंदना" प्रस्तुत की। रेलवे विभाग के कर्मचारियों ने संगीत धुनें तथा गीत प्रस्तुत किए। इसके साथ ही भाषण प्रतियोगिता आरम्भ हुई। भाषण प्रतियोगिता में प्रतियोगियों ने निम्नलिखित विषयों पर ओजस्वी भाषण दिए :—

1. हिन्दी में तकनीकी शिक्षा।
2. प्रसार माध्यम और हिन्दी।
3. हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अहिन्दी भाषियों का योगदान।
4. हिन्दी और प्रान्तीय भाषाएं—एक दूसरे की प्रतिपूरक या प्रतिद्वंद्वी ।
5. सरकारी कार्यालयों में हिन्दी का स्वरूप।

भाषण प्रतियोगिता की समाप्ति सहायक आयकर आयुक्त, श्री कुलदीप सिंह ने एक हृदयस्पर्शी गज़ल प्रस्तुत की। कार्यक्रम की अगली प्रस्तुति थी, —श्री वी. एस. राठौर, आयकर अधिकारी एवं श्री तिलक राज शर्मा, निरीक्षक के संयुक्त निर्देशन में आयकर विभाग के कर्मचारियों द्वारा प्रसिद्ध हिन्दी एकांकी "अखबारी विज्ञापन" का मंचन। पात्रों की सजीवता को देखकर, हर्ष ध्वनि से सारा हाल गूंज उठा।

रेलवे विभाग के श्री अश्विनी सग्गी तथा सहयोगियों द्वारा हास्य नाटिका " हकीम", कर्मचारी भविष्य निधि कार्यालय, सैन्ट्रल टूल रूम, आयकर विभाग, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के कर्मचारियों के गीत, भजन, गज़ल तथा आयकर विभाग के श्री बलविन्द्र कुमार ने मोनो एक्टिंग की प्रस्तुति के अतिरिक्त कार्यक्रम की अगली मद थी पंजाब का मशहूर लोक-नृत्य "गिद्धा", जिसे प्रस्तुत किया आयकर विभाग तथा न्यू इंडिया एश्योरेंस कम्पनी की महिला कर्मचारियों ने ।

इसके पश्चात् लुधियाना नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री आर. के. मल्होत्रा ने "हिन्दी दिवस" के अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं तथा वर्ष 1988-89 में केन्द्रीय सरकारी कार्यालयों में, हिन्दी में श्रेष्ठ कार्यनिष्पादन के लिए लुधियाना नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के विजेताओं को पुरस्कार दिए।

लुधियाना नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य कार्यालयों में वर्ष 1988-89 में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन-पुरस्कार।

1. श्री डी. वी. अरोड़ा आयकर अधिकारी (मुख्यालय), लुधियाना।	प्रथम
2. श्री जी. तंगप्पाण्डी, शाखा प्रबंधक, भारतीय निर्यात ऋण गारंटी निगम लिमि. लुधियाना।	द्वितीय
3. श्री रामपाल आहूजा, वरिष्ठ मंडल प्रबंधक, दी न्यू इंडिया एश्योरेंस कम्पनी, लुधियाना।	तृतीय

हिन्दी भाषण प्रतियोगिता

श्री मंगतराम कपूर, आयकर विभाग	प्रथम
श्री नरेश गुप्ता, भारतीय स्टेट बैंक,	द्वितीय
श्री अरुण कौल, आयकर विभाग	तृतीय

हिन्दी निबंध प्रतियोगिता

1. श्री श्याम सुन्दर शर्मा, भारतीय स्टेट बैंक	प्रथम
2. श्री प्रदीप कुमार वर्मा, न्यू इंडिया एश्योरेंस कम्पनी।	द्वितीय
3. श्री नरेश गुप्ता, भारतीय स्टेट बैंक	तृतीय

हिन्दी टिप्पण व प्रारुप लेखन प्रतियोगिता

1. श्री ओम प्रकाश कश्यप आयकर विभाग	प्रथम
2. श्री शोभराज गावड़ी आयकर विभाग	द्वितीय
3. श्री नपिन्द्र कुमार आयकर विभाग	तृतीय

बिजेताओं को पुरस्कृत करने के बाद श्री मल्होत्रा ने उन कर्मचारियों/अधिकारियों को स्मृति चिन्ह भेंट किए, जिन्होंने इस समारोह के विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेकर इसे सफल बनाने में सक्रिय सहयोग दिया।

पूर्वोत्तर रेलवे लखनऊ मंडल

पूर्वोत्तर रेलवे के लखनऊ मंडल द्वारा विगत 14 सितम्बर को मंडल कार्यालय में हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। समारोह का उद्घाटन पूर्वोत्तर रेलवे के महाप्रबन्धक श्री गौरी शंकर ने किया। इस अवसर पर दस दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का शुभारम्भ भी किया गया। महाप्रबन्धक ने इस बात पर बल दिया कि हिन्दी में दैनिक सरकारी काम करने के साथ-साथ रेल कर्मियों में हिन्दी साहित्य के प्रति भी अधिकाधिक अभिरुचि उत्पन्न करना चाहिए जिससे राजभाषा के स्वरूप में निखार आ सके। उन्होंने कहा कि पूर्वोत्तर रेलवे ने अपने कर्मचारियों को इस दिशा में प्रोत्साहित करने के लिये एक अभिनव योजना चलाई है जिसके अंतर्गत उनकी उत्कृष्ट साहित्यिक रचना पर नकद पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। इस योजना के अंतर्गत पहली बार कार्य निरीक्षक श्री नसीम सकेती को उनकी रचना पर रुपया 700/- का नकद पुरस्कार प्रदान किया गया है।

अध्यक्षता करते हुए मंडल रेल प्रबन्धक श्री कृष्ण पाल सिंह ने कहा कि सरकारी काम काज में सरल हिन्दी का प्रयोग करना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि हिन्दी न केवल इस देश की राजभाषा एवं सम्पर्क भाषा है, अपितु यह देश को एक सूत्र में बांधने का सशक्त माध्यम भी है।

इसके पूर्व अपर मंडल रेल प्रबन्धक एवं उप मुख्य राजभाषा अधिकारी कर्नल रवीन्द्र कुमार सिंह ने हिन्दी दिवस की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज के ही दिन राष्ट्र ने हिन्दी को राजभाषा बनाने का जो संकल्प लिया था उसे पूरा करने में हम सभी को अपना सक्रिय योगदान करना है। **श्री सिंह ने मंडल की राजभाषा सम्बन्धी गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि लखनऊ मंडल के कार्यालयों और स्टेशनों पर 90% से अधिक कार्य हिन्दी में हो रहा है।**

कार्यक्रम के आरंभ में महाप्रबंधक श्री गौरी शंकर ने सरस्वती जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। कार्यक्रम का आरंभ श्री किशोर चतुर्वेदी एवं साथियों की सरस्वती वंदना तथा हिन्दी बन्दना "भारत जननी एक हृदय हों" से तथा समापन देशागान से हुआ।

समारोह का संचालन करते हुए राजभाषा अधिकारी श्री जगतपति शरण निगम ने हिन्दी कार्यशाला की रूप-रेखा और व्याखानों के विषयों पर प्रकाश डाला। धन्यवाद ज्ञापन प्रवर मंडल कार्मिक अधिकारी श्री कृष्ण कुमार धुसिया ने किया।

केन्द्रीय हिंदी निदेशालय एवं वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय एवं वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 13-9-89 को हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. नगेन्द्र एवं श्री राजमणि तिवारी के अतिरिक्त निदेशालय के निदेशक डॉ. गंगा प्रसाद विमल ने भी अपने उद्गार व्यक्त किए। समारोह की अध्यक्षता वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के अध्यक्ष प्रोफेसर सूरजभान सिंह ने की और संचालन किया--श्री ओम प्रकाश अग्रवाल ने।

प्रख्यात साहित्यकार डॉ. नगेंद्र ने कहा कि आज का दिन हिंदी प्रेमियों के लिए वास्तव में एक प्रकार का संघर्ष दिवस है। हिंदी प्रेमियों को आज यह भी संकल्प करना चाहिए कि हमारी भाषा सक्षम और समृद्ध हो। डॉ. नगेंद्र ने राजभाषा के रूप में हिंदी की उपेक्षा की स्थिति स्वीकार करने के बावजूद यह आशा व्यक्त की कि अवरोध

के ये बादल शीघ्र ही छंट जाएंगे और राजनीति का वात्या-चक्र जब थमेगा तो हिंदी को उसका सही स्थान मिलेगा। अपनी समस्याओं और सीमाओं के बावजूद इन दोनों कार्यालयों ने हिंदी के क्षेत्र में ऐतिहासिक कार्य किए हैं और मेरा विश्वास है कि न केवल मानव संसाधन विकास मंत्रालय बल्कि पूरा प्रशासन इनकी महत्ता को स्वीकारेगा ।

केन्द्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक डॉ. गंगा प्रसाद विमल ने कहा कि हिंदी का प्रचार-प्रसार एवं विकास ऐसी बुनियादी बातें हैं जिससे हमारी जीविका से लेकर अस्तित्व तक का सवाल जुड़ा है। उन्होंने कहा कि हिंदी की पक्षधर्दता प्रजातांत्रिक पद्धति के प्रति विश्वास व्यक्त करने का परिचायक है । अंग्रेजी आज लोकतंत्र का गला दबा रही है। उन्होंने कहा कि हिंदी का काम और हिंदी को उसका सही स्थान दिलाने का दायित्व बहुत आसान नहीं है। इस संस्था की स्थापना जिस उद्देश्य के लिए की गई थी, वह अभी भी पूर्ण नहीं हुआ है। डॉ० विमल ने कहा कि हिन्दी के मार्ग में जहां अवरोध की स्थिति आए वहां व्यक्तिगत स्तर से लेकर सामूहिक स्तर तक हमें उस अवरोध का मुकाबला करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

केन्द्रीय हिंदी निदेशालय के भूतपूर्व निदेशक श्री राजमणि तिवारी ने कहा कि राजभाषा और सात राज्यों की राजभाषा ही बन पाई है। संविधान में अंग्रेजी का स्थान न होने पर भी आज अंग्रेजी ही सर्वोपरि बनी हुई है । हिंदी निदेशालय और शब्दावली आयोग इतने महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय दायित्वों का निर्वाह करने वाली संस्थाएं आर्थिक अधिकारों की दृष्टि से बिल्कुल पगु हैं। श्री तिवारी ने कहा कि इस विषम परिस्थिति के निवारण के लिए दोनों संस्थाओं को परस्पर सहयोग से कुछ-न-कुछ अवश्य करना चाहिए।

प्रो. सूरजभान सिंह ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि हम सब हिंदी रंगमंच के पात्र हैं, जो आज प्रेक्षागृह में बैठकर हिंदी की स्थिति का मूल्यांकन करने की कोशिश कर रहे हैं। प्रो. सिंह ने कहा कि राजभाषा को उसका सही स्थान दिलाने का दायित्व हम सभी का है और हमें अपनी भूमिका से इसके लिए सन्नद्ध रहना है ।

इस अवसर पर एक कवि-गोष्ठी का भी आयोजन हुआ, जिसका संचालन प्रख्यात कवि श्री जगदीश चतुर्वेदी ने किया। इसमें कु. यशवंत गुलाटी, डॉ. अर्चना चतुर्वेदी, डॉ. दिनेश दीक्षित, डॉ. वीरेंद्र सक्सेना, श्री राम, श्री सरोज शुक्ल, श्री जगदम्बा प्रसाद त्रिपाठी, श्री दुर्गा प्रसाद "प्रशांत", श्री एस. के. डींगरा, श्री जगदीश शतुर्वेदी एवं डॉ. गंगा प्रसाद विमल ने अपनी कविताएं सुनाई। धन्यवाद ज्ञापन श्री भवानी दत्त पंड्या ने किया ।

भारतीय खान ब्योरो, क्षेत्रीय कार्यालय, जबलपुर

सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रति जागरूकता तथा उसके उत्तरोत्तर प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से जबलपुर क्षेत्रीय कार्यालय में दिनांक 14 सितम्बर, 89 को हिन्दी दिवस तथा दिनांक 14-9-89 से 20-9-89 तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया ।

हिन्दी सप्ताह के अवसर पर कर्मचारियों में हिन्दी के प्रति रुचि जागृत करने के ध्येय से विभिन्न विद्वानों के हिन्दी से सम्बन्धित विचारों का प्रदर्शन पोस्टरों द्वारा किया गया ।

हिन्दी सप्ताह के अवसर पर चार प्रतियोगिताएं आयोजित की गईः--

राजभाषा प्रश्न मंच

15-9-89 को "राजभाषा प्रश्नमंच" का आयोजन किया गया । प्रश्नमंच में राजभाषा कार्यान्वयन/नियमों तथा हिन्दी से संबंधित सामान्य प्रश्न पूछे गए । प्रत्येक सही उत्तर बताने वाले को पुरस्कृत किया गया । कुल 25 व्यक्तियों ने पुरस्कार जीते ।

2. सुलेख प्रतियोगिता :--दिनांक 18-9-89 को "सुलेख प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया । इसमें कुल 26 व्यक्तियों ने भाग लिया । प्रतियोगियों को दो वर्गों में बांटा गया था । विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं :--

वर्ग--I

श्री अनिल कुमार स्वामी--प्रथम

श्री हंसराज मलिक--द्वितीय

वर्ग--II

श्री आशीष कुमार चक्रवर्ती--प्रथम

एवं

श्री शेषराव कोचे --द्वितीय

कविता पाठ प्रतियोगिता

हिन्दी सप्ताह के समापन समारोह के अवसर पर दिनांक 20-9-89 को कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । कविता पाठ में कुल 8 व्यक्तियों ने कविताएं पढ़ी । निर्णायकों की भूमिका श्री एस. डी. राय, सहायक खनन भू-विज्ञानी तथा श्री ए. के. वाडिया, सहायक खनन अभियंता ने निभाई । प्रतियोगिता में निम्नलिखित विजयी रहे :--

1. श्री राजेश कुमार जैन --प्रथम
2. श्री पी. सी. तिवारी--द्वितीय
3. श्री रामाज्ञासिंह --तृतीय

वाद-विवाद प्रतियोगिता

हिन्दी सप्ताह के समापन दिन पर "हिन्दी सप्ताह की सार्थकता" विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता रखी गई । वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रतियोगियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया ।

प्रतियोगिता निर्णायकों की भूमिका श्री एस. डी. राय, सहायक खनन भूविज्ञानी तथा श्री एस. के. वाडिया, सहायक खनन अभियंता ने निभाई ।

प्रतियोगिता में निम्नलिखित विजयी रहे :--

पक्ष में :--श्री अनिल कुमार स्वामी ।

विपक्ष में :--श्री वीरेन्द्र कुमार गुप्ता ।

हमें अपना कार्य हिंदी में करना है ।

--क्षेत्रीय खान नियंत्रक

दिनांक 20-9-89 को समापन समारोह के अवसर पर विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करते हुए श्री ग. खलखो क्षेत्रीय खान नियंत्रक, ने कहा कि "वैसे तो हमारे कार्यालय में अधिकांश कार्य हिंदी में ही हो रहा है तथा हिंन्दी में उत्कृष्ट कार्य के लिए हमें "राजभाषा वैजयंती" भी मिल चुकी है परन्तु हमें इस क्रम को लगातार आगे बढ़ाते हुए अपना शत-प्रतिशत कार्य हिन्दी में करना है । हमें ऐसा हिन्दी का प्रयोग करना है जो सरल हो, आसानी से समझी जा सके । हिन्दी सप्ताह के अवसर पर हमें अपना कार्य हिन्दी में ही करने का संकल्प लेना होगा तभी हिन्दी सप्ताह के आयोजन की सार्थकता होगी ।

कार्यक्रम का संचालन और आभार प्रदर्शन श्री रघुवीरशरण गर्ग क. त. स. (ख) ने किया ।

आयकर विभाग

जयपुर

आयकर विभाग (केन्द्रीय राजस्व भवन) में 14 सितम्बर, 1989 को श्री एस. एस. रूहेला, आयकर आयुक्त (अपील), राजस्थान की अध्यक्षता में हिन्दी दिवस समापन समारोह मनाया गया । श्री कलानाथ शास्त्री, निदेशक, भाषा विभाग राजस्थान विशिष्ट अतिथि तथा डॉ० ओंकारनाथ त्रिपाठी, आयकर आयुक्त मुख्य अतिथि थे। हिन्दी सप्ताह के अन्तर्गत 12-9-1989 को निबन्ध प्रतियोगिता तथा 13-9-1989 को हिन्दी टंकण प्रतियोगिता आयोजित की गई थी ।

अध्यक्ष श्री रूहेला ने कहा कि हिन्दी भाषा हमारी राष्ट्रभाषा है तथा वह स्वाधीनता एवं स्वाभिमान की प्रतीक है । हमें रुचि लेकर हिन्दी में काम करना चाहिए, मात्र औपचारिकता समझकर नहीं । मुख्य अतिथि आयकर आयुक्त डॉ. ओंकारनाथ त्रिपाठी ने कहा कि हमें वाद-प्रतिवाद से ऊपर उठकर हिन्दी को अपनाना है क्योंकि यही एक मात्र वह भाषा है जो सबको एकता के सूत्र में पिरोती है । विशिष्ट अतिथि डॉ. कलानाथ शास्त्री, निदेशक, भाषा विभाग ने बतलाया कि देश में द्रुतगति से हिन्दी का प्रचार-प्रसार होने वाला है क्योंकि हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए हिन्दी समितियां गठित कर दी गई हैं । कम्प्यूटरीकरण और यंत्रीकरण हिन्दी को बढ़ावा देने में बाधक हैं किन्तु उसके लिए भी सबसे सुझाव आमन्त्रित किए जा रहे हैं ।

निबन्ध प्रतियोगिता में सर्वश्री राजमेहरा, एन. एल. वर्मा, जयकुमार बाधवानी और बहादुर सिंह शेखावत को तथा हिन्दी टंकण प्रतियोगिताओं में सर्वश्री गंगाराम कृपलानी, ओमप्रकाश सैनी, सत्यनारायण वर्मा, सी. ओ. कुन्जुकुटी को क्रमशः प्रथम, द्वितीय , तृतीय एवं सान्त्वना पुरस्कार प्रदान किए गए ।

समारोह का समापन काव्य-गोष्ठी से हुआ जिसमें सर्वश्री अनीश, कृपाशंकर, रामप्रकाश, अमरचन्द, गंगानारायण "अनुपम", संतोषकुमार शर्मा तथा डॉ. ओंकारनाथ त्रिपाठी ने अपनी कविताओं से श्रोताओं को सरावोर कर दिया । कविताओं में हिन्दी को अपनाने तथा उसके व्यावहारिक प्रयोग व उपयोग का मार्गदर्शन किया गया ।

समारोह का संयोजन श्री संतोषकुमार शर्मा, कनिष्ठ प्रतिनिधि आयकर ने किया ।

मुख्य डाक महाध्यक्ष कार्यालय, लखनऊ

मुख्य डाक महाध्यक्ष कार्यालय, उ. प्र. परिमण्डल, लखनऊ के तत्वावधान में हिन्दी सप्ताह के अन्तर्गत विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए । दिनांक 14-9-89 को उद्घाटन समारोह में चिन्तक डॉ. कुंवर चन्द्र प्रकाश सिंह, श्री मदन मोहन "मनुज", निदेशक, आकाशवाणी, श्री प्रेम लाल शर्मा, निदेशक (राजभाषा), डाक विभाग, नई दिल्ली तथा श्री गुलाब खण्डेलवाल ने "राजभाषा का वर्तमान एवं भविष्य" विषय पर विचार व्यक्त किए ।

विषय का प्रवर्तन डॉ. रामाश्रय सविता, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी ने किया । हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के अध्यक्ष श्री गुलाब खण्डेलवाल ने कहा कि भाषा की प्रतिष्ठा तथा विकास के लिए उसका जन-जन की भाषा होना आवश्यक है । यह गुण हिन्दी में है । उन्होंने कहा कि राजभाषा का भविष्य उज्जवल है ।

डॉ. कुंवर चन्द्र प्रकाश सिंह ने हिन्दी के ऐतिहासिक विकास का हवाला देते हुए कहा कि राजभाषा हिन्दी सन्तों, स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों आदि की भाषा है जिन्होंने अपने उत्सर्ग का जल हिन्दी भाषा पर चढ़ाया है । श्री मनुज ने कहा कि 14 सितम्बर हिन्दी दिवस ही नहीं है वरन् यह विभिन्न भाषाओं का राष्ट्रीय पर्व है । भारतीय भाषा-भाषियों को परस्पर लड़ना नहीं चाहिए तथा अपनी गुलामी की

मानसिकता को छोड़कर हिन्दी को सच्चे हृदय से अपनाना चाहिए। उन्होंने अपने स्वर को शक्ति प्रदान करते हुए आगे कहा कि जहां अन्य अधिनियमों का कड़ाई से पालन किया जाता है वहां राजभाषा अधिनियम का पूर्णतया पालन क्यों नहीं होता ।

श्री प्रेम लाल शर्मा, निदेशक (राजभाषा) ने कहा कि राजभाषा अधिनियम के उल्लंघन पर कड़ाई न होने के कारण ही शासकीय-प्रशासकीय कार्यों में इसकी उपेक्षा हो रही है । अतः इस पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए । इस समारोह की अध्यक्षता श्री समीर कुमार आचार्य, पोस्टमास्टर जनरल, लखनऊ ने की तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सविता ने किया ।

दिनांक 15-9-89 को लखनऊ स्थित डाक कार्यालयों के कर्मचारियों के लिए हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गई । निबन्ध का विषय था—"राष्ट्रीय स्तर पर राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन में बाधाएं और उनका निवारण ।"

15-9-89 को कार्यालय में पहली बार एक भव्य कवयित्री सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें लखनऊ की ख्यातनामा कवयित्रियों ने भाग लिया ।

दिनांक 18-9-89 को "सभाकक्ष" में डाक कर्मचारियों के लिए एक हिन्दी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता रखी गयी जिसमें तीस कर्मचारियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया ।

19-9-89 को हिन्दी कार्य आकलन प्रतियोगिता सम्पन्न हुई । यह प्रतियोगिता चार स्तरों पर आयोजित हुई (1) परिमण्डल कार्यालय; (2) हिन्दी आशुलिपिक; (3) हिन्दी टंकण; एवं (4) अनुभागीय ।

20-9-89 को हिन्दी वाद प्रतियोगिता रखी गयी जिसका विषय था "क्या हमारे लिए अंग्रेजी में कार्य करना श्रेयस्कर है ।" इसमें डाक कार्यालयों के कर्मचारियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया ।

21-9-89 को अपरान्ह 4.00 बजे से डाक मनोरंजनालय कक्ष में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुआ तथा मुख्य अतिथि श्री समीर कुमार आचार्य, पोस्टमास्टर जनरल, लखनऊ ने विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए । उन्होंने अपने भाषण में हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग पर बल दिया और कहा कि उ. प्र० डाक परिमण्डल में काफी कार्य हिन्दी में किया जा रहा है । श्री श्यामल राय चौधरी ने समारोह का संचालन किया । डॉ. रामाश्रय सविता, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी ने इस सभी कार्यक्रमों का समन्वय कार्य किया ।

योजना आयोग, नई दिल्ली

योजना आयोग में 1 से 15 सितम्बर, 1989 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया, जिसके दौरान निम्नलिखित कार्यक्रम किए गए :—

योजना आयोग के सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों द्वारा हिन्दी में काम करने की प्रेरणा के लिए योजना मंत्री जी ने एक अपील जारी की ।

"नियोजित विकास में राजभाषा का महत्व" विषय पर दिनांक 13-9-89 को एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें प्रो. लक्ष्मी नारायण दुबे, प्रोफेसर हिन्दी विभाग, हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर तथा सदस्य हिन्दी सलाहकार समिति ने विषय का प्रतिपादन किया। अन्य वक्ताओं ने भी अपने विचार रखे ।

आयोग के सलाहकार (प्रशासन) ने एक परिपत्र जारी किया जिसमें आयोग के अधिकारियों/कर्मचारियों को राजभाषा नीति तथा राजभाषा संबंधी नियमों, अनुदेशों आदि का स्मरण कराया गया । आयोग के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिन्दी के प्रति रूचि बढ़ाने की दृष्टि से आयोग के पुस्तकालय में 11-9-89 से 14-9-89 तक प्रदर्शनी लगाई गई .जिसमें विभिन्न पुस्तक विक्रेताओं द्वारा लाई गई पुस्तकें, पुस्तकालय द्वारा खरीदी गई पुस्तकें, पुस्तकालय द्वारा खरीदी जाने वाली हिन्दी पत्रिकाओं तथा हिन्दी में हो रहे काम का प्रदर्शन किया गया । द्विभाषी इलेक्ट्रानिक टाइपराइटरों और वर्ड प्रोसेसर के प्रयोग का प्रदर्शन भी किया गया ।

दिनांक 1-9-1989 को हिन्दी टंकण, आशुलिपि तथा टिप्पण और आलेखन प्रतियोगिताएं आयोजित की गई । प्रतियोगिताओं के विजेताओं को 200 रु०, 150 रु० के पुरस्कार दिए गए ।

दिनांक 4-9-89 से 8-9-89 तक पांच दिन की पूर्ण दिवसीय हिन्दी कार्यशाला चलाई गई, जिसमें टिप्पण और आलेखन का अभ्यास करवाया गया ।

योजना भवन में दिनांक 18-9-89 को योजना आयोग के सदस्य, श्री पी. एन. श्रीवास्तव की अध्यक्षता में हिन्दी पखवाड़े का समापन समारोह आयोजित किया गया । इसमें उन्होंने प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार तथा हिन्दी कार्यशाला और सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने वाले कर्मचारियों को प्रमाणपत्र दिए ।

मौसम विज्ञान के महानिदेशक का कार्यालय, लोदी रोड, नई दिल्ली

भारत मौसम विज्ञान विभाग के लोदी रोड स्थित मुख्यालय महानिदेशक के कार्यालय में 14 सितम्बर से 20 सितम्बर 1989 तक हिन्दी सप्ताह मनाया गया ।

14 सितम्बर को मौसम विज्ञान के महानिदेशक डॉ. शशिमोहन कुलश्रेष्ठ की अध्यक्षता में हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ सरस्वती वंदना से किया गया । उपस्थित अधिकारियों तथा कर्मचारियों के समक्ष सरकार की राजभाषा नीति संबंधी भाषण दिए गए और अपर महानिदेशक डॉ. एन. सेन राय ने कर्मचारियों

व अधिकारियों से अपील की कि वे हिन्दी सप्ताह के दौरान आयोजित किए जाने वाले सभी कार्यक्रमों में अधिक से अधिक संख्या में भाग लें और सरकार की राजभाषा नीति को कार्यान्वित करने में अपना पूरा सहयोग प्रदान करें ।

समारोह में भाषणों के अलावा कर्मचारियों व अधिकारियों ने अपनी कविताएं सुनाई। इस कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण, "राजभाषा प्रश्नमंच" रहा । इसकी सराहना महानिदेशक तथा सभी श्रोताओं ने की । समस्त कार्यक्रम व प्रश्नमंच का संचालन हिन्दी अधिकारी श्री अफला सिंह वर्मा ने किया ।

इस अवसर पर हिन्दी अनुभाग द्वारा प्रकाशित विभागीय हिन्दी पत्रिका "मौसम मंजूषा" के सितम्बर 89 अंक का भी अपर महानिदेशक ने विमोचन किया और उसकी प्रति महानिदेशक को भेंट की । महानिदेशक डॉ. शशिमोहन कुलश्रेष्ठ ने कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि राजभाषा हिन्दी हमारी राजभाषा व सम्पर्क भाषा है । उत्तर से दक्षिण तक तथा पूर्व से पश्चिम तक सारे देश में कहीं भी चले जाएं हिन्दी समझी जाती है । उन्होंने अनुरोध किया कि अधिक से अधिक काम हिन्दी में करें ।

सप्ताह के दौरान हिन्दी में अधिक से अधिक काम करने का प्रयास किया गया । प्रत्येक दिन प्रतियोगिताएं हुई, जिनमें वाद-विवाद, कविता, टिप्पण व आलेखन हिन्दी टंकण तथा निबंध प्रतियोगिताएं शामिल थीं । प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान पाने वाले व्यक्तियों को पुरस्कारों के लिए चुना गया और कुछ प्रोत्साहन पुरस्कारों की भी व्यवस्था की गई ।

विविध

हिन्दी अकादमी, दिल्ली

महामहिम उपराष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा ने हिन्दी अकादमी, दिल्ली द्वारा हिन्दी पखवाड़े के उपलक्ष में प्रकाशित ग्रन्थ 'संकल्प' का विमोचन करते हुए कहा कि "हिन्दी देश को जोड़ने वाली भाषा के साथ-साथ राष्ट्रीय एकता की संजीवनी शक्ति है । इसलिए हिन्दी-भाषा और साहित्य की सेवा के लिए उठाया गया हर कदम सराहना के योग्य है ।" 'संकल्प' ग्रन्थ की प्रशंसा करते हुए महामहिम उपराष्ट्रपति ने कहा कि "इसमें प्रकाशित प्रतिष्ठित विद्वानों के लेख हिन्दी की सेवा के लिए नई प्रेरणा देंगे उन्होंने यह सुझाव भी दिया कि आज चारों ओर के वातावरण को देखते हुए हिन्दी में ऐसी छोटी-छोटी पुस्तकें भी प्रकाशित की जानी चाहिए जिनमें देश के बारे में जानकारी हो, हमारी संस्कृति, इतिहास और साहित्य के बारे में विचार हों तथा नई पीढ़ी को स्वतंत्रता आन्दोलन, शहीदों की कुर्बानी और हमारी सांस्कृतिक धरोहर की सच्ची जानकारी मिल सके ।"

दिल्ली के उपराज्यपाल श्री रोमेश भण्डारी ने कहा कि "हिन्दी अकादमी राजधानी में हिन्दी का वातावरण बनाने की दिशा में और हिन्दी के प्रचार और प्रसार के लिए अनेक योजनाएं कार्यरूप में ला रही है । मुझे विश्वास है कि राजधानी के साहित्य-जगत के जानेमाने विद्वानों के सहयोग और मार्गदर्शन से अकादमी अपने उद्देश्य में सफल हो सकेगी । उपराज्यपाल ने अकादमी के प्रयास की सराहना करते हुए 'संकल्प' ग्रन्थ को बहुत उपयोगी बताया ।

दिल्ली के कार्यकारी पार्षद् (शिक्षा) श्री कुलानन्द भारतीय ने इस अवसर पर हिन्दी अकादमी की सराहना करते हुए कहा कि "अकादमी अपने उद्देश्य की ओर समर्पित भाव से अग्रसर है ।"

सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री अक्षय कुमार जैन ने हिन्दी की सेवा के लिए उसी प्रकार की लगन और निष्ठा की आवश्यकताओं पर बल दिया जो इस देश में स्वतंत्रता से पहले विद्यमान थी ।

सुप्रसिद्ध समालोचक प्रो० विजयेन्द्र स्नातक ने 'संकल्प' ग्रन्थ को एक सुन्दर संदर्भ ग्रन्थ की संज्ञा देते हुए कहा कि इसमें विभिन्न विषयों पर लिखे गये साहित्यिक लेख अपने आप में महत्वपूर्ण हैं और अध्येताओं के लिए उपयोगी भी हैं ।

इस अवसर पर विचार व्यक्त करने के लिए अन्य विशिष्ट व्यक्तियों में डॉ. सुधाकर पाण्डेय, श्री नरेश चन्द्र चतुर्वेदी एवं श्री चिरंजीत के नाम उल्लेखनीय हैं । हिन्दी अकादमी के सचिव, डॉ. नारायणदत्त पालीवाल ने अकादमी की अब तक की उपलब्धियों तथा भावी कार्यक्रमों और योजनाओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस वर्ष अकादमी के अधिकतर कार्यक्रम दूर-दराज के क्षेत्रों तथा पुनर्वास बस्तियों में आयोजित किए जाएंगे और जन-सम्पर्क बढ़ाया जायेगा, जिसमें साक्षरता अभियान भी सम्मिलित है ।

इस अवसर पर महामहिम उपराष्ट्रपति को माननीय उपराज्यपाल द्वारा अकादमी का प्रतीक चिह्न एवं साहित्य भी भेंट किया गया ।

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्, अबोहर

"हिंदी के प्रयोग में संकोच कैसा"—गोष्ठी केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् अबोहर शाखा द्वारा इस वर्ष हिन्दी पखवाड़ा 09 से 23-09-1989 तक मनाया गया। 09 सितम्बर 1989 को स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर में एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी का विषय था "हिन्दी के प्रयोग में संकोच कैसा ?" निष्कर्ष यह निकला कि मानसिकता का अभाव तथा हीन-भावना और हिन्दी का जीवन यापन अर्थात् नौकरी से न जुड़ा होना है। सरकार को चाहिए कि हिन्दी का सीधा सम्बन्ध नौकरी, रोजी व रोटी, से जोड़े ताकि लोगों में हीन भावना समाप्त हो ।

12 सितम्बर 1989 को सैन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया में परिषद् द्वारा एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। भाषण प्रतियोगिता के विषय थे (क) सरकारी कार्यालयों में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग कैसे हो सकता है (ख) राष्ट्रीय एकता का प्रतीक हिन्दी (ग) हिन्दी के प्रयोग में बाधाएं और उनका समाधान। प्रतियोगिता में नगर के विभिन्न बैंकों के कर्मचारियों ने भाग लिया।

14 सितम्बर 1989 को भारतीय स्टेट बैंक में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सैन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया के शाखा प्रबन्धक तथा बैंकर्ज क्लब के सचिव श्री प्रभ दयाल वधवा ने की। नगर के प्रमुख उद्योगपति श्री शिव रत्न राठी इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे। भाषण का विषय था "बैंकों में हिन्दी का प्रयोग" मुख्य वक्ता नगर के वरिष्ठ वकील श्री महेन्द्र प्रताप असीजा तथा निर्णायक डी. ए. वी. शिक्षा महाविद्यालय के प्राध्यापक श्री रणवीर प्रताप ने कार्यक्रम की भूरी-भूरी प्रशंसा की। दूसरे निर्णायक परिषद् के मन्त्री **श्री रवि घायल** ने भी अपने विचार रखे।

इसके अतिरिक्त 14 सितम्बर 1989 को ही केशवानन्द बाल विद्यालय में परिषद् द्वारा स्कूल के बच्चों के लिए कविता उच्चारण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

16 सितम्बर 1989 को बैंक ऑफ इण्डिया में कविता उच्चारण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रथम द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों को पुरस्कार तथा प्रशस्तिपत्र प्रदान किए गए। इसके अतिरिक्त 14-9-1989 से 21-9-89 तक विशेषत: हिन्दी में अधिकाधिक कार्य करने का प्रयास किया गया। ग्राहकों को हिन्दी में फार्म भरने की प्रेरणा दी गई तथा भविष्य में अधिकाधिक कार्य हिन्दी में करने की शपथ ली गई।

18 सितम्बर 1989 को केन्द्रीय विद्यालय के प्रांगन में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था।

21 सितम्बर 1989 को भारतीय जीवन बीमा निगम में स्कूल के बच्चों तथा निगम के कर्मचारियों की सुलेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

इस प्रकार नगर के विभिन्न कार्यालयों तथा संस्थानों में लगभग पूरा महीना ही हिन्दी का माहौल बना रहा। हजारों की संख्या में नगर के नागरिकों ने तथा कर्मचारियों ने इस अवधि में विभिन्न कार्यक्रमों में भाग ले कर अपने हिन्दी प्रेम का परिचय दिया। □

पृष्ठ 112 का शेष

हिन्दी सप्ताह के दौरान कार्यालय में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बड़ी निष्ठा एवं लगन से अपना कार्यालयीन कामकाज हिन्दी में किया। दिनांक 20-9-1989 को हिन्दी सप्ताह का समापन समारोह सम्पन्न हुआ।

हमें अपना अधिक से अधिक कार्यालयीन कार्य हिन्दी में करना चाहिए —श्री एम. सी. लेहन

हिन्दी सप्ताह के समापन समारोह में दूरसंचार परिमंडल के मुख्य महाप्रबंधक श्री एम.सी.लेहन ने विजेता कर्मचारियों को पुस्तकों तथा नकद धनराशि देकर पुरस्कृत किया।

सतर्कता अधिकारी श्री आर. के. पंडित ने कार्यक्रम की सफलता के लिए धन्यवाद दिया।

भविष्य निधि आयुक्त, हैदराबाद

हैदराबाद, 23 सितम्बर — क्षेत्रीय भविष्यनिधि आयुक्त कार्यालय, हैदराबाद में इस माह 14 सितम्बर से 20 सितम्बर 89 तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। संप्ताह के दौरान सरकारी कार्यालय में हिन्दी के उत्तरोत्तर प्रयोग के लिए विभिन्न प्रतियोगता जैसे हिन्दी टिप्पण व आलेखन, हिन्दी निबन्ध, वाद-विवाद, काव्य पाठ, हिन्दी टंकण प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। हिन्दी सप्ताह का समापन समारोह दि. 20 सितम्बर 89 को कार्यालय में सम्पन्न हुआ। श्री वेमूरी राधाकृष्ण मूर्ति, अध्यक्ष, आन्ध्र प्रदेश हिन्दी अकादमी मुख्य अतिथि के रूप में भाग लेते हुए हिन्दी को राजभाषा के रूप में विकास करने और हिन्दी को सीखने के महत्व पर बल दिया। श्री सी. एस. रेड्डी, क्षेत्रीय भविष्य निधि, आयुक्त, समारोह की अध्यक्षता करते हुए सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों से कहा कि इस पुनीत अवसर पर हिन्दी में कार्य करने के सभी संकल्प लें।

इससे पहले श्री एम. पुरूषोत्तम, सहायक भविष्यनिधि आयुक्त ने, मुख्य अतिथि, उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया। अंत में कर्मचारियों द्वारा लघुनाटिका एवं सुगम संगीत प्रस्तुत किया गया। □

हिंदी कार्यशालाएं

भारत डायनामिक्स, हैदराबाद
वरिष्ठ कार्यपालकों के लिए "विशेष राजभाषा कार्यशाला"

रक्षा मंत्रालयधीन एक प्रक्षेपास्त्र उत्पादक इकाई भारत डायनामिक्स लिमिटेड, हैदराबाद में 5 और 6 जुलाई 89 को उद्यम के वरिष्ठ कार्यपालकों के लिए एक विशेष राजभाषा कार्यशाला का आयोजन हुआ, कार्यशाला का उद्देश्य उन वरिष्ठ कार्यपालकों को राजभाषा संबंधी नीति नियमों से अवगत कराना था जो राजभाषा कार्यान्वियन के लिए उत्तर-दायी होते है, उप-महाप्रबन्धकों और वरिष्ठ प्रबन्धकों की इस कार्यशाला का उद्घाटन उद्यम के प्रबन्ध निदेशक तथा राजभाषा कार्यान्वियन समिति के अध्यक्ष एअर कमाडोर आर. गोपाल स्वामी, द्वारा किया गया। प्रमुख अतिथि थे उस्मानिया विश्वविद्यालय के संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. एम. गोपालरेड्डी उद्यम के अपर महाप्रबन्धक (कार्मिक एवं प्रशासन) राजभाषा अधिकारी श्री एन. सांबमूर्ती ने मुख्य अतिथि तथा प्रतिभागियों का स्वागत किया।

उद्यम की राजभाषा कार्यान्वियन समिति के सदस्य सचिव श्री नरहर देव, सहायक प्रबन्धक (प्रशासन एवं राजभाषा) ने भारत डायनामिक्स में राजभाषा कार्यान्वियन की रूपरेखा प्रस्तुत की। अपने उद्घाटन भाषण में एअर कमाडोर आर. गोपालस्वामी ने उद्यम में हो रही राजभाषा संबंधी प्रगति पर संतोष व्यक्त किया। देश-विदेश में भारतीय संस्कृति व भारतीय भाषा "हिन्दी" के संबंध में कुछ रोचक अनुभव बताए।

मुख्य अतिथि प्रो० गोपालरेड्डी ने अपने भाषण में भारतीय संस्कृति और भारतीय भाषाओं की एकात्मता, मनोवेधक तथा ऐतिहासिक व साहित्यिक पृष्ठभूमि देते हुए विशद विवेचन किया। उन्होंने भारतीय भाषाओं की जननी संस्कृत व देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता का अति सुगम परिचय दिया।

अंत में श्री रामचन्दर, प्रबन्धक (प्रशासन) ने मुख्य अतिथि, प्रबन्ध निदेशक तथा संयोजकों के प्रति आभार प्रकट किया।

दूरदर्शन, केंद्र, हैदराबाद

दूरदर्शन केन्द्र हैदराबाद में दिनांक 19-7-89 से 22-7-89 तक चार दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्य-शाला में अभियान्त्रिकी अनुभाग, कार्यक्रम अनुभाग तथा प्रशासन अनुभाग में पांच-पांच कर्मचारियों ने भाग लिया।

पहले सत्र में दिनांक 19-7-89 को भारतीय रिजर्व बैंक के हिन्दी अधिकारी श्री शेषगिरि राव ने प्रतिभागियों को सरकार की राजभाषा नीति, राजभाषा अधिनियम तथा नियम आदि के बारे में बताया। दिनांक 20-7-89 को लेखा संबंधी टिप्पण तथा आलेखन विषय के व्याख्याता थे, भारत डायनामिक्स लि. के हिन्दी अधिकारी श्री नरहरदेव। उन्होंने टिप्पण प्रारूपण का अभ्यास करवाया।

तीसरा सत्र दिनांक 21-7-89 को था। इस सत्र के व्याख्याता थे--इंडिन ओवरसिज़ बैंक के हिन्दी अधिकारी श्री कुलपति शर्मा। उन्होंने अपने व्याख्यान में हिन्दी वर्तनी का प्रयोग, लिंग निर्धारण आदि के बारे में बताया।

चौथा तथा अंतिम सत्र दिनांक 22-7-89 को था। इस सत्र के व्याख्याता, हैदराबाद टेलीफोन्स के हिन्दी अधिकारी श्री प्रेमकुमार ने पक्षों के विविध नमूने तथा उन्हें कैसे लिखा जाता है आदि के बारे में बताया। इसी दिन कार्यशाला के समापन समारोह में उस्मानिया विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. ललित कुमार पारिख मुख्य अतिथि थे। कार्यक्रम की शुरूआत में केन्द्र के हिन्दी अधिकारी श्री एस. एस. धुत्रे ने कार्यशाला की रिपोर्ट पढ़ कर सुनायी।

उपनिदेशक श्री रामानुजाचार्युलु ने कहा कि वे इस कार्य-शाला में प्राप्त ज्ञान का पूरा उपयोग करें और अपने दैनंदिन कामकाज में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करें।

अधीक्षक अभियन्ता ने कहा कि "कार्यालय में अधिकतर कर्मचारी हिन्दी समझते हैं, बोलते है किंतु लिख नहीं पाते" उन्होंने प्रतिभागियों से कहा कि "वे लिखने का भी अभ्यास करें।"

मुख्य अतिथि डा. ललित कुमार पारीख ने प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र वितरित किए और कहा कि सबसे पहले जब हिन्दी की प्रगति के बारे में सोचा गया था तो उसकी प्रगति दक्षिण से ही शुरू हो गयी। उसके बाद वर्धा और आगे उत्तर की ओर बढ़ गयी। हिन्दी एक ऐसी समृद्ध भाषा है जिसके लिए प्रचार-प्रसार की आवश्यकता नहीं। वह अपने आप प्रगति करेगी।

केन्द्र के निदेशक श्री डी. बालकृष्ण ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि "आजादी के बाद हिन्दी की जो प्रगति होनी चाहिए थी वह नहीं हो रही है। एक वह जमाना था जब हर घर से एक या दो महिलाएं अपने निजी प्रयत्न से हिन्दी भाषा सीखती थीं। देश की राजभाषा का स्थान हिन्दी के सिवाय दूसरी भाषा नहीं ले सकती। कितने साल हम अंग्रेजी से जुड़े रहेंगे ? हिन्दी सीखना कठिन नहीं है। हिन्दी राजभाषा है और उसे हमें अपनाना चाहिए भले ही उसमें समय लगता हो"। अंत में उन्होंने कहा कि वे इन चार दिनों में जो कुछ भी सीखा है उसे अपने कार्यालयीन कामकाज में प्रयोग करें।"

गुंतकल रेल मंडल

मडल में दि० 18-9-1989 से 22-9-1989 तक यांत्रिक विभाग के कर्मचारियों के लिए "हिंदी कार्यशाला" का आयोजन किया गया। कार्यशाला में 21 कर्मचारियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस कार्यशाला में यांत्रिक विभाग—अर्थात् लोको, स्टीम, सवारी व मालडिब्बा, डीज़ल शेड/गुत्ती और गुंतकल के क्रमश: 2, 7, 6 और 6 कर्मचारी प्रशिक्षित हुए।

दिनांक 18-9-89 को, श्री हरेंद्र सिंह, अपर मंडल रेल प्रबंधक/गुंतकल ने कार्यशाला का विधिवत् उद्घाटन किया। उन्होंने आशा व्यक्त की कि कर्मचारी-वर्ग इस कार्यशाला का पूरा-पूरा लाभ उठाते हुए, अपने दैनंदिन सरकारी कामकाज में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करें।

इस अवसर पर, श्री पी. एन. रेड्डी, वरि. राजभाषा अधिकारी, प्रधान कार्यालय सिकंदराबाद, मुख्य अतिथि एवं व्याख्याता के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने कार्यशाला के आयोजन एवं महत्त्व के बारे में बताया।

इसके बाद श्री जी. नरसिम्हप्पा, राजभाषा अधिकारी गुंतकल ने कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि इस प्रकार की कार्यशालाओं के आयोजन से कर्मचारियों के मन की झिझक दूर हो जाती है और व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त हो जाता है।

दिनांक 18-9-89 से 22-9-89 तक चलायी गयी इस कार्यशाला में प्रतिदिन प्रधान कार्यालय/मंडल कार्यालयों से अधिकारी/कर्मचारी आते रहे और विभिन्न विषयों पर अपना व्याख्यान देते रहे। साथ-साथ उनके व्याख्यान की प्रतियां भी कमचारियों में बांटी गई। पाठ के अंत में कर्मचारियों द्वारा अभ्यास भी कराये गए।

दिनांक 22-9-89 को व्याख्याता के रूप में प्रधान कार्यालय से पधारे वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी, श्री सुदर्शन खन्ना ने सप्ताह भर से चलाये गये पाठों की पुनरीक्षा करते हुए कहा कि हिंदी में काम करने वालों के लिए प्रोत्साहनों की कमी नहीं है। काम शुरू तो कीजिए झिझक अपने आप दूर हो जाएगी। आगे उन्होंने प्रश्न किया कि कब तक हम अंग्रेजी के साथ चलते रहेंगे। हिंदी तो एक न एक दिन आनी है। और हमें तो संसदीय समिति को दिये हुये आश्वासनों को बनाये रखना है।

अंत में, "हिंदी कार्यशाला" में प्रशिक्षित कर्मचारियों को प्रमाण-पत्र एवं सहायक साहित्य, फोल्डर आदि का वितरण किया गया। हिंदी अधीक्षक, श्री मोहम्मद खलील के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

मौसम विज्ञान विभाग, पुणे

पुण स्थित मौसम विज्ञान के अपर महानिदेशक (अनुसंधान) के कार्यालय में सरकारी काम-काज में अधिकारियों और कर्मचारियों को हिन्दी में टिप्पण और आलेखन का प्रशिक्षण देने के लिए 21 से 25 अगस्त 1989 तक पांच दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के शुभारम्भ में श्री एस. व्ही. दातार, मौसम विज्ञान के उपमहानिदेशक ने प्रशिक्षणार्थियों को सम्बोधित किया। उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस कार्यशाला में सभी प्रशिक्षणार्थी प्रशिक्षण प्राप्त कर आसानी से अपना दैनिक कामकाज हिन्दी में कर सकेंगे। इस कार्यशाला में पुणे स्थित मौसम विज्ञान विभाग के चारों कार्यालयों से 5 अधिकारियों और 15 कर्मचारियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। हिन्दी कार्यशाला में मौसम कार्यालय के अधिकारियों और कर्मचारियों ने व्याख्यान दिए।

हिन्दी कार्यशाला समापन दिवस पर श्री नूतनदास, उपमहानिदेशक, द्वारा प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाणपत्र प्रदान किए गए। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों से आशा व्यक्त की कि वे अपना कामकाज अब सरलता से हिन्दी में कर सकते हैं। इस अवसर पर श्री एस. व्ही. दातार, उपमहानिदेशक ने भी प्रशिक्षणार्थियों को सम्बोधित किया और सभी व्याख्याताओं को धन्यवाद दिया।

केन्द्रीय विद्युत परिमंडल, बम्बई

बम्बई केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग, पश्चिम अंचल के सभी कार्यालयों के लिपिकवर्गीय कर्मचारियों के लिये तारीख 7-8-89 से 11-8-89 तक एक पांच दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला का संयोजन व संचालन श्री महेश चन्द्र अवस्थी ने किया। कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए श्री एन. कृष्णमूर्ति, मुख्य अभियंता (वि.), द. प. अं., के. लो. नि. वि., बम्बई ने कहा कि सरकारी कार्यालयों में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के

लिये सबसे जरूरी बात यह है कि हम अपने कामकाज में सामान्य हिन्दी भाषा का प्रयोग करें, सीधे सरल शब्दों का प्रयोग करें।

मुख्य अभियंता (वि.) ने अपने जीवन के कुछ रोचक संस्मरण सुनाते हुए कहा कि दिल्ली में उन्होंने अपने सेवा काल में हिन्दी का प्रयोग बहुत अधिक किया। कई बार यह भी देखा गया है कि हिन्दी में लिखे गये पत्रों के जवाब अंग्रेजी में लिखे गये पत्रों के जवाब की अपेक्षा शीघ्र प्राप्त होते है।

हिन्दी कार्यशाला के समापन समारोह में माननीय श्री शरत चन्द्र गुप्त, मुख्य अभियंता (प. अं.) के. लो. नि. वि., बम्बई ने सभी प्रशिक्षुओं को प्रमाणपत्र प्रदान किये। उन्होंने कहा कि हमारे लिये यह बड़े गर्व की बात है कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा के साथ राजभाषा का दर्जा भी प्रदान किया गया है। हिन्दी का प्रचार प्रसार उसके अधिकाधिक व्यवहार पर निर्भर है। आप लोगों ने हिन्दी कार्यशाला में भाग लेकर इन पांच दिनों में जो कुछ भी सीखा है। मैं आशा करता हूं कि आप अपने-अपने कार्यालयों में जाकर इसका प्रयोग करेंगे।

श्री अनिलकुमार जैन, कार्यपालक अभियंता (मुख्यालय), व. के. वि. प., के. लो. नि. वि., ने सभी उपस्थित अधिकारियों का स्वागत करते हुए हिन्दी कार्यशाला की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि बम्बई केन्द्रीय विद्युत् परिमंडल की ओर से छठी हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया है। इससे पूर्व कनिष्ठ इंजीनियरों व नक्शानवीसों के लिये तीन हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया जा चुका है और दो बार लिपिकवर्गीय कर्मचारियों के लिये हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया जा चुका है।

भारतीय कपास निगम लि., बम्बई

दिनांक 30-6-89 को निगम के मुख्यालय में वर्ष 1989-90 की वरिष्ठ अधिकारियों की कार्यशाला का उद्घाटन श्री राधाकान्त शर्मा, सचिव तथा सलाहकार हिन्दी द्वारा किया गया। श्री मा.बि.लाल, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने निगम की ओर से सचिव राजभाषा विभाग का स्वागत किया तथा निगम में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए लागू की गई विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं पर प्रकाश डाला। सरकार के अतिरिक्त निगम द्वारा कई अन्य प्रोत्साहन योजनाएं शुरू करते समय यह भी ध्यान रखा गया कि जिससे ऐसे कर्मचारियों को अधिक प्रोत्साहन मिल सके, और हिन्दी में काम करने में अधिक रुचि दिखा सकें जिनकी मातृभाषा हिन्दी नहीं है। हिन्दी में डिक्टेशन देने वाले अधिकारियों के लिए एक नई प्रोत्साहन योजना शुरू की गई है।

वरिष्ठ अधिकारियों की कार्यशाला

सचिव श्री शर्मा ने कार्यशाला में मार्गदर्शन करते हुए बताया कि निगम के वरिष्ठ अधिकारियों से वार्तालाप करके वे उनकी दिक्कतों को समझना चाहेंगे। अधिकारियों की व्यक्तिगत दिक्कतों का समाधान करते हुए सचिव महोदय ने राजभाषा अधिनियम तथा अधिकारियों का उसके प्रति दायित्व पर प्रकाश डाला।

कार्यशाला के अन्त में पिछली दो तिमाहियों में सर्वाधिक कार्य हिन्दी में करने वाले क्रय अनुभाग के प्रबंधक श्री शफी अ.शाह को निगम की "चलशील्ड पुरस्कार" योजना के अन्तर्गत "राजभाषा चलशील्ड" सचिव महोदय द्वारा भेंट की गई। इसके साथ ही राजभाषा विभाग द्वारा जारी हिन्दी नोटिंग/ड्राफ्टिंग प्रोत्साहन पुरस्कार योजना के अन्तर्गत वर्ष, 1988-89 के लिए छः कर्मचारियों को नकद पुरस्कार की राशि से पुरस्कृत किया गया।

आकाशवाणी, कलकत्ता

आकाशवाणी केन्द्र, कलकत्ता के प्रवीणता प्राप्त/कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त अधिकारियों/कर्मचारियों के कर्माभ्यास के लिए दिनांक 25 सितम्बर, 1989 से 30 सितम्बर, 1989 के दौरान कार्यशाला आयोजित की गयी, जिसमें केन्द्र के 10 अधिकारी/कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से अभ्यास किया। कार्यशाला समापन समारोह के अवसर पर गृह मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य प्रो एस. राजेश्वरय्या उपस्थित थे। आतिथ्य स्वीकार करते हुए उन्होंने अपने भाषण में "कार्यशाला" की सार्थकता पर दृष्टि डाली व लाभान्वित प्रतिभागियों से काफी अपेक्षाएं रखीं। साथ ही प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र वितरित किए।

धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात् कार्यशाला समापन समारोह संपन्न हुआ।

राउरकेला इस्पात संयंत्र

संयंत्र के भाषा प्रकोष्ठ ने प्रशिक्षण एवं विकास केन्द्र के सहयोग से के.औ.सु.ब. के 21 कार्मिकों के लिए वर्ष के दौरान द्वितीय 10 दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन दिनांक 21 से 31 अगस्त, 1989 तक किया। उक्त 10 दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए के.औ. सु.ब. के कमाण्डेन्ट श्री आर.एन.पाढ़ी ने कहा कि हिन्दी हमारे देश की राष्ट्रभाषा है और कार्यालय के कामकाज में हिन्दी का प्रयोग हमारे लिए एक सांविधिक दायित्व है। इससे पूर्व भाषा प्रकोष्ठ द्वारा के.औ.सु.ब. के कार्यपालकों को छः दिवसीय हिन्दी कार्यशाला में हिन्दी टिप्पण और प्रारूप लेखन का जो प्रशिक्षण दिया गया उससे कार्यालय के कामकाज में हिन्दी के उत्तरोत्तर प्रयोग में काफी वृद्धि हुई है। इस कार्यशाला से भी संभागियों का काफी लाभ होगा, इसकी हमें पूर्ण आशा है।

उक्त 10 दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का समापन समारोह 31 अगस्त, 1989 को सम्पन्न हुआ। के.औ.सु.य. की राउरकेला इकाई के उप महानिरीक्षक, श्री विपिन बिहारी

मिश्र ने कार्मिकों को हिन्दी कार्यशाला से होने वाले लाभ पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने प्रथम तीन स्थान प्राप्त करने वाले श्री त्रिलोक कुमार जगताप, आरक्षक, श्री आर. के. जैन, उप निरीक्षक तथा श्रीमती निवेदिता प्रधान, उप-निरीक्षक/का. को प्रशस्ति पत्र सहित क्रमश: 100 रुपये, 75 रुपये और 50 रुपये प्रोत्साहन पुरस्कार स्वरूप प्रदान किये। अन्य संभागियों को सांत्वना पुरस्कार दिए गए।

पुरस्कार वितरण से पूर्व प्रशिक्षण एवं विकास केन्द्र के अधीक्षक, श्री अमलेन्दु मुखोपाध्याय ने मुख्य अतिथि, श्री बिपिन बिहारी मिश्र, आई.पी.एस. का स्वागत करते हुए कहा कि आज मुझे राष्ट्रभाषा में अपने विचार प्रगट करते हुए बड़ी प्रसन्नता महसूस हो रही है। मैं स्वयं हिन्दी का एक छात्र हूं और मेरा यह सदैव प्रयास रहता है कि मैं हिन्दी में बोलने और लिखने का अभ्यास कर सकूं इसलिए मेरी यह भी इच्छा है कि हिन्दी कार्यशाला में शामिल होकर लाभान्वित होऊं।

भारतीय कपास निगम लिमिटेड
इन्दौर

शाखा कार्यालय, इंदौर में दिनांक 2 सितम्बर, 1989 को खरीद केन्द्रों पर कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिये "हिन्दी-कार्यशाला" आयोजित की गई। इसकी अध्यक्षता श्री सी.एस. तेवतिया, शाखा प्रबंधक ने की। कार्यशाला का संचालन श्री वीरेन्द्र चन्द्र शुक्ल, हिन्दी अनुवादक ने किया।

मुख्य अतिथि श्री तारादत्त जोशी, हिन्दी अधिकारी, बैंक आंफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, इंदौरा का स्वागत पुष्पमाला पहनाकर श्री सी.एस.तेवतिया, शाखा प्रबंधक एवं अध्यक्ष द्वारा किया गया। सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का परिचय मुख्य अतिथि से करवाया गया। तत्पश्चात् हिन्दी अनुवादक श्री शुक्ला ने शाखा कार्यालय, इंदौर में चलने वाली हिन्दी गतिविधियों की जानकारी दी।

मुख्य अतिथि श्री जोशी ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक के भाषायी एकता में हिन्दी के महत्त्व को विस्तार से बताया।

उन्होंने कहा कि अधिकारियों एवं कर्मचारियों का यह कर्त्तव्य बनता है कि जिस प्रकार विभाग के अन्य आदेशों का पालन किया जाता है, उसी तरह से राजभाषा हिन्दी से संबंधित आदेशों का भी पालन करें। इस प्रकार राष्ट्रीय एकता तथा कर्त्तव्य परायणता दोनों का पालन होगा। इंदौर "क" क्षेत्र का राज्य है अतएव उसके अन्तर्गत आने वाले कार्यालयों को अपना 100 प्रतिशत कार्य राजभाषा हिन्दी में ही करना चाहिये।

अंत में श्री रामकुमार, लेखा अधिकारी ने अधिकांश कार्य राजभाषा हिन्दी में करने का आह्वान किया।

आकाशवाणी, लखनऊ

केन्द्र में 21 से 23 अगस्त तक विभिन्न राजभाषा प्रतियोगिताएं आयोजित की गई--जैसे नमूना हस्ताक्षर प्रतियोगिता, निबन्ध प्रतियोगिता, अनुवाद प्रतियोगिता, और वक्तृत्वकला प्रतियोगिता। इनमें सूचना और प्रसारण मंत्रालय के अन्य संबद्ध कार्यालयों ने भी भाग लिया। टिप्पण और प्रारूपण/आलेखन प्रतियोगिता आकाशवाणी कार्यालय के प्रतिभागियों के लिए अलग से आयोजित की गई।

31 अगस्त से 2 सितम्बर 1989 तक हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला का उद्घाटन किया वरिष्ठ पत्रकार एवं सांसद श्री कपिल वर्मा ने। लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. हरेकृष्ण अवस्थी आयोजन के मुख्य अतिथि थे, और हिन्दी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष डा. परिपूर्णानन्द वर्मा ने इस आयोजन की अध्यक्षता की।

श्री कपिल वर्मा ने कहा--"हिन्दी हमारे राष्ट्र के गौरव का प्रतीक है और देश की एकता को बनाए रखने में हिन्दी का बहुत बड़ा स्थान है।"

प्रो. हरेकृष्ण अवस्थी ने अपने उद्बोधन में कहा--"हिन्दी को हमें सिंहद्वार का स्थान देना होगा, लेकिन हम अपने वातायन और गवाक्ष बन्द नहीं कर सकते।"

डा. परिपूर्णानन्द वर्मा ने कहा, "हिन्दी शासन के लिए राजभाषा, देश के लिए राष्ट्रभाषा और प्राचीन भारत की प्रतीक भाषा है।"

कार्यशाला के समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए मगध विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति डा. कुंवर चन्द्र प्रकाश सिंह ने कहा--"हिन्दी वह कल्पवृक्ष है, जो राष्ट्रीय चेतना की जड़ों को अमृत से सींचता है। हिन्दी चिरकाल से भारतीय स्वाधीनता चेतना की प्रतीक रही है।

समापन समारोह के विशेष अतिथि उपन्यासकार श्रीयुत श्रीलाल शुक्ल ने कहा--"जिस प्रकार बहुत से सरकारी आदेशों के अनुसार आंप काम करते हैं उसी प्रकार यह एक आदेश है जिसके अनुसार हिन्दी को राजभाषा और अंग्रेजी को सहभाषा मानकर काम करना चाहिए।"

इसी अवसर पर आकाशवाणी के अवकाशप्राप्त उप-महानिदेशक श्री के.के.नैयर ने कहा--"जिनकी मातृभाषा हिन्दी है, उनको एक प्रण लेना चाहिए कि इस साल कम से कम दो अहिन्दी भाषियों के मन में हिन्दी प्रेम जगाएंगे।

राजभाषा पर्व संबंधी आयोजनों के क्रम में 12 सितम्बर, 1989 को आकाशवाणी लखनऊ के सभागार में एक विचारगोष्ठी और पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। विचारगोष्ठी का विषय था--"देश विदेश में हिन्दी।"

सभी आमंत्रित अतिथियों का स्वागत केन्द्र निदेशक श्री मदन मोहन सिन्हा "मनुज" ने किया। मुख्य अतिथि थे

उत्तर प्रदेश विधान परिषद् के सभापति और साहित्यकार श्री जगदीश चन्द्र दीक्षित। श्री दीक्षित ने कहा—"हिन्दी के लिए जिन महान् व्यक्तियों ने कार्य किया उनका तो आज नाम भी पता नहीं है—राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रशोताओं को हम भुला बैठे हैं। इसीलिए आज तक राष्ट्रभाषा का कोई इतिहास नहीं बन सका है।"

लखनऊ विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डा. सूर्य प्रसाद दीक्षित ने कहा—"आज हिन्दी विश्वभाषा की ओर अग्रसर है, चाहे योग के कारण हो या भारत की संस्कृति के प्रति कुतूहल के कारण।"

उ.प्र. हिन्दी संस्थान के कार्यकारी उपाध्यक्ष एवं वरिष्ठ लेखक डा. परिपूर्णानन्द वर्मा ने कहा—"हिन्दी के विषय में दक्षिण से लेकर उत्तर तक सभी एक हैं। हम पहले स्वयं तो हिन्दी के विषय में सोंचे—हम कितना हिन्दी को प्रश्रय दे रहे हैं।"

इस अवसर पर विख्यात उपन्यासकार श्री अमृतलाल नागर ने कहा—"हम खिचड़ी हिन्दी बोलकर अपने आप को दण्ड दे रहे हैं—यह पाप हम नित्य करते हैं। मैं जब हिन्दी बोलता हूं तो जैसे सारी भाषाओं को प्रणाम करता हूं। सबसे बड़ी कला है मानव को मानव बनाना।"

इसके बाद श्री अमृतलाल नागर ने प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र और नकद पुरस्कार दिए।

विजया बैंक, अहमदाबाद

अहमदाबाद प्रभाग में 13वीं हिन्दी कार्यशाला दिनांक 7-8-89 से 9-8-89 तक आयोजित की गई जिसमें 17 कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला का उद्घाटन डा. हरिवंश राय, राजभाषा प्रबंधक, बैंक आफ बड़ौदा, प्रशिक्षण महाविद्यालय, अहमदाबाद ने किया। उन्होंने सहभागियों को प्रेरणा देते हुए कहा कि —"जिस हिन्दी को संविधान ने राजभाषा का सम्मान प्रदान किया है उसके प्रति श्रद्धा, उसमें काम करने की इच्छा और लगन से ही बैंक में हिन्दी का प्रयोग संभव है, हिन्दी कार्याशालाएं सार्थक भी तभी होंगी।" बैंक के कामकाज में हिन्दी का प्रयोग संबंधी समस्त जानकारियां जैसे राजभाषा नीति, बैंकिंग शब्दावली, पत्र प्रारूप लेखन, देवनागरी में तार इत्यादि पर दी गयीं और व्यावहारिक अभ्यास कराये गये। अंत में एक लघु परीक्षा भी ली गई। निम्नलिखित सहभागियों ने पुरस्कार प्राप्त किये :—

प्रथम—श्री अशोक बारोट, माणिकचौक शाखा

द्वितीय—श्रीमती परवीन मेहता, नवरंगपुरा शाखा

तृतीय—श्री अशोक अंधारिया, मणिनगर शाखा

"केवल संकल्प से कुछ नहीं होगा, हिन्दी में काम करना ही होगा।"

—एस. लक्ष्मीकांत हेगड़े

दिनांक 9-8-89 को समापन कार्यक्रम प्रभागीय प्रबंधक श्री एस. लक्ष्मीकांत हेगड़े की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार और सभी सहभागियों को प्रशस्तिपत्र प्रदान करते हुए श्री हेगड़े ने कहा कि "केवल संकल्प से कुछ नहीं होगा, हिन्दी में काम करना ही होगा। यदि हमारे कर्मचारी हिन्दी में काम करने लगे तो शाखा में बहुत सारा काम हिन्दी में हो सकता है।"

अहमदाबाद में 14वीं हिन्दी कार्यशाला 10 अगस्त से 12 अगस्त 1989 तक अधिकारियों के लिए आयोजित की गई। कार्यशाला में 15 अधिकारी सम्मिलित हुए। दीप प्रज्वलित करके उद्घाटन करते हुए प्रभागीय प्रबंधक श्री हेगड़े ने सहभागियों से आग्रह किया कि "अधिकारी होने के नाते आपको खुद भी हिन्दी में काम करना है और स्टाफ से भी हिन्दी में काम लेना है। कार्यशाला से लौटने के बाद आप बैंक का ज्यादा से ज्यादा काम हिन्दी में करें तथा स्टाफ से करवाएं। हिन्दी कार्यशाला तभी सार्थक होगी।"

"अधिकारी होने के नाते आपको खुद भी हिन्दी में काम करना है और स्टाफ से भी हिन्दी में काम लेना है।"

—एस. लक्ष्मीकांत हेगड़े

तीन दिन की इस कार्यशाला में हिन्दी के प्रयोग से संबंधित सारी जानकारियां जैसे—राजभाषा नीति, बैंकिंग शब्दावली, पत्र प्रारूप लेखन, देवनागरी में तार आदि विषयों पर विस्तार से दी गयीं और विविध प्रकार के ऐसे व्यावहारिक अभ्यास कराये गये कि वे बैंक के काम काज में हिन्दी का प्रयोग आसानी से कर सकें।

कार्यशाला में एक लघु परीक्षा भी ली गई जिसमें निम्नलिखित अधिकारी पुरस्कार योग्य माने गये—

प्रथम—श्री शंकरलाल कटारा—कैम्बे शाखा

द्वितीय—श्री राजन एच. बुच—पोरबंदर शाखा

तृतीय—श्री एम. निरंजन राव—जामनगर शाखा

12 अगस्त को समापन कार्यक्रम के अतिथि विशेष थे, गुजराती तथा हिन्दी के ख्यातिप्राप्त कवि श्री चीनू भाई मोदी। सहभागियों को उन्होंने सुझाया कि "हिन्दी भाषा को और अच्छी तरह से जानने के लिए आपको उसके साहित्य से लगाव रखना चाहिए। उसे पढ़ते रहना चाहिए क्योंकि किसी भी भाषा को जानने सीखने के लिए अनिवार्य है—उसके साहित्य से लगाव रखना। बिना साहित्य के भाषा नहीं आती, भाषा सीख लेने पर भी उसमें सरसता नहीं आती।"

राजभाषा अधिकारी श्री भुवनचन्द्र जोशी द्वारा आभार ज्ञापन के साथ ही कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

बैंक ऑफ इंडिया

क्षेत्रीय कार्यालय : जयपुर क्षेत्र

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति जयपुर के तत्वावधान में बैंक आफ इंडिया द्वारा विभिन्न बैंकों के वरिष्ठ प्रबन्धकों के लिए 20-9-89 को आयोजित विशेष हिन्दी कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए नगर राजभाषा समिति के अध्यक्ष, बड़ौदा बैंक के उपमहाप्रबन्धक श्री रसिकभाई म. देसाई ने बैंक के अधिकारियों से अपील की कि बैंकों का भविष्य गांवों में है तथा राजस्थान की भाषा हिन्दी ही है. इसलिए सरकार की राजभाषा नीति का लाभ उठाकर, हमें बैंक व्यापार को बढ़ाने क लिए तथा ग्राहकों के साथ आत्मीयता स्थापित करने के लिए हिन्दी का ही प्रयोग करना चाहिए । उन्होंने कहा कि यदि जयपर स्थित बैंकों के नियंत्रक कार्यालयों में हिन्दी का प्रयोग बढ़ता है, तो पूरे राजस्थान की शाखाओं में अपने आप काम बढ़ेगा।

वरिष्ठ प्रबन्धकों के लिए विशेष हिन्दी कार्यशाला

विशिष्ट अतिथि आयकर आयुक्त तथा हिन्दी के प्रसिद्ध कवि श्री ओंकार नाथ त्रिपाठी ने कहा कि हिन्दी में भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों को अपनाकर हमें भाषा को धाराप्रवाह बनाना होगा ।

स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर के महा-प्रबन्धक श्री कृष्ण लाल मगन ने कहा कि हमें हिन्दी के प्रचार के साथ-साथ अपना दैनिक कार्य हिन्दी में करना चाहिए ।

बैंक आफ इंडिया के क्षेत्रीय प्रबन्धक श्री ए. कृष्णन ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में सभी प्रतिभागियों को कहा कि इस कार्यशाला का लाभ उठाकर हमें विभिन्न बैंकों में हिन्दी प्रयोग के क्षेत्र में जो काम हो रहा है उसकी जानकारी हासिल करनी चाहिए । भाषा निदेशक श्री कलानाथ शास्त्री, बड़ौदा बैंक के वरिष्ठ प्रबंधक श्री डी. एम. जैन, राजभाषा प्रबन्धक, श्री उमाकांत स्वामी, राजभाषा अधिकारी, श्रीमती विजया श्रीवास्तव, रिजर्व बैंक के राजभाषा अधिकारी, श्री ज्ञान प्रकाश शर्मा एवं श्री राजेन्द्र प्रसाद ने प्रतिभागियों को संबोधित किया एवं अलग-अलग विषयों पर कक्षाएं लीं ।

बैंक ऑफ बड़ौदा,

अंचल कार्यालय, नई दिल्ली

उत्तरी अंचल की ओर से 18–20 सितम्बर, 1989 के दौरान क्लर्क श्रेणी के कर्मचारियों के लिए एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया । कार्यशाला के प्रारंभ में अंचल के उप-महाप्रबंधक श्री एन. एस. खन्ना ने राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) के निदेशक (नीति) श्री सर्वेश्वर झा का स्वागत किया ।

उद्घाटन भाषण में श्री झा ने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि राजभाषा के प्रयोग की दिशा में बैंकों ने काफी अच्छा कार्य किया है । किन्तु उनका मत था कि जन-सामान्य से सीधे जुड़े होने के कारण बैंकों द्वारा इस दिशा में और अधिक प्रगति किए जाने की आवश्यकता है । हिन्दी के प्रयोग से संबंधित प्रेरक उदबोधन के साथ ही उन्होंने भारत सरकार की राजभाषा नीति के प्रमुख मुद्दों को भी अत्यन्त सरल एवं सहज शैली में स्पष्ट किया।

तीन दिवसीय इस कार्यशाला के दौरान अलग-अलग विद्वान अधिकारियों द्वारा प्रतिभागियों को बैंक में हिन्दी के प्रयोग की स्थिति, बैंकिंग हिन्दी का स्वरूप, पासबुक, वाउचर आदि हिन्दी में तैयार करने का समुचित अभ्यास कराया गया । प्रतिभागियों के साथ सामुहिक चर्चा का भी आयोजन किया गया जिसमें प्रतिभागियों ने हिन्दी के प्रयोग के मार्ग में आने वाली कठिनाइयों को निःसंकोच बताया । प्रतिभागियों के विचार जानने के लिए प्रतिभागियों की ओर से "फीड बैंक" भी प्राप्त की गई । कार्यशाला के अंत में एक लिखित परीक्षा भी आयोजित की गई ।

राष्ट्रीय विमानपत्तन प्राधिकरण, नई दिल्ली

26 जून, 1989 को प्राधिकरण के अध्यक्ष, एयर मार्शल चं.शा. राजे, प.वि.से. पदक, अ.वि.स. पदक ने कार्यशाला का उद्घाटन किया । इस अवसर पर नागर विमानन हिन्दी सलाहकार समिति तथा केन्द्रीय हिन्दी समिति के सदस्य और केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् के परामर्शदाता श्री पन्ना लाल शर्मा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे । सदस्य (कार्मिक एवं प्रशासन) ने अध्यक्ष महोदय एवं मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए बताया कि मुख्यालय द्वारा आयोजित यह दूसरी हिन्दी कार्यशाला है। अध्यक्ष महोदय ने इस पर प्रसन्नता जाहिर की और कहा कि मुख्यालय में जिस उत्साह, निष्ठा और लगन से हिन्दी में काम होगा, उसका प्रभाव क्षेत्रीय कार्यालयों पर भी पड़ेगा। उन्होंने कहा कि यद्यपि प्राधिकरण एक तकनीकी कार्यालय है, इसके बावजूद हमारी प्रगति सन्तोषजनक है। परन्तु हमें इस पर ही सन्तोष नहीं करना है । उन्होंने कहा कि जो अधिकारी कार्यशाला में भाग ले रहे हैं, वे कार्यशाला समाप्त होने के बाद अवश्य अपने काम में हिन्दी का प्रयोग करें तथा अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को भी हिन्दी में काम करने के लिए प्रेरित करें।

मुख्य अतिथि ने कहा कि हिन्दी में काम करना कठिन नहीं है बशर्ते कि अंग्रेजी में काम करने की मानसिकता बदल जाए । उन्होंने कहा कि कार्यालयों में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए यह आवश्यक है कि इसके लिए वातावरण पैदा किया जाए और हिन्दी कार्यशालाएं इस दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं । उन्होंने कहा कि प्रशिक्षित कर्मचारियों का यह नैतिक दायित्व हो जाता है कि वे प्रशिक्षण के बाद अपना काम हिन्दी में करें । प्रारम्भ में सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री ग्रस्माना ने बताया कि

प्राधिकरण अपने विभिन्न कार्यालयों में अब तक सोलह हिन्दी कार्यशालाएं लगा चुका है जिनमें लगभग 500 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

30 जन, 1989 को कार्यशाला सम्पन्न हुई। समापन समारोह की अध्यक्षता सदस्य (कार्मिक एवं प्रशासन) ब्रिगेडिगर बी.एस. जोशी ने की। राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) के उप निदेशक (कार्यान्वयन), श्री पी. एन. जोशी इस अवसर पर विशेष आमंत्रित के रूप में उपस्थित थे।

विशाखापट्टनम इस्पात परियोजना

हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए इस परियोजना में हिन्दी का सामान्य ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों को दि. 18 से 20-9-89 तक तीन दिन के लिए हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई। 18-9-89 को कार्यशाला के उद्घाटन समारोह में परियोजना के हिन्दी अधिकारी डा. कृष्णबाबू ने प्रशिक्षणार्थियों को हिन्दी में अधिकाधिक काम करने के लिए प्रोत्साहित किया।

तीन दिनों के लिए आयोजित इस कार्यशाला में प्रशिक्षणार्थियों को हिन्दी की प्रशासनिक, वित्तीय, वाणिज्य संबंधी शब्दावली के साथ ही इस्पात उद्योग संबंधी तकनीकी शब्दावली के हिन्दी रूपान्तर भी दिए गए। इसके अलावा हिन्दी में टिप्पण तथा प्रारूप लेखन के विविध प्रकार, अनुवाद कला का सामान्य ज्ञान, सरकार की राजभाषा नीति और विविध पत्रों के मसौदे बनाने के तरीके आदि विषयों पर भी जानकारी दी गयी।

कार्यशाला में भाग लेने वाले 27 प्रशिक्षणार्थियों को अंतिम दिन श्री पी.वी. राव, महा प्रबन्धक (न.प्र.) द्वारा प्रमाणपत्र और अंग्रेजी-हिन्दी कोश वितरित किए गए।

पंजाब नेशनल बैंक, नई दिल्ली

पंजाब नेशनल बैंक के अंग्रेजी टाइपिस्टों/स्टेनोग्राफरों को जल्द से जल्द हिन्दी टाइप/शार्टहैंड सिखाने के उद्देश्य से कार्मिक प्रभाग (राजभाषा कक्ष) ने एक अनूठा प्रयोग किया। इसके अन्तर्गत दिनांक 21-6-88 को महाप्रबंधक श्री जी. डी. गोलानी के कर कमलों से भीखाजी कामा प्लेस स्थित बैंक के प्रधान कार्यालय भवन में एक निजी हिन्दी टंकण/आशुलिपि प्रशिक्षण केन्द्र का उद्घाटन हुआ। और इसी के साथ 20 कर्मचारियों को हिन्दी टंकण का प्रशिक्षण देने का कार्य आरम्भ हो गया।

आरम्भ में केवल 20 कर्मचारियों को ही प्रशिक्षण देने की योजना थी मगर इस प्रयोग की आरम्भिक सफलता को देखते हुए कुछ ही दिन बाद अर्थात् 17-9-88 को 18 कर्मचारियों का दूसरा बैच भी शुरू कर दिया गया। इस प्रकार जनवरी, 1989 में पहले सत्र की समाप्ति तक 38 प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे कर्मचारियों में से 36 कर्मचारियों ने राजभाषा विभाग द्वारा संचालित परीक्षा उत्तीर्ण की।

उल्लेखनीय है कि हमारे ये कर्मचारी न केवल सर्वोत्तम अंक लाने में सफल रहे बल्कि बैंक द्वारा निर्धारित 25 शब्द प्रति मिनट की गति प्राप्त करने के प्रयास से इनकी गति 50 शब्द प्रति मिनट की गति सीमा तक पहुंच गई।

हिन्दी टंकण/आशुलिपि प्रशिक्षण : एक सफल प्रयोग

पहले सत्र के दो बैचों के आशातीत परिणामों से प्रभावित होकर इसके अगले सत्र का शुभारम्भ भी बैंक के महाप्रबंधक श्री जी. डी. गोलानी ने 17-4-89 को किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि हमारा बैंक कई क्षेत्रों में आगे निकल चुका है, चाहे वह जमाराशियों का क्षेत्र हो अथवा शाखाओं की संख्या का। उन्होंने आशा व्यक्त की कि हिन्दी टंकण/आशुलिपि सिखाने के इस नूतन प्रयास से हमारे बैंक में हिन्दी में काम करने में और तेजी आएगी।

इस अवसर पर उप-महाप्रबंधक (कार्मिक) तथा बैंक के अनेक वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे। उप महाप्रबंधक (कार्मिक) श्री वी. एस. वासन ने बताया कि हिन्दी हमारी राजभाषा है और इस भाषा का प्रयोग हमें अपने बैंक के दैनिक काम-काज में करना है। इतना ही नहीं सरकार द्वारा बनाए जाने वाले वार्षिक कार्यक्रम में अंग्रेजी टाइपिस्ट/स्टेनोग्राफरों को हिन्दी टाइप/शार्टहैंड का प्रशिक्षण देना अनिवार्य कर दिया गया है। इसीलिए अंग्रेजी टाइपिस्ट/स्टेनोग्राफरों को हिन्दी टाइप/शार्टहैंड जल्द से जल्द सिखाने के लिए बैंक का निजी प्रशिक्षण केन्द्र खोला गया है।

केनरा बैंक, दिल्ली अंचल कार्यालय

प्रबन्धकों/अधिकारियों के लिए बेसिक हिन्दी पाठ्यक्रम

अन्य अंचलों से आये प्रबंधकों/अधिकारियों (मुख्यतः जिन्हें हिन्दी नहीं आती) के लिए एक तीन दिवसीय बेसिक हिन्दी परिचय पाठ्यक्रम का आयोजन अंचल कार्यालय द्वारा क्षेत्रीय स्टाफ प्रशिक्षण कालेज नई दिल्ली में दिनांक 24 से 26 जुलाई, 1989 तक किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन गृह मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली के संयुक्त सचिव श्री शंभु दयाल द्वारा दीप प्रज्जवलित कर दिया गया। श्री दयाल ने प्रतिभागियों को राजभाषा अधिनियम/नियमों में किए गए प्रावधानों के प्रति सजग रहने का अनुरोध किया तथा उनसे अपेक्षा की कि वे इस संबंध में कोई उल्लंघन न होने दें। उन्होंने कम्प्यूटर, टाइपराइटर आदि जैसे इलैक्ट्रक/इलैक्ट्रिानिक उपकरणों में हिन्दी के प्रयोग पर जोर दिया।

उप महा प्रबंधक श्री एन.आर. चिदंबरम ने समारोह की अध्यक्षता की तथा आशा व्यक्त की कि हमारे बैंक में अपने प्रकार का यह प्रथम कार्यक्रम प्रतिभागियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा और उन्हें अपना कार्य प्रभावी रूप से पूरा करने में सहायक होगा। सहायक महाप्रबंधक श्री एच.के. केशवमूर्ति ने प्रतिभागियों से अनुरोध किया कि वे इस पाठ्यक्रम से हिन्दी भाषा का मूल ज्ञान प्राप्त करने तथा इसके कुछ सूक्ष्म भेद जानने के लिए करें। पाठ्यक्रम की शुरूआत, "अक्षर ज्ञान" विषय पर श्री एम.पी. गोपालकृष्णन के व्याख्यापन से हुई, जिसके बाद श्री अशोक कुमार सेठी, अधिकारी श्रीमती जीवनलता जैन, प्रबंधक के व्याख्यान क्रमशः "उच्चारण अभ्यास" तथा "आसान कार्य अभ्यास" विषय पर हुए। इसके अतिरिक्त तीन निम्नलिखित सत्र भी फैकल्टी सदस्यों द्वारा लिये गए।

समापन समारोह के अवसर पर गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के निदेशक डॉ. महेश चन्द गुप्त ने प्रतिभागियों से राष्ट्रीय हित में हिन्दी सीखने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि यह भाषा सीखना बहुत आसान है। विंग कमांडर तथा रक्षा मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य श्री सतेंद्र सिंह यादव ने भी अपने विचार व्यक्त किए। समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए दिल्ली मंडल कार्यालय के मंडल प्रबंधक श्री बी.आर. नायक ने हिंदी बोलने की अपनी विशिष्ट शैली से श्रोताओं को प्रभावित किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि प्रतिभागियों को हिन्दी बोलने में संकोच नहीं करना चाहिए, भले ही बोलते समय कुछ गलतियां हो जाएं। पाठ्यक्रम में सफलतापूर्वक भाग लेने के लिए श्री नायक ने प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र बांटे।

बैंको के मुख्य प्रबंधकों के लिए राजभाषा संगोष्ठी

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति जयपुर ने 7 अक्तूबर, 1989 को विभिन्न सदस्य-बैंकों के मुख्य प्रबंधक श्रेणी के उच्चाधिकारियों के लिए राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया।

मुख्य अतिथि राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, भोपाल के सहायक निदेशक श्री डी. कृष्णपणिक्कर ने इस संगोष्ठी के आयोजन के लिए बैंक आफ बड़ौदा को बधाई दी और कहा कि हमें कार्यशालाओं में व्यावहारिक अभ्यास पर अधिक बल दिया जाना चाहिए, राजभाषा नीति का संपूर्ण कार्यान्वयन तभी संभव होगा जब बैंकों के उच्चाधिकारी हिन्दी के प्रयोग के बारे में खुलकर विचारों का आदान-प्रदान करेंगे तथा बैंकिंग उद्योग की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करेंगे।

अतिथि विशेष भारतीय स्टेट बैंक जयपुर के उप महाप्रबंधक श्री दामोदर गुप्ता ने बताया कि हिन्दी प्रयोग के क्षेत्र में राजस्थान काफी आगे हैं, बैंकों में न केवल ग्राहकों के साथ बल्कि आंतरिक कार्य भी सहज रूप से हिन्दी में हो रहा है।

अध्यक्षीय संबोधन में बैंक ऑफ बड़ौदा के उप महाप्रबंधक एवं बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री रसिकभाई देसाई ने कहा कि बैंकिंग के अन्य कार्यों की तरह हिन्दी प्रयोग में भी कार्यपालक की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है, उसके व्यक्तित्व की छाप पूरे प्रशासन पर पड़ती है।

बैंकिंग के अन्य कार्यों की तरह हिन्दी प्रयोग में भी कार्यपालक की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। कार्यपालकों द्वारा की जाने वाली पहल कार्यालय में हिन्दी प्रयोग को स्थायी बना देती है।

—रसिक भाई देसाई

प्रारम्भ में बैंक ऑफ बड़ौदा के वरिष्ठ प्रबन्धक तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य-सचिव श्री डी. एम. जैन ने, सभी का स्वागत किया। इस संगोष्ठी में "राजभाषा के कार्यान्वयन में कार्यपालकों की भूमिका" विषय का प्रारम्भ, राजभाषा विभाग के सहायक निदेशक श्री डी. कृष्णपणिक्कर ने किया, "राजभाषा नीति की मुख्य बातें" विषय को प्रस्तुत किया बैंक आफ बड़ौदा के मुख्य प्रबन्धक (राजभाषा) डॉ. सोहन शर्मा ने तथा "कार्यपालकों द्वारा हिन्दी प्रयोग में पेश आने वाली कठिनाइयां तथा उनका निवारण" विषय को भारतीय रिज़र्व बैंक के राजभाषा अधिकारी श्री ज्ञान प्रकाश शर्मा ने प्रस्तुत किया।

राजभाषा संगोष्ठी का संचालन बैंक आफ बड़ौदा के प्रबन्धक (राजभाषा) श्री उमाकांत स्वामी ने किया। इस राजभाषा संगोष्ठी में जयपुर स्थित बैंकों के 22 मुख्य प्रबन्धकों/क्षेत्रीय प्रबन्धकों ने भाग लिया।

हिन्दी के प्रचार-प्रसार में स्वयंसेवी संस्थाओं की भूमिका

हिन्दी के विकास में स्वयंसेवी संस्थाओं के योगदान के बारे में चर्चा करते हुए सुप्रसिद्ध पत्रकार एवं कवि श्री गोपाल प्रसाद व्यास ने कहा कि देश के विभिन्न क्षेत्रों में हिन्दी के प्रचार और प्रसार के कार्य में जुटी हुई स्वयंसेवी संस्थाओं ने जन-जन के मन में हिन्दी के प्रति आस्था जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह कार्य स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले हिन्दी को अखिल भारतीय रूप से अपनाये जाने के लिए जितनी लगन के साथ किया गया, उससे भी अधिक परिश्रम करके हिन्दी को बढ़ावा दिया जाना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। श्री गोपाल प्रसाद व्यास हिन्दी अकादमी, दिल्ली द्वारा हिन्दी पखवाड़े के अन्तर्गत आयोजत संगोष्ठी में बोल रहे थे।

इस संगोष्ठी में विशिष्ट रूप से आमंत्रित भारत सरकार के राजभाषा विभाग में निदेशक डॉ. महेश चन्द्र गुप्त ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि देश को हर दिशा में आगे बढ़ाने में स्वयंसेवी संस्थाओं की बड़ी भूमिका रही है और भाषा के क्षेत्र में भी उन्हें इस महत्वपूर्ण दायित्व का जिम्मेदारी के साथ निर्वाह करना है। आज हिन्दी के प्रचार और प्रसार में लगी सरकारी संस्थाओं और स्वयंसेवी संस्थाओं के बीच तालमेल की अधिक आवश्यकता है जिससे केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, राजभाषा विभाग तथा अनेक अकादमियों आदि के द्वारा किये गये कार्यो का लाभ स्वयंसेवी संस्थाओं के सहयोग से जन-मानस तक पहुंचे।

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के प्रोफेसर मा. गा. चतुर्वेदी ने भी हिन्दी के विकास एवं संवर्द्धन के लिए सरकार और जनता के कार्यक्रमों और योजनाओं में समन्वय की बात पर बल दिया।

हिन्दी अकादमी के सचिव डॉ. नारायणदत्त पालीवाल ने बताया कि हिन्दी के प्रचार और प्रसार में दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, नागरी प्रचारिणी सभा, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, नागरी लिपि परिषद, गांधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा आदि ने स्वतंत्रता से पूर्व हिन्दी की अलख जगाकर इसे देश में भावनात्मक रूप से एक सूत्र में बांधने वाली भाषा का स्वरूप प्रदान किया और स्वतंत्रता के बाद भी इन संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका बनी हुई है।

इस अवसर पर 'संगीतायन' की ओर से राष्ट्रीय गीत भी प्रस्तुत किये गये। अन्त में कार्यक्रम अधिकारी श्री नरेन्द्र गुप्त ने सभी अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया। संगोष्ठी विचार-विमर्श में भाग लेने वालों में प्रमख रूप से प्रो. विजयेन्द्र स्नातक, उल्लेखनीय श्री शैलश मटियानी, श्री राजमणि तिवारी तथा हरिबाबू कंसल के नाम हैं।

अहिन्दी भाषी अधिकारियों के लिए विशेष हिन्दी प्रशिक्षण

बैंक ऑफ बड़ौदा (अंचल कार्यालय) जयपुर ने 12 से 24 जून, 1989 तक अहिन्दी भाषा क्षेत्र से राजस्थान अंचल में स्थानान्तरित होकर आए अधिकारियों को बैंकिंग हिन्दी का प्रशिक्षण देने के लिए दो सप्ताह का विशेष हिन्दी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। इसमें कुल 18 अधिकारियों ने भाग लिया।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन राजस्थान विद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ. हीरालाल माहेश्वरी ने किया। उन्होंने कहा कि बैंक द्वारा हिन्दी प्रयोग से, बैंकों का लाभ सही मायने में ग्राहकों तक पहुंचेगा।

अध्यक्षीय भाषण में अंचल के उप महाप्रबन्धक श्री रसिकभाई देसाई ने कहा कि हिन्दी भाषी प्रदेश में बैंकों की सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए हिन्दी प्रयोग की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि अहिन्दी भाषी क्षेत्र के लोग भी बोलचाल की हिन्दी की जानकारी ल सकते हैं। अंचल

कार्यालय के वरिष्ठ प्रबन्धक श्री डी. एम. जैन ने कहा कि राजस्थान की सभी शाखाएं हिन्दी प्रयोग के लिए अधिसूचित की गई है। प्रशासनिक कार्यालयों को सभी सुविधाएं दी जा रही है। उन्होंने प्रतिभागियों को कहा कि शाखा स्तर पर उन्हें हिन्दी प्रयोग के लिए पूरी सहायता दी जायेगी।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंत में प्रतिभागियों ने इस प्रशिक्षण को व्यावहारिक एवं बैंकिंग कार्य के लिए काफी उपयोगी बताया।

हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं में शोध प्रबन्ध

मानव संसाधन विकास मंत्रालय की हिंदी शिक्षा समिति तथा विश्वविद्यालय अनुदान समिति ने हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं में लिखी गई प्रोजेक्ट रिपोर्टों, शोध प्रबंधों की प्रस्तुति पर पुनर्विचार के बाद निर्णय दिया है कि भविष्य में हिंदी तथा भारतीय भाषाओं में प्रस्तुत शोध प्रबंधों के साथ उनके अंग्रेजी अनुवाद देने की अब आवश्यकता नहीं है।

प्रगा टूल्स लि. सिकन्दराबाद

'ग' क्षेत्र स्थित इस संस्थान में कार्यरत कर्मचारियों को हिंदी में कामकाज में मदद देने की दृष्टि से सहायक साहित्य के रूप में दो पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं। ऐसे प्रकाशन स्वागत योग्य हैं।

कार्मिक लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय, (पेंशन तथा लोक शिकायत विभाग) ने निम्नलिखित प्रकाशन अंग्रेजी/हिन्दी द्विभाषिक रूप में प्रकाशित किए हैं। ये प्रकाशन समूल्य हैं।

(1) जनरल प्रोविडेंट फण्ड (सैन्ट्रल सर्विसेज) रूल्स, 1960; एण्ड

(सामान्य भविष्य निधि (केन्द्रीय सेवाएं) नियम 1960

तथा

(2) कन्ट्रीब्यूट्री प्रोविडेंट फण्ड रूल्स (इंडिया), 1962, अंशदायी भविष्यनिधि नियम (भारत) 1962

प्रेरणा-पुंज

राष्ट्र एवं राजभाषा के लिए समर्पित व्यक्तित्व

श्री रमानाथ नायक

"मुझे जब भी मौका मिलता है तो मैं सभी साथियों से यही कहता हूं कि हिन्दी सीखने में ही हमारी और देश की भलाई है। हमें इस प्रयत्न में कोई कोर-कसर नहीं रखनी चाहिए। मुझे खुशी है कि लोगों पर इसका काफी गहरा असर पड़ता है। एक राष्ट्र व एक राष्ट्रभाषा के सिद्धांत के तहत हिन्दी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो पूरे देश में सम्पर्क भाषा का कार्य कर सकती है।"—ये शब्द हैं हिन्दीतर भाषी श्री रमानाथ नायक, जो केनरा बैंक, दिल्ली मंडल के मंडल प्रबन्धक हैं।

श्री नायक का जन्म कर्नाटक राज्य के मंगलूर नगर में 1937 में हुआ। उनकी मातृभाषा तुलु है। बी. ए. (ऑनर्स) एल. एल. बी. की परीक्षाएं अंग्रेजी माध्यम से पास की हैं। राजभाषा हिन्दी के प्रति सहज स्नेह के कारण, उन्होंने दक्षिण हिन्दी प्रचार सभा द्वारा आयोजित कक्षाओं में भाग लेकर हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त की। बैंक में नौकरी लगने के बाद अपने जन्म स्थान, मंगलूर में वर्ष 1953 में म्युनिसिपल स्कूल में कुछ दोस्तों को साथ लेकर सायं-काल छः से रात्रि नौ बजे तक उन लोगों को हिन्दी पढ़ाना शुरु किया जिनके पास पेट पालने के लिए सीमित साधन थे।

स्थानांतरण के बाद वर्ष 1959 में बम्बई में हिन्दी का प्रचार-प्रसार कार्य आरम्भ किया तथा कुछ मित्रों के साथ मिलकर विक्टोरिया टर्मिनल रेलवे स्टेशन के पास वार्डा न्यू स्कूल में प्रत्येक रविवार को सुबह 8 बजे से दोपहर 12 बजे तक निःशुल्क हिन्दी कक्षाएं चलाई, जो नौकरी की तलाश में बम्बई आते थे तथा जीवन यापन के लिए होटल व अन्य दफ्तरों मे छोटे मोटे काम करते

थे। श्री नायक के अनुसार —"इन कक्षाओं में लगातार 7 वर्षों तक लोग हिन्दी पढ़ते रहे और धीरे-धीरे विद्यार्थियों की संख्या 600 तक पहुंच गई थी। इन कक्षाओं को चलाने का सारा खर्च हम लोग स्वयं अपने वेतन से करते थे क्योंकि यह कार्य देश सेवा का कार्य था और इस दिशा में हम संकल्परत थे।"

श्री नायक बैंकिंग सेवा में निरन्तर अपने सहयोगियों को हिन्दी कार्यान्वियन की प्रेरणा देते हैं। वर्ष 1984 से केनरा बैंक में मंडल प्रबन्धक के रूप में कार्य करते हुए कलकत्ता, बम्बई, जयपुर में हिन्दी कार्यान्वियन समितियों के अध्यक्ष पद को सुशोभित करते र हैं। बैंकिंग में हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु उन्होंने अपने कार्यालय व दिल्ली की शाखाओं में कार्यरत कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा को विकसित करने हेतु "इन्द्रप्रस्थ" त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया। हिन्दी में काम करने की झिझक को दूर करने के लिए उन्होंने कर्मचारियों के लिए अपने निजी खर्च से भाषण प्रतियोगिता का आयोजन करवाया। राजभाषा विभाग द्वारा समय-समय पर जारी 'आदेशों-अनदेशों' के अनुसार केनरा बैंक में अपने अधीन शाखाओं/कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए प्रयासरत हैं। वे विभिन्न संस्थाओं तथा केनरा बैंक की कार्यशालाओं में प्रेरणादायक भाषण देते रहते हैं।

वे केवल दूसरों को हिन्दी में कार्य करने की प्रेरणा ही नहीं देते हैं, बल्कि स्वयं हिन्दी में कार्य करते हैं। प्रस्तुत हैं कुछेक नमूने :—

CANARA BANK

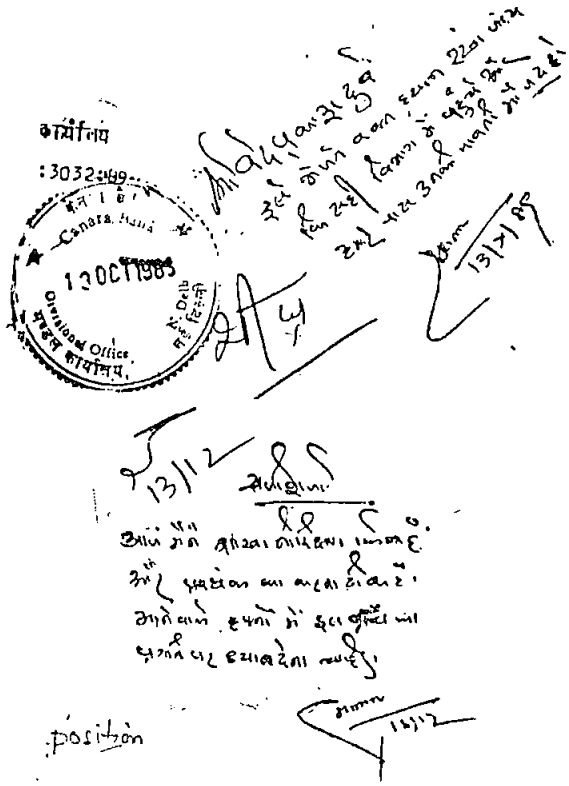

..., every one in Delhi Division will cultivate the habit of ...e at the Counters. It is difficult. But once we practice ...work place there is no substitute to the pleasure derived out

...ovember, 1989

B R NAYAK

पुरस्कार योजना

भारत सरकार

वाणिज्य मंत्रालय

नई दिल्ली, 27 सितम्बर, 1989

सूचना

वाणिज्य मंत्रालय में भारत सरकार ने मंत्रालय के कार्यक्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले विषयों पर हिन्दी में मौलिक पुस्तकें लिखने वाले लेखकों को पुरस्कार प्रदान करने के लिए एक योजना प्रारम्भ करने का निश्चय किया है। योजना का नाम "वाणिज्य ग्रन्थ पुरस्कार योजना" है और इसकी मुख्य बातें निम्नलिखित हैं:—

1. वाणिज्य मंत्रालय के कार्यक्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले विषयों पर हिन्दी में लिखी गई श्रेष्ठ मूल पुस्तकों के लिए दो वर्ष में एक बार दस-दस हजार के पांच नकद पुरस्कार दिए जाएंगे।

2. इस योजना का उद्देश्य वाणिज्य मंत्रालय के कार्य-क्षेत्र में आने वाले विषयों पर हिन्दी में मौलिक पुस्तकें लिखने के लिए हिन्दी के लेखकों को प्रोत्साहित करना है।

केवल उच्च स्तर की मूल पुस्तकों पर ही, चाहे वे हस्तलिपि में हो अथवा प्रकाशित रूप में, पुरस्कार प्रदान करने के लिए विचार किया जाएगा।

पुरस्कार योजना में सभी हिन्दी लेखक भाग ले सकते हैं। इस योजना में बहु लेखकों वाली पुस्तकें भी शामिल की जाएंगी। प्रकाशित पुस्तकों और हस्तलिपियों दोनों को ही स्वीकार किया जाएगा बशर्ते कि वे मूल रूप में लिखी गई हों और उनसे किसी अन्य व्यक्ति के कापी राइट का उल्लंघन न होता हो।

विस्तृत जानकारी के लिए, कृपया, उप-निदेशक (राज-भाषा), वाणिज्य मंत्रालय, नई दिल्ली से सम्पर्क करें।

बैंक ऑफ इंडिया

क्षेत्रीय कार्यालय : जयपुर

दिनांक 6-10-89 को क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर द्वारा पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि थे श्री डी. कृष्ण, पणिकर, सहायक निदेशक, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय (भोपाल प्रभाग)। अपने उद्‌बोधन भाषण में उन्होंने पुरजोर शब्दों में कहा कि हिन्दी के प्रयोग के लिए हम वचनबद्ध हैं एवं हमें अपना सारा कार्य हिन्दी में करना चाहिए। श्री पणिकर ने सभी स्टाफ सदस्यों से संकल्प लिया कि अब के बाद वे अपना अधिकाधिक कार्य हिन्दी में करेंगे। उन्होंने घोषणा की कि क्षेत्रीय कार्यालय को अपना सम्पूर्ण कार्य हिन्दी में करने के लिए चयनित किया जाए। आयोजन की अध्यक्षता करते हुए उप क्षेत्रीय प्रबंधक श्री प्रवीण चावला ने आश्वासन दिया कि वह आन्तरिक कामकाज एवं पत्राचार हिन्दी में ही करेंगे एवं करवाऐंगे। श्री पणिकर द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय में हिन्दी में किए जा रहे कार्य पर संतोष व्यक्त किया गया।

संसदीय कार्य मंत्रालय

संसदीय कार्य मंत्रालय में 14 सितम्बर, 1989 से 20 सितम्बर, 1989 तक, 5 कार्य दिवसों का हिन्दी सप्ताह मनाया गया। हिन्दी सप्ताह का उद्‌घाटन श्री हर किशन लाल भगत, तत्कालीन संसदीय कार्य मंत्री ने 14 सितम्बर, 1989 को किया।

श्री भगत ने कहा कि हमारे राष्ट्र निर्माताओं ने बहुत विचार-विमर्श के पश्चात् 14 सितम्बर, 1989 को यह निर्णय लिया था कि "हिन्दी" संघ की राजभाषा होगी और उसकी लिपि देवनागरी होगी। इसी कारण आज हिन्दी दिवस मनाया जाता है। उन्होंने सभी अधिकारियों से अपील की कि मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारीगण अपने अधीन कर्मचारियों को ज्यादा से ज्यादा हिन्दी में काम करने के लिए प्रोत्साहित करें और उनका मार्गदर्शन करें।

मंत्री जी ने मंत्रालय के छः कर्मचारियों को हिन्दी में कार्य करने के लिए नकद पुरस्कार प्रदान किए:

श्री मोहन चन्द्र भगत, प्रथम पुरस्कार (500.00 रुपये)
श्री जसबीर सिंह कोचर, द्वितीय पुरस्कार (300.00 रुपये)
श्री सतीश कुमार दुरेजा, द्वितीय पुरस्कार (300.00रु०)
श्रीमती सत्या अरोड़ा, तृतीय पुरस्कार (150.00 रुपये)
श्रीमती मिथलेश कालिया, तृतीय पुरस्कार (150.00 रुपये)
श्री पुरुषोत्तम कुमार, तृतीय पुरस्कार (150.00 रुपये)

···शेष पृष्ठ 138 पर···

3647 HA/89—18

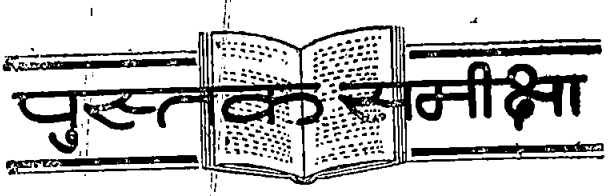

त्रुटियां : विश्लेषण और सुधार

लेखक : डॉ. राजेश कुमार

मूल्य : रु. 125

प्रकाशक : अनुभव प्रकाशन जे. 10–बी, अशोक विहार–I दिल्ली—110052

हिन्दी वाङ्मय में सैद्धांतिक भाषाविज्ञान क्षेत्र में तो गुण और परिमाप दोनों ही मामलों में महत्त्वपूर्ण काम हुआ है, किन्तु व्यावहारिक भाषाविज्ञान के क्षेत्र में अभी बहुत काम होना शेष है। उस दृष्टि से विवेच्य पुस्तक इस कमी को पूरा करती है।

पुस्तक में तीन पहलुओं का सफल समायोजन हुआ है। ये हैं शिक्षा, भाषाविज्ञान और हिन्दी भाषा।

शिक्षा के अंतर्गत औपचारिक शिक्षा के चरित्र को आमने सामने रखकर उनका साम्य-वैषम्य और समांतरता परिपूरकता आदि पर विवरणात्मक और व्याख्यात्मक चर्चा प्रस्तुत की गई है; जो विशेषतः दूरस्थ शिक्षण और उसमें भी खुले शिक्षण को समझने की दृष्टि से लाभकारी है।

भाषा विज्ञान के त्रुटि विश्लेषण क्षेत्र में अभी बहुत कम काम हुआ है। क्या "त्रुटि" जैसी कोई सकल्पना भाषा में होती है? त्रुटियां किन किन कारणों से होती है। भाषा अधिगम में ये बाधक हैं या साधक? ये हेय और त्याज्य होती हैं या सहज और स्वाभाविक। क्या त्रुटि त्रुमुक्त भाषा अध्यापन और अधिगम संभव है? त्रुटियों का विश्लेषण क्या है? भाषा का पाठयक्रम क्या है? क्या भाषा अधिगम में विद्यार्थी इसी पाठयक्रम का अनुसरण करता है या उसका मार्ग अलग होता है? भाषा का अध्यापक सिखाता है या विद्यार्थी इस सिखाता है? अधिगम काल में विद्यार्थी जिस भाषा का व्यवहार करता है, क्या उसमें भी व्यवस्था होती है त्रुटियों का निदान किन-किन उपायों से संभव है? इन और इसी प्रकार के अन्य प्रश्नों के उत्तर खोजने की चेष्टा इस पुस्तक में की गई है, क्योंकि जब तक भाषा अधिगमकर्ता के मनोविज्ञान को नहीं समझा जाएगा, तब तक उसके लिए प्रभावी अधिगम वातावरण बनाना संभव नहीं होगा।

इस पुस्तक में न केवल हिन्दी भाषा की व्यवस्था की पहचान है, अपितु इस बात का प्रयास भी है कि पाठक स्वयं विभिन्न प्रयोगों में से शुद्ध और मानक प्रयोगों को छांट सकने में समर्थ हो जाए। इस दृष्टि से हिन्दी भाषा की क्षमताओं को रूपायित करने वाले और प्रयोक्ताओं को इसकी व्यवस्था समझाने वाले ग्रंथों की कोटि में इसकी गणना हो सकती है। पुस्तक का यह भाग **सरकार और बैंक आदि के कर्मचारियों** के लिए लाभकारी सिद्ध हो सकता है।

पुस्तक में एक विराट फलक पर त्रुटियों को जिन्हें लेखक "अंतराल" कहता है का संग्रह करके उनका विश्लेषण किया गया है और निदान की ओर संकेत भी हुआ है। यह पाठ सामग्री की योजना और निर्माण में इस रूप में उपयोगी है कि शिक्षक को उदाहरणों का अच्छा भंडार यहां मिल जाता है। भाषा के अनेक पक्षों से यहां आंकड़े एकत्रित किए गए हैं। पुस्तक के अंत में उन सामान्य बिन्दुओं का उल्लेख किया गया है, जो विद्यार्थियों के भाषा व्यवहार के अंतराल के आंतरिक और बाह्य कारण हैं और जिनके आधार पर निदान की प्रक्रिया को रूपायित किया जा सकता है।

निष्कर्ष रूप में यह पुस्तक हिन्दी भाषा के शिक्षक तथा विशिष्ट और आम प्रयोक्ता के लिए उपयोगी होगी और यह आशा की जा सकती है कि इसे पढ़ने-समझाने के बाद पाठक—

1 हिन्दी शिक्षण की मुखामुखी और दूरस्थ शिक्षण पद्धतियों में अंतर कर सकेगा।
2 भाषा के अधिग्रमकर्ता की मानसिक प्रक्रिया को स्पष्ट कर सकेगा।
3 हिंदी भाषा के मानक रूपों को पहचान सकेगा।
4 हिन्दी भाषा के प्रयोगों की विभिन्न त्रुटियों को पकड़ सकेगा।
5 त्रुटियों का विश्लेषण कर सकेगा।
6 त्रुटियों के निदान की खोज कर सकेगा और
7 हिंदी शिक्षण के लिए पाठ योजना और पाठ सामग्री बना सकेगा।

—डॉ. गुरुदयाल बजाज

कम्प्यूटर से बातचीत

लेखक : डॉ ओम विकास, पी०एच०डी० (कंप्यूटर विज्ञान)

मूल्य 10 –रुपए पृष्ठ : 165,

प्रकाशक : राष्ट्रीय शैक्षणिक एवं अनुसंधान परिषद्, अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली ।

कंप्यूटर मानव जीवन के हरेक पहलू को प्रभावित करने लगा है। इसके प्रयोग से उत्पादकता और कार्यकुशलता में बहुत सुधार होता है। इसलिए आवश्यक है कि युवा वर्ग कंप्यूटर के बारे में कुछ जानकारी अवश्य रखे। इसी उद्देश्य से एन० सी० ई० आर०टी० ने लोकभाषा हिन्दी में डा० ओम विकास द्वारा लिखित कंप्यूटर से बातचीत नामक पुस्तक का प्रकाशन 1989 में किया है। इस पुस्तक में सरल और सुबोध भाषा में कंप्यूटर के गणितीय सिद्धांत संरचना, प्रोग्रामन सिद्धांत, प्रोग्रामन भाषा "बेसिक" माईक्रो कंम्प्यूटर संचालन, टेलीटेक्स और वीडियोटेक्स्ट समझाए गए है? इसके अतिरिक्त कंप्यूटर के विकास की छोटी कहानी और चिकित्सा शिक्षा, उद्योग, कार्यालयों आदि में कंप्यूटर के विविध प्रयोग भी दिए गए है। परिशिष्ट में, भारत में कंप्यूटर विकास, और भारतीय लिपि संसाधन टैक्नोलॉजी के विषय में बताया गया है, और संक्षिप्त कंप्यूटर शब्दावली भी दी गई है। इसके अतिरिक्त बहुभाषी सूचना संसाधन के लिए "बेसिक" "पास्काल", "कोबाल" "सी" "वेस" "स्प्रैडशीट" के कुछ डी नमूनों के प्रोग्राम दिए गए हैं ।

इसमें "प्रेरक शब्द" इलेक्ट्रॉनिकी आयोग के पूर्व अध्यक्ष, और सम्प्रति, प्रधान मंत्री के सूचना एवं इलेक्ट्रॉनिकी माध्यमों के सलाहकार माननीय श्री पी. एस. देवधर ने लिखे हैं। इसमें 165 पृष्ठ हैं, रंगीन चित्र भी है, मूल्य केवल दस रूपए है।

लेखक कंप्यूटर विशेषज्ञ है। प्रस्तुत तथ्य प्रामाणिक है। प्रस्तुतीकरण सरल और सुबोध है यथा आवश्यक तकनीकी शब्दों को अंग्रेजी में भी दिया गया है। आशा है कि यह पुस्तक स्कूलों में कक्षा 8 से 12 और कंप्यूटर अनुप्रयोगों में डिप्लोमा (डी० सी० ए०) के छात्रों और प्रबुद्ध अभिभावकों के लिए महत्त्वपूर्ण और उपयोगी सिद्ध होगी। इस पुस्तक से द्विभाषी कंप्युटर संसाधन क संदर्भ में संबोधित अधिकारियों को भी काफी सहायता और जानकारी मिल सकेगी।

आपसे अनुरोध है कि कंप्यूटर से बातचीत पुस्तक की अधिक से अधिक प्रतियां खरीदवाकर लोकभाषा हिन्दी में कंप्यूटर की जानकारी के प्रचार एवं प्रसार में सहयोग प्रदान करें।

पुस्तक मंगाने का पता :— प्रमुख विक्रय अधिकारी, प्रकाशन विभाग, एन. सी. ई. आर.टी. अरविन्द मार्ग नई दिल्ली 110016, फोन 666047।

इलस्ट्रेटिड ऐसेन्शियल डिक्शनरी

लेखक : डॉ हरदेव बाहरी

प्रकाशक : विद्या प्रकाशन मंदिर, नई दिल्ली-110002

मूल्य : 50.00

प्रसिद्ध कोशकार डॉ. हरदेव बाहरी की 'इलस्ट्रेटिड एसेन्शियल डिक्शनरी' में 7000 अंग्रेजी प्रविष्टियों का समावेश किया गया है। कोश में अंग्रेजी प्रविष्टियों के देवनागरी लिप्यन्तरण दिए गए हैं। जिससे छात्र अंग्रेजी शब्द का सही उच्चारण कर सकता है। शब्दार्थ, अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी में भी दिए गए हैं, जो एक नवीन और अनुकरणीय प्रयोग है। हालांकि क्रियाओं के संबंध में अकर्मक (intransitive और सकर्षक (transitive) क्रियाओं का अलग से भेद नहीं बताया गया, परन्तु अनियमित क्रियाओं (Irregular works) के बहुवचन देने से छात्रों को पर्याप्त सहायता मिल सकती है। कोश छात्रों, अनुवाद कार्य में लगे हुए व्यक्तियों और पर्यटकों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

—सुरेन्द्र लाल मल्होत्रा, उप संपादक

चलचित्र एवं दूरदर्शन की पत्रिका

"प्रिया"

सुपर कैसेट इंडस्ट्रीज ने "प्रिया" (मासिक) नामक एक फिल्मी पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया है। इसका मूल्य 7 रुपए है। छींटाकशी, गप्पबाजी व पीत समाचार को ही फिल्म पत्रिका समझा जाता रहा है, किन्तु "प्रिया" से अपने प्रवेशांक से ही इस बात के संकेत दिए हैं कि वह लीक से हटकर स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करेगी। प्रिया के प्रवेशांक का आवरण पृष्ठ मन मोहक है । उसमें गायक मुकेश व अभिनेता अशोक कुमार जैसे सशक्त कलाकारों पर सामग्री के साथ हिन्दी फिल्मों के अमर व्यक्तित्व गुरुदत्त के बारे में धारावाहिक लेखमाला भी है।

"प्रिया" का अक्तूबर अंक दीपावली विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया गया है। उसमें सिने जगत की विख्यात नायिक श्रीदेवी के बारे में विशेष लेख के साथ परिष्कृत रूचि के पाठकों के लिए श्री भीमसेन जोशी जैसी शास्त्रीय संगीत की जानी मानी हस्ती के सम्बन्ध में ज्ञानवर्द्धक सामग्री दी गई है। "प्रिया" का नवम्बर अंक लुभावना एवं रोचक है। स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर पर एक अनूठा लेख उस अंक की विशेषता है।

आज का युग दूरदर्शन का युग है । नाटक, नौटंकी, खेल तमाशा के लिए हमारे पास समय नहीं है, अतः सिनेमा की अपेक्षा टेलीविजन और वीडियो का प्रचलन अधिक है ।

समय की मांग के अनुसार "प्रिया" ने दिसम्बर अंक में चमत्कारी छोटे पर्दे यानी दूरदर्शन से सम्बन्धित सामग्री जुटाई जिससे कि पाठक रस विभोर हो उठें ।

उक्त चार अंकों में खोजपूर्ण रचनाओं एवं साहित्यिक भाषा शैली ने "प्रिया" को स्तरीय स्वरूप प्रदान किया है । "प्रिया" में स्थाई रूप से दी जा रही प्रतियोगिताएं पाठक के ज्ञानवर्धक के साथ-साथ सार्थक मनोरंजन भी प्रदान करती है । "महाभारत ज्ञान प्रतियोगिता" उनमें से एक ऐसी प्रतियोगिता है जो हमें अपने प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति से गहरे तक जोड़ देती है। इसकी 'मुखड़ा' प्रतियोगिता साहित्य की नई प्रतिभाओं को उभरने का मौका प्रदान करती है।

—डॉ० गुरुदयाल बजाज

राजभाषा सहायिका

लेखक : अवधेश मोहन गुप्त

मूल्य : 90 **पृष्ठ : 250**

प्रकाशक : प्रभात प्रकाशन , चावड़ी बाजार, दिल्ली-6

समीक्षाधीन कृति "राजभाषा सहायिका" नौ अध्यायों में विभक्त है। पहला अध्याय भारत सरकार की राजभाषा नीति से परिचय करता है। दूसरा अध्याय राजभाषा नीति के कार्यान्वयन तथा हिन्दी की तिमाही प्रगति रिपोर्ट से सम्बन्धित है। तीसरा अध्याय, वर्षों पहले हिन्दी की परीक्षाएं पास करके हिन्दी को प्रायः भूल चुके सरकारी कर्मचारियों को हिन्दी के व्याकरण एवं वाक्य विन्यास की मुख्य बातें याद दिलाने का कार्य करता है। चौथा अध्याय राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के कारण जारी वर्तमान द्विभाषिक स्थिति और अनुवाद से सम्बन्धित है । इसमें सामान्य सरकारी कर्मचारियों के लिए समुचित अनुवाद-ज्ञान पर भी सामग्री है। पांचवां अध्याय प्रयोजनमूलक तथा कामकाजी हिन्दी से संबद्ध है। छठे अध्याय में पारिभाषिक शब्दावली के बुनियादी सिद्धांत और उसके महत्व से परिचित कराने के साथ-साथ अंग्रेजी में सामान्यतः प्रचलित लेटिन शब्दों के हिन्दी समानक, कार्यालय से बंधित सर्वाधिक बुनियादी शब्दावली, प्रशासनिक शब्दावली, सामान्य पदनाम, विधि शब्दावली, बैंक/वाणिज्यिक शब्दावली तथा परिवहन शब्दावली अलग-अलग दी गई हैं। इसी अध्याय में मिलते-जुलते अंग्रेजी शब्द और उनके हिन्दी पर्याय 36 वर्गों में दिए गए हैं।

सातवां अध्याय हिन्दी में टिप्पणी तथा प्रारूप लेखन के सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक पक्ष से सम्बन्धित है। आठवें अध्याय में देवनागरी में तार भेजने में होने वाली किफायत और उसकी विधि को सोदाहरण समझाया गया है। अंतिम अर्थात् नौवें अध्याय में हिन्दी के प्रयोग में होने वाली सामान्य गलतियों की ओर उपयोगी उदाहरणों की सहायता से ध्यान दिलाया गया है। अंग्रेजी-शिक्षण में "कामन एरर्स" के शोधन का विशेष स्थान रहा है किन्तु भारतीय भाषाओं के शिक्षण में इस महत्वपूर्ण पक्ष को हमेशा नकारा गया है।

विशेष परिशिष्ट के अतर्गत डॉ. प्रभाकर माचवे का लेख दिया गया है जो हिन्दी के विरोध में प्रत्येक तर्क को निरस्तर कर देता है। परिशिष्ट के अंतर्गत ही सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों की राजभाषा कार्यान्वयन सम्बन्धी समस्याओं पर विचार किया गया है। इस प्रकार इस पुस्तक को मंत्रालयों/विभागों के साथ-साथ सार्वजनिक उपक्रमों बैंकों, स्वायत्त निकायों आदि के लिए भी समान रूप से उपयोगी बनाने का प्रयास किया गया है।

यह कृति न केवल केन्द्रीय सरकारी कर्मचारियों के लिए उपयोगी है अपितु नए हिन्दी/राजभाषा अधिकारियों तथा अन्य राजभाषा कार्मिकों के लिए भी मार्गदर्शक हो सकती है । हिन्दी कार्यशालाओं के प्रशिक्षुओं के लिए भी यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी।

—डां. गुरुदयाल बजाज

आदेश-अनुदेश

राजभाषा नीति

राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) के दिनांक 22-8-89 का का. ज्ञापन सं. 12019/3/89-रा.भा. (भा.)

केन्द्रीय सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए समय-समय पर जारी किए गए आदेशों/अनुदेशों की समीक्षा करने से पता चलता है कि कुछ मंत्रालयों/विभागों, उपक्रमों, निगमों तथा सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों आदि में विभिन्न अनुदेशों तथा वार्षिक कार्यक्रमों के प्रावधानों का ठीक तरह से अनुपालन नहीं हो पा रहा है।

2. राजभाषा विभाग के दिनांक 1-2-88 के कार्यालय ज्ञापन सं. 14012/14/87--रा. भा. (ग) के अन्तर्गत हिन्दी टाइपिस्टों के सम्बन्ध में जो अनुपात निर्धारित किया गया था, वह 31 मार्च, 1989 तक पूरा किया जाना चाहिए था परन्तु कई कार्यालयों में यह अनुपात अभी पूरा नहीं हो पाया है। इसे अविलम्ब पूरा किया जाना चाहिए।

3. राजभाषा विभाग के दिनांक 20-8-87 के कार्यालय ज्ञापन सं. 14012/7/87--रा. भा. (ग) के अन्तर्गत विभिन्न क्षेत्रों में स्थित कार्यालयों में हिन्दी आशुलिपि जानने वाले आशुलिपिकों का जो अनुपात निर्धारित किया गया है वह 31 मार्च, 1990 तक पूरा किया जाना अपेक्षित है। इस आदेश के अनुपालन में हो रही प्रगति पर ध्यान देना आवश्यक है।

4. राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए हिन्दी में भी काम आने योग्य उपकरणों की खरीद पर जोर दिया जाता रहा है। फिर भी, कुछ कार्यालयों में कम्प्यूटर, टेलीप्रिन्टर आदि उपकरण केवल अंग्रेजी भाषा में काम आने योग्य ही खरीदे जा रहे हैं और पहले से उपलब्ध उपकरणों को हिन्दी में भी काम योग्य बनाने संबंधी कार्रवाई नहीं की जा रही है। इस स्थिति में भी सुधार आवश्यक है।

5. कुछ कार्यालयों में न्यूनतम हिन्दी पदों का सृजन नहीं होने के कारण राजभाषा अधिनियम, संसद के संकल्प और नियमों आदि के प्रावधानों के पालन में कठिनाई हो रही है। इन पदों को शीघ्र सृजित करना चाहिए ताकि उन पर नियुक्तियां की जा सकें।

6. राजभाषा के प्रचार एवं प्रसार के बारे में सरकार की नीति यह है कि सरकारी कामकाज में हिन्दी को प्रेरणा और प्रोत्साहन से बढ़ाया जाए। इसके साथ ही नियमों और आदेशों के अनुपालन में दृढ़ता बरती जानी चाहिए। इस संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि राजभाषा नियम, 1976 के नियम 12 के तहत केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व है कि वह सुनिश्चित करे कि राजभाषा अधिनियम और राजभाषा नियमों के अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित अनुपालन हो। यदि कोई कर्मचारी या अधिकारी जानबूझकर राजभाषा के बारे में लागू प्रावधानों की अवहेलना करता है तो प्रकरण में संबंधित नियमों एवं आदेशों के उल्लंघन होने के आधार पर कार्रवाई की जा सकती है।

राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) के दिनांक 5-2-88 का का. ज्ञापन सं. 12024/62/85-रा.भा. (ख-2)

विषय :—राजभाषा कार्यान्वयन समितियों तथा राजभाषा से संबंधित अन्य बैठकों की पब्लिसिटी, प्रैस द्वारा किया जाना।

विभिन्न मंत्रालयों/विभागों एवं अन्य कार्यालयों आदि द्वारा समय-समय पर राजभाषा से संबंधित अनेक बैठकें व आयोजन किए जाते रहते हैं। केन्द्रीय सरकार की राजभाषा नीति के अनुसार ये बैठकें व आयोजन केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। विभिन्न नगरों में आयोजित की जाने वाली नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें भी राजभाषा नीति के अनुपालन की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

अतः अब यह निर्णय लिया गया है कि राजभाषा कार्यान्वयन समितियों तथा राजभाषा से संबंधित अन्य बैठकों की पब्लिसिटी जहां तक सम्भव हो सके प्रैस द्वारा भी की जाए। इस संबंध में जो आदेश जारी किए जाएं उससे राजभाषा विभाग को भी अवगत करा दिया जाए।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नई दिल्ली-110002

सं० 1-2/85 (हिन्दी) 5 मई, 1988

कुलसचिव,

विषय : हिन्दी-भाषी राज्यों में स्थित विश्वविद्यालयों से हिन्दी में पत्र-व्यवहार करने के विषय में

उपर्युक्त विषय पर मुझे आपसे यह निवेदन करने का निदेश हुआ है कि मानव संसाधन विकास मन्त्रालय की हिन्दी शिक्षा समिति तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की समिति ने यह निर्णय लिया है कि हिन्दी-भाषी राज्यों में स्थित विश्वविद्यालय भारत सरकार की राजभाषा नीति को लागू करने की ओर विशेष ध्यान दें तथा भविष्य में समस्त पत्राचार हिन्दी में करें।

(डॉ. एस. पी. गुप्ता)
अतिरिक्त सचिव-II

पृष्ठ 133 का शेष

मंत्रालय के श्री सोमदत्त थपलियाल, श्री भोज राज और श्री मोहन चन्द्र भगत की टिप्पण और आलेखन प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने पर पुस्तकों के रूप में पुरस्कार प्रदान किए गए।

हिन्दी शिक्षण योजना परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर और हिन्दी टाइपराइटिंग परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर 4 कर्मचारियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

हिन्दी कार्यशाला में प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले 26 कर्मचारियों को भी इसी दिन प्रमाण-पत्र वितरित किए गए।

शुक्रवार, 15 सितम्बर, 1989 को हिन्दी सप्ताह के आयोजन के अन्तर्गत उप-सचिव (प्रशासन) की अध्यक्षता में एक बैठक हुई, जिसमें अनुभाग अधिकारी के स्तर तक के सभी अधिकारियों ने भाग लिया। बैठक में राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियम एवं अनुदेशों के बारे में चर्चा की गई तथा। अधिकारियों को उस सम्बन्ध में आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान किया गया।

बाद में 19 सितम्बर, 1989 और 20 सितम्बर, 1989 को मंत्रालय के विभिन्न अनुभागों का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान हिन्दी के प्रयोग की स्थिति का जायजा लेने के साथ-साथ पाई गई कमियों को बताया गया।

सीमा सड़क महानिदेशालय, नई दिल्ली

सीमा सड़क महानिदेशलय, में सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के उद्देश्य से प्रोत्साहन योजना चलाई जा रही है। यह योजना अप्रैल, 88 से मार्च, 89 तक लागू की गई थी। इस योजना में महानिदेशालय के तकनीकी तथा गैर तकनीकी वर्ग के कई कर्मचारियों ने भाग लिया, इसमें गैर हिन्दी भाषी कर्मचारियों ने विशेष रूप से रुचि प्रदर्शित की। कुछ तकनीकी कर्मचारियों ने भवन निर्माण, सड़क निर्माण, तथा सेतु से संबंधित कुछ बेहतरीन ड्राइंग हिन्दी में बनाई। कर्मचारियों द्वारा किए गए कार्य का मूल्यांकन, मूल्यांकन समिति द्वारा किया गया, समिति के अध्यक्ष निदेशक (संगठन) और राजभाषा अधिकारी कर्नल ए. के. निमोणकर थे। कर्मचारियों द्वारा किए गए कार्य के आधार पर मूल्यांकन समिति से निम्नलिखित कर्मचारियों को पुरस्कार देने का निर्णय लिया :—

प्रथम पुरस्कार (400 रु. का) :

(1) श्री पानी राम, उच्च श्रेणी लिपिक

द्वितीय पुरस्कार (200 – रु. प्रत्येक को)

सर्व श्री ओम बाबू, अवर श्रेणी लिपिक, चुन्नी लाल, उच्च श्रेणी लिपिक तथा जार्च मैथ्यू, ड्राफ्टसमैन।

तृतीय पुरस्कार (150 – प्रत्येक को)

सर्व श्री पी. के. दास, ड्राफ्टसमैन, श्री वी. के. पसरीचा, अवर श्रेणी लिपिक, श्री मनोहर लाल, उच्च श्रेणी लिपिक, श्री कुलदीप सिंह, ड्राफ्टसमैन, श्री आर. के. चौपड़ा, ड्राफ्टसमैन।

2. प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कारों के अतिरिक्त कुछ कर्मचारियों को 50 50 रु. के सांत्वना पुरस्कार भी दिए गए हैं :—(1) श्री पूरन चन्द्र राम, उच्च श्रेणी लिपिक; (2) श्री सुरेश कुमार, अवर श्रेणी लिपिक, (3) श्री अरुण कुमार दीक्षित, ई/एम-II (4) श्री शन्तनु कर; अवर श्रेणी लिपिक, (5) श्री वी. सी. जोशी, उच्च श्रेणी लिपिक तथा श्री कुलदीप राज, अवर श्रेणी लिपिक।

सहायक महाप्रबन्धक श्री के. एन. आर. उग्गी से "ग" क्षेत्र में हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य के लिए राजभाषा शील्ड प्राप्त करते हुए श्री वी. वेंकटेश्वर राव

सभा को सम्बोधित करते हुए प्रबन्धक (कार्मिक) श्री एन. ए. प्रसाद

प्रधान मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

संदेश

हिन्दी शताब्दियों से राष्ट्रीय एकता का सबल माध्यम रही है। सम्पूर्ण देश में अधिकांश जनता द्वारा बोली और समझी जाने वाली भाषा को ही स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् 26 जनवरी, 1950 को केन्द्र सरकार की राजभाषा बनाया गया है।

सरकार के कामकाज को हिन्दी में कराने का महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व सरकार में राजभाषा विभाग को सौंपा गया है। प्रदर्शनियों और सम्मेलनों द्वारा प्रेरणा देकर हिन्दी में कामकाज की मात्रा बढ़ाने का प्रयास सराहनीय ढंग से राजभाषा विभाग द्वारा किया जा रहा है।

लखनऊ में होने वाले सम्मेलन में हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री अमृतलाल नागर जी मुख्य अतिथि होंगे, इससे सम्मेलन प्रेरणादायक सिद्ध होगा, ऐसा विश्वास है। सम्मेलन द्वारा देश के कार्यालयों में हिन्दी में कामकाज किए जाने का वातावरण बनाने का प्रयत्न सफल हो, ऐसी मेरा कामना है।

नई दिल्ली
19 दिसम्बर 1989

विश्वनाथ प्रताप सिंह

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के लिए डॉ० गुरुदयाल बजाज द्वारा लोकनायक भवन, खान मार्केट, नई दिल्ली-110003 से प्रकाशित तथा प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, रिंग रोड, नई दिल्ली, द्वारा मुद्रित।